बीसलदेव रास

स्व० डॉ० माता प्रसाद गुप्त एम्० ए०; डी० लिट्०
भूतपूर्व निदेशक क० मा० मुंशी हिन्दी विद्यापीठ, आगरा

तथा

श्री अगरचंद नाहटा

प्रकाशक

हिन्दी परिषद् प्रकाशन
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

प्रकाशक

हिन्दी परिषद् प्रकाशन
इलाहाबाद विश्वविद्यालय
इलाहाबाद

११०० प्रतियाँ

मूल्य : १०० रुपये

मुद्रक

नागरी प्रेस : ऑफसेट प्रिन्टर्स
६१/१८६ अलोपीबाग
इलाहाबाद, फोन : ६६२६३५

प्रथम संस्करण की

प्रस्तावना

प्रायः ढाई वर्ष हुए, 'राजस्थानी' की फ़ाइलें उलटते-पुलटते जनवरी, १९४० के अंकमे श्री अगरचंद नाहटा का 'बीसलदेव रासो' की हस्तलिखित प्रतियॉ शीर्षक लेख पढ़ा। उसमें नाहटाजी ने ग्रन्थ की एक दर्जन मे अधिक प्राचीन प्रतियो का संक्षिप्त उल्लेख किया था। उस लेख को पढ़ने के अनन्तर ग्रन्थ के पाठ-निर्णय और पाठ-संपादन का विचार उत्पन्न हुआ। किन्तु प्रतियॉ प्राप्त करने के लिए नाहटा जी से परिचय न होने के कारण मैने श्रद्धेय डॉ० धीरेन्द्र वर्मा जी से इसकी चर्चा की, तो उन्होंने नाहटा जी को लिखा। श्रद्धेय डाक्टर साहब के पत्र का उत्तर देते हुए नाहटा जी ने ग्रन्थ की प्रतियॉ इकट्ठी करके देना स्वीकार किया। इस देश में जहॉ प्रायः लोग प्रतियॉ दिखाना तक नहीं चाहते, उन्हें इकट्ठी करके उपयोग के लिए अन्य को देना बड़ी भारी उदारता का कार्य है। नाहटा जी का नाम उनकी इसी उदारता के नाते ही इस ग्रंथ के एक सम्पादक के रूप में जा रहा है, अन्यथा शेष समस्त कार्य मेरा किया हुआ है, और उसका सम्पूर्ण उत्तरदायित्व मुझ पर ही है। नाहटा जी ने अर्थ के अंश को अंतिम रूप मे देख कर उसमें लगभग एक दर्जन स्थलों पर सुधार के सुझाव भी दिए, जिन्हें ग्रहण कर लिया गया है। यह उनकी अतिरिक्त कृपा थी।

केवल आभार-निवेदन शेष है। श्रद्धेय डॉक्टर धीरेन्द्र वर्मा ने उपर्युक्त प्रकार से इस कार्य में मेरी सहायता की है, इसलिए मैं उनका हृदय से आभारी हूँ। उक्त सहायता के बिना यह कार्य एक प्रकार से असंभव ही था। नाहटा जी के पूर्व भी मुझे अर्थ-निर्णय मे प्रायः एक दर्जन स्थलों पर श्री नरोत्तमदास जी स्वामी तथा लगभग इतने ही स्थलों पर अपने पूर्ववर्ती छात्र और अब विश्वविद्यालय के सहयोगी श्री जगदीश प्रसाद गुप्त से भी सहायता मिली थी। इन सज्जनों का भी मैं आभारी हूँ। अब भी प्रायः एक दर्जन स्थल शेष है, जिनके अर्थो के सम्बन्ध में पूर्ण निश्चय नहीं हो सका है। प्राचीन ग्रन्थों के सम्बन्ध में इस प्रकार की कठिनाइयॉ रह जाना स्वाभाविक है। जो विद्वान् इस विषय में अपने सुझाव देंगे उनका भी

मै आभारी हूँगा। ग्रन्थ के अन्त में दी हुई अनु क्रमणिका मेरे छात्र श्री मिथिलेश कांत, एम्०ए० ने वनाई है। इसके लिए मैं उन्हें धन्यवाद देता हूँ।

ग्रन्थ मे जहॉ-तहॉ कुछ छपाई की भूले रह गई हैं। पाठक कृपया उन्हें दिये हुए शुद्धि-पत्र को देख कर ठीक कर लें।

प्रयाग —माताप्रसाद गुप्त

श्रावण शु० १३, सं० २०१०।

द्वितीय संस्करण की प्रस्तावना

प्रस्तुत संस्करण में कृति को यथासंभव अधिक पूर्ण और संशोधित रूप में रखने का प्रयास किया गया है। इसी दृष्टि से भूमिका भाग मे तीन नवीन शीर्षक 'कथावस्तु और उसकी ऐतिहासिकता', रासक तथा रास काव्य-परंपरा और 'वीसलदेव रास' तथा 'वीसलदेव रास का काव्यत्व' रखे गए है जिनमें रचना के ऐतिहासिक तथा साहित्यिक पक्षों की विस्तृत विवेचना की गई है। स्वीकृत पाठ वाले भाग मे पाठ लोचन की दृष्टि से पाठ का आवश्यक सशोधन किया गया है। अर्थ वाले भाग में इस वार दुर्वोध शव्दो के अपभ्रंश और संस्कृत रूपो को भी देने का यत्न किया गया है, और अर्थ को अपेक्षाकृत अधिक प्रामाणिक रूप दिया जा सका है। कहना न होगा कि पिछले छः-सात वर्षों से किए गए मेरे हिन्दी के आदिकालीन साहित्य के अध्ययन से इस संस्करण में संपादन के विभिन्न अंगों को पूर्ण और परिष्कृत वनाने में मुझे वड़ी सहायता मिली है।

मुझे हर्ष है कि रचना का संशोधित संस्करण हिन्दी पाठकों को भेंट कर रहा हूँ। जिस सौजन्य के साथ उन्होने इसके प्रथम संस्करण को अपनाया है, उसके लिए मै उनका हृदय से आभारी हूँ।

प्रयाग —माताप्रसाद गुप्त

पौष कृ० १, सं० २०१६।

विषय-सूची

विषय पृष्ठ

भूमिका

१. विषय-प्रवेश ३

२. प्रयुक्त प्रतियाँ ५

३. प्रतियों का पाठ-सङ्गठन १४

४. प्रतियों के पाठ-सम्बन्ध-सूत्र १६

५. प्रतियों का पाठ-सम्बन्ध ४६

६. पाठ-निर्धारण ४७

७. कथावस्तु और उसकी ऐतिहासिकता ... ५१

८. रचना-तिथि ५५

९. रासक तथा रास काव्य-परम्परा और बीसलदेव रास ... ६०

१०. बीसलदेव रास का काव्यत्व ७१

बीसलदेव रास ८३

अर्थ २१५

परिशिष्ट २५७

छंदानुक्रमणिका ३७६

शब्दनुक्रमणिका ३८३
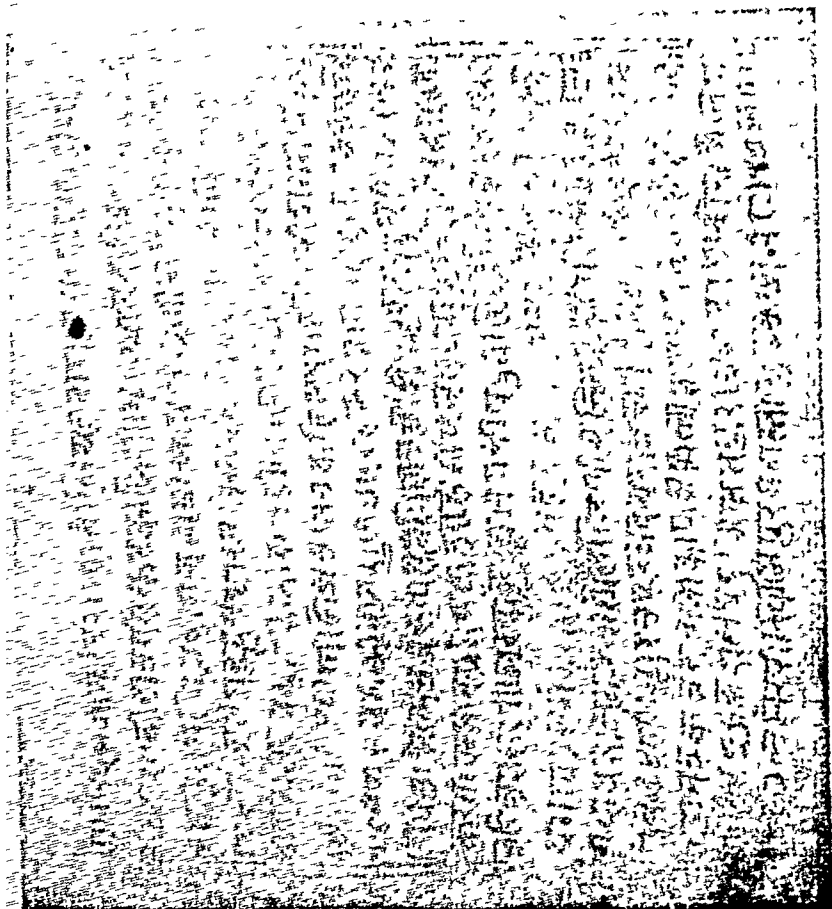
भूमिका

१. विषय-प्रवेश

'बीसलदेव रास' हिदी का गौरव-ग्रंथ माना जाता रहा है, क्योंकि इसमें स्वस्थ प्रणय की एक सुन्दर प्रेम गाथा गाई गई है, और सामान्यतः इसके संबंध में विश्वास यह रहा है कि यह हिदी के सबसे प्राचीन ग्रन्थों में से है। कुछ इतिहासकारो ने तो इसे हिदी का सर्वप्रथम ग्रन्थ तक कहा है। किन्तु राजस्थान के आलोचकों और इतिहासकारों के गत कुछ वर्षों में जो विचार सामने आए, उन्हें देखकर किंचित् आश्चर्य हुआ।

१९३९ में श्री मोतीलाल मेनारिया ने अपने राजस्थानी साहित्य के इतिहास मे लिखा[१] — "मालूम होता है नाल्ह कोई बहुत पढ़ा-लिखा हुआ कवि नहीं, बल्कि एक साधारण योग्यता का रमता-फिरता भाट था, जो अपनी तुकबंदियों द्वारा जन-साधारण को प्रभावित कर अपनी उदर-पूर्ति करता था। जन्मसिद्ध काव्य-प्रतिभा उसमें न थी। अतः रासो में न तो काव्य-चमत्कार, न अर्थ-गौरव और न छंद-वैचित्र्य है। सर्वसाधारण की बोलचाल की भाषा के शव्दों का प्रयोग उसने किया अवश्य, पर उनका भी ठीक-ठीक प्रयोग उससे न हुआ; उनके साथ लिपटे हुए भाव को वह समझ न सका। .... निष्कर्ष यह है कि साहित्यिक दृष्टि से 'बीसलदेव रासो' का मूल्य प्रायः नगण्य है।" फिर भी उन्होने इसकी प्राचीनता स्वीकार की—"हिदी भाषा के आदि स्वरूप और उसकी अविकसित अवस्था का बहुत-कुछ

---

१. राजस्थानी साहित्य के इतिहास की रूपरेखा, पृ० २९।

आभास हमें इस ग्रन्थ द्वारा मिलता है, और इसलिए नाल्ह का नाम हिंदी साहित्य मे अमर होगा।''

किंतु जनवरी १९४० में श्री अगरचंद नाहटा ने 'बीसलदेव रासो की हस्तलिखित प्रतियाँ' शीर्षक एक लेख में[1] उसकी प्राचीनता भी अस्वीकार कर दी। उन्होने ग्रन्थ की ऐतिहासिक, भौगोलिक और भाषा-विषयक विशेषताओं पर विचार करते हुए लिखा कि यह सोलहवीं-सत्रहवीं शताब्दी की रचना ज्ञात होती है, और उन्होंने यह सुझाव तक दिया कि सोलहवीं शताब्दी में नरपति नाम का एक जैन कवि हो गया है, असम्भव नहीं कि रचना भी उसी की हो।

स्वर्गीय श्री गौरीशंकर हीराचंद ओझा ने अपने एक लेख द्वारा नाहटा जी की शंकाओं का समाधान करने की चेष्टा की[2], और उनका उक्त लेख ऐतिहासिक समालोचना की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है, फिर भी नाहटा जी के विचारों मे उससें कोई परिवर्तन नहीं हुआ, क्योंकि उसके बाद के लेखों में भी नाहटा जी ने अपने वे ही विचार प्रगट किए है।[3]

इस प्रकार के मतों से और कुछ भले ही हो, यह अवश्य ज्ञात होता है कि राजस्थान के विद्वानो मे अपनी चीजों के लिए अनुचित मोह नही है, और यह संतोष का विषय है। फिर भी जहाँ अपने प्राचीन ग्रन्थों के संबंध मे इस प्रकार की समस्याएँ उठ खड़ी होती हैं, वहाँ उनका समाधान इतना सुगम नहीं होता है, कारण यह है कि अपने प्राचीन ग्रन्थों की पाठ-परम्पराएँ बहुत विकृत हो गई है; इसीलिए उनकी किसी भी एक प्रति अथवा सामान्य संस्करण के आधार पर उनकी कला अथवा प्राचीनता के संबंध में कोई आक्षेप करना प्रायः उनके प्रति अन्याय हो जाता है।

---

१. राजस्थानी, जनवरी १९४०, पृ० २२।
२. ना० प्र० प०, वर्ष ४५ (सं० १९९७) पृ० १६३।
३. ना० प्र० प०, वर्ष ४७ (सं० १९९९) पृ० २५५ तथा ना० प्र० प०, वर्ष ५४ (सं० २००६) पृ० ४१।

'बीसलदेव रास' के सम्बन्ध में, जैसा हम आगे देखेगे, यह वात और भी अधिक लागू होती है, कारण यह है कि काल के व्यवधान से उसकी विभिन्न प्रतियाँ कम-से-कम उसके पाँच प्रकार के पाठ प्रस्तुत करती है, जिनमे कुल मिलाकर लगभग पौने पाँच सौ छंद आते है, जिनका केवल २७%-२८ प्रामाणिक माना जा सकता है, .औरिस २७%-२८% के सम्बन्ध में भी इन प्रतियो में इतना पाठ भेद है कि अन्यत्र कम ही मिलेगा। फलतः केवल पाठालोचन के सिद्धान्तों के आधार पर—जैसा आगे किया गया है—पाठ-निर्धारण करके ही हम कृति का ठीक-ठीक मूल्यांकन कर सकेंगे।

२. प्रयुक्त प्रतियाँ

'बीसलदेव रास' की प्राप्त प्रतियाँ अपने पाठ-साम्य के आधार पर[1] पाँच समूहों मे रक्खी जा सकती है : म० समूह, प० समूह, न० समूह, अ० समूह और स० समूह। इन्ही समूहो के अनुसार उनका एक संक्षिप्त परिचय नीचे दिया जा रहा है। ये समस्त प्रतियाँ श्री अगरचन्दजी नाहटा से प्राप्त हुई।

म० समूह

इस समूह की केवल दो प्रतियाँ प्राप्त हुई है।

(१) म०—जिसकी पुष्पिका इस प्रकार है :—

।।२०२।। इति श्री बीसलदेव रास समाप्त ।।छ।। ।।श्रीरस्तु।। ।।कल्याणमस्तु।। ।।श्री।।

पुष्पिका में प्रतिलिपिकार-विषयक या अन्य कोई उल्लेख न होने के कारण इस प्रति के नामकरण के लिए उपयुक्त आधार नहीं मिल सका। इसके ऊपर कागज बड़ौदा के श्री मजूमदार के पते का था, इसलिये उनके नाम के पहले अक्षर के अनुसार इसका संकेत 'म०' रख लिया गया है।

---

१. दे० आगे इसी भूमिका में 'प्रतियों के पाठ-सम्बन्ध-सूत्र' शीर्षक के अन्तर्गत विभिन्न समूहो से सम्बन्धित विवेचन।

यह प्रति पूर्ण है, सुलिखित है और कागज तथा लेखन-शैली की दृष्टि से वहुत प्राचीन ज्ञात होती है।

(२) मृ०—जो केवल ३८ छन्द तक लिखकर अधूरी छोड़ दी गई है। इसीलिए इसमें पुष्पिका भी नही है। यह पूर्णतः म० का पाठ देती है, और अधूरी है, इसलिये इसके लिये संकेत मृ० रख लिया गया है।

पं० समूह

इस समूह की सात प्रतियाँ प्राप्त हुई है।

(३) पं०—जिसकी पुष्पिका इस प्रकार है :—

।।२४६।। इति श्री वीसलदेव रास समाप्रतं ।।१।। संवत् १६३३ वर्षे वैशाख वदि ११ दिने। आदित्यवारे। लिपतं आगरा मधे पं० सीहा लिषतं ।।संपूर्ण।। छ ।।१।।

तिथियुक्त प्रतियों में यही सव से प्राचीन है। प्रतिलिपिकार के नाम के प्रथम अक्षर के आधार पर ही इस प्रति के लिए 'पं०' संकेत रख लिया गया है।

यह प्रति भी पूर्ण और सुलिखित है।

(४) आ०—जिसकी पुष्पिका इस प्रकार है :—

।।२४७।। इति वीसलदेव रासः समाप्तः ।।

पुष्पिका में प्रतिलिपिकार आदि का कोई उल्लेख न होने के कारण इस प्रति के नामकरण के लिए भी पर्याप्त आधार न मिल सका। यह प्रति आठ पत्रों में ही पूरी हुई है, केवल इसी आधार पर इसे 'आ०' कहा गया।

छन्द ३२-६६ का पत्रा इसमें नही है, अन्यथा प्रति पूर्ण और सुलिखित है।

(५) चा०—जिसकी पुष्पिका इस प्रकार है :—

।।२४७।। इति वीसलदेव रास ।।

पुष्पिका के अपर्याप्त होने के कारण इस प्रति के नामकरण के लिए भी यथेष्ट आधार नहीं मिल सका। यह अत्यन्त छोटे अक्षरों में लिखी होने के

कारण केवल चार पत्रों में समाप्त हो गई है। केवल इसी के आधार पर इसे 'चा०' कहा गया है।

यह प्रति भी सर्वथा पूर्ण है, और सुलिखित है।

(६) की०—जिसकी पुष्पिका इस प्रकार है :—

।।२४८।। कई भुवण न देखुं रे रवितलइ।। इति श्री वीसलदेव रास समाप्तं।। संवत १७३७ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १० दिने लिषितं पंडित कीर्त्तिविलास गणिना।। साध्वी राजलक्ष्मी तत् शिष्यणी सुमतिलक्ष्मी तत् शिष्यणी प्रेमलक्ष्मी पठनार्थम्।।

इस प्रति के लिपिकार का नाम 'की' से प्रारम्भ होता है, इसलिए इसका संकेत 'की०' रख दिया गया है।

यह प्रति भी पूर्ण है और सुलिखित है।

(७) पु०—जिसकी पुष्पिका है :—

।।२४६।। इति बीसलदेव रास समाप्तं।।

इस प्रति की पुष्पिका भी स्पष्टतः अपर्याप्त थी। इसको देखने पर ज्ञात हुआ कि इसके कुछ पन्ने एक प्रति के थे और शेष पन्ने दूसरे प्रति के थे—दोनों प्रतियाँ खंडित थी—और उन्हें मिला कर पुस्तक पूरी कर दी गई थी, यही कारण है कि १६वीं संख्या के इसमें दो पत्र हैं, इसी पुनरुद्धार के आधार पर इस प्रति का संकेत 'पु०' रक्खा गया है।

(८) ग्या०—जिसकी पुष्पिका का पन्ना नहीं है।

इस प्रति के केवल ग्यारह पन्ने शेष है, इन्हीं के आधार पर इसका संकेत 'ग्या०' रख दिया गया है।

यह प्रति भी अन्तिम पत्र के अतिरिक्त पूर्ण है, और सुलिखित है।

(९) र०—जिसकी पुष्पिका इस प्रकार है :—

।।२४८।। कै० भ०।। इति श्री सिङ्गार वर्णन बीसलदेव रास समाप्तं।।

(न. ५२.१); मनि>मति (न. ६२.४); कठन>कठत (न. १०५.७); नीसरइ>तीसरइ (न. ११८.३); नीगम्या>तीगम्या (न. १७०.३); जनोईय>जतोईय (न. १६१.१); तूनइ>तूतइ (न. २०३.२); न पीवइ>त पीवइ (न. १२६.२); सोनो>सोतो (न. १२५.५); पंडया नइ>पंड्या तइ (न. १६४.५) निरममा>तिरममा (न. २७२.३); न>त (न. २७३.४); नाह>ताह (न. ३१.३); मोहनी>मोहती (न.७.४)

प>य : पागार>यागार (न. १५७.६)

फ>भ : फेरइ>भेरइ (न. ८६.८)

भ>त : सभाउ>सताउ (न. २३६.२): भली>तली (न. ३०.१)

र>न : चीरी>चीनी (न. १४७.६)

ल>ज : लोवडी>जोवडी (न. ५४.२); सहेलिय>सहेजिय (न. १२७.१)

ल>स : वाल>वास (न. ४४.१)

श्र>अ : श्रावण>आवण (न. १५५.६)

स>त : सिरि>तिरि (न. १४८.४)

स>म : सेरी>मेरी (न. १८६.३)

ह>द : आहेडी>आदेजी (न. ४६.४); हे>दे (न. ५०.४); हेडाऊ>देडाऊ (न. ८८.७); (न. १२६.४); (न. १२६.५)

ा>ी : रसाइण>रसीइण (न. ५.१); (न. ७१.५), दाधा>दाधी (न.१४६.२); सापडइ>सीपडइ (न. ६२.३)

ी>ा : सीलवंती>सीलवंता (न. १६८.३); भतीजी>भतीजा (न. १३४.४); सीह>साह (न. २७.६); विरासी>विरासा (न. ४७.१); सोरठी>सोरठा (न. ११४.३); बांदी>बांदा (न. ११२.७); कोइली>कोइला (न. १६१.६); सीस>सास (न. २५४.२)

फलतः इस प्रति का उचित उपयोग पाठ-प्रमाद की उपर्युक्त प्रकार की संभावनाओं को यथेष्ट रूप से ध्यान में रखते हुए ही किया जा सकता था, और ऐसा ही किया भी गया है। इस संस्करण में न० का पाठ वही माना गया है जो पाठ-विकृति की इस स्थिति से पूर्व का रहा होगा—और इसलिए एक प्रकार से हम बहुत-कुछ न. के उस आदर्श का उपयोग करने में सफल हुए है जिसकी यह प्रतिलिपि है।

अ० समूह

इस समूह की तीन प्रतियाँ प्राप्त है।

(१२) अ०—जो श्री अगरचंद नाहटा द्वारा अंशतः स्वतः की हुई और अंशतः किसी अन्य से कराई हुई किसी प्राचीन प्रति की प्रतिलिपि है। इसके अंत मे कोई पुष्पिका नहीं है, इसलिए श्री अगरचंद नाहटा के नाम के पहले अक्षर को लेकर इसका संकेत 'अ०' रख लिया गया है।

यद्यपि यह भी आधुनिक प्रतिलिपि है, किन्तु इसमे उस प्रकार की भूलें नहीं है जैसी ऊपर श्री नरोत्तमदास स्वामी की प्रतिलिपि में पाई जाती है। नाहटा जी पहले स्वतः इस ग्रन्थ का संपादन करना चाहते थे। इसलिए इस पाठ को मूल में रखते हुए प्रति में ही उन्होने कुछ अन्य प्रतियों से पाठांतर लिखना प्रारम्भ किया था, किन्तु पीछे उसे छोड़ दिया। यह प्रति भी पूर्ण है, और सुलिखित है।

(१३) मो०—जिसकी पुष्पिका इस प्रकार है :—

।।३०६।। इति श्री बीसल देव चहुआण रास सपूर्ण।। संवत् १७५३ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १५ चांद्रवारे श्री जेसलमेर दुर्गे पं० मोटा निलषतं।।

प्रतिलिपिकार के नाम के प्रथम अक्षर के आधार पर ही इस प्रति का संकेत 'मो०' रख लिया गया है।

यह प्रति भी पूर्ण और सुलिखित है।

(१४) ब०—जिसकी पुष्पिका इस प्रकार है :—

।।३१०।। इति श्री बीसल देव चहुआण रास संपूर्णः ।।ग्रंथाग्रंथ ६००।।

इस प्रति पर वद्रीदास म्युजियम का कागज लगा हुआ था। इसलिए अन्य आधार के अभाव में उसी के नाम के पहले अक्षर के अनुसार इस प्रति का संकेत 'व०' रख लिया गया है।

यह प्रति भी पूर्ण और सुलिखित है।

स० समूह

अन्य समूहों से भिन्न इस समूह का पाठ चार सर्गों या खंडों में विभक्त मिलता है। इस समूह की केवल दो प्रतियाँ मिली हैं।

(१५) स०—जो रचना का नागरी प्रचारिणी सभा काशी द्वारा प्रकाशित और श्री सत्यजीवन वर्मा द्वारा संपादित संस्करण है। संपादक के नाम के पहले अक्षर के अनुसार ही इस प्रति का संकेत 'स०' रख लिया गया है।

कहने की आवश्यकता नहीं कि यह प्रति पूर्ण है। इसकी भूमिका मे कहा गया है कि इसका पाठ सं० १६६९ की एक प्रति[1] की प्रतिलिपि तथा स० १९५९ की एक प्रति के आधार पर निर्धारित किया गया है। सपादित पाठ कहाँ तक किस प्रति के आधार पर पाठ निर्धारित हुआ है, इस वात का उल्लेख संपादक ने कहीं भी नही किया है। इतना ही ज्ञात होता है कि प्रयुक्त दोनों प्रतियाँ सं० समूह की ही थी—अन्यथा कदाचित् इस वात का उल्लेख संपादक करता कि कौन-से छंद किस प्रति में कम या अधिक थे।

केवल एक समूह की प्रतियों का आधार होने पर उसकी त्रुटियों का परिहार कठिन ही नही प्रायः असंभव हो जाता है। ऐसी परिस्थिति में संपादक ने त्रुटियाँ स्वतः ठीक करने का यत्न किया है। भूमिका में उसने लिखा है—"उसमें यत्र-तत्र जहाँ-कही मुझे कुछ शव्द छूटे हुए जान पड़े है, वहाँ मैंने उन्हे कोष्टक में दे दिया है। ग्रन्थ के छंद-क्रम मे मुझे अनेक स्थलो पर प्रसंग के अनुसार व्यतिक्रम करना पड़ा है, पर उसे ठीक करने मे मुझे संकोच करना पड़ा है कि कही ऐसा करते

---

१. ना.प्र. सभा द्वारा प्रकाशित १९०० के खोज-विवरण सू० ९० मे विद्याप्रचारिणी सभा, जयपुर की सं. १६६९ की प्रति का उल्लेख हुआ है, यह कदाचित् वही है।

समय ग्रन्थ का वास्तविक क्रम नष्ट न हो जाय। फिर भी एक-आध स्थलों पर मुझे विवश होकर पदों के एकाध चरणों को इधर-उधर करने पर विवश होना पड़ा है।"

यदि वर्मा जी ने दोनों प्रतियों के पाठांतर भी स्वीकृत पाठ की तुलना में टिप्पणियों मे दे दिए होते, तो यह संस्करण पाठ-निर्धारण में विशेष उपयोगी होता, और प्रयुक्त प्रतियों के अभाव में इस संस्करण का उपयोग करना यथेष्ट होता। फिर भी इस संस्करण का स्वीकृत पाठ एक विशेष समूह का ही है, जिसकी एक अन्य प्रति का उल्लेख नीचे किया जायेगा, और दो या अधिक शाखाओं के पाठों का मिश्रण उसमें नही हुआ है। यह बात स्वतः प्रकट हो जाती है, इसलिए पाठ-निर्धारण में इस प्रति का भी उपयोग यथेष्ट रूप से किया जा सका है।

किन्तु इस प्रति में उसी प्रकार का पाठ-प्रमाद है जिस प्रकार का हमने श्री नरोत्तमदास स्वामी की प्रति के सम्बन्ध में देखा है—यद्यपि कम है। कुछ इने-गिने उदाहरण नीचे दिए जा रहे हैं : इस समूह की उक्त अन्य और किंचित् उत्कृष्टतर प्रति प्राप्त हो जाने के कारण इस संस्करण के पाठ-प्रमाद के सम्बन्ध में विस्तार से जानने की उतनी आवश्यकता नहीं रह गई है जितनी न० के सम्बन्ध में हुई है, क्योंकि न० अपन समूह की एकमात्र प्राप्त प्रतिनिधि है :

च>व : चीरी>वीरी (स. ३. ९. ६)

छ>दु : छइ>दुइ (स. १. ५८. १)

छ>व : छइ>वइ (स. २. ४६. ५)

ठ>ढ : गोठ>गोढ (स. ३. ६०. ६)

ड>उ : लाड>लाउ (स. १. ६५. १)

ढ>ठ : ढोलिसं>ठोलिसुं (स. २. ३०.२)

द>व : चादर>चावर (स. ३. ६१. ३)

न>ठ : निवार>ठिवार (स. १. ६५. १)

प्र>ध : प्रवाली>धवाला (स. २. १२. ६)

भ>म : भूतो>मूती (स. २. ८०. ३)

ी>ा : वइठी>वइठा (स. १. ५८. १); प्रवाली>धवाला (स. २. १२. ६); कपिली>कपिला (स. २. २५. ६); जाणीयउ>जाणायउ (स.५. ५२. १)

(१६) प्र०—जिसकी पुष्पिका इस प्रकार है :—

।।४१।। इति श्री राजा वीसलदेव रास चतुर्थ खंड संपूर्ण ।।४।। संवत् १७२४ वर्षे मगसिर वदि १५।।

पुष्पिका में प्रतिलिपिकार आदि के विषय का कोई उल्लेख न होने के कारण इस प्रति के नामकरण के लिए भी पर्याप्त आधार न मिल सका। हिन्दी पाठक श्री सत्यजीवन वर्मा द्वारा संपादित पाठ से ही परिचित है, इसलिए उसे 'प्रचलित' पाठ कहा जा सकता है। किन्तु वह मुद्रित रूपांतर है, और कुछ न कुछ संपादक का भी उसके पाठ-निर्धारण में हाथ रहा है, इसीलिए उस समूह की इस प्रति को 'प्रचलित पाठ' मान कर इसके लिए 'प्र०' संकेत रख लिया गया है।

यह प्रति भी पूर्ण है.और सुलिखित है।

हर्ष की वात है कि प्रस्तुत संस्करण के लिए पॉच विभिन्न समूहों—या शाखाओं—की पर्याप्त प्रतियॉ प्राप्त हो गई। असभव नही कि और भी एकाध समूह—या शाखा— की प्रतियाँ आगे-पीछे प्राप्त हों; किन्तु पाठ-निर्धारण के लिये ये वहुत-कुछ पर्याप्त सिद्ध हुई है।

३. प्रतियों का पाठ-संगठन

संख्याओं का व्यतिक्रम निकाल देने पर विभिन्न प्रतियो में छंदो की स्थिति निम्नलिखित है : —

समूह	म०	पं०	र०	ना०	न०	अ०	प्र०	स०
समस्त समूहों के	११८	११८	११७	११८	११५	११८	११३	११४

	म०	पं०	र०	ना०	न०	अ०	प्र०	स०
पं०स०न०अ०[1]		६	१०	१०	१०	१०	१०	१०
म०पं०न०अ०	४३	४३	४२	४३	४३	४३		
म०न०अ०स०	२१				२१	२१	२१	२१
म०अ०स०	६					६	६	६
म०स०	३						३	३
म०न०अ०	५				५	५		
म०अ०	१					१		
पं०न०अ०		७४	७२	७४	७४	७४		
पं०अ०		३	३	३		३		
पं०न०[1]			१	१	१			
न०अ०					४	४		
प्र० स०							१४१	१४१
निजी			३	६	१	६		१६
योग	१६७	२४७	२४८	२५८	२७४	२६४	२६४	३१४

आगे हम देखेंगे कि म० पं० न० अ०, म० न० अ० स०, म० अ० स०, म० स०, म० न० अ०, म० अ०, पं०न०अ०, पं०अ०, पं०न०, न०अ० तथा प्र०स० में से प्रत्येक समुच्चय में पाठ की सामान्य विकृतियाँ पाई जाती है, केवल पं० स० न० अ० में कोई भी समान विकृतियाँ नहीं मिलती है, इसलिए यह प्रकट है कि पं०स०न०अ० के अतिरिक्त शेष समुच्चय पाठ-विकृति के है।

म० के छन्द १२४ तथा छन्द १२७ एक ही है, इसलिए प्रति में लिखित छन्द-संख्या में एक की वृद्धि हो गई है, और उसमे एक छन्द-संख्या की वृद्धि इसलिए हुई है कि म० ५५ की छन्द-संख्या छूट गई है। मू० ऊपर बताया जा चुका है कि अधूरी है, किन्तु जहाँ तक जाती है, म० के समान ही है।

१. इनमे से तीन छन्द ऐसे है जिनकी एकाध पक्तियाँ म० मे मिलती है। ये तीन छन्द है स्वीकृत २६, ४५, तथा ८६।

आ०, चा० की० और ग्या० मे पं० स० न० अ० के दसों छन्द है, अन्यथा वे पं० के समान ही हैं। पु० के सम्बन्ध में ऊपर वताया जा चुका है कि वह दो भिन्न-भिन्न खंडित प्रतियों को मिलाकर वनाई गई है जो इसी समूह की थी।

व० और मो० भी अ० के समान ही है।

उपर्युक्त के अतिरिक्त किसी-किसी प्रति के एकाध छन्द-संख्या का अन्तर क्रम-संख्याएँ देने में भूल से हो गया है। एकाध प्रतियों मे एक दो छन्दो की पुनरावृत्ति से संख्या-वृद्धि हो गई है।

इस प्रकार ऊपर जो छन्द-संख्याएँ हमे विभिन्न प्रतियों की पुष्पिकाओं में मिली है, उनकी तुलना मे पं० तथा स० समूह की प्रतियों की वास्तविक छन्द-संख्या मे अन्तर नगण्य है, म० और न० समूहो में भी वह साधारण है। अ० समूह मे अपेक्षाकृत अधिक अन्तर का कारण यह है कि उसमें कुछ छन्द दो-दो छन्दांशों में विभक्त होकर पुनः नवीन पंक्तियों के योग से दो-दो स्वतन्त्र छन्दों मे परिवर्तित हो गए है, और अन्य समूहो की तुलना में इसमें छन्दो को पुनरावृत्ति भी कुछ अधिक हुई है।

४. प्रतियों के पाठ-सम्बन्ध-सूत्र

ऊपर हमारे प्रतियो के पाठ-सङ्गठन का लेखा लेते हुए देखा है कि जो छन्द समस्त समूहों में समान रूप से नहीं मिलते हैं वे विभिन्न समूहों समुच्चयों में मिलते है। इनमें से पं० स० न० अ० को छोड़ कर शेप सभी पाठ के विकृति-समुच्चय भी हैं, यह एक वड़े महत्व की वात है।

१. म० पं० न० अ०

(१) स्वीकृत ११६.५ का पाठ इनमे है :

कह्यउ हमारउ जइ सुणउ।

किन्तु यह स्वीकृत ०.५११ है, और इनमे भी वहाँ इस प्रकार है।

१. यह छन्द (परिशिष्ट का १५७) पं० की केवल र० तथा ना० प्रतियों और न० में पाया जाता है।

(२) म० ६५.६=पं० ७८.६ = न० ८५.६ = अ०८६.६ है :

म्हानं उलग जाण की परीय जगीस।

किन्तु यह स्वीकृत ६०.१ है, और इसमें भी वहाँ इस प्रकार है।

(३) म० १५.१ = पं० १७.१ = न० १६.१ = अ० २०.१ है;

पाइ कंकण सिरि तिलक दिपाइ।

किन्तु 'पाइ कंकण सिरि' स्वीकृत १५.१ में आता है :

पाइ कंकण सिरि बांधियउ मउड़।

और इनमें भी वहाँ इस प्रकार हैं।

(४) म० १७२.२, .३=पं० २०४.२, .३=न० २३८.२, .३ =अ० २६५.२, ३ है:

नै लाषा दीन्ही राजा कुलइ. कबाइ।

दीधउ सोनउ सोलहउ।

किन्तु सामान्य पाठान्तर के साथ ये पंक्तियाँ स्वीकृत ११.२, .३ है, और इनमें भी वहाँ इस प्रकार हैं।

(५) म० १७२.६ = पं० २०४.६ = न० २३८.६ = अ० २६५.६ है :

सिद्धि करउ बीसल चहुआण।

किन्तु यह पंक्ति अन्तिम शब्द के पाठान्तर के साथ म० १७३.६ = पं० २०३.६ = न० २३७.६ = अ० २६४.६ भी है।

(६) म० १७८.२ = पं० २०६.२ = न० २४३.२ = अ० २७०.२ है :

भगवा कापड़ महला बेसि।

कितु यह पुनः यथा म० १८४.२ = पं० २२०.२ = न० २५५.२ = अ० २८४.२ भी आई है।

(७) म० १७२.१ = पं० २०४.१ = न० २३८.१ = अ० २६५.१ है :

राजा सुं मिलियउ पूरब्यउ राउ।

कितु म० १७४.१ = पं० २०५.१ = न० २३६.१ = अ० २६६.१ भी यही है: केवल कुछ पाठ-भेद है।

४. म०स०

(१) म० १५५.४ = स० ३.५०.६ है :

देस उडीसा कउ परधान

किन्तु यह अन्य समस्त प्रतियों में यथा स्वीकृत १०६.२ है, और प्रसंग की दृष्टि से वही सार्थक लगती है।

(२) स्वीकृत १८.३ का पाठ म० स० में है :

मोतीयाँ का रे आपा पड़इ।

किन्तु यह स्वीकृत १७.३ है, और इनमें भी इस प्रकार है।

(३) स्वीकृत ८३.७ का पाठ इनमें हैं :

कह्यउ हमारउ जे सुणइ।

किन्तु यह स्वीकृत ५७.३ है और इनमें भी इस प्रकार है।

(४) स्वीकृत १२०.२ का पाठ इनमे है :

वाजित्र वाजिया नीसाणे घाउ।

किन्तु यह स्वीकृत २५.२ है, और इनमें भी इस प्रकार है।

(५) स्वीकृत १२०.१ का पाठ इनमें है :

हिव वारमइ वरस घरि आवतीयउ राउ।

किन्तु यह थोड़े से शव्दांतरों के साथ स्वीकृत १२३.१ है, केवल इस प्रति में उसका पाठ भिन्न है।

५. म० न० अ०

(१) म० २० = न० २६ = अ० २७ की .४ है :

काया सोपारी पाका जी पान।

किन्तु यह स्वीकृत १८.४ है, और इनमें भी इस प्रकार है।

(२) म० ४३/१ = न० ५४/१ = अ० ५६/१ में पाँच चरण है, म० ४३/२ = न० ५४/२ = अ० ५६/२ में छह चरण है — और दोनो मिला कर कुल ग्यारह

चरण हैं। इस ग्रन्थ मे कोई भी छंद विषम संख्याओं के चरणों का नहीं है। छंद के उत्तरार्द्ध के छह चरण छन्द-योजना की सामान्य प्रवृत्तियों के अनुसार पूर्णतः एक कडवक निर्मित करते है, और छंद के पूर्वार्द्ध के पॉच चरणों से भी, यदि एक चरण उनके अन्त में और होता, एक पूर्ण कडवक निर्मित होता। म० मे तो यह भूल प्रकट है, क्योंकि उक्त अंतिम पंक्ति के साथ छन्द की क्रम-संख्या ४२ भी उससे छूट गई है, और दोनो छन्द मिल कर एक हो गए हैं। न० और अ० में उक्त पंक्ति तो छूटी ही रही, किन्तु छन्द संख्या ठीक कर ली गई है।

(३) म० ४३/२ = न० ५४/२ = अ० ५६.२ की ३. है :

रूप अधिकी छइ मेदिनी

किन्तु यह स्वीकृति ३४.३ है और इनमें भी इस प्रकार है।

६. म० अ०

(१) म० ८१.८ = अ० ६२.७ है :

कह्यउ म्हारउ के करइ।

किन्तु यह स्वीकृत ११०.५ है, इनमें भी इस प्रकार है।

(२) म० ८१.५ = अ० ६२.५ है :

कोडि टका कउ नवसर हार।

किन्तु यह अन्यत्र म० १६६.६ = अ० २६१.४ भी है।

(३) म० १०६.६ = अ० १२६.६ है :

देस उडीसा कउ परधान।

किन्तु यह स्वीकृत १०६.२ है — केवल म० का पाठ वहाँ भिन्न है।

(४) म० १६३.३ = अ० २५५.३ हैं :

उलगाणा नय वेग चलाविज्यो।

किन्तु थोड़े पाठांतर के साथ यह स्वीकृत १०६.३ है और इनमें भी वहाँ इसी प्रकार है।

किन्तु प्रायः यही शव्दावली म० १२.८ की भी है, जो इनमें भी इस प्रकार है।

(१६) पं० १४६.४ का पाठ इनमें है :

एक रिसउ स्वामी घरि संभालि।

किन्तु प्रायः शव्दावली स्वीकृत ६३.४ की भी है, इनमें भी इस प्रकार है।

(१७) पं० १५७.२ का पाठ इनमें है :

तुम्हे उतरि जावउ समुंद कइ तीरि।

किन्तु प्रायः यही शव्दावली पं० १४६.२ की भी है, इनमें भी इस प्रकार है।

(१८) पं० १८३.२ का पाठ है :

भाणमती राणी ली छइ वोलाइ।

किन्तु यह स्वीकृत २०.२ है, और इनमें भी इस प्रकार है।

(१९) पं० ८७ = न० १११ = अ० ११७ है :

उलग जातां किम रहा नारि।
वोलिया वोल नइ चितह विचारि।
वोल्यउ पाल्या म्हे तउ आपणउ।
वइसि उगाहिस्या हीरा की षाणि।
मुहि विलपाणइ जिन रहइ।
म्हे तउ वइगा आविया देषे हे नारि।।

किन्तु ठीक यही छन्द पं० ६१ = न० ६७ = अ० ७१ भी है।

(२०) पं० ३५.१, .२ का पाठ है :

हुई पहिरावणी हरपियउ राव।
दीन्हा तेजीय कुलह कवाइ।

किन्तु यह क्रमशः स्वीकृत २५.१ तथा ११.२ हैं, और इनमें भी इस प्रकार हैं।

(२१) पं० अ० में स्वीकृत १०.२ तथा १०.३ के बीच मे और न० में स्वीकृत १०.२ के स्थान पर है :

बाजा रे बाजइ नीसाणे धाउ।

किन्तु यह स्वीकृत २५.२ है, और इनमें भी इस प्रकार है।

८. पं० न०

(१) स्वीकृत ६.४, .५.६ का पाठ इनमें है :

मइमत हस्ती सहस अठार।

लाष तुरीय घरि पाषरया।

बर रे आणउ बीसल दे चहूआण।

किन्तु छन्द का जैसा संगठन ग्रन्थ भर में मिलता है, उसके अनुसार .४ और .६ का तुक मिलना चाहिए।

(२) स्वीकृत ४६.३ इनमें नहीं है, जिसके कारण इनमें कडवक केवल पॉच चरणों का रह गया है। किन्तु ग्रन्थ भर में छह चरणों से कम का कोई कडवक नही है।

(३) स्वीकृत ७७ इस प्रकार है :

भाद्रवइ बरसइ गुहिर गंभीर।

जल थल महियल सहु भरया नीर।

जांणि कि सायर ऊलटयउ।

निस अंधारीय वीज षिवाइ।

बादल धरती स्यउं मिल्या।

मूरष राउ न देषइ जी आइ।

हूँ ती गोसामी नइ एकली।

दुइ दुष नाह किउं सहणा जाइ।।

इन प्रतियों में उपर्युक्त .६, ..७ नही है। किन्तु .८ के 'दुइ दुष' से स्पष्ट है कि 'हूँ ती गोसामी, नइ एकली, प्रसंग में अनिवार्य है। इसलिए .६, .७ इन प्रतियों

मे भूल से छुटे हुए ज्ञात होते है।

(४) स्वीकृत १०४.५, .६ का पाठ इसमें है :

जइ तुम्हें राव जी नावीया।

तउ धण हीयडउ फाटि मरेसि।

किन्तु ये स्वीकृत १०५.५, .६ हैं, और इनमें भी इस प्रकार है।

(५) स्वीकृत ६५.४ का पाठ इनमें है :

सात सषी मिलि बैठी छइ आइ।

किन्तु यह स्वीकृत ६४.१ है, और इनमें भी इस प्रकार है।

९. पं० अ०

(१) पं० ६२.८ = अ० १२३.८ है :

तुरीय डंकावइ संभरि राय।

किन्तु यह स्वीकृत ६६.६ है, और इसमें भी इस प्रकार है।

१०. न० अ०

(१) न० १०५.१, .२ = अ० ११०.१, .२ है :

जांहि के घर हरिणाषी हुवै नारि।

सो क्यउं ओलगै और का बारि।

(न०—ताह कउ नाह क्यउं उलग जाइ।)

किन्तु ये पंक्तियाँ अन्यत्र म० १२१.१, .२ = न० १६६.१, .२ = अ० १७५.१, .२ भी हैं और पाठ वहाँ प्रायः अ० का है।

(२) स्वीकृत ७६.६ का पाठ इनमे है :

उवा गात्र उघाड़ा हो बिकल सरीर।

किन्तु यह स्वीकृत ६३.६ है, और इनमें भी इस प्रकार है।

(३) निम्नलिखित पंक्तियाँ न०अ० में दो बार आती है : एक बार न० ५४/२ = अ ५६/२-५७ में, और पुनः न० ६१ = अ० ६५ में :

सगुण गुणवंतीय नइण बिसाल।

देषतां मानव चित हरइ।

मृगनइणी अर अवला जी बाल।

(४) न० १२०.३ = अ० १२८.३ है :

सोरठी झलकै काष में।

किन्तु यह पंक्ति अन्यत्र यथा न० १८४.३ = अ० १६७.७ है।

उपर्युक्त के अतिरिक्त कुछ पाठ-विकृतियो से विभिन्न प्रतियों में पाठ-मिश्रण के भी प्रमाण मिलते हैं। इस पाठ-मिश्रण पर नीचे विचार किया जा रहा है।

११. म० न० अ० < म० + स०

(१) स्वीकृत १२५ है :

टसकला मुसकला मोनइ न सुहाइ।

धण कइ हियडलइ हाथ म लाइ।

लाज नहीं प्रीय निरमया।

म्हाकउ वारय तूं किउं ऊलगइं गाइ।

बालउ रे बैस न देषही।

हिवइ निगुणा नाह मोहि किसइ मेल्हाइ।

यह छंद म० न० अ० में भी है (म० १६५=न० २७२/१= अ० ३०२ केवल .५, .६ म० में नहीं है।

किन्तु म०न०अ० में यह पुनः यथा म० ७०= न० १०६= अ० ११२ आया है:

सकला मसकला मो न सुहाइ।

म्हारइ हियडलइ हाथ म लाइ।

म्हानइ मेल्हीय तुम्ह चालिस्यइ।

दुष तणउ मुझ को नही छेह।

देह सूकी नइ पिंजर हुई।

तुझ विण रात रोवतौ जाइ।

पडीय वरस मुझ होइस्यइ।

निठुर नाह अम्ह मूकि कि जाइ।

पं० के पाठ में यह ऊपर के प्रथम स्थान पर और स० की पाठ-परम्परा में यह ऊपर के दूसरे स्थान पर आता है। प्रसंग से यह प्रकट है कि यह छंद पुनर्मिलन के अनंतर ही आना चाहिए प्रवास के अवसर पर नही। इसलिए यहाँ भी म० की पाठ-परम्परा पर स० की पाठ-परम्परा का प्रभाव प्रकट है।

१२. म० अ० < म० + स०

(१) म० १६४ = अ० २५६ = स० ३.६१/१ है :

आणीया हाथीया सइ दुय च्यारि।

आणीया अरथ नइ द्रव्य भंडार।

आणीया हीरा पाथरी।

आणीय तेजीय तरल तोषार।

कवाइ पहिरावुं पाट की।

काल्हि चलाविस्यां एतीय वार।।

और म० १६५ = अ० २५६ = स० ३.६१/२ है :

ऊगउ सूर नइ हुअउ परभाति।

दीधा हाथीय सय दुय साथि।

दीधा हीरा पाथरी।

दीधा तेजीय मत्त गयन्द।

कवाइ पहिरावी पाट की।

राजा जी चालिस्यइ मास वसंत।।

स० में म० १६४ की .४, .५, .६ तथा म० १६५ की .१, .२, .३ नहीं है। किन्तु वे दोनों की .३ के अन्तसाम्य (Haplography) के कारण छूटी हुई ज्ञात होती है, क्योकि प्र० मे पाई जाती है।

यह दोनों छन्द एक ही (स्वीकृत ११०) हैं और थोड़े से शब्दान्तर के साथ

म० अ० में पुनः यथा म० १६७ = अ० २६३ आए हुए है। फलतः यह प्रकट है कि म० अ० में यह छन्द एक स्थान पर तो अपनी पाठ-परम्परा के कारण है, और शेष दो स्थानों पर स० की पाठ-परम्परा के प्रभाव से है।

१३. म०<म०+स०

(१) म० ८९ है :

चीरा लिषी धण आपणइ हाथ।
पंड्या हो चालि हेड़ाऊ कय साथि।
सात सउ कोस कउ गामंतरउ।
पंड्या रुडा चालिज्यो देस की सींव।
तावडउ गिणज्यो न छाहडी।
म्हारी चीरीय राषिज्यो जिउ थारउ जीव।।

म० में यह छन्द १३२ है, केवल इसके .३, .४ उसमें नही है।

किन्तु म० १४६ भी प्रायः यही है :

वाहुड़ धणह दिषालीय बाट।
ऊँचा परबत नीचा चाट। (तुलना स्वीकृत ६८.४)
लांबीय बांह दिषाली। (तुलना इसी छन्द की .१)
नइ देखतां जो जो देस की सीम।
छांहडी तावडउ मत गिणइ।
चीरीय रापजो जिम थायउ जीव।।

इन दो छन्दों में से म० ८९ का पाठ पं० परम्परा मे मिलता है और अंशतः स० परम्परा में भी, किन्तु म० १४६ का पाठ केवल स० परम्परा मे मिलता है। इससे ज्ञात होता है म० ८९ अपनी मूल परम्परा के अनुसार है, और म० १४६ स० परम्परा के प्रभाव से आया है। स० पाठ स्पष्टतः अशुद्ध है, इसलिए यह साम्य म० और स० का परस्पर विकृति-सम्बन्ध स्थापित करता है।

१४. पं०<पं०+म०

(१) स्वीकृत ११८=पं० २२६=न० २६०=अ० २८६ है :

जोगीयां कीनु कहइ हो वात।
भंइसि कउ दहीय नइ धीअरु भात।
दूध कटोरइ पाइसुं।
आछा चावल घणीय निवात।
सुसतड जीमेवीरा जोगिया।
हंसि हंसि कहउ तुम्हारा प्रीय की वात।।

और पं० २२७= न० २६१= अ० २९० का पूर्वार्द्ध है :

हिव कूल्हडउ दूध नइ सीयलउ भात।
चापडउ दहीय नइ ऊन्हउ जी भात।
मल्हि मल्हि आज परुसिस्या।
उणिनइ दूध कटोरइ घणीय निवात।
आंगण वइसि जिमाडियउ।
तस हंसि हंसि कहि म्हारा प्रीय तणी वात।।

दोनो छन्द प्रायः एक ही है —न केवल दोनों का आशय एक है वरन् शब्दावली भी प्रायः एक ही है—और दोनों छन्द पं० समूह में लगातार आते हैं। म० और स० में ऐसा नही है। स० में इनमें से प्रायः पं० २२६ के पाठ का छन्द है और म० में पं० २२७ के पाठ का। इसलिए यह प्रकट है कि पं० में यह पुनरावृत्ति वर्त्तमान म० अथवा स० के किसी पूर्वज के प्रभाव से हुई। म० और स० मे से स० की अपेक्षाकृत म० से पाठ-साम्य इन दो छन्दों में अधिक है, इसलिए म० के किसी पूर्वज का प्रभाव पं० न० अ० पर प्रकट है।

ग्या० में पं० २२७ नहीं है, पं० समूह की शेष सभी प्रतियों मे दोनों छन्द हैं।

१५. न० अ०<म०+पं०

(१) स्वीकृत ४२ का पाठ म० में इस प्रकार है :

चालियउ उलगाणउ धण जाण न देइ।
मो नइ मारि कइ सरि साथा लेइ।
अंचल ग्रहि धण इम कहइ।
नयण दो इलै नइ मो मारि।
जोबन बन भरि नारि तइ।
जीवतो न छोडउं स्वामी थारउ हो कोउ।
उलग जातउ तू कइ मुगछ होउ।।

पं० में इस म० पाठ की केवल प्रथम तीन पंक्तियाँ हैं, शेष चार पंक्तियों के स्थान पर उसमें निम्नलिखित तीन मात्र है :

दुइ दुष सालप्र हो सामीय सांझ।
जोबन मुरडीय मारिस्या।
रोस किसउ जइ साधण बांझ।

न० अ० में स्वीकृत ४२ के स्थान पर दो विभिन्न छन्द दो स्थानों पर आते हैं : न० १०७ = अ० ११३ तथा न० ७२ = अ० ७६; और इनमें से न० १०७ = अ० ११३ म० पाठ का है, और न० ७२ = ७६ पं० पाठ का है।

(२) स्वीकृत ३३.४, .५, .६ का पाठ म० में है :

चतुर माणस राजा भोज की धार।
कामणी जैसलमेर री।
लूगडउ चोपडउ गढ़ ग्वालेर।

इन पंक्तियों का पाठ पं० में है :

अति चतुराई गढ़ ग्वालेर।
कामणी जैसलमेर री।
पुरिस भला स्वामी गढ़ अजमेरि।

न० में पाठ पूर्णतः म० का है, केवल उसके अनंतर पं० पाठ की अंतिम पंक्ति रख दी गई है।

अ० में भी पाठ पूर्णतः म० का है, केवल निम्नलिखित पंक्ति –

किह खंड कोइ सराहिजै।

और रख कर पं० पाठ की अंतिम पंक्ति तव रखी गई है।

(३) स्वीकृत ५४ का पाठ म० में है :

.१ पंडिया कहियइ दामोदर प्रीय तणी वात
.२ केहउ रे थावर के उ रे राह।
.३ नित नित चालउ चालउ करइ।
.४ आठमउ थावर वारमउ राह।
.५ ग्रह गणि तिथि मंदा कह्या।
.६ छोड़ि नइ गोरडी प्रीय तणी वात।

और पं० में है :

.१ आणि दमोदर प्रीय समझाय।
.२ ग्रह कौ पीडयउ ऊलग जाइ।
.३ विण दोपइ ग्रह पीडियउ।
.४ उण नइ आठमउ थावर वारमउ राह।
.५ ऊमीय मेल्हि उलग चालियउ।
.६ रोवती छाँडि धण चालियउ नाह।

न० में आठ पंक्तियाँ हैं जो इस प्रकार हैं : पं० .१, पं० .२, म० .२, पं० .४, म० .५, म० .६, पं० .५, पं० .६।

अ० में दस पंक्तियां हैं, जिनमें से आठ तो उपर्युक्त न० की ही है, शेप दो म० .३, म० .४ हैं—अर्थात् इसमें भी दोनों पाठों को मिला दिया गया है, केवल इसमें म० .१ तथा पं० .३ नहीं है।

१६. अ०<म०+पं०

(१) स्वीकृत ११३ का पाठ म० में है :

.१ जोगी कहइ एक गोरखनाथ।

.२ कमल पदमासण दूध का हाथ।

.३ मूँगफली जिसी आंगुली।

.४ एतउ अहर प्रबालीय बदन मयंक।

.५ बोलती बोलय धण कालरी।

.६ ससि वदनी धण चीता कय लंकि।।

पं० में उपर्युक्त म० .४, .६ के स्थान पर है :

उणिरा कठिन पयउहर काजली रेह।

उणरइ सोवन चूडली झलकइ आथि।

और निम्नलिखित पंक्तियाँ पं० में यथा .७, .८ है :

चूडि कहइ कइ चूडलो।

थे तउ चोरी देज्यो तिणि धण कइ हाथ।

अ० में एक छंद—२७४ पूर्ण रूप से म० का उपर्युक्त पाठ देता है, और एक अन्य छंद २७५, जो निम्नलिखित है, पं० का मिश्रित पाठ देता है :

.१ राउ कहइ सुणउ गोरखनाथ।

.२ रतन कचोलउ छइ मूंध कै हाथ।

.३ ख्याल धणउ गोरी मोरीयां।

.४ उणि रे कठिन [पयउहर] काजली रेह।

.५ मीठो थोडौ गोरी बोलिहै।

.६ म्हाकुं चित्त न बिसरइ जी नवलह नेह।

.७ सोवन चूडै सोहती।

.८ सात सषी तणै नित रहइ साथि।

.९ सहस त्रीयां माहि जाणियै।

.१० म्हाकी चीरी देज्यो तिण धण हाथि।।

इस छन्द की .२, .४, .७, .१० क्रमशः पं० पाठ की .२, .४, .६, .८ हैं।

(२) स्वीकृत २७ .५, .६ का पाठ म० में है :

कइ लेष्यउ लाधउ विह तणउ।

राजा भोज की चउरी चढथा जाइ।

इसके स्थान पर पं० का पाठ है :

चउरी चढथउ राजा भोज की।

वडा वडेरा मेल्या करतार।

अ० के पाठ में पं० पाठ की दोनों पंक्तियाँ और म० पाठ की .५ है, केवल म० .६ के स्थान पर है :

मन को वांछित पाएउ अपार।

(३) स्वीकृत ११७.६ का पाठ म० में है :

तिण विन वउलावीया वारह मास।

इसके स्थान पर पं० में है :

हिवइ ताह स्युं हुवा चीरी विवहार।

अ० में दोनों पाठों की पंक्तियाँ है, इसलिए कडवक में कुल छः के स्थान पर सात चरण हो गए हैं जो ग्रन्थ की छंद-योजना के विरुद्ध है।

(४) स्वीकृत ६४.४ का पाठ म० में है :

वलि वलि वइसइ छइ राजकुमारि।

पं० में इसका पाठ है :

भोली तोथी भलीय दवदंती हे नारि।

अ० में दोनों पाठों की पंक्तियाँ है।

(५) स्वीकृत ५८ का पाठ म० में है :

साधण ऊभी रे प्रउलि दुवारि

रतन जडित सिरि तिलक निलाडि।

जाल जालंषी गोरडी।

सोना की पाइल झलकइ छइ पाइ।

रतन जडित सिरि राषडी।
तेह नइ नाह कउ ऊलग जाइ।

और पं० परम्परा का पाठ है :

साधण ऊभी छइ टेकि पगार।
कडिह पटोली चूनडी सार।
काने हो कुन्डल झिममिगइ।
पागा हो पाइल षरीय सुचंग।
हीरा जडित माथंइ राषडी।
मोनइ सरब गर्ति बीसरी थारी चीत।
राति दिवस चलि चलि करउ।
स्वामी था धरि छइ राजा किसी इह रीति।

अ० में इस विषय के दो कडवक हैं :-अ० १०६, तथा अ० ११०। अ० १०६ म० पाठ का है— केवल उसमें म० की .३ नही औरतीन अन्य पक्तियॉ भी है। अ० ११० पं० पाठ का है—केवल पं० पाठ की प्रथम पॉच पंक्तियो के स्थान पर उसमें भिन्न पंक्तियॉ है।

(६) म० ५३ है :

चालउ उलगाणउ लेइ छइ सउण।
राजा नइ चालतां वरजस्यइ कउण।
सात वरस आगे रही।
चीरी देइ नवि मोकल्यु कोइ।
हिवइ कइं गोरी तपइ।
इसीय बातां नहु जुगतीय न होइ।।

और पं० ७१ है :

जइ धण मरसी गंग माहे जाइ।
ऊलग जातां जी तो न रहाइ।
इसा बचन किम वोलिजइ।

मरस्या जे निकुलीणी नारि।
तुं तउ कुलवंती किम मरइ।
एतउ झोर भिसि छोड़ी है नारि।।

अ० ८१ में प्रथम पाँच पं० ७१ की हैं, और .६, .७, .८ हैं :

मइं नवि छोड़ी तू चितड उतारि।
इवइ गोरडी तू तपै।
अजुगती वात न वोलीय नारि।

अ० .६ पं० .६ से तुलनीय है, और अ० .७, .८ स्पष्ट ही म० .५, .६ हैं।

(७) म० १०६ है :

राणी सं कोक्या संपूरण रिणवास।
वंदिडी सरस वोलावीया दास।
कोक्या पंच महाजना।
तिलक संजोइ ए दीधउ छइ मान।
एक अंतेउर वाहिरउ।
देस उडीसा कउ परधान।।

पं० ११७ है :

तठइ राणी जी सरव कोक्या रिणवास।
तिलक संजोइ नइ दीधउ जी ग्रास।
छानउ पूरव्या राइ थी।
राणी भाई कीधउ राय चहुआण।

अ० में इस आशय के दो कडवक हैं—अ० १२६ जो म० पाठ का है, और अ० १५३ जो पं० पाठ का है।

१७. अ०<म०+न०

(१) स्वीकृत १७. २ का पाठ म० तथा न० में क्रमशः है :

म० सात सपी मिलि कलस वंधाइ।
न० सरव सोहागिणि कौतुग जाइ।

अ० में दोनों पाठों की पंक्तियाँ हैं, इसीलिए कडवक में एक पंक्ति बढ़ गई है। यह ध्यान देने योग्य है कि उपर्युत दोनों पाठ इन प्रतियों के अतिरिक्त अन्यत्र पूर्णतः नहीं मिलते—स० समूह का पाठ म० के निकट है, और पं० समूह का न० के निकट है।

समूहों की प्रतियाँ अपने समूह के अन्तर्गत एक दूसरे के कितना निकट है यह नीचे के विवेचन से प्रकट होगा।

१८. म० समूह की प्रतियाँ

म० समूह की दोनो प्रतियों में वे विकृतियाँ तो पाई ही जाती हैं जिनका उल्लेख म० के सम्बन्ध-सूत्र से ऊपर हो चुका है, निम्नलिखित विकृतियाँ और भी उनकी आत्यंतिक सन्निकटता प्रमाणित करती है :

(१) दोनो में म० ११.१ है :

दीन्ही सोपारीय हरषीयउ राय।

किन्तु यह स्वीकृत १०.१ है, और इनमें भी इस प्रकार है।

(२) दोनो में स्वीकृत १७.५, .६ नहीं हैं।

(३) दोनों में १६.६ है :

पालषी परदल अंत न छेह।

किन्तु यह स्वीकृत १३.६ है, और इनमें भी इस प्रकार है।

(४) दोनों में म० १७.४, .५, .६ हैं :

बाजा-बाजइ-घुरइ नीसाण।

राजा आवीयउ परणिवा।

षेहाडंबर तिहां छाइयउ भाण।

किन्तु ये पंक्तियाँ स्वीकृत १५.४, .५, .६ है, और इनमें भी इस प्रकार है।

(५) दोनों मे स्वीकृत १९.६ है :

दीन्हो अरथ नइ गरथ भंडार।

किन्तु यह स्वीकृत २०.४ है, और इनमें भी इस प्रकार है।

(६) दोनों में स्वीकृत २१.४, .५ हैं :

दीन्हो अरथ नइ गरथ भंडार।

दीन्हो छइ देस सवालपउ।

किन्तु यह स्वीकृत २०. ४, .५ है, और इनमे भी इस प्रकार है।

(७) दोनों में स्वीकृत २७.२ का पाठ है :

वाजा जी वाजइ नीसाणे घाउ।

किन्तु यह स्वीकृत २५.२ है, और इनमें भी इस प्रकार है।

म० केवल ३८ छन्द तक है, और उपर्युक्त विकृति-साम्य के स्थल केवल इन्हीं ३८ छन्दों तक के है। इसी से दोनों के प्रतिलिपि-सम्वन्ध की सन्निकटता का अनुमान किया जा सकता है।

१६. पं० समूह की प्रतियाँ

पं० समूह की समस्त प्रतियो में वे विकृतियाँ पाई जाती है जिनका उल्लेख पं० के सम्वन्ध-सूत्र से ऊपर हो चुका है। विकृति-साम्य के और अधिक उदाहरण इस समूह के सम्वन्ध मे देना अनावश्यक होगा।

केवल ग्या० इस प्रसंग में उल्लेखनीय है, क्योंकि वह कहीं-कहीं अपने समूह से भिन्न और म० समूह से प्रभावित पाठ देती है :

(१) स्वीकृत ११८ = पं० २२६ तथा तं० २२६/१ प्रायः एक ही छन्द हैं, और यह पुनरावृत्ति पं० समूह भर मे पाई जाती है, केवल ग्या० इसका अपवाद है।

(२) निम्नलिखित पंक्ति पं० समूह में दो वार आती है : एक वार यथा स्वीकृत ८६.२, तथा पुनः यथा पं० २२७/२.२ के रूप में :

तइं मोनइ दीधी थी जीमणी वांह।

किन्तु ग्या० मे यह पुनरावृत्ति नही है।

(३) म० ७६ का पाठ पं० समूह भर में भिन्न हैं, किन्तु ग्या० मे वह म० जैसा ही है।

(४) स्वीकृत २०.२ का पाठ म० में है।

सयल अंतेउर लीयउ रे बुलाइ।

और पं० समूह में है :

भाणमती राणी कुमरि की माइ।

ग्या० में दोनों पाठों की पंक्तियॉ है, इसीलिए उसमें इस कडवक में एक पंक्ति अतिरिक्त हो गई है।

(५) स्वीकृत ६२.३, .४, .५ इन (म० ग्या०) में हैं :

छंडिया चौबारा चौषंडी।

छंडया हो संइभरि नागरचाल।

छोडयउ देस सवालषउ।

किन्तु ये क्रमशः स्वीकृत ६७.३, २०.६, ३८.५ है, और इनमे भी इस प्रकार है।

२०. अ० समूह की प्रतियाँ

अ० समूह की तीनों प्रतियों में वे विकृतियॉ पाई जाती है जिनका उल्लेख ऊपर अ० के सम्बन्ध-सूत्र से हो चुका है। विकृति-साम्य के और अधिक उदाहरण देना यहॉ अनावश्यक होगा। केवल एक और विकृति-साम्य का उल्लेख यथेष्ट होगा।

(५) म० १२८ अ० में अ० १७६ तथा अ० १६० के रूप में दो बार आया हुआ है। इन अन्य प्रतियों में भी यह पुनरावृत्ति इस प्रकार मिलती है।

२१. स० समूह की प्रतियाँ

प्र० स० में वे विकृतियॉ तो पाई ही जाती है जिनका उल्लेख ऊपर स० के सम्वन्ध-सूत्र से हो चुका है। उनके अतिरिक्त भी बहुतेरी पाई जाती है। केवल निम्नलिखित का उल्लेख यथेष्ट होगा।

(१) स्वीकृत १७ इनमें इस प्रकार है :

तोरण आवियो वीसलराय।
पंच सखी मिल देखवा जाय (कलस वंदावि—स०)।
मोतीयां का आपा हूया (किया—स०)।
कुंकुं कंदन तिलक सिंदूर
अवली सवली आरती।
जाणे कि तोरण उगियो सूर।।

किन्तु यही छंद दो वार अन्यत्र भी थोड़े से शव्दांतर के साथ इन प्रतियों मे इस प्रकार आता है।

स० १. २६=प्र. १.२६ है :

परणवा चालियो वीसलराय।
पंच सपी मिलि कलस वंधाय (वंदावि—स०)।
मोतियाँ का आपा हूया (किया—स०)।
कुंकुं चंदन पाका पान।
अवली सवली आरती।
जाइ वधेरै दीयो मेल्हाण।। (तुलना स० १. ३०. १.)

स० १.४८=प्र० १.४५ है :

धार नगरी आव्यौ वीसलराय।
पंच सपी मिलि देपिवा जाय।
मोती थाल भराविया।
माहि वीजोरउ तिलक सिदूर।
अवली सवली आरती।
जाणि प्रत्यक्ष उगियो सूर।।

(२) स्वीकृत १५.४, .५ का पाठ इनमें इस प्रकार है :

व्राह्मण उचरइ वेद पुराण।
मंगल गावई कामनी।

किन्तु यह स्वीकृति १४. २, ३ हैं, और इनमें भी इस प्रकार है।

(३) स्वीकृत २५. ३ का पाठ इनमें है :

चौरी चढ़ियो राजा भोज की।

किन्तु यह स्वीकृत २७. ६ है, और इनमें भी इस प्रकार है।

(४) स्वीकृत ४४. ७ का पाठ इनमे है :

कह्यउ हमारउ जइ सुणइ।

किन्तु यह स्वीकृति ५७. ३ है, और इनमें भी इस प्रकार है।

(क) स्वीकृत ५०. १ का पाठ इनमें है :

पंच सषी मिलि बैठी छइ आइ।

किन्तु यह स्वीकृत ५२.१ है, और इनमें भी इस प्रकार है।

(६) स्वीकृत ८७.५ तथा स्वीकृत १०५.५ का पाठ इनमें हैं:

एक सरां धरि आवजू।

किन्तु य स्वीकृत ६३.३ है, और इनमें भी इस प्रकार है।

(७) स्वीकृत १०५.५, .६ का पाठ इनमें हैं :

चढ़तो जोबन किहां लहेस।

किन्तु यह स्वीकृत १०४.६ है, केवल स्वीकृत १०४.६ का पाठ इनमें भिन्न है।

(८) स्वीकृत १२२.४ का पाठ इनमे है :

कूंकूं चंदन तिलक (सिरह—स०) सिन्दूर।

किन्तु यह स्वीकृत १७.४ है, और इनमें भी इस प्रकार है।

(९) स्वीकृत १२५. ४ का पाठ इनमें है :

निगुणी राजा थारौ किसौ बेसास।

किन्तु यह स्वीकृत ४५. २ है, और इनमें भी इस प्रकार है।

(१०) स० ३. ६३=प्र० ३. ६१ की .३ है :

उलिगाणउ घरि चालीयौ।

किन्तु यह स्वीकृत १०६.३ है, और इनमें भी इस प्रकार है।

(११) स० १. १३. ५=प्र० १. १०. ५ है :

बेटी राजा भोज की।

किन्तु यह स्वीकृत ८. ५ है, ओर इनमें भी इस प्रकार है।

(१२) स० १. २०. ६=प्र० १. २०.६ है :

राजमती दीया (दीई—स०) वीसलराय।

किन्तु यह स्वीकृत ८.६ है, और इनमें भी इस प्रकार है।

(१३) निम्नलिखित पंक्ति अन्य स्थानों के अतिरिक्त निम्नलिखित स्थानों पर भी इन प्रतियों में आई है :

वाजित्र वाजइ नीसाणे धाइ।

स० १. २१. २=प्र० १. २१. २

स० १. २५. २=प्र० १. २५. २

स० ३. ६७. २=प्र० ३. ६५. २

स० ४. २६. २=प्र० ४. २५. १

स० ४. ३५. १=प्र० ४. ३४. १

स० ४. ३६. २=प्र० ४. ३५. २

किन्तु यह स्वीकृत १२०. २ है, और इनमें भी इस प्रकार है।

(१४) स० १. ३३. ५ = प्र० १. ३३. ५ और

स० ४. १३. ४ = प्र० ४. १३. ३ है :

मेघाडंबर सिरि छाहीयो (छत्र दीयो राय—स० ४.१३.४)।

किन्तु यह स्वीकृत १४.५ है, और इनमें भी इस प्रकार है।

(१५) स० १. ३७. १,. २ = प्र० १. ३७. १, .२ और

स० १. ५१. १,. २ = प्र० १.४८. १. २ है :

देस मालागिर हूयो उछाह।

राजमती को रच्यो वीवाह।

किन्तु यह पंक्तियाँ स्वीकृत १६. १, २ है, और इनमें भी इस प्रकार हैं।

(१६) स०१.५०.६ = प्र० १.४७.६ है :

तोरण आवीयौ बीसलराय।

किन्तु यह स्वीकृत १७.१ है, और इनमें भी इस प्रकार है।

(१७) स० १६.५.६=प्र० १.५५.६ है :

जइ घरि आवी जाति पमारि।

किन्तु यह स्वीकृत १०.६ है, और इनमें भी इस प्रकार है।

(१८) स० १.७७.६=प्र० १.७३.६ है :

राजमती रंग (रमै—प्र०) बीसलराय।

किन्तु यह स्वीकृत ८.६ है, और इनमें भी इस प्रकार है।

(१६) स० २.१३.२=प्र० २.१०.२ है :

काई स्वामी तुं ओलग जाइ।

किन्तु थोड़े अंतर के साथ यह स्वीकृत ३७.१ है, और इनमें भी इस प्रकार है।

(२०) निम्नलिखित पंक्ति इन प्रतियों में अन्य स्थानों के अतिरिक्त निम्नलिखित स्थानों पर भी आई है :

कह्यउ हमारउ जउ सुणइ।

स० २.१६.३=प्र० २.१५.३,

स० २.२३.३=प्र० २.२२.३,

स० २.१४.३=प्र० २.१३.३,

स० २.२८.३=प्र० २.२५.३,

स० २.६६.५=प्र० २.६३.५।

किन्तु यह स्वीकृत ५७.३ है, और इनमें भी इस प्रकार है।

(२१) स० २.२४.४=प्र० २.२३.४ है :

पांडया हूँ थारी गुण केरी दास।

किन्तु यह स्वीकृत ५५.१ है, और इनमे भी इस प्रकार है।

[प्र० २.२३ में स० २.२४ तथा स० २.२५ की पंक्तियाँ मिल गई है, कारण यह है कि स० २.२४.४ तथा स० २.२५.१ में पाठ-साम्य के कारण प्रतिलिपिकार वीच की पंक्तियों को छोड़कर आगे वढ़ गया।]

(२२) स० ३.६१.३= प्र० ३.८६.३ है :

केलि गरभ जिसी कूंवली।

किन्तु यह स्वीकृत १२८.३ है, और इनमें भी इस प्रकार है।

(२३) निम्नलिखित पंक्ति इनमें अन्य स्थानो के अतिरिक्त निम्न स्थानों पर भी आई है ;

कर जोडी नरपति कहइ।

स० १.१०.३ = प्र० १.८/१.३,

स० १.१२.५ = प्र० १.६/२.५,

स० ४.१.३ = प्र० ४.१.३।

किन्तु यह स्वीकृत १.५ है, और इनमें भी इस प्रकार है।

(२४) स० ४.१०.१,२ = प्र० ४.१०.१,२ है :

व्राह्मण राजन कियो परवेस।

लेइ वीजोरौ मिल्यो नरेस।

किन्तु यह स्वीकृत १०३.१,.२ हैं, और इनमे भी इस प्रकार हैं।

(२५) स० ४.२४.२ = प्र० २३.४.२ तथा

स० ४.४२.२ = प्र० ४.४०.२ है :

गोकल माहै जिसो (सोहै—स०) गौव्यंद।

किन्तु यह स्वीकृत १६.६ है, और इनमें भी इस प्रकार है।

(२६) स० १.२६.६ = प्र० १.२६.६ है :

जाइ वघेरैं दीयो मेल्हाण।

किन्तु यह स्वीकृत १४.१ है, और इनमें भी इस प्रकार है।

(२७) स० ४.३१.७=प्र० ४.३०.७ है :

मोतीयां का आषा हूया (किया—स०)।

किन्तु यह स्वीकृत १७.३ है, और इनमें भी इस प्रकार है।

(२८) स० ४.३६.३ =प्र० ४.३५.३ है :

गढ माहि गूड़ी ऊछली।

किन्तु यह स्वीकृत १२०.३ है, और इनमें भी इस प्रकार है।

(२९) स० ४.३७.५=प्र० ४.३६.५ है :

राजा राणी सूं मीलइ (मिल्यो—प्र०)।

किन्तु यह स्वीकृत १२८.५ है, और इनमे भी इस प्रकार है।

(३०) स्वीकृत ११४ का जो पाठ इनमें है, उसमें .२ छूटी हुई हैं। शेष समस्त प्रतियों में तो यह पंक्ति है ही, छन्द-योजना तथा प्रसंग की दृष्टि से भी यह पंक्ति अनिवार्य है।

निम्नलिखित पंक्तियाँ इनमें दो बार आती है :

(३१) पालीय परगह अन्त न पार।

यथा स० १.३२.४ = प्र० १.३२.४ तथा स० १.३४.४=प्र० १.३४.४।

(३२) धार नगरी चाल्यो बीसलराय।

यथा स० १.४८.१ = प्र० १.४५.१ तथा स० १.५०.१=प्र० १.७४.१ में।

(३३) राव कहइ सुणि राजकुमारि।

दूमनी काई होंयडइ बर नारि।

यथा स० २.२३.१, .२=प्र० २.२२.१,.२ तथा स० २.१४.१,.२ = प्र० २.१३.१,.२।

(३४) नाल्ह-रसायण नर भणइ।

यथा स० २.८५.३=प्र० २.७८.३, तथा स० २.८६.३=प्र० २.७६.३।

३५. प्रोहित जोवै प्रोलि पगार।

यथा स० ३.४५.६ = प्र० ३.४२.६ तथा स० ४.४६.२ = प्र० ३.४३.१।

(३६) राम दीसइ जिसो पूनम चन्द।

यथा स० ४.२६.६=प्र० ४.२५.६ = तथा स० ४.२४.१=प्र० ४.२३.१।

(३७) राइ बदन जिसो पूनिम (पूरण—स०) चन्द।

यथा सं० ४.२४.६=प्र० ४.२३.४ तथा स० ४.२४.१=प्र० ४.२३.१

[और ऊपर का (३६) भी उसके साथ लिया जाइ तो यह पुनरावृत्ति चार वार होती है।]

निम्नलिखित पंक्तियाँ इनमें चार वार आती हैं :

(३८) मेल्ही चादर वैसणइ :

यथा स० २.८४.५=प्र० २.७७.५,

स० २.८३.५=प्र० २.७६.५,

स० ३.४८.३=प्र० ३.४५.३,

स० ३.६१.३=प्र० ३.५७.३

(३९) देवीयो वेदीयो चोगणो मान।

यथा स० २.८३.४=प्र० २.७६.४,

स० २.४८.२=प्र० २.४६.२,

स० ३.५०.४=प्र० ३.४७.४,

स० ३.६१.२=प्र० ३.५७.२।

५. प्रतियों का पाठ-सम्बन्ध

ऊपर-पाठ सम्बन्ध के जो सूत्र सामने आए हैं, उनके आधार पर विभिन्न प्रतियों के पाठ-सम्बन्ध को इस प्रकार व्यक्त किया जा सकता है :
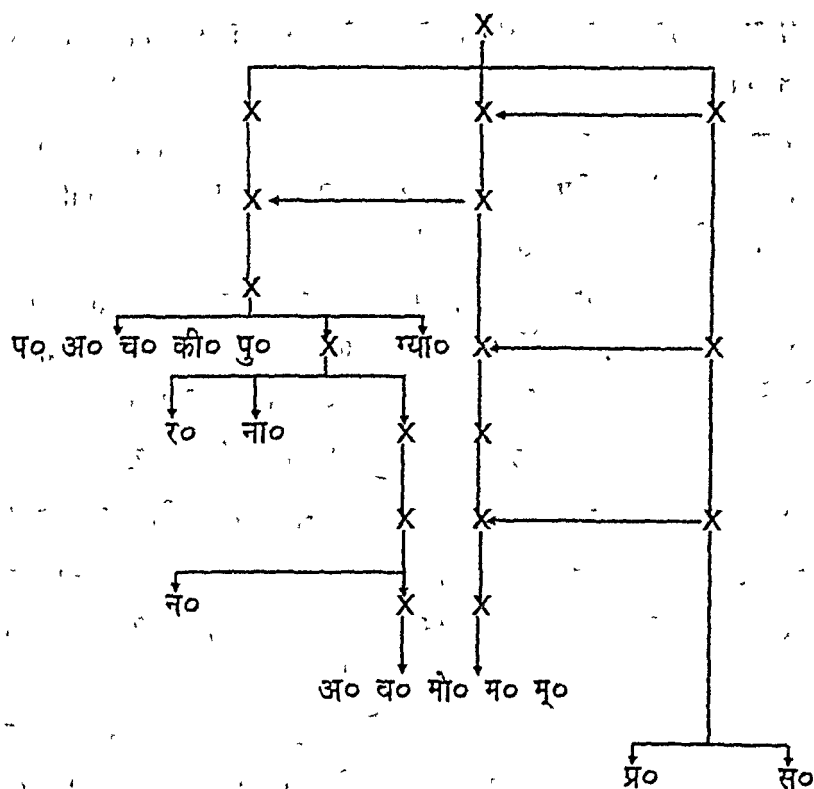
ऊपर हमने प्रतियो का जो पाठ-सङ्गठन देखा है, वह भी इस पाठ-सम्वन्ध से होता है।

६. पाठ-निर्धारण

उपर्युक्त पाठ-सम्बन्ध के आधार पर हम पाठ-निर्धारण के विषय में इन निष्कर्षों पर पहुॅचते है :—

(१) अ०व०मो० अर्थात् अ०समूह म० तथा पं० समूहों के पूर्ण मिश्रण का परिणाम है, इसलिए पं० तथा म० समूह की विद्यमानता में संपादन में उसका

आधार न ग्रहण करना चाहिए क्योंकि उसके मूल उपादान म० समूह और पं० समूह प्राप्त हैं।

(२) इसी प्रकार न० पाठ पं० समूह के साथ म० समूह के किसी पूर्वज के मिश्रण का परिणाम है, इसलिए पं० तथा म० समूहों की विद्यमानता में संपादन में इसका आधार भी न ग्रहण करना चाहिए।

(३) ग्या० पाठ पर म० के किसी पूर्वज का प्रभाव स्पष्ट है, इसलिए पं० समूह का वह शुद्ध प्रतिनिधि नहीं माना जा सकता। पं० समूह का पाठ निर्धारित करने के लिए उस समूह की शेष प्रतियों का ही आश्रय लेना होगा।

(४) म० समूह का पाठ उक्त समूह की प्रतियों से निर्धारित होगा।

(५) इसी प्रकार स० समूह का पाठ उक्त समूह की प्रतियों से निर्धारित होगा।

(६) पं० समूह का पाठ म० समूह के किसी पूर्वज का ऋणी है, इसलिए अन्य कारणों के अभाव में इन दोनों सापेक्ष समूहों का पाठ-साम्य मात्र पाठ की प्रामाणिकता के लिए निर्णयात्मक नही हो सकेगा।

(७) म० समूह का पाठ स० समूह के किसी पूर्वज का ऋणी है, इसलिए अन्य कारणों के अभाव में इन दोनों सापेक्ष समूहों का पाठ-साम्य मात्र पाठ की प्रामाणिकता के लिए निश्चयात्मक नहीं हो सकता।

(८) पं० समूह का पाठ स० समूह का अथवा उसके किसी पूर्वज का ऋणी नहीं है, इसलिए इन दोनों समूहों का पाठ - साम्य मात्र पाठ की प्रामाणिकता के लिए साधारणतः प्रामाणिकता माना जाना चाहिए।

(९) जिन विषयों में म० पं० तथा स० तीनों समूहों में पाठ-साम्य है, उनकी प्रामाणिकता स्वतः सिद्ध मानी जानी चाहिए।

(१०) जिन विषयों में म० तथा पं० समूह एकमत हों, और स० भिन्न हो, अथवा म० तथा स० समूह एकमत हों और पं० समूह भिन्न मत का हो, उन

विषयो में शेष समस्त वाह्य और अन्तरंग संभावनाओं के साक्ष्य से ही पाठ-निर्णय करना चाहिए।

कहने की आवश्यकता नहीं कि इन्ही सिद्धान्तों के आधार पर ग्रंथ का संपादन किया गया है। इस संस्करण में कुल १२८ छंदों को प्रामाणिक मान कर उपर्युक्त प्रकार से उनका संपादन किया गया है। इन १२८ छंदों में से १०८ तो ऐसे है जो खंडित प्रतियों के खंडित अंशो को छोड़कर न केवल संमस्त समूहों बल्कि प्रत्येक समूह की समस्त प्रतियों में मिलते है। पुनः संलग्न तालिका से ज्ञात होगा कि शेष मे से दस तो ऐसे है कि तीनों समूहों में पाए जाते है, यद्यपि यह अवश्य है कि वे किसी समूह-विशेष की एकाध प्रति में नही पाए जाते है। और भी तीन की कुछ पंक्तियाँ अन्य छंदो के साथ इन प्रतियों मे भी मिलती है जिसमें ये छंद नही मिलते है। केवल सात ऐसे है जो केवल पं० तथा स० समूहो में मिलने के कारण स्वीकृत किए गए है, और ये हैं स्वीकृत ६, २४, ८७, ११४, १२१, १२२, १२३ और १२७। इस तथ्य की ओर सकेत करने के लिए इन छंदों पर आगे दिए गए संपादित पाठ मे तारक चिह्न लगा दिया गया है।

'बीसलदेव रास' एक गीति-प्रबंध है। इस दृष्टि से भी देखने पर इन १२८ छंदो मे कथा-निर्वाह भली भाँति हो जाता है; यह अवश्य है, कि कही-कही पर अस्वीकृत छंदो में से कोई-कोई कथा की पूर्णता अथवा उसमे अन्य प्रकार के चमत्कार लाने मे सहायक हो सकते है, किंतु प्रक्षेपों का ठीक यही कार्य भी हुआ करता है। अतः इस प्रलोभन से बचकर आधुनिक पाठालोचन की वैज्ञानिक पद्धति द्वारा मूल के निर्धारित छंदो को ही स्वीकार किया गया है।

ग्या० रा० तथा न० मे जो अंश खंडित है उनके अतिरिक्त उन प्रतियों के शेष अंशों तथा प्रतियो मे जो छंद प्राप्त नही है, और फिर भी स्वीकृत किए गए है, उनकी तालिका निम्नलिखित है :—

	स्वीकृत	म०	पं०	र०	न०	प्र०
(१)	६	१	१			
(२)	९					
(३)	२२					
(४)	२४	१				
(५)	२६	१[1]				१[1]
(६)	३८					
(७)	३९					
(१०)	६३					१
(११)	६६				१	
(१२)	७९			१		
(१३)	८२					१
(१४)	८६	१[1]				
(१५)	८७	१				
(१६)	११४	१			१	
(१७)	१२१	१				
(१८)	१२२	१				
(१९)	१२३	१				
(२०)	१२७				१	
		१०	१	१	२	५

अ० चा० और ग्या० तथा अ० व० और मो० में उपर्युक्त स्वीकृत स
छंद प्राप्य हैं। ना० में भी यह सभी छंद हैं, केवल स्वीकृत ५५ नही है। ि

१. इन छंदों की एकाध पंक्तियाँ अन्य छंदों मे इन प्रतियों में भी है।

ना० में यह छंद भूल से छूटा हुआ है, क्योकि छंद के साथ छंद-संख्या और अगले छंद की प्रथम चार पंक्तियाँ भी छूट गई है।

७. कथावस्तु और उसकी ऐतिहासिकता

निर्धारित पाठ के अनुसार कथा संक्षेप मे इस प्रकार है (कोष्ठकों में दी हुई संस्थाएँ इस संस्करण के छंदों की है।) :—

[धार-नरेश परमार] **भोजराज** की सभा बैठी; रानी ने राजा से निवेदन किया कि जीवन-काल में ही कन्या (राजमती) का विवाह योग्य वर देखकर कर देना चाहिए (६)। अतः राजा ने ब्राह्मण और भाट के द्वारा अजमेर के शासक **बीसलदेव** चहुवान के पास लग्न की सुपारी भेजी (८,९)। बीसलदेव ने संवंध स्वीकार कर लिया (१०)।

धारा के लिए बारात चल पड़ी (१३)। मार्ग में **बाघेरा** में पड़ाव हुआ (१४)। पाँचवी मंजिल में वह चित्तौरगढ़ पहुँची (१५)। फिर वह धार पहुँची (१६)। **राजमती** और बीसलदेव का विवाह हुआ (१७-१८)। बीसलदेव को दायज में **आलीसर** (१९), **माल** (१९), **सपादलक्ष देश** (२०), **साँभर सर** (२०), **नागर चाल** (२०) **विछाल** (२०), **तोडा** (२०), **उउँक** (२०), **बूँदी** (२०), **कुडाल** (२०), **मंडोवर** (२१), **सोरठ** (२०), **गुजरात** (२०), तथा बारह गढ़ो के साथ चित्तौरगढ़ (२२) प्राप्त हुए। राजमती को लेकर (२५) बीसलदेव अजमेर आ गया (२६)।

एक दिन राजमती से बीसलदेव ने गर्वपूर्वक कहा कि उसके समान दूसरा राजा नही है, क्योकि उसके राज्य मे साँभर सर से नमक निकलता है, चारो ओर **जेसलमेर** का थाना है, एक लाख घोड़ों पर पाखरे पड़ती है, और अजमेरगढ़ मे वैठकर वह राज्य करता है (२८)। राजमती ने उत्तर में कहा कि उसे गर्व न करना चाहिए, क्योकि उसके समान अनेक राजा है : एक तो **उड़ीसाधिपति** है जिसके राज्य मे उसी प्रकार खानों से हीरा निकलता है जिस प्रकार बीसलदेव के राज्य में नमक निकलता है (२९) बीसलदेव ने इस पर उससे प्रश्न किया कि उसे

यह बात कैसे ज्ञात हुई—वह तो अभी बारह वर्ष की थी, और उसका जन्म भी जैसलमेर में हुआ था (३०)। राजमती ने कहा कि वह पूर्वजन्म में उड़ीसे में हिरणी होकर जन्मी थी और उसका देहांत जगन्नाथ स्वामी के द्वार पर हुआ था। (३१)। उसने मरण-काल में जगन्नाथ देव का स्मरण किया था और जब उसे उनका दर्शन प्राप्त हुआ था, उसने उनसे पूर्व देश में पुनः जन्म न मिलने का वर माँग लिया था (३२)। उसने कहा कि पूर्व देश में लोग घृणित होते हैं, चतुरता-ग्वालियर गढ़ मे देखी जाती हैं, कामिनियाँ जैसलमेर की और पुरुष अजमेरगढ़ में अच्छे होते हैं (३३)। इसीलिए उसने जगन्नाथ देव से मारू देश में जन्म का वर माँगा (३४)। बीसलदेव को राजमती की यह बात लग गई, और उसने कहा कि राजमती ने उसकी विसराहना की है, इसलिए वह बारह वर्षों तक उससे कोई संबंध न रक्खेगा, और वह उड़ीसा में राज-सेवा करने के लिए जावेगा ताकि उसके घर में भी हीरे की खानि आ जावे (३५)।

राजमती को जब अपनी भूल ज्ञात हुई, उसने बहुत अनुनय-विनय की और अनेक प्रकार से वीसल देव को उसके इस संकल्प से विरत करने का यत्न किया, किंतु कोई फल न निकला (३६-५३)। तदनंतर उसने ज्योतिषी को बुलाकर कहा कि किसी प्रकार चार महीने तक वह उसके स्वामी को रोके, ताकि इस बीच वह उसे समझा-बुझा ले (५४-५५)। ज्योतिषी ने ऐसा ही किया (५६)। फिर भी राजमती को कोई सफलता नही मिली और राजा शकुन लेकर उड़ीसा यात्रा के लिए निकल पड़ा (५७)। राजमती ने एक वार पुनः वीसलदेव से अनुरोध किया कि वह उसको छोड़ कर न जावे (५८), किंतु फिर भी वह अकृतकार्य ही रही। (५९) और अंततः वीसलदेव को उसने विदा दी (६०-६१)।

राजा ने जैसलमेर छोड़ा, टोडा और अजमेर छोड़ा, टउँक और विछाल छोड़ा, रांणा का रनिवास छोड़ा, वनास उतर गया (६२)। फिर उसने चंवल का पिछला खाल (नाला)-पार किया और शकुनों के साथ वह आगे बढ़ा (६६)। राजमती

उसके वियोग में दिन काटने लगी (६७-८२)। एक कुटनी ने उसे सत से विचलित करना चाहा किन्तु राजमती ने उसे पास न फटकने दिया और उसे पीटकर निकलवा दिया (८३-८४)।

अवधि के समाप्त होने का समय आया तो राजमती पंडित (पुरोहित) के पास आई, और उसके द्वारा बीसलदेव के पास उसने संदेश भेजा (८५-८७)। मौखिक संदेश के अतिरिक्त उसने एक पत्रिका भी उसके द्वारा भेजी (८८-९२)। उसने पंडित से बीसलदेव को जिस प्रकार भी संभव होता लिवा लाने का अनुरोध किया (९३-९४)। पंडित ने उससे बीसलदेव की उनहार पूछी, जिसे उसने बताया (९५-९६)। पंडित ने राजमती को बीसलदेव को लाने का आश्वासन देते हुए प्रस्थान किया (९७-९८)।

मजे-मजे में चलकर पंडित सातवे मास उड़ीसा पहुँचा (९९-१००)। वह जगन्नाथ देव के स्थान पर गया (१०१) और तदनंतर राज-द्वार पर पहुंचा (१०२)। वह उपहार लेकर बीसलदेव से मिला (१०३) तदनंतर उसने उसे राजमती की पत्रिका दी और उसका संदेश सुनाया (१०४)। उसने राजमती की विरह-दशा का भी निवेदन किया (१०५)। उड़ीसा के राजा को जब यह ज्ञात हुआ कि बीसल देव घर जा रहा है, पट्टरानी से उसने यह बताया (१०६)। पट्टरानी ने उसका विवाह कर देने का वचन देकर उसे रोकना चाहा (१०७), कितु बीसलदेव ने बताया कि उसकी हजार स्त्रियाँ है, जिनमें से एक उसकी बल्लभा है, जिसका पीहर मांडव और धार में है (१०८)। उड़ीसा के प्रधान अमात्य ने भी उसे समझाया कि वह उड़ीसा में रह जावे, कितु बीसलदेव इस पर तैयार न हुआ (१०९)। उड़ीसा के राजा ने बिदा करते हुए बीसलदेव को प्रचुर धन-राशि तथा बहुमूल्य हीरे-पत्थर दिए (११०)।

बीसलदेव ने उड़ीसा से प्रस्थान किया और इसकी सूचना के लिए एक पत्रिका उसने एक योगी के द्वारा अजमेर भेजी जो अपने योग बल से अजमेर शीघ्र पहुँच

सकता था और उसे राजमती की उनहार वताई (१११-११३)। राजमती को शुभ शकुन होने लगे (११४)। योगी अजमेर पहुँच गया (११५) और उसने राजमती को बीसलदेव की पत्रिका दी (११६-११७)। योगी ने राजमती को वताया कि तीसरे दिन राजा अजमेर पहुँच जावेगा (११९)।

बीसलदेव अजमेर आ गया (१२०-१२१)। राजमती ने उसके स्वागत के लिए श्रृंगार किया (१२२)। बारह वर्षों पर स्त्री से पति मिला (१२३) बारह वर्षों तक छोड़ रखने के संबंध में राजमती ने उलाहने दिये (१२४-१२६), तदनंतर दोनों प्रेमपूर्वक मिले (१२७-१२८)।

रचना में तीन ऐतिहासिक व्यक्तियों के नाम आते है : वीसलदेव, राजमती और भोज परमार। वीसलदेव (विग्रह राज) नाम के चार शासक हुए हैं किंतु राजमती नाम की कोई रानी ज्ञात नहीं है; बीसलदेव (विग्रहराज) तृतीय की रानी का नाम अवश्य सोमेश्वर के बीज्योल्याँ के शिलालेख में राजदेवी मिलता है। हो सकता है कि 'बीसलदेव रास' का कवि इसी राजदेवी को राजमती कहता हो, और उसका वीसलदेव वीसलदेव (विग्रहराज) तृतीय हो, जिसका समय सं० ११५० के लगभग पड़ता है। भोज परमार का समय सं० ११९२ के लगभग पड़ता है इसलिए रचना के तीनों व्यक्ति ऐतिहासिक है।[1]

किंतु इस रचना में शेष विवरण जो आते है, ऐतिहासिक नहीं है। राजमती भोज परमार की कन्या थी, यह निश्चित रूप से ज्ञात नहीं है। भोज कभी भी सोरठ, मंडोवर, गुजरात आदि का शासक था, यह इतिहास से प्रमाणित नहीं है। अजमेर और जैसलमेर उस समय तक बसे भी नहीं थे। अजमेर सं० ११६५ के लगभग अजयराज के द्वारा बसाया गया था, और जैसलमेर ख्यातो के अनुसार जेसल के द्वारा सं० १२१२ में—किंतु अन्य साक्ष्यों के अनुसार सं० १२५० के

१. दे० गौरीशंकर हीराचंद ओझा : नागरी प्रचारिणी पत्रिका, वर्ष ४५ (सं० १९०७), पृ० १६३-१६७।

लगभग—बसाया गया था। फिर, बीसलदेव तृतीय की उड़ीसा-यात्रा भी इतिहास से प्रकाशित नही है।[1] इसलिए यह प्रकट है कि रचना का ऐतिहासिक महत्व नगण्य है। वह केवल तीन ऐतिहासिक पात्रों को लेकर प्रचलित किसी किवदंती पर आधारित अथवा कल्पित रचना है।

८. रचना-तिथि

म० समूह में रचना-तिथि विषयक कोई छन्द नही है।

पं० समूह में निम्नलिखित छन्द (पं० २४५) मिलता है :—

संवत सहस सतिहत्तरई जाणि।
नल्ह कबीसरि कही अमृत वाणि।
गुण गुथ्यउ चउहाण का।
सुकल पक्ष पंचमी श्रावण मास।
रोहिणी नक्षण सोहामणउ।
सो दिन गिणि जोइसी जोडइ रास।।

न० समूह में (न० २७७) पहिली पंक्ति का पाठ है :—

संवत सहस तिहुत्तर जाणि।

शेष समस्त पाठ उसमें भी प्रायः पं० समूह का ही है।

अ० समूह में (अ० ३०६) .१, .४, .५ क्रमशः यथा निम्नलिखित हैं :—

संवत तेर सतोत्तरइ जाणि—
सुक पंचमी नइ श्रावण मास।
हस्त नक्षत्र रविवार सुं।

शेष समस्त पाठ प्रायः पं० समूह का ही है।

स० समूह के निम्नलिखित (स० १.६) छंद मिलता है :—

बारह सै बहोत्तराहां मॅझारि।
जेठ बदी नवमी बुधवारि।

---

१. दे० राजस्थानी, जनवरी १६४०, पृ० २२; नागरी प्रचारिणी पत्रिका, वर्ष ४७, (सं० १६६६), पृ० २५५ वही, वर्ष ५४, (सं० २००६), पृ० ४१।

नाल्ह रसाइण आरंभइ।
सारदा तुठि व्रह्माकुमारि।
कासमीरां मुख मंडली।
रास प्रगासों बीसलदे राइ।।

इस प्रकार हम देखते है कि एक प्रमुख समूह म० में तिथि-विपयक कोई छन्द नही है। पं०, न० तथा अ० समूहों में छन्द ग्रन्थ के अंत में आता है और स० समूह में आदि में। पुनः पं०, न० और अ० समूहो के पाठ परस्पर भी भिन्न है, और स० समूह के पाठ से वे किसी शव्द में भी साम्य नहीं रखते। पं०, न० और अ० में ही तीन भिन्न-भिन्न तिथियॉ मिलती हैं। ऐसी दशा में पाठालोचन के सिद्धान्तों के अनुसार इनमें से कोई भी मूल का नही माना जा सकता है। न० और अ० समूहों को छोड़ देने पर भी म०, पं० तथा स० समूहों में, अन्यथा कम से कम पं० और स० समूहों में, किसी प्रकार का पाठ-साम्य होने पर ही वह पाठ ग्रहण किया जा सकता था, किन्तु पं० ही नहीं, स० पाठ के साथ किसी भी अन्य समूह के पाठ का एक शव्द भी नही मिलता। ऐसी दशा में रचना-तिथि के छन्द पं० तथा स० समूहों में अलग-अलग स्वतन्त्र रूप से प्रक्षेप की भावना से रक्खे गए ज्ञात होते है।

पुनः ऊपर दिए गए चार पाठों से कम से कम छः तिथियाँ तो निकलती ही हैं :—

(१) पं० : सं० १०७७।

(२) न० : सं० १०७३।

(३) अ० : सं० १३७७ 'तेर सतोत्तरइ' ये दो भिन्न अर्थ लिए जा सकते हैं।

(४) अ० : सं० १३०७

(५) स० : सं० १२७२ 'वारह सै वहोत्तराहां' से ये दोनो अर्थ लिए जाते है।

(६) स० : सं० १२१२

चैत्रादि और कार्तिकादि—दो प्रकार के वर्षों के अनुसार इन छः की वारह तिथियॉ वन जाती हैं, और यदि गत और वर्तमान संवत् लिए जावें तो उपर्युक्त से कुल चौवीस तिथियाँ होती हैं। यदि और आगे अमान्त और पूर्णिमान्त मासों

के भेदों पर न भी जाएँ, तो यह चौवीस तिथियाँ क्या कम है। गणना करने पर इन चौबीस में कोई न कोई ठीक निकल ही आवेगी। गणना करके महामहोपाध्याय स्वर्गीय गौरीशंकर हीराचन्द ओझा ने सं० १२७२ की तिथि को कार्तिकादि वर्ष में लेने पर गणना से ठीक बताया।[1] किन्तु असंभव नहीं है कि उपर्युक्त चौबीस तिथियों की गणना करने पर दो-एक और भी ठीक निकल आवें। फिर १२७२ का पाठ सं० समूह का हैं जो, पाठ की दृष्टि से यद्यपि अमिश्रित है, किन्तु अत्यधिक प्रक्षेप-पूर्ण भी है—वस्तुतः यही समूह सब से अधिक प्रक्षेप-पूर्ण है। ऐसी दशा में इन छन्दों के आधार पर ग्रंथ की रचना तिथि निर्धारित करना उचित नही जान पड़ता।

तथ्य जैसा ऊपर कहा जा चुका है यह ज्ञात होता है कि विग्रहराज तृतीय की रानी का नाम राजदेवी था। उसी के सम्बन्ध में राजमती नाम से कुछ कहानियाँ समय पाकर प्रसिद्ध हो गईं। फिर भोज परमार आदि से उसे सम्बन्धित कर विग्रहराज तृतीय के बहुत बाद किसी नरपति नाल्ह नामक कवि ने इस ग्रन्थ की रचना कर डाली। किन्तु कितने बाद उसने यह रचना की, यह प्रश्न फिर भी बना रह जाता है।

एक प्रकार से और इस समस्या पर विचार किया जा सकता है, वह है प्रतियों की पाठ-परम्परा की दृष्टि से। हम ऊपर देख चुके है कि इस ग्रन्थ के पाठ के तीन मुख्य समूह हैं : म०, पं० तथा स०, न० तथा अ० केवल म० तथा पं० की विभिन्न स्थितियों के मिश्रण से बने है। इनमें से म० की प्रति यद्यपि प्राचीन है किन्तु उसकी प्रतिलिपि-तिथि अज्ञात है। किन्तु पं० समूह की प्राचीनतम प्रति सं० १६६३ की है, और स० समूह की प्राचीनतम प्रति सं० १६६९ की है।

ऊपर हम देख चुके हैं[2] कि मूल आदर्श को लेकर जो लगभग १२८ छन्दों का रहा होगा, पं० तक पहुँचने में पाठ-विकास की कम से कम चार स्थितियाँ पड़ती है : (१) उस पाठ की जो लगभग १२८ छन्दों का रहा होगा, (२) ४३

---

१. गौरी शंकर हीराचन्द ओझा : नागरी प्रचारिणी पत्रिका, वर्ष ५ (सं० १९९७), पृ० १६३-१६७।

२. देखिए ऊपर के 'प्रतियों का पाठ-संगठन' तथा 'पाठ सम्बन्ध' शीर्षक।

छन्द युक्त उस पाठ की जो उसमें म० के किसी पूर्वज़ के प्रभाव से आए होंगे, (३) ७४ छन्द युक्त उस पाठ की जो पं० में अपने प्रक्षेपों के रूप मे वढ़ते रहे होंगे, और जिन्होंने पाठ को उस स्थिति तक पहुँचाया होगा जहाँ से उसके आधार पर न० समूह के पाठ का विकास हुआ, और (४) ३ छन्द युक्त उस पाठ की जो अ० समूह के विकास के पूर्व पं० समूह में आ मिले होंगे। इसी प्रकार लगभग १२८ छन्दों के मूल आदर्श को लेकर स० तक पहुंचने में पाठ-विकास की कम से कम छः स्थितियॉ पड़ती हैं : (१) उस पाठ की जो १२८ छन्दो का रहा होगा, (२) २१ छन्द युक्त उस पाठ की जो म० की उस स्थिति की पाठ-वृद्धि मे सहायक हुआ जिससे न० समूह का निर्माण हुआ, (३) ६ छन्द युक्त उस पाठ की जो म० की उस स्थिति की पाठ वृद्धि में सहायक हुआ जिससे अ० समूह का निर्माण हुआ, (४) ३ छन्द युक्त उस पाठ की जो उसके अनन्तर भी म० की पाठ-वृद्धि मे सहायक हुआ, (५) १४१ छन्द युक्त उस पाठ की जो प्र० के अलग होने तक म० समूह की पाठ-वृद्धि में सहायक हुआ, और (६) १६ छन्द युक्त उस पाठ की जो स० प्रति की अपनी पाठ-वृद्धि का कारण हुआ।

इस प्रकार पं० की चार स्थितियां और स० की छः स्थितियॉ तो निश्चित रूप से ज्ञात हैं। असम्भव नहीं है कि और अधिक प्रतियॉ प्राप्त होने पर इस प्रकार की एक-दो अधिक स्थितियॉ और प्रकाश में आवें।

अव यदि प्रत्येक स्थिति के लिए औसत अवधि ५० वर्प की रक्खें—जो मेरी समझ में अधिक नही है—तो स० पाठ-परम्परा के अनुसार रचना की प्रथम प्रति का काल सं० १३६६ और पं० की पाठ-परम्परा के अनुसार रचना की प्रथम प्रति का काल सं० १४३३ के लगभग ठहरता है। अतः 'वीसलदेव रास' की रचना दोनों के वीच की तिथि सं० १४०० के लगभग हुई मानी जा सकती है।

जिन स्थानों के नाम 'वीसलदेव रास' (प्रस्तुत संस्करण) में आते है, उनमें से कोई भी सं० १४०० के बाद का नहीं प्रमाणित हुआ है, इसलिए इस तिथि के सम्वन्ध मे कोई ऐतिहासिक अड़चन भी नही ज्ञात होती है।

ग्रन्थों के रचना-काल पर भाषा की दृष्टि से भी विचार किया जाता है। श्री अगरचंद नाहटा ने ग्रन्थ की भापा की दृष्टि से लिखा है : "बीसलदेव रासो की भाषा सोलहवीं-सत्रहवीं शताव्दी की राजस्थानी भाषा है। जिन विद्वानो ने ग्यारहवीं से सत्रहवी शताव्दी तक की राजस्थानी भाषा का अध्ययन किया है, उनका यह मत हुए बिना नहीं रह सकता। ग्रन्थ में प्राचीन भाषा का अंश वहुत कम-नही के बरावर है।" और इस प्रसंग में पाद-टिप्पणी में उन्होने एक सुझाव यह भी दिया है कि सोलहवी शताब्दी मे नरपति नामक एक जैन कवि हुआ है, जिसका उल्लेख 'जैन गुर्जर कवियों' भाग १ मे हुआ हैं; असंभव नही कि 'बीसलदेव रास' का रचयिता भी वही हो।[१]

मेरा अपना विचार है कि उपर्युक्त कारणों से यह मानना असंभव है कि 'बीसलदेव रास' सोलहवी शताब्दी के किसी कवि की रचना है, उसकी भाषा के आधार पर जो परिणाम नाहटा जी ने निकाला है, उसके विषय मे यह जान लेना चाहिये कि जिन प्रतियों की भाषा के आधार पर उन्होंने यह परिणाम निकाला है, उनके ग्रन्थ के पाठ की अंतिम स्थितियों तक के प्रक्षिप्त छन्द मिले हुए है, जिनकी संख्या मूल से भी अधिक है। यह पाठ वृद्धि सोलहवी-सत्रहवी शताव्दी तक की हुई हो सकती है, इसलिए ग्रन्थ के अंतिम रूपों के आधार पर उनका अनुमान बहुत गलत नहीं कहा जा सकता। किन्तु प्राचीन ग्रन्थो का काल-निर्धारण प्रायः उन अंशों की भाषा के आधार पर किया जाना चाहिए जिनमे भाषा का प्राचीनतम रूप पाया जाता है, क्योंकि प्रतिलिपियों के होते-होते भाषा का रूप कुछ का कुछ हो जाता है। और प्रस्तुत संस्करण के पाठ की भाषा को सं० १४०० के आस-पास की किन्ही भी राजस्थानी रचनाओं की भाषा से मिलाकर यह बात देखी जा सकती है कि 'वीसलदेव रास' की भाषा लगभग उन्हीं के जैसी है।[२]

---

१. राजस्थानी, जनवरी १९४०, पृ० २१।

२. दे० तेस्सितोरी : 'पुरानी राजस्थानी' नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, तथा ग्रियर्सन : 'ओल्ड गुजराती ग्रामर', 'लिग्विस्टिक सर्वे आव इंडिया, भाषा ९, खण्ड २, पृ० ३५३-३६४।

जहाँ तक गुजरात के नरपति और 'वीसलदेव रास' के रचयिता नरपति नाल्ह के एक होने का प्रश्न है, यह नहीं कहा गया है कि गुजरात के 'नरपति' ने भी अपने को कही 'नाल्ह' कहा है, जवकि 'बीसलदेव रास' का रचयिता अपने को 'नाल्ह' कहता है। फिर जो पंक्तियाँ तुलना के लिए दोनों कवियों से दी गई है, उनमे से चार तो इस संस्करण में प्रक्षिप्त माने गए छंदों की है, और शेष तीन पंक्तियों में जो साम्य है यह साधारण है; उस प्रकार का साम्य देखा जावे तो मध्ययुग के किन्ही भी दो कवियों की रचनाओं में मिल सकता है। फिर 'वीसलदेव रास' में न जैन नमस्क्रिया है और न कोई अन्य वात मिलती है जिससे इसका लेखक जैन प्रमाणित होता हो। केवल आंशिक नाम-साम्य के आधार पर इस रचना को सोलहवी-सत्रहवीं शती के किसी जैन लेखक की कृति मानना तटस्थ वुद्धि से संभव नहीं ज्ञात होता है।

६. रासक तथा रास काव्य-परंपराएँ और वीसलदेव रास

'रास', 'रसायन', 'रासक', 'रासा' और 'रासो' कही जाने वाली रचनाएँ अपभ्रंश तथा हिंदी साहित्य में दो प्रकार की मिलती हैं : एक प्रकार की बहु रूपक (छंद) निवद्ध है उनमे अनेक प्रकार के छन्दों का प्रयोग हुआ मिलता है, और उसमें छंद-परिवर्तन द्रुत गति से होता दिखाई पड़ता है; दूसरे प्रकार की रचनाएँ अल्प रूपक (छंद) निवद्ध है—उनमें दो-चार प्रकार के छंद ही प्रयुक्त मिलते हैं और छंद-परिवर्तन केवल एकरसता-निवारण के लिए अत्यल्प मात्रा में किया गया दिखाई पड़ता है। दोनों परंपराओं का एक संक्षिप्त परिचय प्राप्त कर लेने पर उनका भेद स्पष्ट हो जावेगा।

वहु रूपक निवद्ध परम्परा

(१) इस परंपरा की एक अत्यंत महत्वपूर्ण कृति अपभ्रंश की 'संदेश रासक' है। इसके रचयिता एक मुसलमान कवि अब्दुल रहमान है। कृति के सम्पादक मुनि

१. संपादक-मुनि जिन विजय, प्रकाशक भारतीय विद्याभवन, बम्वई।

जिन विजय जी के अनुसार यह रचना शहावुद्दीन गोरी के आक्रमण के पूर्व की होनी चाहिए। इसमें विजयनगर (जेसलमेर) की एक विरहिर्णी की विरह गाथा वर्णित हुई है, जो वह एक पथिक के द्वारा अपने प्रवासी पति के पास भेजना चाहती है, किन्तु जैसे ही यह पथिक उसका सदेश लेकर आगे बढ़ता है, उसका पति प्रवास से लौटता दिखाई पड़ता है और दम्पत्ति आनन्द-पूर्वक मिलते है।

इसका कवि, जैसा उसने स्वयं लिखा है, प्राकृत काव्य तथा गीत-विपय में प्रसिद्ध हो चुका था जब उसने इस बहुरूपक निबद्ध प्रवन्ध काव्य की रचना की—

पच्चाएसि पहूओ पुव्व पसिद्धो य मिच्छ देसोत्थि।
तह विसए संभूओ आरद्दो मीर सेणस्स।।३।।
तह तणओ कुल कमलो पाइअ कव्वेसु गीय विसयेसु।
अद्दहमाण पसिद्धो संनेहयरासयं रइयं।।४।।

यह रचना केवल २२३ छन्दो की है, किन्तु इतने में ही २२ प्रकार के छंदों का प्रयोग निरंतर छंद-परिवर्तन करते हुए किया गया है। इन छंदो मे सर्वाधिक प्रयुक्त छंद रासा या आहाणक है। स्वयं कवि ने एक स्थान पर इस रचना में इस बहु रूपक निबद्ध रासक-परम्परा का उल्लेख किया है : नगर-वर्णन करते हुए वह कहता है—

विविह विअक्खण सथ्थिहि जइ पविसइ णअरु।
सुम्मइ छंदु मणोहरू पायउ महुरयरु।
कहव ठाइ चउवेइहिं वेउ पयासियइ।।
कह बहु रुवि णिबद्धउ रासउ भासियइ।।४३।।

अर्थात्—यदि कोई विविध विचक्षणों के साथ नगर में प्रविष्ट हो, तो वह प्राकृत के मनोहर और मधुरतर छन्द सुनेगा। किसी स्थान पर चतुर्वेदीगण द्वारा वेद प्रकाशित होता होगा तो कही बहु रूपक निबद्ध रासक भाषित होता होगा।

(२) सं० १४०० के लगभग रचा गया[1] 'पृथ्वीराज रासो' भी इसी परम्परा की रचना है। इसकी सर्वप्रमुख कथाएँ पृथ्वीराज द्वारा अपने मन्त्री कयवास-वध, संयोगिता के लिए जयचन्द-पृथ्वीराज युद्ध, शहावुद्दीन-पृथ्वीराज युद्ध, तथा पृथ्वीराज के प्राणांत की हैं। 'पृथ्वीराज रासो' के छोटे वड़े चार-पाँच पाठ मिलते हैं, किन्तु सभी में ये कथाएँ पाई जाती हैं। आकार-वृद्धि के साथ-साथ छन्द वैविध्य भी अधिकाधिक होता गया है। किन्तु सवसे छोटे आकार के पाठ में भी, जो लगभग सवा चार सौ रूपकों का है, वीसों प्रकार के छन्द प्रयुक्त हुए हैं, और छन्द-परिवर्तन द्रुतगति से हुआ है।

(३) प्रायः इसी समय का रचा हुआ जल्ह का 'वुद्धि रासो' भी इस परम्परा की एक प्राचीन रचना है। इसमें एक विरहिणी प्रेमिका की कथा है, जिसका प्रेमी राजकुमार उसे छोड़कर राजकार्य से कुछ दिनों के लिए चला जाता है और अवधि समाप्त होने पर भी लौटता नहीं है। इस पर प्रेमिका की माता उसे उसके प्रेम-मार्ग से विरत करना चाहती है, किन्तु प्रेमिका अपनी प्रेम निष्ठा में अविचल रहती है; तव तक उसका प्रेमी राजकुमार वापस आ जाता है और दोनों का आनन्दपूर्ण सम्मिलन होता है। यह रचना कुल १४० छन्दों मे समाप्त हुई है, किन्तु इतने आकार में ही कम से कम १०-१२ प्रकार के छन्दों का प्रयोग हुआ है।[2]

(४), (५) इस परम्परा की प्राचीन रचनाओं मे दो और भी ऐसी हैं जो उल्लेखनीय हैं : वे है 'मुन्ज रास', तथा 'हम्मीर रासो'। इन नामों की रचनाएँ अभी तक नहीं मिली हैं किन्तु मुन्ज तथा हम्मीर के सम्वन्ध के जो छंद कतिपय प्राचीन ग्रंथो में मिले हैं वे संख्या मे अत्यल्प होते हुए भी वैविध्य पूर्ण हैं। मुन्ज के सम्वन्ध के छन्द हेमचन्द्र के प्राकृत व्याकरण, मेरुतुंग के प्रवन्ध चिन्तामणि'[1] तथा एक जैन संकलन-कर्ता के एक प्राचीन प्रवन्ध-संग्रह में उद्धरणों के रूप में

१. दे० प्रस्तुत लेखक द्वारा संपादित और साहित्यसदन, चिरगाँव से प्रकाशनीय 'पृथ्वीरास.रासो' की भूमिका।

२. दे० पं० मोती लाल मेन रिया : 'राजस्थान में हिन्दी हस्तलिखित पुस्तकों की खोज', भाग १, पृ० ०६

मिले है।[२] हम्मीर-विषयक छन्द नागकृत 'प्राकृत पैगल' मे अनेक वृत्तों के उदाहरण के रूप में दिए हुए है।[३] मुन्ज-विषयक छन्द प्रायः मृणालवती से उसके प्रेम के है, जिसकी कथा उपर्युक्त जैन प्रबन्धों के अनुसार संक्षेप मे इस प्रकार है। तैलप युद्ध में पराजित होकर मुन्ज वंदीगृह में तैलप की विधवा भगिनी मृणालवती से प्रेम करने लगता है, और जव उसके भृत्य उसको वन्दीगृह से निकाल भगाने की योजना बनाते है, वह मृणालवती को लेकर भागने के लिए उससे प्रस्ताव करता है। मृणालवती अपकीर्ति के भय से भागना नहीं चाहती है और यह भी चाहती है कि मुन्ज वन्दीगृह में बना रहे जिससे उसका प्रेम-व्यापार चलता रहे, इसलिए वह इस षड़यन्त्र का भेद तैलप को वता देती है। तैलप षड़यन्त्र समाप्त कर मुन्ज को अत्यन्त अपमानित करता है और फिर उसे हाथी से कुचलवा कर मरवा डालता है। हम्मीर-सम्बन्धी छन्द प्रायः उसके युद्धो के सम्बन्ध के है।

हिन्दी के मध्य युगीन साहित्य मे तो अनेकानेक रचनाएँ इस परम्परा की मिलती है, जिनमे से महत्व की दृष्टि से सर्वाधिक उल्लेखनीय निम्नलिखित है : 'परमाल रासौ',[४] जो चन्द की रचना कही कई है, एक अज्ञात लेखक कृत 'राग जैतसी रासौ'[५], नल्लसिंह कृत, 'विजयपाल रासौ',[६] माधवदास चारण रचित 'राम रासौ'[७], दयाल कृत 'राणा रासौ',[८] कुम्भकर्ण कृत 'रतन रास'[९], जानकवि कृत 'कायम

१. मेरुतुङ्ग : प्रबन्ध चितामणि (सिधी जैन ग्रंथमाला) पृ० २१-२५।
२. मुनि जिन विजय संपा० · पुरातन प्रवन्ध संग्रह (सिधी जैन ग्रंथमाला) पृ० १३-१५।
३. संपा० चन्द्र मोहन घोष, प्रकाशक एशियाटिक सोसाइटी बंगाल : मात्रावृत्त ७१, ९२, १०६, १४७, १५१, १९०, २०४, वर्णवृत्त १८३।
४. संपा० श्यामसुन्दर दास, प्रकाशक नागरी प्रचारिणी सभा, काशी।
५. संपा० नरोत्तम दास स्वामी, राजस्थानी भारती भाग २, अंक २, पृ० ७०।
६. मुन्शी देवी प्रसाद मुन्शिफ द्वारा संपादित 'कविरत्नमाला' मे संकलित।
७. पं० मोतीलाल मेनारिया : राजस्थानी भाषा और साहित्य, पृ० १४३।
८. वही 'राजस्थान में हिंद्री हस्तलिखित पुस्तकों की खोज', भाग १, पृ० ११९।
९. 'राजस्थान में हिन्दी हस्तलिखित पुस्तको की खोज', भाग ४, पृ० २२४।

रासौ'[1], डूगरसी रचित 'शत्रुसाल रासौ'[2], कान्ह रचित 'मांकण रासौ'[3], गिरधर चारण-रचित 'सगत सिह रासो'[4], जोधराज रचित 'हम्मीर रासो'[5] दलपति विजय रचित 'खुमाण रासो'[6], सदानन्द कृत 'रासा भगवंत सिह'[7], गुलाव कृत 'करहिया कौ रायसौ'[8], शिवनाथकृत 'रासा भइया वहादुर सिह का'[9], तथा 'रायसा'[10], और महेश कवि कृत 'हम्मीर रासो'[11]। इन रचनाओं का विवरण देना यहाँ न संभव हो होगा और न आवश्यक ही।[12] से सभी रचनाएँ छन्द-वैविध्य युक्त हैं ओर परिनिष्ठित काव्य की दृष्टि से रची गई हैं। अतः शुद्ध साहित्य की दृष्टि से इस परम्परा की प्रायः सभी रचनाएँ अत्यन्त सम्पन्न है। अलग-अलग इन रचनाओं का आकार-प्रकार तथा विपय-वैविध्य भी दर्शनीय है।

अल्प रूपक निवद्ध परम्परा

(१) इस परम्परा की सवसे प्राचीन प्राप्त रचना जो अपभ्रंश की है जिन-दत्त

---

१. प्रकाशक — राजस्थान पुरातत्व मन्दिर, जयपुर।
२. पं० मोती लाल मेनारिया, 'राजस्थानी भापा और साहित्य', पृ० १५८।
३. संपा० अगर चन्द नाहटा : राजस्थान भारती, भाग ३, अंक ३-४, पृ० ६७-१००।
४. संपा० अगर चन्द नाहटा : 'राजस्थान में हिन्दी हस्तलिखित पुस्तकों की खोज' भाग ३, पृ० १०७।
५. प्रकाशक — नागरी प्रचारिणी सभा, काशी।
६. पं० मोती लाल मेनारिया : नागरी प्रचारिणी पत्रिका, सं० २००६, पृ० ३५४।
७. नागरी प्रचारिणी पत्रिका, भाग ५, पृ० ११४-१३१।
८. वही, भाग १०, पृ० २७८।
९. हिन्दी हस्तलिखित पुस्तकों का खोज-विवरण (नागरी प्रचारिणी सभा, काशी) १९२०-२२, नो० १८२।
१०. वही।
११. वही, १९०७—११, सू० २६३।
१२. विस्तृत विवरण के लिए दे० प्रस्तुत लेखक लिखित 'रासोकाव्य धारा' : हिन्दी साहित्य, भाग २; पृ० ६६-१३७, प्रकाशक—भारतीय हिन्दी परिपद्, प्रयाग।

सूरि रचित 'उपदेश रसायन' है।[1] यह सं० १२०० के लगभग की कृति है। इसमें चउपई छंद ही प्रयुक्त हुआ है, और रचना ३२ छंदो मे समाप्त हुई है। इसका विषय जैन धर्मोपदेश है।

(२) इस परंपरा की एक दूसरी प्राचीन और महत्त्वपूर्ण रचना शालिभद्र सूरि को 'भरतेश्वर बाहुबली रास' है।[2] इसमे राज्य के लिए भरतेश्वर और बाहुबली के बीच हुए युद्ध की पौराणिक जैन कथा है। इसकी रचना सं० १२४१ मे हुई थी। इसका छंद-विधान गीतिपरक है, और छंद-वैविध्य की दृष्टि रचना में नहीं है।

(३) शालिभद्र सूरि की अन्य रचना 'बुद्धि रास' भी इसी परंपरा में आती है।[3] इसमें जैन धर्म के सिद्धान्तों का उपदेश किया गया है।

(४) आसगु की 'जीवदया रास' भी जो सं० १२५७ की रचना है, इसी परंपरा में आती है।[4] इसका विषय नाम से ही प्रकट है।

(५) आसगु की एक अन्य रचना 'चन्दन बाला रास' में चंदनबाला की जैन धार्मिक कथा है। यह चौपाई-दोहों में कही गई है।[5]

(६) धर्म सूरि की इस परंपरा की एक कति 'जंबू स्वामी रासा', जो सं० १२६६ की कृति है। जैन महात्मा जंबू स्वामी के चरित्र को लेकर लिखी गई है।[6]

(७) विजय सेन सूरि की इस परंपरा की एक कृति 'रेवंत गिरि रास', जो सं० १२८८ के लगभग की रचना मानी गई है, गिरिनार के जैन मंदिरों को जीर्णोद्धार का वृत्त प्रस्तुत करती है।[7]

---

१. दे० अपभ्रंश काव्य त्रयी, गायकवाड़ ओरिएंटल सीरीज, बड़ौदा।

२. संपा० मुनि जिन विजय, प्रकाशक— भारतीय विद्याभवन, अंधेरी, बम्बई।

३. वही।

४. दे० मंजुलाल मजमुदार : गुजराती साहित्य ना स्वरूपो, पद्य विभाग पृ० ८१६।

५. संपादक अगर चंद नाहटा : राजस्थान भारती, भाग ३, अंक ३-४, पृ० १०६-११२।

६. दे० नाथूराम प्रेमी : हिंदी जैन साहित्य, पृ० २५।

७. सी०डी० दलाल संपादित प्राचीन गूर्जर काव्य संग्रह; भाग १, पृ० १।

(८) पाल्हण की 'नेमि जिणंद रासो' या 'आवू रास' नामक कृति भी, जो सं० १२८९ की रचना है, इसी परंपरा की रचना है। इसमें चउपई-दोहा तथा एकाध ही अन्य छंद का प्रयोग हुआ है।[१]

(९) देल्हणि कृत 'गयसुकुमाल रास', जो सं० १३०० के लगभग की कृति मानी गई है, गयसुकुमार के धार्मिक चरित्र को लेकर लिखा गया है। उसमें चउपई तथा एकाध स्थान पर एक-दो अन्य छंदों का प्रयोग हुआ है।[२]

(१०) 'सप्त क्षेत्रिरासु', जो सं० १३२७ की एक अज्ञात लेखक की कृति है, और सप्तक्षेत्रों—जिन मंदिर, जिन प्रतिमा, ज्ञान, साधु, साध्वी, श्रावक और श्राविका की उपासना का प्रतिपादन करती है, ११९ छंदों की रचना है, किन्तु कुल तीन-चार प्रकार के छंदों में रची गई है।[३]

(११) मंडलिक कृत 'पेथड रास' जो सं० १३६० की कृति है, जैन संघपति पेथड के चरित्र को लेकर लिखी गई है। यह रचना ६५ छंदों की है और यह भी तीन-चार प्रकार के छंदों में ही निर्मित हुई है।[४]

(१२) एक अज्ञात लेखक की इस परंपरा की रचना 'कच्छूली रास', जिसका समय सं० १३६३ है, जैन तीर्थ कच्छूली ग्राम का वर्णन करती है। यह कुल ३५ छंदों की है और इसमें भी तीन-चार प्रकार के ही छंद प्रयुक्त हुए हैं।[५]

(१३) अंबदेव सूर कृत 'समरा रास', जो सं० १३७१ के कुछ ही बाद की कृति मानी जाती है, जैन संघपति समरा के चरित्र को लेकर रची गई है। इसमें कुल ११० छंद है, किन्तु तीन-चार ही प्रकार के छंद प्रयुक्त हुए हैं।

---

१. दे० राजस्थानी, भाग ३, अंग १, पृ० ८३।

२. दे० राजस्थान भारती, भाग ३, अंक २, पृ० ८७।

३. सी० डी० दलाल, संपादित प्राचीन गूर्जर काव्य, भाग १।

४. वही।

५. वही।

६. वही।

यह परम्परा और आगे तक भी पश्चिमी राजस्थानी तथा गुजराती मे मिलती है, किंतु कोई उल्लेखनीय नवीनता इसमें नही दिखाई पड़ती है, इसलिए इसका और आगे का विवरण देना अनावश्यक होगा।

इस परम्परा की प्रवृत्तियाँ नितांत प्रकट है। प्रायः यह समस्त परम्परा धार्मिक प्रचार और धर्मानुभूति का आधार लेकर आगे बढ़ी है। इसमें शुद्ध साहित्यिक दृष्टि नहीं दिखाई पड़ती है। प्रायः रचनाएँ बहुत छोटी है, और उनमें छंद-वैविध्य की दृष्टि का तो सर्वथा अभाव है। इनमें से कुछ गीति-परक भी है, और प्रायः कण्ठस्थ करके विभिन्न पर्वों पर तथा तीर्थ-यात्रादि पर संगीत तथा नृत्य के साथ प्रस्तुत की जाती रही हैं। उपर्युक्त अभावो के साथ-साथ आकार-प्रकार तथा विषय सम्बन्धी वैविध्य का अभाव भी इस परम्परा की रचनाओं में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है।

'बीसलदेव रास' इन दोनो परम्पराओं में से किसमे आती है यह विचारणीय है। इसमें भी छन्द-वैविध्य नही है। आरम्भ से अन्त तक एक ही प्रकार के गेय छन्द का प्रयोग किया गया है, और पूरी रचना के द्वारा राग में गाए जाने के लिए रची गई है, जिसका उसके प्रारम्भ में ही निर्देश कर दिया गया है। इसलिए यह रचना अल्प रूपक निबद्ध रास-परम्परा में ही आती है, यह प्रकट है। फिर भी यह उस परम्परा में एक प्रकार से अपवाद-स्वरूप ही आती है। न यह धार्मिक है, न यह जैन कृति है, और न यह साहित्यिक गुणो से किसी प्रकार से हीन है। अवश्य ही इस प्रकार की और भी रचनाये इस परम्परा में रही होगी : समाज केवल शुष्क धर्म पर—केवल व्रत, उपवास, और फलाहार पर नही जीता है, वह कुछ बल-वीर्यवर्द्धक तथा रुचिकर भोजन भी चाहता है। किन्तु वे सुरक्षित नहीं रह सकी है, और नाल्ह की यह रचना अपवाद-स्वरूप ही हमे मिलती है। किन्तु अपने साहित्यिक महत्त्व की दृष्टि से इस परम्परा की रचनाओं मे यह अप्रतिम है। यह एक भावुक कवि की सरस कल्पना से प्रस्तुत ऐसे स्वस्थ प्रणय की कथा है जिसमें जीवन का तरल रस प्रभावित हो रहा है।

दोनों परम्पराओं के उपर्युक्त संक्षिप्त विवेचन से ज्ञात होगा कि प्रथम परम्परा परिनिष्ठित साहित्य की थी और दूसरी धार्मिक अथवा लोक-साहित्य की थी। पहली परम्परा की रचनाओं के लोकप्रिय होने का उल्लेख अब्दुल रहमान ने तो किया ही है, प्राकृत-अपभ्रंश के साहित्यशास्त्रियों यथा विरहाङ्क तथा स्वयंभू ने भी 'रासक' तथा 'रासाबन्ध' नाम से इस काव्य-परम्परा का लक्षण-निर्देश किया है।

विरहाङ्क ने लिखा है—

अडिलाहि दुवहएहि व मत्तारड्डहि तथाअ ढोसाहि।

बहुएहिं जो रइज्जइ सो भण्णइ रासओ णाम।।

अर्थात्—जिसमें अडिल्ला, दोहा, मात्रा रड्डा और ढोसा आदि वहुततेरे छन्द पाए जाते है, ऐसी रचना 'रासक' कहलाती है।

इसी प्रकार स्वयंभू ने लिखा है —

घत्ता छड्डणिआहि पद्धडिआ सुअण्ण रूएहि।

रासा बंधो कब्वे जणमण अहिरामो होइ।।

अर्थात्—काव्यों में 'रासाबंध' अपने घत्ता, छप्पय, पद्धडी तथा अन्य रूपको के कारण जन-मन अभिराम होता है।

किन्तु दूसरी परम्परा का कोई उल्लेख प्राचीन लक्षण-ग्रन्थों में नहीं मिलता है, जिससे यह प्रकट है कि या तो उस परम्परा का उस समय विकास नहीं हुआ था और या तो उसका कोई साहित्यिक महत्व नहीं समझा जाता था। फलतः यदि उसमें 'बीसलदेव रास' जैसी सरस रचनाएँ उसमें अपवाद-स्वरूप मिलें तो आश्चर्य न होगा।

उपर्युक्त विवेचन से यह भी ज्ञात हुआ होगा कि दोनों परम्पराओं को एक दूसरे से अलग रखना ही उचित है, इसीलिए अच्छा यह होगा कि हम उन्हे अलग-अलग नामों से अभिहित करें। बहुरूपक निबद्ध काव्यरूप को विरहाङ्क ने रासअ (<रासक) कहा है, स्वयंभू ने रासावन्ध (<रासक+बन्ध) कहा है; अब्दुल

रहमान ने अपनी रचना को रासय (<रासक) तथा भाषित होने वाले इस काव्यरूप को रासउ (<रासकु<रासक) कहा है; इस परम्परा की शेष रचनाएँ भी 'रासा' तथा 'रासउ' अथवा 'रासउ' अथवा 'रासौ' नामों से मिलती है, इसलिए इन्हें इन्ही नामों से पुकारना चाहिए। दूसरी परम्परा की प्रायः रचनाएँ 'रास' और 'रसायन' नामों से मिलती है, अतः उन्हें 'रास' और 'रसायन' नामों से पुकारा जा सकता है।

सामान्यतः यह समझा जाता रहा है कि इन काव्यरूपों का सम्वन्ध विशेष रसों, विशेष प्रकार की कथावस्तुओं, विशेप प्रकार के कथा-नायको और विशेष प्रकार के रचयिताओं, विशेष प्रकार के कथा-नायको और विशेष प्रकार के रचयिताओं से रहा है। रासौ काव्यों के सम्बन्ध में यह एक प्रचलित धारणा रही है कि उनमें प्रमुख रस वीर होता है, जिसके सहायक के रूप मे श्रृंगार की भी अवतारणा की जाती रही है; उनमे युद्ध की कथा प्रधान रूप मे होती रही है, और मध्ययुग में युद्धो का एक प्रमुख कारण विवाह होता रहा है, इसलिए उनमें विवाहों का भी वर्णन होता रहा है; उनके नायक राजा होते रहे है जो मध्ययुग मे अनेक कारणों से आपस में लड़ते-भिड़ते रहे हैं, और उनके रचयिता उनके आश्रित चारण या भाट होते रहे हैं जो उनकी प्रशस्ति में इस प्रकार के काव्यों की रचना करते रहे है, वे उनके साथ युद्धो मे भी जाते रहे हैं, और न केवल उन्हें युद्ध के लिए प्रोत्साहित करते रहे है, स्वयं उनके साथ-साथ युद्ध करते हुए आवश्यकता पड़ने पर प्राणोत्सर्ग भी करते रहे है। इसी कारण हिन्दी साहित्य के आदि काल में जब रासौ ग्रन्थ ही पहले मिले, उसे चारण काल अथवा वीरगाथा काल की संज्ञा दे दी गई।

किन्तु ऊपर बहु रूपक निवद्ध रासक-परम्परा का जो संक्षिप्त परिचय दिया गया है, उस पर यदि ध्यान दिया जावे तो ये समस्त धारणाएँ निराधार प्रमाणित होगी। उदाहरण के लिए अव्दुल रहमान कृत 'संदेश रासक', तथा जल्ह कृत 'बुद्धि रासो' श्रृङ्गार रस की रचनाएँ है : इनमे वीर रस का नाम भी नही है।

कान्ह रचित 'मांकण रासो' मत्कुण (खटमल) के कृत्यों का गुण-गान करता हुआ हास्य रस का काव्य है। माधवरास चारण का 'राम रासो' राम-चरित्र से सम्वन्धित मुख्यतः शांत रस का काव्य है। 'पृथ्वीराज रासो' नवरस युक्त महाकाव्य है : उसके अंत में कहा गया है —

रासउ असंभु नवरस सरस चदु छंदु किअ अमिअ सम।
शृंङ्गार वीर करुणा विभछ भय अद्भुत हसंत सम।।

अतः यह समझना कि 'रासो; वीर रस का ही कोई काव्यरूप है, ठीक नहीं है। ठीक यही वात कथानक के सम्बन्ध में भी लागू होती है। 'संदेश रासक', 'वुद्धि रासो' और 'माकंण रासो' में से एक भी युद्ध विषयक काव्य नहीं है। कथानायक का राजा होना भी इसी प्रकार आवश्यक नहीं है; जव मत्कुण (खटमल) तक उसका नायक हो सकता है, तो और किसी के होने की संभावना प्रकट ही है; रचयिताओं में से चारण इने-गिने ही हैं : 'संदेश रासक' का कवि अब्दुल रहमान जुलाहे मीरसेन का पुत्र था; 'कायम रासो' का लेखक जान भी मुसलमान था, 'शत्रु साल रासौ', 'मांकण रासो', 'हमीर रासो', 'खुमाण रासो', 'रासाभगवंत सिह', 'करहिया कौ रायसौ', आदि के रचयिता भी चारण नहीं थे। इनमें से अनेक काव्य कथानायको के समय के है भी नहीं, वहुत पीछे के रचे हुए हैं।

इसी प्रकार 'रास' के सम्बन्ध में यह धारणा रही है कि वह कोमल भावनाओं का काव्य रूप रहा है। किन्तु एकमात्र 'बीसलदेव रास' ही शुद्ध श्रृंङ्गार का काव्य इस परम्परा मे मिलता है, शेष काव्य जैन धर्म से सम्बन्धित होने के कारण शांत रस के हैं, जिनमें से 'भरतेश्वर बाहुवली रास' में वीर रस का भी अच्छा परिपाक हुआ है। अनेक में तो कोई कथावस्तु भी नहीं है : जैसे 'उपदेश रसायन रास', 'बुद्धि रास', 'जीवदया रास', 'रेवंत गिरि रास', 'सप्तक्षेत्रि रासु' तथा 'कच्छूली रास' मे।

अव इन भ्रमपूर्ण और निराधार धारणाओं को हमें त्याग देना चाहिए। 'रासक' या 'रासो' के सम्वन्ध में तो यह अव निश्चित ही हो गया है कि वह एक छन्द-वैविध्य प्रधान काव्यरूप था और इसी रूप में वह प्राकृत-अपभ्रंश साहित्य

काल से हिन्दी के रीति काल तक विकसित होता रहा। 'रास' अथवा 'रसायन' काव्यरूप के सम्बन्ध में अभी और अधिक खोज तथा अध्ययन अपेक्षित है। आशा है कि पुरानी पश्चिमी राजस्थानी और गुजराती के विद्वान् 'रास'-'रसायन' परम्परा की रचनाओं का विश्लेषण करने और उस काव्य रूप के आधारभूत तत्वो का निर्धारण करने में दत्तचित्त होंगे।

१०. बीसलदेव रास का काव्यत्व

बीसलदेव रास' एक खंड काव्य है : उसमें बीसलदेव तथा राजमती के जीवन की एक ही घटना को पल्लवित किया गया है : वह है बीसलदेव का राजमती की एक बात से रूठ कर उड़ीसा चला जाना और बारह वर्षों के अनंतर पुनः राजमती के बुला भेजने पर वापस लौटना। यह घटना नायक-नायिका के जीवन की एक वैयक्तिक घटना के रूप मे ही प्रस्तुत की जाती है, किसी और विशाल परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत नही की जाती है। बीसलदेव एक वैभवशाली राजा है, किन्तु उसके प्रवास से उसके राज्य पर क्या बीतती है, उसकी प्रजा की क्या दशा होती है, और समाज उसके प्रवास को किस दृष्टि से देखता है—आदि बातें काव्य का वर्ण्य नही बनती है। उसका यह प्रवास किसी महत् उद्देश्य से भी नही होता है, केवल उड़ीसा से हीरे लाने के लिए होता है। उद्देश्य की प्राप्ति में भी किसी महत् साधन या उपाय का अवलंबन नहीं लिया जाता है, बीसलदेव उड़ीसा जाकर चुपचाप वहाँ की राजसेवा में प्रविष्ट हो जाता है, और बारह वर्षों के अनंतर अजमेर वापस होने के समय जब अपना वास्तविक व्यक्तित्व प्रकट करता है, उसके सम्मानार्थ उड़ीसे के राजा रत्नराशि देकर उसे विदा करता है। फलतः रचना किसी भी दृष्टि से महान् नहीं कही जा सकती है। कितु अपनी सीमित परिधि में वह अवश्य ही सरस, ललित और कलापूर्ण है।

कथा का नायक बीसलदेव है और उसकी नायिका राजमती है किन्तु काव्य नायक-प्रधान न होकर वस्तुतः नायिका-प्रधान है। कवि ने इसी नायिका के व्यक्तित्व को भली भाँति उभाड़ा है, और निस्संदेह अपने कुछ विशिष्ट गुणों के कारण वह

हिन्दी साहित्य का एक सर्वप्रिय चरित्र वन गई है।

राजमती एक नव विवाहिता पत्नी के रूप में हमारे सामने आती है : वह बीसलदेव के स्वभाव से अभी परिचित नहीं है, फलतः जव वीसलदेव उसके सामने डीग हॉकने लगता है कि—

मो सारिषउ नही अवर भूआल।२८।

वह यह भूल कर वैठती है कि उसकी हॉ-मे-हॉ न मिला कर कह पड़ती है कि उसे गर्व न करना चाहिए क्योंकि उसके सामने अनके भूपाल है, जिनमें से एक तो उड़ीसा-पति ही हैं, जिसके राज्य में उसी प्रकार खानें हीरे उगलती हैं जिस प्रकार उसके राज्य में सॉभर की झील नमक उगलती है—

गरव म करि हो साइंभरिवाल।
तो सारिषा अवर घणा रे भूआल।
एक उड़ीसा कउ धणी।
वचन दुइ म्हांका माणि म मणि।
जिउं थारइ स इंभरि उग्रहइ।
तिउं आंधरि उग्रहइ हीरा कइ पांणि।।२६।।

वस इतनी सी ही वात पर वीसलदेव रूठ पड़ता है और वारह वर्ष तक के लिए उसे छोड़ कर उड़ीसा जाने और हीरे की खानें लाने की प्रतिज्ञा कर वैठता है (छंद ३५)। यहाँ विचारणीय यह है कि राजमती ने ऐसी कौन-सी लगने वाली वात कह दी जिसके कारण बीसलदेव इस प्रकार घर-वार छोड़कर, राज्य छोड़कर, और नव विवाहित पत्नी को छोड़कर ऊलग (चाकरी) के लिए एक दूर देश को वारह वर्षों के लिए चला जाता है। राजमती ने तो यह भी नही कहा था कि उससे वढ़ा-चढ़ा कोई राजा है; उसने तो यही कहा था कि उसके सदृश अनेक राजा हैं। और इतनी सी ही वात बीसलदेव को लग जाती है।

किन्तु जैसे ही राजमती को बीसलदेव के इस उद्धत स्वभाव का परिचय मिलता है, वह उत्तर में एक शव्द भी विना कहे अपने समस्त स्वाभिमान को तिलांजलि देकर अपने को अपराधिनी मान लेती है। वह उसके पैर की जूती वन

जाती है और कहती है—

कीटी ऊपर कटको किसी।३६।

सचमुच ही उसकी भूल—यदि वह वास्तव में भूल थी-एक कीट सदृश ही कही जा सकती थी, जिसके दंड के लिए बीसलदेव का यह संकल्प एक कटक तुल्य ही था; वह कहने लगती है कि उसने तो हैसी भर की थी, जिसे बीसलदेव ने सच्चा मान लिया! (छन्द ३६)

जहाँ तक हीरे लाने की बात है उसके सम्बन्ध में भी वह कहती है कि उसे इतने दूर देश जाने की आवश्यकता नही है, वह (राजमती) अपने पीहर जाकर हीरे तथा बहुमूल्य पत्थर ला देगी (छंद ३७)। किन्तु उसके अनुरोधों का कोई प्रभाव बीसलदेव पर नही पड़ता है और वह दूसरे ही दिन सपादलक्ष देश को छोड़कर उड़ीसा जाने का निश्चय करता है (छंद ३८)। राजमती उससे कहती है कि चाकरी के लिए जाने मे बड़ी अपकीर्ति होगी, किन्तु इसका भी कोई प्रभाव बीसल देव पर नही पड़ता है (छन्द ३९)। इस पर वह कहती है कि यदि बीसल देव ने जाने का ही निश्चय कर लिया है तो वह उसकी सैविका के रूप में उसके साथ जाएगी, उसके पैर दाबेगी, उसे पंखा झलेगी, जब वह सोवेगा, उसके पहरे में खड़ी जागती रहेगी, और इस प्रकार अपने स्वामी की सेवा करेगी—

ऊलग जाण की करइ छै बात।
हूँ पण आवसुं रावलइ साथि।
बांदीय हुइ करि निरबहूं।
पाव तलासिसुं ढोलिसुं वाइ।
ऊभीय पुहरइ जागिसुं।
इण परि ऊलगुं आपणउ राय।।४०।।

किन्तु बीसलदेव उसके इस अनुरोध को भी ठुकरा देता है (छन्द ४१)। वह अब उसके अंचल पकड़ कर उससे अनुनय-विनय करती है और कहती

है कि तरुण तथा संतानहीन होने के कारण उसके विरह को वह सहन न कर सकेगी, इसलिए ही था तो वह उसको साथ ले जावे, और या तो उसका जीवन समाप्त कर दे–

चालियउ उलगाणउ धण जाण न देइ।

मो नइ मारि कइ सरिसीय लेइ।

अंचल ग्रहि घण इम कहइ।

दुइ दुष सालइ हो सामीय सांझ।

जोवन मुरडीय मारिस्यइ।

दोस किसंउ जइ साधण वांझ।।४२।।

किन्तु उसके इस आग्रह का भी कोई प्रभाव बीसलदेव पर नही होता है और वह अंचल छुड़ा कर जाना ही चाहता है। तव राजमती की समस्त आशाओं आकांक्षाओं पर पानी फिर जाता है; जीवन उसके लिए भारतुल्य हो जाता है (छन्द ४४, ४५)। एक-दो बार और वह वीसल देव से कुछ कहने का साहस करती है (४८, ५०), किन्तु वीसलदेव फिर भी अपने निश्चय पर अडिग रहता है। (छन्द ५१)। सामान्यतः एक नारी जिस सीमा तक नही जा सकती है, उस सीमा तक राजमती जाती है। राजमती की सखियाँ जव उससे कहती है कि यदि स्त्री चाहे ही तो उसके अंचल में बँधा हुआ पति किसी प्रकार उसको छोड़कर नहीं जा सकता है (छन्द ५२), वह कहती है–

सात सहेलीय सुणउ म्हारीय वात।

कंचूउ पोलि दिपाडिया गात्र।

जां दीठां मुनिवर चलइं।

म्हाकउ मूरष राव न जाणए सार।

त्रीयां चरित मइ लष किया।

राउ नही सपी भइंस पीडार।।५३।।

राजमती के इस सीमा तक जाने के अनन्तर भी यदि बीसलदेव अविचलित रहता है, तो राजमती का उसको मूर्ख कहना और यह कहना कि वह नरपाल

नही महिषपाल है, यथार्थ ही लगता है।

कुछ आलोचकों को यह बात खटकी है कि राजमती ने इस स्थान पर तथा एकाध अन्य स्थानो पर भी पति को मूर्ख कहा है, अथवा उसके संबंध में इस प्रकार की शव्दावली का प्रयोग किया है, किन्तु एक निरपराध नव-विवाहिता से उसके सतत क्षमायाचना और आत्मसमर्पण पूर्ण होने पर भी यदि उसे छोड़कर कोई जाने पर ही तुला हो तो उसे इससे कम क्या कहा जा सकता है? अमर्षपूर्ण सीता ने वाल्मीकीय 'रामायण' में उनको छोड़कर वन जाते हुए राम के मुख पर कहा है, 'मेरे पिता मिथिलाधिप राजा जनक ने आपको पुरुष-शरीर धारी स्त्री नहीं समझा था, तभी तो उन्होंने आप को दामाद बनाया था'—

कि त्वामन्यत वैदेहः पिता मे मिथिलाधिपः।
राम जामातरं प्राप्य स्त्रियं पुरुष विग्रहम्।।

(रामायण, अयोध्या कांड, ३०.३)

राजमती ने तो बीसलदेव के मुख पर इतना भी नहीं कहा।

एक बार ज्योतिषी से कहलवा कर वह ठीक मुहूर्त न होने के बहाने बीसल देव को इसलिए कुछ दोनों तक रोक रखती है कि कदाचित् वह किसी प्रकार से उसे समझा ले (छंद ५४-५६)। कितु फिर भी कोई परिणाम नही निकलता है, और बीसलदेव उसे छोड़कर उड़ीसा चला ही जाता है।

बाहर वर्ष के कठोर दिन तरुणी राजमती बड़ी कठिनाई से काटती हैः महीने आते हैं और उस वियोगिनी को अधिकाधिक संतप्त करके चले जाते है; ऋतुएँ आती है, और वर्ष आते है और इसी प्रकार चले जाते हैं, बीसलदेव नही आता है। राजमती अपने स्त्री-जन्म पर झंखती है : वह कहती है कि इससे तो अच्छा होता कि वन का कोई जीव होती—

अस्त्रीय जनम कांइ दीधउ महेस।
अवर जनम थारइ घणा रे नरेस।
रानि न सिरजीय रोझडी।

घणह न सिरजीय धउलीय गाइ।

वनपंड काली कोइली।

हउं वइसती अंवा नइ चंपा की डाल।

भषती द्राष वीजोरडी।

इणि दुष झूरइ अवला जी वाल।।८१।।

वह कहती है कि वह रानी न होकर जाटनी होती तो भी अच्छा होता, कम से कम वह अपने पति के साथ काम में लगी रहती और खुलकर उसे गले तो लगाती—

आंजणी काइं न सिरजीय करतार।

षेत कमावती स्यउं भरतार।

पहिरिण आछी लोवडी।

तुंग तुरीय जिम भीडती गात्र।

साईय लेती सासुही।

हंसि हंसि वूझती प्री तणी वात।।८२।।

वह अव पंडित (पुरोहित) के पास आती है और उससे वीसलदेव के पास संदेश भेजती है। वह वीसलदेव से कहने के लिए उससे कहती है कि वह उसके विरह में ऐसी कृशगात हो गई है कि वाएँ हाथ की मुद्रिका अव उसकी दाहिनी बॉह मे भी ढीली पड़ रही है—

पंडिया कहिज्यो म्हारइ प्रीय नइ जाइ।

डावां हाथ कउ मुंदडउ।

ढलिक करि आवइ हो जीमणी वाह।।८५।।

वह उसे इस वात का स्मरण दिलाती है कि उसी ने चंद्र सूर्यादि की साक्षी देकर दोनो का पाणि-ग्रहण कराया था (छंद ८६), वह वीसलदेव से कहने के लिए उससे कहती है कि एक राम थे, जिन शूर ने स्त्री के लिए समुद्र पर सेतु

बॉधा था, और एक वह है जिसने अपनी नव विवाहित स्त्री को अपना अमूल्य यौवन समाप्त करने के लिए छोड़ रक्खा है—

वालुं हो धणीय तुम्हारडउ जांण।
कठिन पयोहरां तिज्यउ परांण।
बालउ जीवन षिसि गयउ।
जोवन के सिरि बांधिया नेत।
जिण बांधिया रावण षिस्यउ।
त्रिय कारणि राम बांधियउ सूरा सेत।।८७।।

वह एक पत्रिका भी लिखकर पंडित के हवाले करती है, जिसमें वह अपने पति को विश्वास दिलाने के लिए कि पत्रिका उसी की लिखी है, अन्य किसी को जो न ज्ञान हो सकता रहा हो ऐसा एक संकेत लिखती है—

साम्हइ हियडलय जीमणी कूँषि।
दुइ नष लागा नाह का।
आप समांणी करती आलि।
धण विसहर प्रीयउ गरुडी।
आउ सामी थारा डंक संभालि।।९०।।

किन्तु इस पत्रिका में उसके मन का जो अमर्ष है वह उमड़ ही पड़ता है। वह कहती है कि वह एक कुलीन कन्या है, और शील (सदाचार) की शृंखला से किसी प्रकार उसने अपने यौवन को जकड़ रक्खा है, जिस प्रकार कोई किसी चोर को बॉध रखता हो, अतः यह स्वाभाविक ही है कि इसका पाप उसके उस निष्ठुर पति को पहुँच रहा हो, जिसने उसे अकारण छोड़ रक्खा है और यदि वह अब भी न आया तो इस जन्म में तो वह उलगाणा (राजभृत्य) ही हुआ है, अगले जन्म में वह सॉप होगा—

कुल की रे बेटीय सील जंजीर।
जोवन राषउं मइ चोर जिउं।

पगि पगि तो नइ पहूच रे पाप।

इणि भवि उलगाणउ हुउ।

अवर भवि होयउ कालउ सांप।।९२।।

किन्तु पंडित से वह अपनी दुर्दशा का ही संदेश भेजना चाहती है—

पंडिया तिम कहेज्यो जिम प्रीय नि रिसाइ।

साधण तुझ विण अन्न न पाइ।

कुहाणी फाटउ रे कंचुयउ।

षोपरि फाटउ तु धण केरउ चीर।

जिम दव दाधी लाकड़ी।

तूं तउ उव इगउ रे आविज्यो नणद का वीर।।९४।।

पंडित उड़ीसा पहुँचकर बीसलदेव को राजमती की पत्रिका देता है, और उसका संदश कहता है। वीसलदेव उड़ीसा के राजा से विदा लेता है और रत्नराशि लेकर अजमेर के लिए प्रस्थान करता है। वह एक योगी से राजमती को अपने प्रस्थान की पत्रिका भेजता है। उस पत्रिका को पाकर राजमती गले से लगा लेती है किन्तु वह इस मांख (अमर्ष) से रोने लगती है कि किसी समय जिसके विना वह छड़ी भी न जी सकती थी, उससे पत्र-व्यवहार तक की नौवत आ गई—

चीरी रही गोरी गलइ लगाइ।

जाणि करि बाछडइं स्युं मिली गाइ।

नइणां थी लोही पडइ।

परिहसि रूनी भीनउ छइ हार।

जिण विण घडीय न जीवती।

हिवइ ताहि स्युं हुआ चीरी दिवहार।।११७।।

अन्ततः वह दिन आ जाता है जब उसका पति लौटता है; उसके आगमन के धौंसे को सुनकर वह युवती संतोष की एक गहरी सॉस लेती है कि वियोग

की इस दीर्घ अवधि को वह निर्मल चरित्र के साथ व्यतीत करने में समर्थ हुई है—

ऊलग पूगि धरि आवियउ भरतार।
जाणि करि उतरी समुन्द कउ पार।
कलंक न कोई सिर चडिउ।
बाधतउ जोबन विरह की झाल।
लंछण को लागउ नही।
पगि पगि सषीय न झंषियउं आल।।१२१।।

उसका सामना करने को वह, कवि की अपूर्व कल्पना में, अर्जुन की भाँति सन्नद्ध होती है—

हिव धरि आवियउ सइंभरि वार।
अरजन जिम धण करइ सिणगार।
भमुह कोवंड चहोडिया।
नव कुच कंचू मेल्हिया षंचि।
कंत पियारह कारणइ।
तिण कारणि धण मेल्हिया संचि।१२२।।

उसके जो अंग किसी समय चोर की भाँति बँधे हुए थे, अब वे छोड़ दिए जाने पर उसके सहायक बनकर स्वभावतः अर्जुन के बाणों की भाँति पुनरागत स्वामी के हृदय को विद्ध करने के लिए तैयार हो जाते हैं। किन्तु प्रवास से लौटा हुआ उसका निर्लज्ज पति जब उसे प्रसन्न करने का प्रयत्न करता है, राजमती उसकी मूर्खता पर व्यंग्य किए बिना नहीं रहती है—

ऊलग जाइ तइं किसउ कियउ नाह।
मोडि उसीसउ नइ सूतउ बांह।
कठिन पयोहर नू मिल्या।
केली गरभ सा नू मिल्या गात।
जांघ जोडावउ नू निरषिया।

रंग भरि रयणि न षेलियउ षेल।
देव सतावौ तूं फिर आउ।
स्वामी घी विणजियउ नइ जीमियउ तेल।।१२६।।

और पाठक भी राजमती के साथ सहमत होकर कह उठता है कि बीसलदेव ने घी का वनिज करते हुए भी खाया तेल ही! कवि उस पुनर्मिलन में भी नायिका की विरह-वेदना को नही भूलता है—

कनक काया जिसी कूंकूं रोल।
कठिन पयोहर हेम कचोल।
केलि गरभ जिसी कूंवली।
घायल जिउ धण षंचइ अंग।
मोडि कडि चालइ गोरडी।
उणकी विरह वेदन नवि जाणइ कोइ।
जिउं राजा राणी सु मिल्या।
तिम एण संसार मिलिज्यो सहु कोइ।।१२८।।

फलतः यह प्रकट हो गया होगा कि यद्यपि रचना में कोई महानता नहीं है किन्तु जीवन की यथार्थता सरसतम रूप में व्यंजित हो सकी है, पुनः साहित्य में न हमें दूसरी राजमती मिलती है और न दूसरा बीसलदेव ही मिलता है, और इसी में 'बीसलदेव रास' के कवि की सबसे बड़ी सफलता निहित है।

उसके वर्णन भी उसके अपने हैं। उसका बारहमासा हिंदी के आदि कालीन वारहमासा में से है और किसी भी बारहमासे से टक्कर ले सकता है। बीसलदेव के अभिज्ञान को कवि ने कितना वास्तविकोपम वनाने का यत्न किया है—

दाढीय राम कइ भमर भमाइ।
मस्तक माहे केवडइ।
माहिलइ कोइय जीमणी आंषि।
कालउ तिलउ अछइ भमर जिसउ।...।।६६।।

इस अभिज्ञान-विवरण मे वह उसकी दाहिनी ऑख के कोने के तिल तक को बताना नहीं भूलता है। यही बात राजमती के भी अभिज्ञान में देखी जा सकती है—

सांभलउ जोगी कहइ नरनाथ।
कोमल पदम छइ धण केरइ हाथ।
मूँगफली जिसी आंगुली।
उणिरा कठन पयउहर काजली रेह।
बोलती बोल छइ आकुली।
दंत दामिड धण चीता कय लंकि।।११३।।

उसकी आकुल बोलने की आदत को बताना कवि नहीं भूलता है।

एक और विचित्र बात जो इस कवि में दिखाई पड़ती है वह है इसकी हास्य या विनोद-प्रियता, राजमती ने वर्ष भर का संवल देकर पंडित को भेजते हुए उससे घी अधिक खाने के कहा था जिससे कि वह द्रुत गति से चल सके—

धीय घणउ जीमजो जिम पगि हुवइ प्राण।६७।

किन्तु पंडित को पेट-पूर्ति ही अधिक प्रिय लगने लगती है, वह खूब खा पीकर मजे-मजे में चलता है, और वह सब भुला देता है जो उससे राजमती ने कहा था—

कोस पयाणइ पंडियउ जाइ।
सात अंगारा करि बइठउ जी षाइ।
हलवइ-हलवइ पग ठवइ।
चालतां गोरडी दीधी थी सीख।
ते सहु पंडिया नइ वीसरी।
चालिवा लागियउ छोटीय वीष।।६६।।

इसी प्रकार कवि का उड़ीसा वर्णन देखिए—जहाँ बैल की पूजा होती है और

गाय हल में जोती जाती है, मांड खाया जाता है, और चावल रख लिया जाता है—

सातमइ मास पहूतलउ जाइ।

जठइ मानिजइ वदल नइ बहइ गाइ।

मांड पीजइ कण राषिजइ।

तठइ लाल विहूणी वाजइ छइ घांटि।

इसीय सकति अछइ देव की।

नाहर चोर नवि लगाए वाट।।१००।।

इस प्रकार की विनोद-प्रियता हिंदी साहित्य में बहुत ही कम मिलती है। फलतः 'वीसलदेव रास' अपने ढंग की एक ही रचना है, और इसका कवि भी अपने ढंग का अकेला ही है, और इसलिए श्री मोतीलाल मेनारिया के उक्त कथन से सहमत होना सम्भव नहीं ज्ञात होता है जा इस भूमिका के प्रथम शीर्षक विपय-प्रवेश के अन्तर्गत प्रारम्भ में ही उद्धृत किया गया है।

बीसलदेव रास

राग केदारउ

[१]

गउरिका[१] नंदन त्रिभुवन सार।
नाद२ भेदइ[३] थारइ उदर भंडार।
एकदंतउ[४] मुखि[५] झलहलइ[६]।
मूंसाकउ[७] बाहण[८] तिलक सिंदूर[९]।
कर जोड़ी[१०] नरपति[११] भणइ[१२]।
जाणि करि[१३] रोहिणी[१४] तप्पइ[१५] सूर[१६]।
भुवणनइ[१७] देषउं रे[१८] रबि[१९] तलइ।।

---

[१] यह छंद म०, पं० र० ग्या० ना० न० अ० १, प्र० १.१, स० १.२ है। स० प्र० में स्वीकृत .३, तथा .५ परस्पर स्थानांतरित हैं। प्र० में ध्रुवक है : भुवण मोहो वर कामिणी।

१. पं० गवका, र० ग्या० न० प्र० गवरिका, स० गौरी। २. न० नादइ। ३. ना० भेद, स० प्र० बेदां।। ४. अ० दंत। ५. म० ना० स० प्र० मुख। ६. स० प्र० झलमलइ (प्र० झलमलि=झलमलइ)। ७. म० ग्या० मूसका, पं० मुसिकाउ, ना० न० मूसा को, अ० मूसक, स० सुमूषा, प्र० मूसा० का। ८. ग्या० [में नहीं है]। ८. पं० सेंदूरि, अ० सिदूर कि०, स० सेंदुर। १०. स० जोड़े। ११. प्र० नाहलो (=नाल्हो)। १२. प्र० कवि। १३. ग्या० जाणकरि, ना० जाणिकेरि, स० जाणिक, प्र० जाणकि। १४. म० रोहिणी जिउ, पं० रोहिणी जिम, र० रोहिणी युं, ग्या, ना० रोहिणीज्युं, न० रोहिणाचल, स० रोहिणीउ, प्र० रोहिणी इउं। १५. म० तप्पउ, पं० तेपउ, प्र० तपे। १६. पं० सूरि, ना० अ० सूरि कि। १७. पं० भवण नइ, ना० भवण न० (इसी कारण ध्रुवक का पहला अक्षर समस्त छंदों के साथ पं० ग्या० ना०

[२]

दूसरइ कडवइ[१] गणपति[२] गाइ[३]।
नवण[४] करी[५] नइ[६] लागु जी पाइ।
तोहि[७] लंबोदर वीनवउं[८]।
सिद्धि नइ[९] बुद्धि[१०] तणउ रे[११] भंडार[१२]।

न० में 'भ०' है), र० ग्या० कइ भवण नइ, न० कि भवण न० (ना० अ० में यह 'कि' पूर्व की पंक्ति में अंत में है)। १८. ना० न० देबु मू० देबुंजी। १९. पं० तपई। (पं० ग्या० ना० न० में पंतिम पंक्तिम पंक्ति अगले छंद की पहली पंक्ति के रूप में है, जो कि भूल से हुआ ज्ञात होता है)।

[२] यह छंद म० ना० २, ग्या० पं० र० न० अ० ३, स० १.४, प्र० १.३ है। [इस छंद की पहली ही पंक्ति है : दूसरइ कडवइ...अतः यह निश्चित रूप से ग्रन्थ का दूसरा छंद रहा होगा]।

किन्तु स० में.१,.२,.४,.५ है।

(.१) तुठी सारदा त्रिभुवन माई। (तुलना० स्वीकृत २.२)
(.२) देव विनायक लागूं हूं पाय।
(.३) चउसठि जोगिनि का अगिवाण।
(.४) चउथ जोहारूं खोपरां।

प्र० में भी .४, .५ स० की हैं, किन्तु शेष यथा स्वीकृत हैं।

१. म० कडुअउ, पं० कडवउ र० कडूवै, ना० प्र० कडवै जी, न० अ० कडुयइ। २. र० तूं गणपति। ३. म० सार (तुलना० स्वीकृत १.१), ना० गाय। ४. म० न्हवण, ग्या० नुवणि, अ० नमणि, न० पणमि। ५. (+६) पं० नवं करि, र० न० करुं अरु, म० ना० नमुं करि, अ० नमुं अरु, प्र० नमी करो। ७. म० ग्या० तुझ, ना० तुझइ। ८. ग्या० प्र० बीनवुं, स० बीनमूं। ९. पं० र० ग्या० बुधिका, ना० रिद्ध। १०. पं० र० ग्या० स्वामी। ११. पं० र० ग्या० मुगति, ना० तणौजी।

चउथि करउं तुझ[13] पारणउ[14]।
भूलउ जी[15] अक्षर आणिज्यो[16] ठांइ।।भु०।।

[३]

हंस गमणि[1] मृगलोयणी[2] नारि।
सीस समारइ[3] दिन गिणइ४।
ततषिणि[5] ऊभी छइ राजदुवारि६।
नाहनइ जोवइ[7] चिहुं दिसइ[8]।
काइं[9] सिरजी[10] उलगाणांरी[11] नारि।
जाइ दिहाड़उ रे झूरतां[12] ।।भु०।।

१२.पं० र० ग्या० ना० दातार। १३. पं० थारउ। १४. ना० पारणै। १५. पं० तूं जी झूलउ जी, स० भूलेउ। १७. स० आणिजे।

[३] यह छन्द म० ना० ३, पं० र० ग्या० न० अ० २, स० १.१, प्र० १.२ है। किन्तु पं० र० ग्या० .४ है : चिहुँ दिसि नाह निहालती। स० में .३ तथा .४ नहीं है। म० और ना० में एक अतिरिक्त पंक्ति ८.७ है :

(मा०) इसी नारी न० देव दुखिणी कांइ।
(ना०) एक पग आंगणि एक पग द्वार।

१. म० गज गमणी, स० हंस बाहणि (तुलना० स्वीकृत ४.१)। २. म० मृगा लोचनी, स० मिग लोचनि, ना० मृग लोचनी। ३. पं० र० सवारइ, ग्या० संभारइ। ४. प्र० गणै। ५. पं० सतषिण, अ० सुलक्षण, प्र० साय धण। ६. न० राजकुवारि, मू० पलि दुवार।। ७ म० नाहि निहालुं, प्र० नाह न० देषइ। ८. प्र० दसा। ९. पं० का, प्र० स० जिण। १०. प्र० सिरजो, स० सिरजइ। ११. पं० ना० प्र० उलगाणां की; स० उलिगण घर। १२. र० झूरती, ग्या० झूरतां।

[४]

हंस वाहणि[१] देवी[२] करि धरइ[३] वीण।
जूठडउ[४] कवित[५] कहइ[६] कुलहीण[७]।
वर देज्यो[८] माता[९] सारदा[१०]।
भूलउ जी[११] अक्षर आणि[१२] वहोडि[१३]।
तइं[१४] तूठी[१५] अक्षर[१६] जुडइ[१७]।
नाल्ह वषाणइ वे कर जोड़ि ।।ध्रु०।।

---

[४] यह छन्द म० पं० र० ग्या० ना० न० अ० ४, स० १.५, प्र० १.४/२ तथा १.५ है। किन्तु पं०, र०, ग्या० अ० .६ है : नाल्ह भणइ अति सीय वाणि। स० में स्वीकृत .५ यथा .३ है, और .५ है : वीसलदेव रास प्रगासतां। पुनः स० .६ है : नाल्ह कहइ जिणि आवइ हो खोडि। प्र० में अतिरिक्त .७, .८ हैं :

(.७) सरसती सामणि करौ तै पसाय।
(.८) रास कहूँ राजा वीसलराय।

१. (+२) प्र० सरसती सामणि। २. (+३+४) म० में० अतिरिक्त शब्दावली पुनरावृत्ति के रूप में है 'वी कर धरउ'। ३. पं० धरउ, ग्या० ना० धरी. प्र० ग्रहइ। ४. पं० झूठउ, र० झूठो रे. ना० न० म० झूठउ, प्र० झुठड़ो, स० (+५+६) कुकठ कंथू वोलूं। ५. म० प्र० कवीयण, पं० किंवत (कवित्त), र० अ० कयित, न० वकित। ६. म० हुइ, प्र० हूं। ७. प्र० मतिहीण। ८. प्र० दीयो। ९(+१०). प्र० देवी सारदा। ११. पं० भूलउ। १२ (+१३) म० पं० र० ग्या० ना० न० आणिजो ठाई (तुलना० स्वीकृत २.६)। १४. स० तो, म० अ० जइ। १५. न० स० तूठां। प्र० तूठै। १६. स० बर। १७. स० प्रापिजइ।

[५] वह छन्द म० पं० र० ग्या० ना० न० अ० ४, स० १.३, प्र० १.४/१

[५]

नाल्ह रसाइण रमभरि[१] गाइ।
तूठी[२] छइ[३] सारदा त्रिभुवन माइ।
उलगाणा गुण[४] बर्णवउ[५] सगूण[६] सुमावासां[७] सीषिज्यो[८] रास।
स्त्रीयचरित्र[९] धण[१०] लष[११] लहइ[१२]।
एकही[१३] अक्षर[१४] सरब[१५] विणास। ।मु०। ।

[६]

भोजराज तणउ[१] मिल्यउ छइ दिवाण[२]।
बहु नर बैठा छइ[३] अगवाणि[४]।

है : किन्तु प्र० में उपर्युक्त .४ और .५ के बीच अतिरिक्त है :

कुकुठ कुमाणस सीष न लाप।

१. न० परिगुण, अ० गुणभरि। २. म० तोनइ तुठी। ३. म० हो। ४. प्र० रस। ५. म० मू० बीनवउं, ग्या० बीनवइ, पं० र० ब्रन्नवउं, ना० प्र० वर्ष्णवुं न० अ० गाइसुं, स० वरणतां। ६. ना० सुगुण, स० कुकठ (तुलना उपर्युक्त ४.२ स० पाठ से)। ७. म० सामाणसां, ग० माणस, म० कुमाणसां, प्र० सुमाणस। ८. ना० सीषियो, स० जिण कहई, प्र० तुम्हें सीषज्यो। ९. त्रीया चरित्र, र० स्त्री चरित्र, स० अस्त्री चरित्र। १०. न० कहि, स० गति। ११. स० को, पं० र० न० अ० कुण। १२. ना० ले सकइ, न० सकै, अ० कीया, ग्या० कहइ। १३. मू० एकिण। १४. म० मू० कुवनच, स० आखर। १५. पं० र० ना० ग्या० वचन, स० रस सबइ।

[६] यह छंद ग्या० र० ना० ७, नं० अ० ८, प्र० १.११ स० १.१४ है। प्र० .२ है : मिल्या चोरासीया इंद्रविमाण। स० .२ है : मील्या सुरनर इन्द्र विमान।

१. प्र० स० राजा भोज कइ। २. अ० जुड्यो छै दीबाण, ग्या० मिल्या छइ

राइ राणा चिहुं दिसितणा[५]।
राई जी बिनव[६] राइ नरिंद[७]।
बारइ हो बहतै आपणइ[८]।
कुमरी परणाविज्यउ[९] जोइ नइ विंद[१०]।।भु०।।

[७]

पंडित[१] तोहि[२] बोलावइ रे[३] राइ।
ल[४] पतडउ[५] पंडिया[६] रावलइ[७] आवि[८]।
सुबर[९] सोध[१०] म्हाका[११] जोसिय[१२]।
आणिज्यो[१३] नागर[१४] चतुर सुजाण।

दीवाण। ३. ग्या० बहुनर बेटा छै, अ० तिहां वैठी छइ सहि। ५. अ० आगेवाण। ५. ना० दिसि तणी, स० दिसि देसीका, प्र० दिसि देसका। ६. प्र० राणी पूछइ सुण्यो, स० पूंछइ सुणि। ७. ना० स० राव नरिद, प्र० नर्यंद, अ० धरह नरिंद। ८. प्र० वारै बिहतै आपणै। ९. ना० थे कुमरी परणाविज्यो, ग्या० ये तउ कुमरि परिणावजउ, प्र० स० कुवंरि परणावौ। १०. ग्य० जोइ लिउ वींद, अ० सबलसै वीर, प्र० तो सोझो वींद, स० सोझउ वींद।

[७] यह छंद म० ६, पं० ७, र० ग्या० ना० ८, न० अ० ९, स० १.१५, प्र० १.१२ है। किन्तु स० ४,.६ हैं :

(.४) चतुर नागर ईसउ आणज्यो चंब।

(.६) जिम गोवल माहिं सोहइ गोव्यंद।

(तुलना० स्वीकृत १६.६)

और प्र० .४, .६ हैं : (.४) चतुर नर आणजो वींद।

(.६) उवाका चरण दीसि जिसा पुनिम चंद।

१. स० पांड्या। २. पं० तोन, र० ग्या० ना० न० तोनइ। ३. पं० र० ग्या० ना० न० अ० प्र० छइ, स० हो। ४. (+५) प्र० पतडउ लेह करि। ६. स० जोसी। ७. स० बेगो तुं। ८. स० आई। ९. म० स० सुदिन, ग्या० सुवरि,

सुरग[१५] मोहइ[१६] देवता।
बीर[१७] विचक्षण[१८] बीसलदे[१६] चहुआंण।।भु०।।

[८]

बंभण[१] भाट[२] बोलाविया[३] राउ।
लगन[४] सोपारीय दीन्ही[४] पठाइ[७]।
गढ़ अजमेरि[७] नइ[८] गम[६] करउ[१०]।
पाटि[११] वइसारि[१२] पषालिज्यो पाय।
बेटी कहिज्यो[१३] राजा भोज की।
राजमती बर बीसल राय।।भु०।।

अ० सोवर, ना० सषरौ। १०. पं० सोधी अ० सोझें, स० कहे, प्र० कबहि। ११. पं० र० ना० म्हारा, स० रूडा, प्र० न। १२. पं० ग्या० ना० न० अ० पंडिया, प्र० जोवसी। १३. पं० आणि कोई, र० आणे कोई, अ० आणजे, ना० आण कोई। १४. पं० नर। १५। र० सुरगहि, पं० सुरगह, ना० सुरगिर, न० अ० सरगज्युं, स० प्र० सुरनर। १६. म० ग्या० मोहइ छइ, र० मोहइ जे, ना० मोह्या छइ। १७. पं० वर बीसल, र० बर, ना० बार। १८ओ। म० विचिलण। १६. पं० राजा बीसलदे, र० ना० न० बीसल।

[८] यह छंद म० ७, पं० ६, र०, ग्या० ना० १०, न० ११/१, अ० ११, स० प्र० १.१६ हैं।

१. सा० पांडयो, पं० पांडीया। २. स० प्र० तोहि। ३ पं० र० ग्या० ना० न० अ० बोलावइ छइ स० मू० बोलावइ। ४. ना० लगल। ५. म० अ० पांडच्या दीन्ही, र० दीय, स० ले करि, ना० दीनो, ग्या० दीन, प्र० लेई। ६. स० जहि, प्र० रावलै जाय (तुलना० स्वीकृत ६२) ७. स० अजमेरां। ८. पं० र० ना० थे, अ० कुं, ग्या० नां। ६(+१०). प्र० जावेज्यो। ११. पं० उवइ का, स० चउरी, चांचर। १२. पं० र० बइसारि नइ, स० बइसी, प्र० बैठ। १३. रस० स० [में नहीं है], प्र० हो०।

[६]

गंढ अजमेरि[१] वसइ रे[२] भुआल[३]।
चहुआणां कुलि[४] तिलक णिगार[५]।
कुलीय[६] छत्तीसइ[७] रे[८] ऊलगइ।
मइम्त[९] हस्तीय पडइ रे पलाण।
लाषतुरीय[१०] घरि[११] पाषर्‍या[१२]।
वर[१३] रे[१४] आणउ[१५] वीसलदे[१६] चहुआँण। ।भु०। ।

[१०]

दीन्ही[१] सोपारीयउ[२] नइ[३] हरषिय[४] राय।
मनिहि आणंदियउ अधिक[५] उछाह।

---

[६] यह छंद म० ८, पं८, र० ग्या० ना० ६, न० अ० १०, प्र० १.१७ है। किन्तु पं० र० ग्या० ना० न० अ० .४ है : मइमत हस्तीय सहस अठार (+अझार न०)। और

अ० .६ है : वीसलदे वरउ कुंअर भरतार।

प्र० .४, .६ हैं : (.४) वांध्या हस्ती घुरे नीसाण।

(.६) पांडीयो सोझी वर वीसल राय।

१. प्र० अजमेरा। २. पं० वसइ रि, ना० वसइ, प्र० वसै जी। ३. पं० भुवालि, ग्या० ना० न० प्र० भूपाल। ४. प्र० वंश। ५. ना० सिणगार, प्र० नेलाड़ि। ६. प्र० चोरास्या। ७. (+८) प्र० जिहां। ९. प्र० मयदह। १०. ग्या० तुरीया। ११. पं० धरे, ग्या० र० ना० न० अ० पावर। १२. पं० प्र० पापरइ, र० ग्या० ना० न० अ० पडै। १३(+१४). पं० र० ग्या० ना० न० ईसउ। १५. पं० र० वर, ग्या० वीर, ना० सुरवर न० छंइ। १६. र० वीसल ते, ग्या० वीसल।

[१०] यह छंद म० ९, पं० १०, र० १२, ग्या० ११। ना० न० अ० १२,

घरि घरि[६] गूड़ी[७] ऊछलइ[८]।
कामणि[९] गावई[१०] छइ[११] मंगलच्यार।।
चहुआंणां कुल[१२] ऊधरउ।
जइ[१३] घरि[१४] आविस्यइ[१५] जाति पमारि।।भु०।।

[११]

बांभण साहि[१] समदिया[२] बीसलराइ[३]।
हांसला[४] तेजीय नइ[५] कुलइ कबाइ[६]।

स० प्र० १.२१ है। पं० ना० ग्या० अ० में यथा .३ (अतिरिक्त) है :

बजा ने बाजइ नीसाणे धाउ। (तुलना० स्वीकृत २५.२)।

न० र० स० प्र० में यही .२ के स्थान पर है। पं० अ० में स्वीकृत .३ यता .४ है। ना० ग्या० न० र० में यह पंक्ति नही है। ना० में स्वीकृत .२ यथा .३ है, और न० .३ है : सुरंग केसर तक्षां छाटणां। ना० .४ है : मन माहै अधिक आणंद उछाह (तुलना० स्वीकृत १०.२)

पं० अ० न० में यथा .५ (अतिरिक्त) हैं : दोबड वाजइ छइ दुडबडी (तुलना० स्वीकृत २५.३)। र० में यह स्वीकृत ३ के स्थान पर है, और ना० ग्या० में यथा .४ है। म० .५ है : सफल दीहाडउ गोरी आज कउ (तुलना० स्वीकृत २६.५)।

१. पं० दीन, स० प्र० हुई। २. र० सोपा। ३ (+४). र० ना० प्र० मन हरषीयउ, स० मनि हरष्यो छइ। ५. पं० ना० अतिहि, मू० अंग। ६. स० प्र० गढ़ माहि (१माहै प्र०) ७. पं० गुडी रे। ८. म० मू० पं० र० स० उछली। ९. म० स० प्र० घरि घरि (तुलना० स्वीकृत ११७.४)। १० (+११). म० स० प्र० तोरणि (तुलना० स्वीकृत ११७.४) १२. प्र० वंस। १३ (+१४). म० जिण घरि, अ० जां घरि, र० स० जो घीर। १५. पं० र० आवी, प्र० आवइ छै।

[११] यह छंद म० १०, पं० ११, ग्या० १२, र० ना० न० अ० १३, स० प्र० १.२२ है।

१. प्र० स० बांभण, पं० र० ग्या० न० अ० लग्नकउ बंभण, ना० लगन बंभण।

दीन्हउ छइ[७] सोनउ सोलहउ।
पाट[८] पटंबर[९] पाका[१०] जी[११] पान।
कर जोड़ी[१२] राजा भणइ[१३]।
आगलइ[१४] राव[१५] सिउं[१६] राषिज्यो मांम[१७]।।भु०।।

[१२]

मेल मिली तिहाँ[१] हरषियउ[२] राउ।
सूरिज मंडल[३] रह्यउ[४] रे[५] लुकाइ।
कउतिग आया छइ[६] देवता।
सुरग थी[७] आविया[८] सुरह[९] बिमांण।

२. पं० र० ना० न० अ० समदीयउ छइ, ग्या० समुदावइ, अ० चमुदीयउ, स० समदइ छइ, प्र० नै दोयै। ३. ग्या० राय। ४ओ। पं० र० ग्या० न० अ० दीन्हा, ना० दीना छै, प्र० हांसलो। ५. पं० र० ग्या० न० अ० तेजीय, न० तेजीय, स० घोड़उ, प्र० घोडौ। ६. प्र० कमाय। ७. म० दीयउ छइ, पं० न० स० दीन्हो, ना० दीना छै, अ० दीन्हउ जी। ८. र० राउ। ९. स० पटोला, प्र० बइसारी नै। १०(+११). स० प्र० बीड़ा। १२. ना० कर जौ। १३. प्र० कहइ। १४। म० आगलि, ग्या० आगिला, ना० न० आगला, प्र० पांडीया, स० पांड्या। १५. म० रावउ, ग्या, रावसं, स० थोड़उ, प्र० तुम्ह। १६. स० म्हाको, प्र० माहरी। १८. स० मान।

[१२] यह छन्द म० १३, पं० १५, ग्या० १६, र० ना० न० १७, अ० १८, स० प्र० १.२७ है। किन्तु स० प्र० १.२ है:

(.१) जान संजोई बीसलराव।
(.२) खेह उठी रवि गयो लुकाइ (उलपाय प्र०)।

१. पं० र० ना० ग्या० तठइ, मू० अ० तव। २. पं० रसे चडीयउ छइ। ३. र० खेह स्युं, ग्या० ना० खेह। ४ (+५). पं० रहिउ, ग्या० गयउ रे, न० रह्यो। ६. पं० आया, स० आव्या। ७. पं० ना० स्वगंह, र० स्वरग्रह अ० सरग थंकि, स०

लूण उतारइ[१०] अपछरा[११]।
धनि धनि[१२] हो[१३] बीसल[१४] चहुआंण[१५]।। भु०।।

[१३]

पूजियउ[१] गणपति[२] चाली छइ[३] जान[४]।
लहइ[५] चउरासिया[६] दूणउ जी[७] मांन।
सात[८] सहस नेजा धणी।
पालषी बइठा छइ[९] सहस पंचास।

प्र० कोतिग ८. स० आव्या, प्र० आया, ना० आवी। ९. र० ना० न० अमर, ग्या० अमिअ, स० देव, स० प्र० इन्द्र १०. र० ना० उतारइ छइ। ११. न० म० सुहामणी, मू० सुहासणी। १२. प० तउ धन, र० ग्या० ना० तुं धन धन। १३ (+१४). म० प्र० बीसलदे। १५. म० चहुआंणि।

[१३] यह छंद म० १४, पं० १६, ग्या० १७, र० ना० न० १८, अ० १९, स० प्र० १.२८ है। किन्तु पं० र० ना० न० अ० में .३, .४, .५, .६ इस प्रकार है :

(.३) असी सहस घोड़ा चढ्या (—मिल्या न०)।
(.४) साठि सहस पालषी अपारि।
(.५) गूजर गउड चाल्या (—मिल्या न०) घणा।
(.६) राव राणा तणा अंत न० पार।

स०, प्र० में .६;८ क्रमशः हैं :

(.६) असी सहस चाल्या केकाण।
(.८) खेहाडंबर नवि सूझइ (छाहीयो-प्र०) भाण।

१. म० ग्या० पूजीय। २. स० विनायक, ग्या० गणपते। ३. र० चालीयइ, ना० न० मू० चालीयउ, अ० चालीय, स० चाल्यो छइ। ४. म० जानम। ५. म०

हस्तीय[१०] सिणगाड्या[११] छइ[१२] सातसइ[१४]।
पालीय परदलको[१४] नहीं छेह।
कटक[१५] चड्यउ[१६] धजा फरहरी।
जाणि करि बीसल परतिष्य देव ।।भु०।।

[१४]

देव[१] बाघेरडइ[२] दीयउ रे[३] मेल्हाण।
ऊचरइ[४] वंभण बेद पुराण।
मंगल गावइ[६] कामणी[७]।
पंच सबद[८] कउ[९] रुणझुणकार[१०]।

दीयइ, मू० इउ, ग्या० [में नहीं है], ना० चाहै, स० सहु। ६. ग्या० चउरास्या महं। ७. र० दुणजी, ग्या० प्रणउ जी, ना० विमणो, स० दीघउ छइ, प्र० दीघौ। ८ स० प्र० आठ। ९ सा० वइठा, प्र० बइसा। १०. प्र० हाथी। ११(+१२). स० प्र० चाल्या। १३. स० दोढ़सो म० सात छइ। १४. ग्या० परगण को। १५. स० प्र० रथ। १६. स० प्र० ऊपरि।

[१४] यह छन्द म० १८, पं० १६, ग्या० २०, र० ना० न० २१, अ० २२, स० प्र० १.३० है। किन्तु पं, ग्या०, र०, ना० .६ है :

सुबस बसउ थारउ एह संसार।

और स०, प्र०, .६ है : आज सफल राजा जनम संसार।

प्र० में .१ नहीं है।

१. स० जाइ। २. मू० पं० स० वघेरइ, ग्या० बाघोरडइ। ३. म० हूउ, ना० दीया, य० कीयउ रे, अ० दीघउ। ४. स० वाचउ, प्र० जिहां पढ़ै। ५. न० देव, अ० भाट। ६. न० गावइ छइ। ७. म० गोरडी। ८. म० मू० स्वामी पंच सबद। ९. पं० र० ग्या० ना० अ० करइ, स० प्र० तणा। १०. मू० बहु भुणकार. पं० झुरझणकार, र० स० प्र० झुणकार, न० जण झुणकार। ११. म० सिरइ, प्र०

मेघाडंबर सिरि[११] छत्र[१२] धर्‌यउ[१३]।
सुबस[१४] सिद्धारथ[१५] सयल[१६] संसारि[१७]।।भु०।।

[१५]

पाइ कंकण सिरि[१] बंधियउ मउड।
पंचमी[२] मजिलि गयउ[३] दुरग[४] चीतोडि[५]।

[में नहीं हैं] १२. प्र० ताडीयो। १३. पं० ना० धरइ, र० छइ, न० धरे, अ० ढलइ, स० दियउ। १४. म० सविसि, न० अ० सर्वजन, स० आज, पं० र० ना० सुबस वसउ (बासउ—ना०)। १५. पं० र० ग्या० ना० थारइ, न० अ० हरषीयउ, स० सफल राजा। १६. पं० र० इहु, ना० एक, स० जनम। १७. म० संसारि।

[१५] यह छन्द म० १६, पं० २१, ग्या० २२, र० ना० न० २३ अ० २४, स० प्र० १.३१ है।

पं० र० ग्या० ना० न० अ० में .४, .५, .६ है :

(.४) कडियाली हीरा की (दीपइ रे—न० अ०) जोड़ि।

(.५) चिहुं दिसि मोतीय झिगमिगइ।

(.६) कालीय पीलीय ढलकइ छइ ढाल।

इनमें .७.८ भी है, जो इस प्रकार है :

(.७) एक माता दूजा (बीजा-ग्या०) ऊमता।

(.८) प० र०, ग्या० ना० : तठइ राजा जाइ अरु वासी छइ (बसीयौ-ना०, पहुचा छइ-ग्या०) धार।

न० अ० : पांच (सात-न०) मंजल करि आवीयउ धार। प्र० स० में० .४, .५, .६ इस प्रकार है :

(.४) ब्राह्मण उचरइ बेद पुराण। (तुलना० स्वीक०त १४.२)

(.५) मंगल गावइ कामनी। (वही, .३)

(.६) उठी षेह नवि सूझै भाण।

१. प्र० शिर। २. स० प्र० प्रथम। ३. स० पयाणउ (पीयाणो—प्र०)। (४+५),

रात[३] फूंदा[७] पाट का।
वाजा जी वाजइ घुरइ निसाण।
राजा चालियउ परणिवा।
षेहाडंबर छाइयउ भाण।।भु०।।

[१६]

राजा[१] उतर्‌यउ[२] धार मंझारि[३]।
मन माहे[४] हरषियउ[५] राजकुमारि।
जाइ[६] सषी करउ आरती।
सकल[७] सपूरण[८] पूनिम[९] चंद।
सुरनर[१०] मोह्या[११] सुरगका[१२]।
गोवल माहि[१३] जिसउ[१४] परतिष्य[१५] गोविंद।।भु०।।

मू० गड चीत्तोडि, ग्या० दुरगि चीत्तोढ। ६. प्र० राता। ७. म० पेडइ,मू० वांधड।

[१६] यह छन्द म० २३, पं० २५, ग्या० २७, र०, ना० २८, नं० २६, अ० ३०, स० १.४६, प्र० १.४६ है।

१. ग्या० न० राजा जी, स० प्र० वीसल। २. र० ग्या० उतर्‌या, स० आव्यौ, प्र० आवीयो। ३. पं० न० अ० नयर मझारि, र० ना० नगर मझारि। ४. (+५). स० मन हरषी मन। ५. र० हरषी, न० हरषीय छइ, ग्या० हरपये। ६. स० प्र० चालौ (स० चाल्यौ)। ७. मू० कलत, म० पं० र० ना० न० अ० कलस-८. स० दिसो जीसो, प्र० दिसै जसो। ९. अ० पूरन। १०. मू० सुरने। ११. म० जोवंइ, अ० मिलि जौवै। १२. र० ना० छइ देवता, अ० सइ देवता; न० सवि मिली, स० प्र० देवता, मू० सुराइका। १३. मू० चंदन, म० ग्या० वदन, पं० र० अ० न० गोकुल माहि। १४. मू० वे पीते, स० जिम, ना० न० अ० [में नहीं है]। १५. स० सोहइ, प्र० वसै, पं० जियउ, अ० जइसो।

[१७]

तोरणि[१] आवियउ[२] बीसलराव।

सात[३] सषी[४] मिलि[५] कलस[६] बंदाइ[७]।

---

[१७] यह छंद म० २४, पं० २४, ग्या० २६, र० ना० २७, न० २८ अ० २६, स० १.५२, प्र० १.४६ है।

'किन्तु मू० में 'कूंकूं' (.४) तथा 'सूर' (.६) के बीच की शब्दावली छूटी हुई है।

पं० ग्या० र० ना० .२ है : अउहव सूहब कउतिग जाइ।

अ० में स्वीकृत .१ तथा .२ के वीच अतिरिक्त है :

सरब सोहगिण कउतिग जाइ।

बीसलदेव कुंबधावीई।

न० में इनमे से प्रथग स्वीकृत .२ के स्थान पर है।

प्र० १.२६, १.४५ तथा स० १.२६, १.४८ भी इस छंद से तुलनीय है :

स० प्र० १.२६ : परणवा चाल्यो बीसलराव।

पंच सषी मिली कलस बंदावि।

मोती का आषा कीया।

कूंकू चंदन पाका पान।

अमली समली आरती।

जाइ बघेरइ दियो मिलाण।।(तुलना० स्वीकृत १४.१)

प्र० १.४५ तथा स० १.४८ : धार नगरी आयो बीसलराय।

पंच सषी मिली देषिवा जाय।

मोती थाल भरावीया।

माहि बीजोरउ तिलक सिदूर।

अमली समली आरती।

जाणि प्रतक्ष उगीयो सूर।।

मोतियांका[८] रे आषां पडइ[९]।
चोवा[१०] चंदन तिल[११] सिंदूर[१२]।
अवली सवली आरती[१३]।
जाणि करि तोरणि उगूया[१४] सूर।।भु०।।

[१८]

सात सहेलीय[१] बइठी छइ[२] आइ[३]।
राजा[४] माइ[५] पुजावण[६] जाइ।
चंदन सीप भरी लियइ[७]।
काथउ सोपारीय[८] नइ[९] पका[१०] जी[११] पान।
रंग[१२] हथलेवउ जोडियउ[१३]।
जाणे[१४] रुषमणि[१५] सरिसउ[१६] बइठउ छइ[१७]कान्ह ।।भु०।।

---

१. म० ग्या० तोरण। २. म० वंदीयउ। ३. न० सरव, अ० सात, स० प्र० पच। ४(+५). न० सुहागण, अ० सहेलीय, म० सषी मिलइ। ६. न० कउतिग, प्र० देखवा। ७. न० गाउ, प्र० जाय। ८. र० ग्या० ना० न० मोत्यां का, मू० मोरवां में। ९. स० किया, प्र० हूया। १०. अ० चोवानै, न० चोजा, स० प्र० कूंकू। ११. (+१२). म० स्यउं करि सिणगार। १३. प० र० ना० न० अ० करइ आरती। १४. ग्या० प्र० स० उगियो।

[१८] यह छंद म० २५, पं० २६, ग्या० र० ना० २६, न० ३०, अ० ३१, प्र० १.५२, स० १.५७ है।

म० प्र० स० में .३ है मोतीयां का रे आबा पड़इ तुलना स्वीकृत १७.३ है।

१. म० प्र० पंच सषी मिलि। २. स० बइठी, म० मू० लीयइ। ३. म० मू० बोलाइ। ४. पं० र० ग्या० राजा हो, न० अ० राजानइ, ना० राजाइ, प्र० स० राजा है। ५. म० ग्या० माहि, न० अ० चउरीय। ६. न० अ० माहिं ले। ७. स० किया।

[१६]

देस[1] मालवइ[2] दूवउ रे[3] उछाह[4]।
राजमती तणउ रचूयउ रे[5] विवाह।
चंदन काठ कउ मांडहउ।
सोनाकी[7] चउरी[8] नइ[9] मोतियांकी[10] माल।
पहिलइ[11] फेरइ दीजइ[12] दाइजउ[13]।
आलीसर[14] सउं[15] ऊपरि[16] माल[17] ।।भु०।।

८(+६). र० प्र० स० सोपारीय। १०. (+११.) पं० पाका हो, र० प्र० स० पाका। १२. स० हइ, प्र० हरषै, ग्या० रंगहि। १३. पं० र० वाहिजइ, ना० चाढ़िजै, प्र० मेलीयौ। १४. पं० ग्या० र० ना० न० अ० जाणि करि। १५. (+१६). स० मिलियो। १६. मू० सिरि, पं० ग्या० र० ना० न० अ० [में नहीं हैं]। १७. ग्या० बइठउ हो।

[१६] यह छन्द म० २६; पं० २७, ग्या० २६, र० ना० ३०, न० ३१, अ० ३२, प्र० १.५६ स० १.६० है। किन्तु म० मू० में उपर्युक्त .५ और .६ के बीच अतिरिक्त है :

(दीन्हा छइ अरथ नइ गरथ भन्डार तुलना० स्वीकृत २६.४)

१.म० देसठि, म० देस सवि। २. न० मालव माहे, प्र० स० मालागिर (इन प्रतियों में मालवा को सर्वत्र 'मालगिर' कहा गया है)। ३. पं० हुउ, र० हुयउ, ग्या० हूयो री, ना० कुतौ, स० हूवउ हो, म० कीयउ रे। ४. र० उच्छाह। ५. पं० र० राजमती कउ; स० राजकुंवर को। ६. स० हुवउ, मू० करिबो, ना० रच्यौ। ७. प्र० सोना तणी। ८. म० थूंटी। ६. पं० र० ग्या० ना० न० अ० स० [में नहीं है]। १०, र० स० मोती की, प्र० मोती री। ११ अ० प्रथम, प्र० पैहलै। १२. ना० न० दियउ, स० राइ, प्र० [में नहीं है]। १३. स० दै डाइचौ, प्र० डायचो। १४. म० अलीयल देस, ग्या० मांडलगढ, पं० र० मंगलगढ़ ना० मंगलगढ़ अ० मांडलगढ ग्या०

[२०]

दूजइ[1] फेरइ फेरियउ[2] राउ।
भानुमती राणी कुमरि की माइ।
जमाई नूं[3] दीजिइछइ[4] दाइजउ[5]।
दीन्हा छइ[6] अरथ नइ सरव[7] भंडार।
दीन्हउ छइ देस[8] सवालषउ।
सर[9] साइंभरि[10] सुं[11] नागरचाल[12]।

न० मांडिलगढि। १५. र० सिउं, ना० सुं प्र० स० सों, ग्यां० स्युं। १६ (+१७). स० देइ कुडाल, प्र० देस कुडाल (तुलना० स्वीकृत २०.८)।

[२०] यह छंद म० २७, पं० २८, ग्या० ३०, र० ना० ३१, न० ३२, अ० ३३, प्र० १.५८, स० ०.६२ है। म० में अंतिम दो पंक्तियाँ नहीं हैं। म० स० में .२ है :

सयल अंतेउर—(ट महादे राणी स०) लीयउ रे वुलाइ। (तुलना० स्वीकृत २१.२)

ग्या० में यह पंक्ति स्वीकृत .२ के पूर्व अतिरिक्त है।

अ० में .७ है : हसि करि सासू जी वीनवै।

प्र० स० में स्वीकृत .४, .५ नहीं है, और स्वीकृत .८ के अनंतर अतिरिक्त है:

मांडल गढ़ सूं ऊपर माल। (तूलना० स्वीकृत १६.६)

१. ग्या० बीजइ, प्र० स० तीजो। २ पं० जउ फिरइ, न० अ० जव फेरीयउ, प्र० स० फेरइ छै। ३ मू० बाई नै, पं० जमाई काई, र० काऊं, न० कासूं न० अ० जमाई कूं, प्र० स० राजकुंवर। ४. प्र० स० [में नहीं है]। ५. स० दाडाइचौ, प्र० धौ डाइचौ। ६. पं० र० उण दीन्हा, ना० उण दीया, न० अ० दीना जी, स० प्र० (+७) दीया साधन। ७. मू० पं० र० ना० न० अ० गरथ। ८. न० दीन्हो। ९(+१०). म० टुंक तोड़ा, अ० तूंक तोड़ा, स० दीगा संभर। ११. पं०, सिउं, र० सिं, म० सूं० (=सुं), ना० तिहां, स० दीधा। १२. र० नागर वाल, ना० तेह विचाल।

तोडा[१३] टउंक[१४] विछालसउं[१५]।
बूंदीय[१६] सरसउं[१७] देस कुडाल।।भु०।।

[२१]

त्रीजइ[१] फेरइ फेरियउ[२] राय।
सगलउ अंतेउर लीयउ[३] रे[४] बुलाइ[५]।
राजमती सउं[६] दीजइ[७] दाइजउ।
दीन्हा तेजीय[८] तुरीय केकांण[९]।

---

१३ (+१४). ग्या० टडंक अछाइ। १५. पं० र० ग्या० ना० न० अछइ तेह बिचाल, ग्या० हिव तेह विचाल। १६+१७) पं० सात ही बूदीय सर सिउं, ना० जंबू सरसा।

[२१] यह छन्द म० २८, पं० २६, ग्या० ३१, ना० ३२, न० ३३, अ० ३४, प्र० १.५७, स० १.६१ है।

न० में .३ और .४ के बीच अतिरिक्त है :

दीन्हो अरथ नइ गरथ भंडार। (तुलना० स्वीकृत २०.४)
दीन्हा छइ देस सवा लखउ। (तुलना० स्वीकृत २०.५)

म० .२ है : भानुमती राणी लीयउ रे बोलाइ। (तुलना० स्वीकृत २०.८)

स०.४ है : दीधा साधन अरथ भंडार।

स० .४ है : दीधा सामेहणी नवसर हार।

१. (+२). म० तीसरइ फेरइ फिरीयउ, प्र० स० दूजो फेरो फेरियउ। ३(+४). ग्या० बैठो छइ। ५. ग्या० आइ। ६. पं० कायउ, ना० काउं, न० अ० काउं काउं, र० काय, ग्या० कासुं। ७. मू० अछै, पं० र० ग्या० अ० दीजइ छइ, स० (+८) दाडाइचौ, प्र० (+८) को डायचो। ८. अ० जी तेजीय, म० छइ। ९. पं० सुपाइ, ग्या० सउपा य, न० अ० सुंपा ज। १०. प्र० दीधो। ११. म० मंडोवरो। १२. मू० समुंद मांय, पं० र० सात समुंद, न० अ० सामुहि, स० समंद। १३ पं० र० [में नहीं है], ग्या० सर्व, अ० सुं, स० सारी,, प्र० नै, म० सहस।

दीन्हउ[१०] देस मंडोवरउ[११]।
समुंद सउं[१२] सोरंठ सहु[१३] गुजरात। ।भु०। ।

[२२]

हाति[१] लंबालूय[२] अंजलि[३] नीर।
गलइ[४] जनोइय[५] पहिरण[६] चीर।
कुलीय छत्तीसइ देषता[७]।
पाट पलिंग नइ सावटू सउड़;
राजा[८] दीयइछइ[९] दाइजउ।
बारां[१०] गढसउं[११] दुरग[१२] चीतौड़ । ।भु०। ।

---

[२२] यह छन्द म०२६, पं० ३०, ग्या० ३२, र० ना० ३३, न० ३४, अ० ३५, प्र० १.६४ है।

पं० ग्या० र० ना० न० अ० में स्वीकृत .१ यथा .२, स्वीकृत .२ यथा .१, स्वीकृत .३ यता .५ और स्वीकृत .५ यथा .३ है। पुनः इनमें स्वीकृत .६ यथा .८ है, और यथा .६, .७ हैं :

(.६) पाय पषालि नइ पूजियउ मउड़।
(.७) कर जोड़ी राजा भणइ।

म० में पं० .६ स्वीकृत .४ के स्थान पर है।

प्र० में .३ है ; चोथो पेरो फेरीयो।

ग्या० में .४ है : सोवन पालषी सावटू चीर।

१. न० आथ, प्र० हाते। .२ पूर तंबालू राजा। ३. न० प्र० अंचल। ४. पं० र० अ० न० कंधि। ५. प्र० जनोई राजा। ६. पं० पहिरताइ। ७. पं० र० ग्या० पाषती, अ० पेषतां। ८. अ० चउथइ फेरइ, र० प्र० राजा। ९. पं० दइ छइ र० दिइ छइ, अ० दीयइ। १०. म० बारहां, पं० तुम्ह बारह, र० तुम्ह नइ बारह, ना०

[२३]

पाटि बइठीछइ[१] राजकुमारि।

काडिहि[२] पटोलीय[३] चूनड़ी[४] सार।

कांनह[५] कुंडल झिगमिगइ[७]

सीससउं[८] राषडी[९] तिलक[१०] निलाडि[११]।

रूप देषि राजा हस्यउ।

त्रिभुवन मोहियउ[१२] जाति[१३] पमारि[१४] ।।भु०।।

[२४]

तुरीय पलाणीया ठामोठामि[१]।

सासू[२] जुहारण[३] चालीयउ[४] राइ[५]।

बार, अ० तुम्हा बारां ११. र० गढ़ सुं, ना० मौढ़ा प्र० गढ़ा, सुं। १२. पं० गरं न० रंग।

[२३] यह छंद म० ३०, पं० ३२, ग्या० ३४; र० ना० ३५, न० ३६, अ० ३७, प्र० १.५४, स० १.५८ है।

१. म० बइसारीयउ, न० बइसारीजइ, अ० बैसारी छै, प्र० बैठी अछइ, स० बइठा हुई। २. म० पहिर, ना० करहि। ३. स० वस्त्र। ४. पं० र० ग्या० ना० अ० सिरि चूनड़ी, स० जादर, प्र० नवसर। ५. पं० कानिह, र० कानिहि, न० स० कान्हे, अ० कांनहि, ना० प्र० काने। ७. स० आड़ीया, प्र० ताडीया। ८. पं० र० ना० न० अ० सोवन, प्र० स० सरब। ९. स० सोना रो, प्र० सोना तणो। १०. स० मुकुट, प्र० मुगट। ११. प्र० नेलाड़। १२. र० मोहइ ए, ना० मोहई, स० मांहइ, प्र० मोहो राणी। १३(+१४). पं० राजकुमार, र० राजकुआंरि, प्र० देष परमार।

[२४] यह छन्द पं० ३६, ग्या० ३८, र० ना० ३९, न० ४०, अ० ४२, प्र० १.६८, स० १.७१ है।

१. ना० ठामो ठाम। २. (+) ३ओ। र० जुहार करण। ४.(+५)। न०

कुलीय छत्तीसइ गइलछइ[६]।
माणिक मोती भूयउ नालेर।
सासू[७] आसीसत[८] वंदियइ[९]।
थे[१०] अविचल राज करउ[११] अजमेर[१२] ।।धु०।।

[२५]

हुई पहिरावणी हरिषयउ राउ।
वाजित्र[१] वाजइ[२] निसाणे घाउ।
दोवड वाजइ छइ दुडवडी।

अ० चालीयउ जाम, प्र० स० चाल्यो छइ राइ। ६. प्र० स० साथ छइ, ना० ऊलगे। ७ (+८). प्र० स० भाणमती आसीस ना० आसु आसीषत। ९. प्र० स० द्यइ १. र० तुम्हें, ग्या० थे तउ। ११(+१२) स, प्र० स० कीज्यो अजमेर, ग्या० करिज्यो अजमेर, ना० करउ गढ़ अजमेर।

[२५] यह छन्द म० ३१, पं० ३७, ग्या० ३६, र० ना० ४०, न० ४१, अ० ४३, प्र० १.६६, स० १.६९ है।

किन्तु पं० ग्या० र० ना० न० अ० में .१ है :

परणि अरणि घरि (करी@या०) चालीयउ राउ। (तुलना० स्वीकृत २७.१)।

म० मू० .४ है : मादल सरसी बाजइ छइ भेरि।

पं० ग्या० र० .५ है : घरि की (कउ@ग्या०) ऊभी धाह दे (दीयइ-या०)।

ना० .५ है : धार को नाथ भीतर दहइ।

न० अ० .५ है : धार निगलि (सगलाई-अ०) हो (जन-अ०) पेषतां।

प्र० स० में : (.२) अंचल बंधीयउ राजकुमार।

बाजइ वरधूं भूंगल[3] भेरि।
सगली धार सुहामणी[4]।
धारकउ[5] दीप[6] चाल्यउ[7] अजमेरि।।भु०।।

[२६]

राज़ाकइ बारि[1] घुर्‌या रि[2] निसाण।
मनमाहे हरषियउ बीसल चहुआंण।
परणियउ[3] राजा भोज कइ।
म्हाकइ४ अंचल बंधीय[5] राजकुमारि।
सफल दिहाडउ[6] आजकउ।
जो[7] घरि आविस्यइ[8] जाति पमारि।।भु०।।

(.३) चौरी चढ़ियो राजा भोज की। (तुलना० स्वीकृत २७.६)।

(.४) स० : हुवऊ संघारउ रावलइ। प्र० : हू संतोष राजा माहि।

१. पं० बाजा, ग्या० ना० र० बाजा हो, बाजा जो। २. पं० र० ग्या० न० अ० बाजीया, ना० बाजै छै। ३। ग्या० अ० भली। ४. मू० मधामणी। ५. ना० बीस [ल] राव। ६. अ० वीद, स० द्विज, प्र० दीपक। ७. र० [में यह शब्द बाद मे बढ़ाया गया है], प्र० गढ अजमेर।

[२६] यह छन्द पं० ३१, ग्या० ३३, र० ना० ३४, न० ३५, अ० ३६ है। म० प्र० स० मे यह छन्द नही है किन्तु इसकी .४ स्वीकृत छन्द २५ की .२ के प्र० स० के पाठ के रूप में तथा इसकी .५ स्वीकृत छन्द १० की ५. के म० के पाठ के रूप में आई हैं।

१ ना० वारणै। २. ग्या० न० घुर्‌या रे० घुरा० जी, अ० घुराइ। ३. ना० मन हरष्यौ। ४. न० अ० [में नहीं है]। ५. पं० अ० गोरी। बांधीयउ, ग्या० बीधी, र० बांधी छै, ना० बांधी। ६. ग्या० अ० दिहाडउ गोरी। ७ ग्या० जउ, अ० जां। ८. ग्या० आवीयउ, अ० आवीयो बीसल हो।

[२७]

परणि उरणि[१] घरि[२] आवियउ[३] राइ[४]।
सगली[५] जनमांहि[६] हूउ उछाह।
राउ[७] कहइ[८] परधानस्यंउ[९]।
कइ[१०] महानूं[११] तूठउ[१२] सिरजणहार[१३]।

---

[२७] यह छन्द म० ३२, पं० ३८, ग्या० ४०, र० ४१, ना० ४६, न० ४२, अ० ४४ है। इस छन्द की पंक्तियाँ स० में क्रमशः १.७८.१, तथा १.७३.२, .३, .४, .५, .६ हैं और प्र० में प्रथम १.७४.१ है, शेष पंक्तियाँ उसके किसी छन्द में नहीं है। पं० ग्या० र० ना० न० में .५, .६ हैं :

(.५) चउरी चढ्यउ राजा भोज की। (तुलना० स्वीकृत .६)
(.६) बढा बडेरा मेल्या करतार।

अ० में पं० ५ यथा .७ है, और .८ है :

मन को वांछित पायउ अपार।

म० मू० में .२ है : बाजा जी बाजइ नीसाणे घाउ। तुलना० स्वीकृत २५.२)

स० १.७४.३ है : सुणि प्रधान राजा कहइ। (तुलना स्वीकृत २७.३)

स० १.७३.६ है : जाइ सुषासण बइठो छइ राइ।

ना० में .१ के स्थान पर है। पाटु दुलीचै बैठेउ चै राइ।

१. र० ग्या० परणि अरणि, स० परणी, प्र० परणीनै। स० प्र० [में नहीं है]। ७. स० आयउ। ४. प्र० स० बीसलराय। ५. ना० नगर। ६. ना० मांहे। ७. पं० र० ना० अ० राजा, न० राज। ८. न० कइ। ९. पं० र० ग्या० जन सांभलउ, न० अ० मन्त्री सांभलउ। १०. म० कइ, र० भाइ, अ० कहै, ग्या० [में नहीं है]। ११. पं० र० ग्या० न० म्हानइ अ० अम्हनै, स० मोहि। १२. पं० र० तूठउ हो, ना० ग्या० न० अ० स० तूठउ छै, म० तूठाउ। १३. म० पं० ग्या० देव मुरारी। १४ (+१५). न० विहि लिख्यउ, स० आखर। १६. स० लिखाया। १७. म० विहतणउ,

कइ[14] लेष्यउ[15] लाधउ[16] विहितणउ[17]।
राजा भोज की चउरी एह चड्या जाइ ।।भु०।।

[२८]

गरब करि बोलियउ[1] सइंभरि[2] वाल[3]।
मो[4] सारिषउ[5] नहीं[6] अवर[7] भूआल[8]।
म्हा घरि[9] सइंभरि उग्रहइ[10]।
चिहुं[11] दिसइं[12] थांणा रे जेसलमेर।
लाख तुरीया[13] पाषर[14] पडइ[15]।
गोरी[16] राजकउ[17] बइसणउ[18] गढ अजमेरि।।भु०।।

न० विहतणउ सार, स० वेह का। १८. म० चवरी।

[२८] यह छंद म० ३४, पं० ४०, ग्या० ४२, ना० ५२, र० न० ४४, अ० ४६, प्र० २.१, स० २.२ है पं० ना० में .५ नहीं है।

१. ना० वोलै, स० ऊभो छइ, प्र० ऊभो। २. म० सइंभर, प्र० सींभरियो। ३. न० वास (<वाल), म० राव, प्र० राय। ४(+५). पं० अ० मउ समउ, र० ग्या० ना० मो समउ, न० मो सम। ६(+७). पं० र० अवर न० ग्या० ना० को नहीं अवर, म० नहीं कोइ अवर। ७. अ० [में नहीं है], स० ऊर। ८. ग्या० र० प्र० भूपाल। ९. पं० ग्या० ना० न० अ० मो घरि, र० मो घर, स० म्हां घरि, प्र० माहरि घरि। १०. म० मू० नवलषी। ११. पं० र० ना० म्हारइ चिहुं, न० म्हारा चिंहु, अ० म्हारौ चिहुं। १२. मू० वली। १३. म० तुरीय। १४(+१५). म० घरि पाषरइ। १६. ना० प स० [में नहीं है] १७. मू० गडूया को, प्र० राजा को। १८. प्र० स० थानिक। १९. म० गढ़ अजमेर।

[२९] यह छन्द म० ३५, पं० ४१, ग्या० ४३, र० ४५, ना० ५३, न०

[२९]

गरब[१] म[२] करि हो[३] सइंभरि वाल[४]।
तो[५] सारिषा[६] अवर[७] घणा रे भूआल[८]।
एक उडीसा कउ धणी।
वचन[९] दुइ[१०] म्हांका[११] माणि[१२] म० माणि[१३]।
जिउं[१४] थारइ[१५] सइंभरि उग्रहइ।
तिउं[१६] आं घरि[१७] उग्रहइ हीराकइ षांणि।।धु०।।

[३०]

थारउ[१] जनम हूउ[२] गोरी[३] जेसलमेरि[४]।
परिणि आणी तूं गढ अजमेरि।

४५, अ० ४७, प्र० २.२, स० २.४ है।
म० मू० .५ है : थारइ रे भसकउ लूण कउ।
न० अ० ,, : जिउं थारइ सैंभर लूण की।

१. स० गरभि। २(+३). प० र० ग्या० न० कीजइ धणी, न० अ० म जाइ धणी, स० न० बोलो हो, ना० न० कीजइ, प्र० म० करिहो। ४. म० प्र० स० सइंभर राव, पं० सइंभर वालि। ५(+६). पं० र० ग्या० तुझ समां, न० अ० तो थकी। ७. म०राव, पं० आछइ, र० छइ, अ० अधिक छै, न० अधिकइ, ना० [में नहीं है]। ८. ना० प्र० भूपाल। ९. पं० वच। १०. न० ए०, प्र० स० [में नहीं है]। ११. म० म्हाकरि, अ० अम्हारो, स० हमारउ तुं। १२ (+१३). ना० मानिनह्व जोइ, स० मानिनु मानि, म० मू० जाणि म० जाणि, ग्या० मानि न० मानि, प्र० मान निसांच। १४(+१५). प्र० थारि घरि। १६(+१७). पं० तिहु उवा घरि, स० राजा उणि घरि, ना० त्युं उणरइ, प्र० उण घरि।

[३०] यह छंद म० ३७, पं० ४४, ग्या० ४७, र० न० ४८, ना० ५६, अ० ५०, प्र० २.५, स० २.७ है।

बार[5] बरस की डावडी[6]।
किहाँ[7] रे[8] उडीसउ अरु[9] जगन्नाथ[10]।
अन्न छोडउं[11] पांणी तिजउं[12]।
कहि[13] नइ[14] गोरी थारी[15] जनम की बात।।भु०।।

[31]

जइ[1] तूं[2] पूंछइ[3] धरह नरेस[4]।
वनषंड[5] सेवती[6] हिरणी कइ बेस।

म० में स्वीकृत .1, .2 की निम्नलिखित शब्दावली 'तूं' के शब्द साक्य के कारण छूट गई है : 'जेसलमेरि। परणि आणी तूं'।

1. अ० [में नहीं है], प्र० स० (+2+3) जनमी गोरी तूं। 2. म० हूयउ। 3. पं० अ० तूनां। 4. अ० गढ़ अजमेर : 5. पं० र० अ० ना० बारह, म० सात। 6. प्र० स० गोरडी। 7. म० कहि पं० र० न० कहाँ, अ० किह, प्र० (+8) किम समरूं, स० (+8) कूं समर्‍यो। 8. म० नइ, ना० [में नहीं है], न० ते। 9(+10). ना० अ० किहां जगन्नाथ, न० जगन्नाथ, मृ० को जगन्नाथ, प्र० स० जगन्नाथ। 11. ग्या. आडु, प्र० स० मेल्हूँ। 12. ग्या० तजुँ। 13(+14). पं० तउ कहिनइ, ना० अ० तूं तउ कहि नइ (न—ना०), स० कहित, ग्या० तउ कहि न। 15. अ० थाका, ग्या० थाकी, र० स० थारा।

[31] यह छन्द म० 36, पं० 45, ग्या० 48, न० 49, ना० 57, अ० 51, प्र० 2.6, स० 2.8 है।

1.पं० ग्या० र० अ० ना० न० जणम की। 2. पं० ग्या० र० अ० ना० न० बात। 3. पं० ग्या० अ० ना० न० सुणउ, म० धरह, प्र० पूछइ छइ। 4. न० तरस। 5(+6). म० बनषंड सेवउं, पं० बनषंड भोगवउ, ना० वनषंड भोगउ, स० बनषंडरहती। 7. प्र० आहडी आयो। 8. म० मृ० दुहुं,प्र० दोए, स० ले। (9+10).

निरजल करती एकादसी।
एक आहेडीय[७] बनह मंझारि।
बिहुं[८] वाणे[९] उरि आं[१०] हणी।
म्हांकउ[११] काल[१२] घट्यउ[१३] जगन्नाथ दुआरि[१४]।।भु०।।

[३२]

हिरणी[१] मरणि[२] समर्‌यउ जगन्नाथ।
आइ पहुतलउ[३] त्रिभुवन नाथ।
संष रे[४] चक्र गदाधरो।[५]
मांगि[६] हिरणी[८] मनह[९] विचारि[१०]।
जइ[११] तू[१२] तूठउ[१३] त्रिभुवनघणी
स्वामी[१४] पूरब[१५] देसकउ[१६] जनम निवारि[१७]।।भु०।।

म० मु० बाणे विचिआं, पं० र० अ० बाणे उरि, न० बाणी उर, स० बाणां उरहु। ११. पं० र० अ० ना० न० ग्या० (में नहीं है]। १२. प० र० न० ना० ग्या० मरण, प्र० स० जनम। १३. प० ना० न० ग्या० हूवउ, र० हूउ. स० दीज्यी, प्र० हूयो। १४. म० कइ वारि, प्र० कइ दूवारि।

[३२] यह छन्द म० ३८, पं० ४६, ग्या० ४९, ग्या० ४९, र० न० ५०, ना० ५८, अ० ५२, प्र० २.७, स० २.९है।

म० .५ है : तइ तूठइ वर पामिजइ। (तुलना० स्वीकृत ४०.३) स० में .२ नहीं है।

१. ग्या० हिरण। २. स० मणि। ३. न० अ० पहुतौ जी, रा० ग्या० ना० अ० पहूतौ, ग्या० पहूतउ। ४. प्र० नै०। ५. न० गदा करि धर्‌यउ, स० गदाधारीय। ६. पं० रा० ग्या० ना० अ० तू तउ मांगि, प्र० मांगि हो। ७. (+८). मू० प्र० हिरणली। ९. पं० चितह, र० चितय, ना० मन मै। १०. पं० र० ग्या० मझारि।

[33]

पूरव देसकउ[1] कुच्छनउ[2] लोग[3]।

पान फूलांतगणउ[4] नवि[5] लहइ[6] भोग।

कण संचइ[7] कूकस भषइ।

अति चतुराई गढ़ ग्वालेरि।

कामणी जेसलमेररी[8]।

स्वामी पुरुष भला अछइ[9] गढ़ अजमेरि।।भु०।।

---

11. (+12). ना० हू, पं० ग्या० जउ, स० तो। 13. स० तूठा। 14. पं० ग्या० र० न० म्हारउ, ना० अ० म्हाके, स० [में नही है]। 15 (+16). प्र० स० पूरबदेस म्हारो, म० पूरव्यउ देस कउ। 17. ना० विचार।

[33] यह छन्द म० 36, पं० 47, ग्या० 50, र० 51, न० 51, ना० 56, अ० 54, प्र० 2.8, स० 2.11 है।

किन्तु म० में .4. .6 है : (.4) चतुर माणस राजा भोज की धार।
(.6) लूगडउ चोपडउ गढ़र वालेर।

अ० में .4, .6 म० की उपर्युक्त है : फिर है अ० .7 : किह खंड कोई सरोहिजै। इसके अनंतर यथा अ० 8 स्वीकृत .6 है।

न० में .4, .6 यथा म० में हैं तथा यथा .7 स्वीकृत .6 है, .8 नही है।

प्र० तथा स० में .6 है : भोगी (भोगी—स०) लोक दक्षण के (को—स०) देस।

1. म० देसनउ, प्र० देस का, स० देसके। 2. म० कचउ, म०, पांडुरउ, ना० कच्छगो, र० कचनी ग्या० कछु नही, न० कुचनउ प्र० कछूहा जी, स० पूरव्या। 3. पं० ग्या० प्र० स० लोक। 4. र० फूलां कउ। 5(+6). रा० तुं लहइ। 7. प्र० संघचै। 8. ग्या० प्र० जेसलमेर की। 9. म० मे यह शब्द नहीं है।

[३४]

जनम मांगिउं[१] स्वामी[२] मारू कइ[३] देसि[४]।

राजकुंवरि[५] अनइ[६] रूप[७] असेसि[८]।

रूप निरूपम[१०] मेदिनी[११]।

पहिरणइ[१२] लोवडी[१३] झीणइ रे[१४] लंकि।

आछी[१५] गोरी[१६] धण[१७] पातली[१८]।

अहर[१९] प्रवालीय[२०] नइ[२१] दाडिम[२२] दंत।।भु०।।

---

[३४] यह छंद म० ४४, पं० ४८, ग्या० ५१, र० ५२, न० ५५, ना० ६०, अ० ५८, प्र० २.६ स० २.१२ है।

पं० ग्या० र० ना० न० में या उपर्युक्त .७, .८ है :

(.७) इसीय विधाता विहि घड़ी।

(.८) कामिणी कहूं किरूप अनंत।

अ० में यथा .७, .८ है : (.७) माणवती धण लाजसूं।

(.८) रतन पायौ जाकौ जाणौ जी कंत।

इनके अतिरिक्त अ० में यथा .६, १० पं० .७, .८ हैं।

प्र० स० .५ है : ललयांगी (ललांगी—प्र०) धन कूंवली।

१. पं० ग्या० र० दीयउ, इ० हूयो, स० हूवउ, ग्या० ना० मांगूं। २. पं० र० [में नहीं है], प्र० स० थारउ, ग्या० गोरी। ३(+४). न० मारूयइ देस, ग्या० मारू को देस। ५. म० प्र० राजघरिणी। ६. पं० र० न० अ० अरु, स० अति, प्र० नइ। ७. पं० रूपि, न० पआर (<अपार)। ८. पं० असेसि, न० नरेस। ९. पं० रूपि। १०. पं० नइ रूपिन, र० अ० निरूपी। ११. पं० मेदन, ना० मेहिना। १२. म० उठणइ, र० पहरिणि, न० पहिरणि प्र० स० आछा। १३. प्र० स० कापड़, ना० झीणी लोवडी। १४. पं० झीणइए, र० अ० जीणइ जी, ना० झीणउ, न० झीणइ जी। १५(+१६), म० अछइ गोरी, पं० अ० आछी गोरी, ना० आची

[३५]

चितह[१] चमकियउ बीसल राव।
धणकउ[२] बचन[३] बस्यउ[४] मनमाहिं[५]।
म्हे[६] विसराह्या[७] गोरडी[८]।
मइ[९] तइं[१०] बरस बारहकी काणि[११]।
ऊलग कइ मिसि गम करउं।
जिउं घरे आवइ हीरा की षांणि।।धु०।।

गोरी। १७. र० में नही है], स० धण। १८. प्र० कूयली, स० कूंवली। १६. प्र० अहेर, स० अहिरध। २०. म० प्रवालि, ग्या० परवाली, प्र० पवांलो, स० बाला। २१(+२२). म० ग्या० ना० दाडिम, प्र० जिसा निरमला, स० निर्मल।

[३५] यह छंद म० ४५, पं० ४२, ग्या० ४४, न० र० ४६, ना० ५४, अ० ४८, प्र० २.३ स० २.५ है।

पं० र० ग्या० ना० न० अ० में .५, .६ है :

(.५) कह्यउ म्हारो (तुम्हारउ—या०) जे सुणउ। (तुलना० स्वीकृत ११८.५)

(.६) म्हे तो जाइ देषस्यां (नइ देषस्युं—ग्या०) हीरा की षांणि।

प्र० स० में स्वीकृत .१, .२ परस्पर स्थानांरित हैं, और .५, .६ हैं :

(.५) कउ म्हारइ हीरा उग्रहइ।

(.६) नहीं तो गोरी तिजूं हूं पराण।

और प्र० .३ है : मनमाहि कूमषाणो षरो।

१. ग्या० चित्त। २. र० ना० धण का। ३. स० बोल। ४. पं० र० रह्या, ना० बस्या, ग्या० हीयउ बस्या। ५. अ० चित माहिं। ६. म० म्हास०, हूं। ७. ग्या० बिचिराया, न० सिराह्या, स० वीसरुयो। ८. म० न० ऊचटया न० गोरी तइं देषस्यां हीर कह्या, स० ते वेदिंठा। ६ (+१०). पं० र० ना० न० हम तुम्ह, अ०

[३६]

हूं[१] विरासी[२] राजा[३] मइ[४] कीयउ[५] दोष[६]।
पगरी[७] पाणहीस्यउे[८] किसउ[९] रोस[१०]।
कीडी ऊपर कटकी किसी।
म्हे हस्या थे करि जाणियउ साच।
ऊभीय[११] मेल्हि[१२] किउं[१३] चालीयउ[१४]।
स्वामी[१५] जलह[१६] विहूणा[१७] किम जीयइ[१८] माछ[१९]।।मु०।।

ढुढया हम तम, प्र० अम तम, स० म्हानुं। ११. प्र.स० लांवा।

[३६] यह छन्द म० ४६,पं० ४३, ग्या० ४५, न० र० ४७, ना० ५५ अ० ४६, प्र० २.४ स० २.६ है।

म० में .३; .४ छूटी हुई हैं।

स० में .३, .४ हैं : (.३) में य हसंती वोलीयो।
(.४) आपणइ मान हतौ मानस छइ सांस।

प्र० में .३, .४ हैं : (३) मोरे हंसंता वोलीयो।
(.४) आपणइ मनि तुमे मानियो सांच।

१(+२). म० हूं भूली, पं० र० म्हे विरस्यां, स० हूं दराकी। ३. पं० र० वोलियउ, ग्या० राजी, प्र० म्हारा धणी, स० धणी। ४ (+५). स० नौ कियउ। ६. स० रोस (तुलना०.२)। ७. पं० र० पगकी, ग्या० पायनी, ना० पांनी, न० पावरी, स० पांवकी प्र० [में नहीं है]। ८. र० पाणही सिं, प्र० पाणही उपरि, ना० पाणिही सुं, स० पाणही सुं। ९(+१०) पं० स० कियउ रोस, प्र० ए कसो रोस। ११(+१२), स० ऊभडी मेल्हे, म० ऊभरी मेल्हि। १३. पं० ग्या० न० अ० ऊलग, र० उलगइ, ना० प्र० नै०, स० [में नही है]। १४. पं० अ० चल्यउ, र० चलिउ, ग्या० चड्यउ, ना० चालस्यां म० चालीयइ। १५. पं० र० ग्या० ना० न० अ० प्र० (में नहीं है].

[३७]

सइंभरि[1] धणीय[2] किउं३ ऊलग जाइ[4]।
म्हाकी[5] तूं[6] गइल[7] दे[8] करह[9] पठाइ।
पीहर[10] जाइसुं[11] आपणइ[12]।
आणिसुं[13] अरथ नइ[14] गरथ[15] भंडार।
आणिसुं[16] हीरा[17] पाथरी।
स्वामी[18] मालव[19] सरसी[20] आणिसुं[21] धार[22]।।भु०।।

स० राजा। १६. म० जलिहि, पं० अ० स० जल। १७. स० जल। १८. ना० जीवस्यै। १६. स० हांस।

[३७] यह छन्द म० ४८, पं० ५६, ग्या० र० ६०, न० ६३/१, ना० ६८, अ० ६६, प्र० २.१४, स० २.१५ है।

पं० ना० र० .६ है : म्हाकर—पं०, मांकी—नां०)
तउ भोज स्युं (सि—र०) आणंली भार (अणूंली धार—र० ना०)।
ग्या० .६ है : आणिसुं भोज सरसीय धार।
न० अ०,, : सहस गयंद सुं आणिस्युं धार।

१. म० सइंभर, प्र० जोरे, स० रहि रहि। २(+३). म० धणीय कउ, पं० धणीय किम, अ० धणीकुं, न० धणी कूं क्युं, प्र० धणो तम्हे, स० राव तू। ४. प्र० जाउ। ५. ग्या० म्हाका। ६. र० ग्या० ना० न० प्र० [में नहीं है]। ७. प्र० गेलि। ८(+६). प्र० तूं करहो, ना० दुइ करह। १०. जाय कै, प्र० जाऊं हूँ। १२. प्र० माहैरै। १३. म० लावउं पं० आणिस्यं, ना० आणसुं, प्र० आणू जी। १४(+१५). पं० र० गरथ, स० नइ दरव न० [में नहीं है]। १६. म० ल्यावउं, पं० ग्या० प्र० आणूं। १७. म० हीरा नइ १८(+१६). प्र० स० मांडव। २०. स० सरसीहु। २१. म० आणउँ, प्र० आणूं, ना० आंणूं ली (<जी)। २२. म० कार।

[३८]

हूं न० पतीजउं गोरी[१] थारइ[२] वइणि[३]।
जां[४] नवि[५] देषउं[६] आपणइ नइणि।
काल्ह ही[७] उलगाणउ हुइ[८] गम[९] करउं[१०]।
तेंडूं[११] वंभण दिन गिणउ[१२] आज।
छोडउं[१३] देस सवालषउ[१४]।
गोरी[१५] कोकि[१६] भतीजा[१७] म्हे[१८] सउंपिस्यउं[१९] राज।।भु०।।

[३९]

ऊलग जाण[१] कहइ धणी[२] कउण।
घर माहे वरउ[३] नहीं कूल्हडइ लूण।

---

[३८] यह छन्द म० ४९, पं० ४९, र० ५३, ग्या० ५२, न० ५६, न० ६१ अ० ५९, प्र० २.११ है। किन्तु र० ना० अ० में स्वीकृत .४ तथा .६ परस्पर स्थानान्तरित हैं।

१. म० स्वामी। २(+३). र थारइ हे वयण, प्र० थारा हे वयण, ग्या० थारे हे वयणि। ४(+५). प्र जवही न। ६. पं० देषं, र० न० देपुं। ७(+८) म० उलग। (९+१०). प्र० निगम करूं। ११. र० तेडे, प्र० तेडी, ना० तेरू, म० कोकउ, ग्या० क्रोध, न० अ० कोइक (तुलना० म० पाठ)। १२. र० गिणावो, प्र० धरूं, ग्या० गिणइ। १३. न० राज छोडिसूं, अ० छोडिहूं, र० छोडहों। १४. प्र० मंडोवरो। १५. पं० र० ग्या० न० अ० [में नही है]। १६(+१७). पं० अ० कोकि भतीजऊ, र० कोका भु [ती] जा नुं, ना० काका भतीजा, ग्या० न० कोकि भतीजा नुं, प्र० काक भतीजा ने। १८(+१९). र० ग्या० संपिसिउं, न० सूपिसु, प्र० सुपू, ना० सहू परचा।

[३९] यह छन्द म० ५०, पं० ५४, र० ग्या० ५८, ना० ६६, न० ६१ अ० ६४, प्र० ०.१२ है।

पं० र० ग्या० अ० में .२ है : जिहि (जहाँ—ग्या०) की गांठडी गरथ २ नइ

घरि[4] अकुलीणीय[5] रे[6] कलि करइ[7]।
रिण का[8] चंपिया[9] घर[10] न सुहाइ।
कइ रे जोगी हुइ नीसरइ[11]।
कइ[12] मुहडउ[13] लेइ[14] नइ[15] ऊलग[16] जाइ।।भु०।।

[४०]

ऊलग जाण की करइ छै बात।
हुं[1] पण[2] आवसुं[3] रावलइ[4] साथि।

(न—ग्या०) लूण।

न० में .२ है : गाठडी गरथ नइ कूल्हडउ लूण।

ना० मे .२ है : जिण की गाठडी गरथ न० कुलडै लूण।

प्र० में .६ है : सइंभर्‍यो राउ क्युं योलगै जाय।

१. ग्या-जायइ २. म० कहइ धण, पं० न० कहइ धणी, र० करिइं धणी, ना० कौ धणीय, अ० धणी कै। ३. प्र० वारा। ४. र० कइं। ५(+६). ना० अलाण, प्र० अकुलेणी। ७. र० कलह करइ, न० करि करइ, ग्या० कुलि करइं। ८. पं० र० कइ रिणका, ना० कइ रिण, अ० रिणि, ९. अ० च्युंपीया। १०. ग्या० धरि। ११. म० नीकलइ। १२(+१३+१४). न० अ० कइ मुह लेइ, प्र० सीभरयो राउ। १५(+१६). ग्या० न० ऊलग, ना० उलगण प्र० क्युं योलगै।

[४०] यह छन्द म० ५६, पं० ६२, र० ग्या० ६६, ना० ७४, न० ६८, अ० ८२, स० २.३०, प्र० २.२७ है।

म० .१ है : ऊलग चालिस्यइ धण करै उकंत।

म० .२ है : तूं नवि मेल्हि जीवती संगि।

और म० में स्वीकृति .३, .५ परस्पर स्थानांतरित है।

पं० ग्या० ना० न० अ० में .१ है : हउं (हूं—र० ना०) न० पतीजुं राजा थाकी

वांदीय[५] हुइ करि[६] निरवहूं[७]।
पाव[८] तलासिसुं[९] धोलिसुं[१०] वाड[११]।
ऊभीय[१२] पुहरइ[१३] जागिसुं[१४]।
इण परि[१५] ऊलगुं[१६] आपणउ[१७] राय[१८]।।भु०।।

[४१]

गहिली हे[१] मुंधि तोहि[२] लागी छइ[३] वाइ।
अस्त्री लेइ कोइ ऊलग जाइ।

(राउली-अ०) वात। (तुलना० स्वीकृत ३८.१)

१. (+२). पं० र० ग्या० ना० न० अ० साधण। ३. पं० ग्या० चालिस्यइ, ना० चस्यै। ४. पं० राइकइ। ५. पं० वांदडी हुइ, न० वांदी करि, स० दासी हुइ। ६. न० हूं, अ० छानी। ७. म० चालिस्यउं, पं० वापरउं, ग्या० हूं रहूं, न० अ० रहूं। ८. म० थारा पाव, अ० पाइ। ९. पं० तलासिस्यां, र० तलासिस्यो, ना० तलीतसुं, ग्या० उलसिसुं, न० तलामसि, प्र० तलासुं। १०. पं० ढोलिस्या, र० घालस्यो, प्र० डोलुं। ११. ना० वाव, न० अ० वाउ। १२. स० पुहर। १३. म० पहुरइ, ना० पौंहरं, प्र० पोहरइ, स० पुहर प्रति। १४. तं० जालिसिउं, अ० जागिस्यां। १५. पं० अण परि, अ० इणि विधि, स० इण हर। १६. पं० सेविस्यउं, र० ना० न० स० सेवस्युं, अ० सेवस्यां। १७. ग्या० रावना। १८. ग्या० पाउ, स० नाह।

[४१] यह छंद म० ५७, पं० ६३, र० ग्या० ६७; ना० ७५, न० ६६, अ० ७३, प्र० २.२८, स० २.३१ है।

म० .१ है : सात सहेलीय आइ वईठ। (तुलना० स्वीकृत ५१.१)।
,, .२ है : ऊलग जाती स्त्रीय न० दीठ।
,, .३ है : काइं लजावउ गोरडी।
,, .६ है : एइ पूरवउ धण पोटउ हे सार।
ना० .१ है : गहिली मूंध तूं परीय गिमार।
,, .२ है : हीयडलै नयण नहीं थारै नारि।

भोली[4] है[5] नारि[6] तू[7] बाउली।
चंद कूडइ[8] किउं ढांकियउ[9] जाइ।
रतन छिपायउ[10] किउ[11] रहइ[12]।
उवइ वाचाकउ[13] हीणउ पूरव्यउ राउ।।भु०।।

[४२]

चालियउ[1] उलगाणउ[2] धण[3] जाण न देइ[4]।
मो नइ[5] मारि कइ सरिसीय[6] लेइ[7]।

१(+२). ग्या० सुंध किउ। ३. त्या लगावीयउ, पं० न० अ० लागी।

४(+५). प्र० स० गहिली (तुलना६ स्वीकृत .१)। ६(+७). प्र० स० मुंधउ तूं. ग्या० नारि किउं। ८. प्र० कहो। ९. र० न० अ० प्र० स० ढांकणउ। १०. पं० र० ना० न० छिपायउ गोरी। ११(+१२). र० न० किम रहै, म० किउं छपइ। १३. पं० उठ ठइ वाचको, स० आगह वाचा कौ।

[४२] यह छंद म० ७२, पं० ६६, र० ग्या० ७०, ना० ७८, न० ७२ तथा १०७, अ० ७६ तथा ११३, प्र० २.२९, स० २.३२ है।

म० .४ है : नइण दोइ लै नइ मो मारि।

म० .५ है : जोवन वन भरि नारितइ। (तुलना० स्वीकृत .५)

म० .६ है : जीवतो न छोडउ स्वामी थारउ हो कोड।

म० ७ है : उलग जातउ तू कइ मुगछ होउ।

न० .४ है: नयण दुइ बाण कर बीधीयउ राउ : (तुलना० म० .४)

न० .५ है : जोवन कइ भर नाहला। (तुलना० म० .५)

न० .६ है : राति दिवस साथइ सेवसुं बेड।

न० .७ है : ओलगे म्हाकुं नवि चलउ। (तुलना० म० .७)

न० .८ है : हूं तौ जीवती थाका न मूकूं जी केडि। (तुलना० म० .६)

अंचल ग्रहि धण[८] इम[९] कहइ[१०]।
दुइ दुष सालइ हो सामीय सांझ।
जीवन मुरडीय मारिस्यइ[११]।
दोस किसउ[१२] जइ[१३] साधण[१४] वांझ[१५] ।।भु०।।

[४३]

छोड़ि[१] नइ[२] गोरी[३] तूं[४] दे[५] मुझ जांण[६]।
वरस दिन[७] रहूँ[८] तउ[९] धारडी[१०] आंण।

न० अ० में न० ७२=अ० ७६ के अतिरिक्त न० १०७=अ ११३ भी यही छंद है, किन्तु न० ७२=अ० ७६ पं० के अनुसार है, और न० १०७=अ० ११३ म० के अनुसार है।

स० में .४, .५ .६ हैं :

(.४) इक इकेली जोवन पूर। (तुलना० स्वीकृत ६१.६)

(.५) सूनी सेज वीदेस पिउ। (तुलना० स्वीकृत ७५.६)

(.६) दुइ दुप नाल्ह कहइगो कूण (तुलना० स्वीकृत .८)

१. म० चाल्यौ, ग्या० चालस्यां। २. र० ग्या० उलग, ना० ऊमांण। ३. र० तोई, ना० [में नही है]। ४. अ० चालण न० देई; प्र० जाण न० देहि (—देस प्र०)। ५. पं० र० कइ मुछ, अ० कहि मोहि, न० मोइहां। ६. म० सरि साथा, ग्या० सरसीय, अ० साइथ जी, स० साथ तुं, प्र० मुछ सरसी। ७. स० लेहि। ८ (+९). पं० र० ग्या० साधण, प्र० स० तै धन (—ती प्र०)। १०. प्र० स० रही। ११. प्र० मारि ज्युं। १२. प्र० कसा को। १३ (+१४). ना० जो साइ धण, प्र० गोरडीय। १५. प्र० नाह।

[४३] यह छंद म० ६३, पं० ६७, र० ७१, ग्या० ७२, ना० ७९, न० ७३, अ० ७७, प्र० २.३०, स० २.३३ है।

किन्तु प्र० में स्वीकृत .२ नही है।

१ (+२). म० रहु न० छांडिहे, अ० छांडिरे, प्र० स० छोड़ि अंचल। ३. ना० अ० गोरडी, म० भावज, प्र० स० धणि। ४ (+५). म० देहि, पं० र० तउ देहि,

कठिन पयोहर[११] दिव[१२] किया[१३]।
हसि करि[१४] गोरडी[१५] कहिस[१६] विचार[१७]।
एह[१८] दिव[१९] कीया[२०] आकरा
एह[२१] दिव[२२] सुर नर[२३] हूया छइ[२४] छार[२५] ।।भु०।।

[४४]

मइ[१] छडी हो[२] स्वामी[३] थारी[४] आस।
जोगिणि होइ सेवउं[५] बनबास।

ना. दे। ६. ग्या० जाणि। ७. अ० दिवस, स० दोय। ८(+६). पं० रहउं। १०. पं० न० थारी हे, अ० तुझ, स० देवकी। ११ म० पयोधर, पं० पयउहर। १२ (+१३). र० देब कीया, ग्या० न० अ० स० दिव करूं, ना० छोडीया, प्र० दव करूं। १४. पं० र० तब हसि करि, म० हसि, हसि, ना० अ० तब हसि। १५. स० गोरी। १६. म० काहिसु, पं० र० ना० न० अ० कहइ ग्या० करइ, प्र० पूछइ, स० पूछइ छइ। १७. प्र० स० नाह। १८(+१९). ना० ए दिव, प्र० एक दिव। २०. स० कीया छइ, अ० कीधा छै, प्र० सधण, स० छइ पीउ। २१(+२२). पं० र० न० स्वामीय ज (ईया-र० न०) दिवा अ० या दिवसां, ग्या० इया दिवाहू, ना० स्वामीय ईयां दिवि, प्र० इहें दिवसां, स० ईण दिव थी। २३. ग्या० सूर। २४. पं० र० हूंआ, ग्या० स० हूंया, ना० हुऊ, अ० ज्यानी, न० कीया दूआ। २५. म० सार, ना० छांह।

[४४] यह छंद म० ५४, पं० ७०, र० ७४, ग्या० ७३, ना० ८२, न० ७६, अ० ८०, प्र० २.३२, स० २.३५ है।

म०न० अ० .५ हैं : कइ रे पाणी पथ गम करउं।

ग्या० में म० न० अ० की तथा स्वीकृत दोनों .५ है, और दोनों के बीच में निम्नलिखित पंक्ति और है : कासी करवत हुं लीयुं जाइ।

म० में .१, .२ के बीच और है : मइला हो स्णामी किसउ बेसास। (तुलना० स्वीकृत ४१.२)।

कइ तप तपुं[६] वाणारसी।
कइ[७] तउ[८] परवत[९] चडउं[१०] केदार।
कइ रें हिमालइ माहिं गिलउं।
कइ[११] तउ[१२] झंफझ्यउं[१३] गग दुवारि[१४] ।।भु०।।

[४५]

छंडी हो[१] स्वामीर म्हे[३] थारी हो[४] आस।
मइला हो[५] थारउ[६] किसउ वेसास।

प्र० स० .४ है : कइ जाइ (प्रण-प्र०) भैरव पडण पडाई।
" .५ है : कड पंडव पथ संचरुं (नीसरूं-प्र०)।
" .७ है : कह्यउ हमारउ जइ सुणइ। (तुलना० स्वीकृत ५७.३)।
" .८ है : ऊलग स्वामी परिय जी वार (छाडि़ धणि इणी—प्र०)।

१. पं० ना० हिव, न० प्र० स० [मे नहीं है]। २. म० छांडी, स० प्र० मेल्ही, ग्या० छांडी हो। ३. प्र० स० मेरे धणी (मे धणी-स०)। ४. म० थारथी, पं० थाहरी, ग्या० थारडी। ५. र० सेवां। ६. र० तपसि; न० तपिसूं, स० तपुहुं। ७(+८). पं० र० ना० न० कइ शरीर, र० देइ किदार। ११(+१२). पं० स्वामी, अ० कै रे, र० न० स्वामीकै, प्र० कै हूं, स० कइ जाय। १३. पं० ना० न० धण मरिसी, र० धण मरिस्यै, अ० झुंझुपल्युं, प्र० स० सेवसूं। १४. पं० गंग नइ पारि, र० ग्या० न० गंग कै पारि, ना० गंग में जाइ।

[४५] यह छंद पं० ७६, न्या० ८०, ना० ८६, न० ८३, अ० ८७, प्र० २.१६, स० २.१७ है।

यद्यपि यह छंद म० में नहीं हैं, किन्तु पिछले छंद में स्वीकृत .१ तथा .२ के बीच म० में जो अतिरिक्त पंक्ति है, वह इसी छंद की .२ है।

१(+२). ग्या० छोडी हो स्वामी, प्र० मेल्ही छै मेरे धणी, स० मेल्ही हो मइ धणी। (+४). ग्या० न० थारडी। ५(+६). र० मैलायो हो थारो, ग्या० मैला

बांदी करि[७] धणि[८] नवि[९] गिणी[१०]।
म्हाकी[११] सगा सुणीजा माहे[१२] लोपी छै[१३] माम[१४]।
जीवत डी[१५] मूयां[१६] बडइ[१७]।
बालुं हो[१८] धणी[१९] तुम्हारडा[२०] दाम[२१]।।भु०।।

[४६]

बोलइ छइ[१] भावज छंडीय[२] काणि।
अंचल ग्राहि[३] गइसारिय[४] आणि।

थीआरउ, ना० मैला धारौ, अ० मनह मैला थारउ, प्र० स० मैला राजा थारउ। ७(+८). ना० बांदडी कर तै, अ० बांदी सरिसी र० तै हूं बांदी, स० तो हूं दासी। ९(+१०). अ० तै गिणी, प्र० स० करि गीणी। ११(+१२) र० ना० न० म्हांका सगा सुणीजा की, प्र० स० सभा सणीजा मां। १३(+१५). म० लोपीय माम, र० लोपी है लाज, प्र० नीगमी माम, म० ना गमीमा। १५. अ० इण जोवई माहे, प्र० जीवत डो। !१६(+१७). र० ना० अ० मूई भली। (१८(+१९). पं० बलं हो धण, र० हूँ बालों हो धण, ना० हूं बालू हौ धणी, ग्या० न० अ० बालूय हो स्वामी प्र० बालू हो भोली राजा, स० वालूं लोभी हूं। २०(+२१). पं० तुम्हारडा द्राम, र० तुम्हारडो राज, ना० थारडा ठाम, ग्या० न० अ० थारडा दाभ (—दास न०), प्र० तुम्हारा दास, स० थारा दाम०, म० तुम्हारडा ठाम।

[४६] यह छंद म० ६४, पं० ७७, र० ग्या० ८१, ना० ६०, न० ८४, अ० ८८, प्र० २.३४ स० २.३७ है।

किंतु पं० र० ग्या० ना० न० अ० में स्वीकृत .३ के स्थान पर स्वीकृत .५ है, और

यथा .५ है : कइ या (आं—ग्या०, आतो—ना०) पीहरि लाडली।

प्र० सं० में यथा .१ है : हसि गलि लाई भोजी सो काण (भांजी काणि-प्र०)।

और स्वीकृत .१ प्र० स० में यथा .२ है।

ऊभी[५] दीयइ[६] उलंभडा।
कइ धण[७] थारइ[८] हीयइ[९] न समाइ[१०]।
कइ धण[११] जीभकी[१२] आकरी।
किणि[१३] दुष देवर[१४] ऊलग[१५] जाइ।।भु०।।

[४७]

ऊभडी[१] भावज दीयइ छइ[२] सीष।
रतन कचोलइ किम[३] पाडइ[४] भीष।

प्र० .३ है : आगलि उभी भावजणी।

स० .३ है : आज उलेंभीउ भाजवा।

१. पं० रा० न० तठइ आई छइ, ग्या० ना० अ० तठइ आवी छइ। २. म० छंडी हे, पं० र० ग्या० मानीय, ना० नी, न० मजिय, अ० छंडीय। ३. प्र० ग्रहीत। ४. पं० र० न० अ० ग्या० वइसार्यउ (बइसारीय– ग्या०), प्र० बैसाडीयो, स० तिय बइसाडी छइ। ५. अ० बोलै छै। ६. अ० देइ। ७. र० स्वामी कै धण, सायधण वीरा, स० या धन वीरा। ८. प्र० थारि (=थारइ) ९.ना (+१०) इमायके, प्र० हृदे। ११. पं० क्या छइ, र० काया छइ, ग्या० कइ आं, ना० कां छइ, स० कैया, प्र० कै ए। १२. प्र० बोली, स० बोलकी। १३. पं० इस कउ, ग्या० न० हिव, र० अब कि, ना० एवेकु, अ० तिणि, स० कोणे। १४. पं० ग्या० देई, र० देइ तै, न० देव किऊं, ना० [में नहीं है]। १५. प्र० ऊलगै, ना० ऊगल।

[४७] यह छंद म० ६२, पं० ७६, र० ८३, ग्या० ८३, ना० ६२, न० ८६, अ० ६०, प्र० २.३५, स० २.३८ है।

म० में स्वीकृत .६, .७, .८ नहीं है, और ६ है : स्वामी ए स्त्रीयां नहीं एण संसारि। (तुलना० स्वीकृत .८)

सा[५] किम[६] पगस्यंउ ठेलिजइ[७]।
इसीय अस्त्रीय नवि राउ कइ नारि।
इसीय न देवलि[८] पूतली।
करल[९] नयण धण[१०] वचन[११] सुमीठ[१२]।
दईय[१३] निपाई[१४] विहि घडी।
म्हे तउ[१५] इसी[१६] तिरी[१७] न रवि तलै[१८] दीठ[१९]।।भु०।।

प्र० में स्वीकृत .५, .६, नहीं है, स्वीकृत .८ यथा ६. है, और .४, .५ इस प्रकार है :

(.४) असीय न० राय तणै रहै वास। (तुलना० स्वीकृत .४)

(.५) असीय विधाता घडि सकि। (तुलना० स्वीकृत .७)

ना० में .४ है : इसी असत्री जिण घर वीस।

पं० न० ग्या० में .४ है : इसी नारी जिणि कइ घरि नास।

र० " : इसी जिणि कइ घर वसिय छै नारि।

प्र० स० ,, : इसी रायां तणौ (राय तणै—प्र०) नही च अवास (रहै वास—प्र०)।

१. पं० र० ना० ऊभी हो, ग्या० न० अ० स० ऊभीय, प्र० ऊभी छै। २. पं० र० ग्या० देइ छै, न० देवइ छइ। ३ (+४). ग्या० जे पडइ, न० काइं पाडइ प्र० संपजै, स० राय सांपजै। .५(+६). म० क्यंउ, ना० इसी क्युं, न० असा किउं प्र० तोहि, न० स० ते नाउं। ७. म० पगस्यउं ठेलियइ, र० पग सिउं ठेलिजइ। ८. ग्या० देवहि, ना० देवां, न० देरवह। ९(+१०). र० करतल नयण धण, ग्या० न० अ० सरल नयण धण, स० सलूणो नयण धण। ११(+१२). पं० र० ग्या० ना० न० अ० षीरय (घरीय —ना०) सुमीठ, स० वचन सुमीत। १३ (+१४). ना० देह निपाई, ना० दईय न० पाउहि, स० दईय नरवाली। १५(+१६ +१७). ना० स० इसी अस्त्री, न० अ० म्हे तउ इसी नारी : १८ (+१९). पं० रली डिठ।

[४८]

साधण[१] बोलइ[२] सुणि रावका[३] पूत।
ऊलग जाण[४] कउ घरउ[५] कुसूत[६]।
बेटी ब्याही[७] राजा भोज की।
सोलहउ सोनउ काइं[८] करइ छार।
मरण जीवण स्वामी पग तलइ[९]।
कनक कचोलइ[१०] उरि[११] धरइ[१२] भार[१३]।
हेडाऊ का तुरिय जिउं[१४]।
हाथ न[१५] फेरइ[१६] सउ सउ[१७] वार[१८] ।।भु०।।

---

[४८] छंद म० ६६, पं० ८८, र० ८७, ग्या० ८६, ना० ६५, न० ८६, अ० ६३, प्र० २।३६, स० २।३९ है।

म० में स्वीकृत .३, .६ नहीं है, स्वीकृत .५ यथा .३ है, और स्वीकृत .७, .८ यथा .५, .६ हैं।

प्र०, स० में .१ है ऊभी भावज सिंह दुवार (राज कुमारि—प्र०) ज। शेष पंक्तियाँ हैं : स्वीकृत .४, .५, .६, .७, .८; स्वीकृत .२,.३ नहीं है।

१. पं० र० ग्या० ना० अ० भाटिणी। २. पं० ग्या० ना० अ० कहइ। ३. र० न० राजा का, ग्या० राजा की, ना० राज का। ५. म० घर नहीं, न० अ० करउ। ६. म० सूत, ग्या० छइ सूत, ना० सपूत, न० अ० छउ सूत। ७. अ० न० परणी। ८. प्र० वीरा काई। ९. र० ना० न० राजा पग तलइ, प्र० स० छैइ पग तलइ। १०. र० न० कनक कचोला, प्र० कनक कचोलडि, स० कनक कचोली, ग्या० कनक कचोइल। ११. (+१२+१३). पं० र० ग्या० उर धरइ भार, ना० अर भर्‌यो गात्र, प्र० स० उरि भयो भार, ग्या० विष हूया दो। १४. म० जउ। १५ (+१६). स० तुये दिन दिन हाथ फेर नइ, प्र० दिन माहिं हाथ फेरै। १७ (+१८). ना० वीसलराउ, स० सौ बार, प्र० दस बार।

[४९]

कडुव बोल मं[1] बोलि हे[2] नारि।
मइ[3] तुम्हे[4] मेल्हीय हे[5] चितह[6] बिसारि[7]।
जीभ नवी[8] नहु[9] नीलकइ[10]।
दवका[11] दाधा हो कूपल[12] लेइ[13]।
जीभका[14] दाधा[15] न पाल्हवइ[16]।
नाल्ह[17] भणइ[18] सुणिज्यो[19] सहु कोइ[20]।।भू०।।

---

[४९] यह छंद म० ६१, पं० ७५, र० ग्या० ७९, ना० ८८, न० ८२, अ० ८६, प्र० २.१७, स० २.१८ है।

पं०-र० ग्या० ना० न० में स्वीकृत .३ नही है। र० ना० न० में स्वीकृत .४ तथा .५ परस्पर स्थानांतरित है।

न० .१ है : तुहि सषी जूठी म्हे सांची नारि।

स० .३ है : जीभ न० जीभ बिगोयनो।

ना० .४ में .४ के 'दाधा' के अनंतर .५ के 'दाधा' तक की शब्दावली वर्ण-साम्य के कारण छूट गई है।

१ (+२). प्र० म० बोलिस। ३. पं० र० ना० ग्या० न० म्हें तउ, अ० म्हा, प्र० तै, स० तुं। ४. पं० र० ना० {मे नही है}, न० तो नइ, अ० तुं ना, प्र० मुझ, स० मो। ५.स० मेल्हसी, ना० मेल्हीयो। ६(+७), म० प्र० चितह ऊतारि, ना० चितह बिचार। ८(+९). अ० नवउ नही। १०. प्र० ऊगयो। ११. म० दधका, पं० अ० दव। १२. स० कुपली, ना० वले। १३. र० न० प्र० होइ, स० मेल्हि, ना० मल्यवै। १४. म० जेभां का, पं० जीभ की, र० न० जीभ। १५. पं० दाधी। १६. पं० र० न० अ० नवि पालवै, प्र० स० नु० पांगरई। १७(+१८): प्र० स० नाल्ह कहइ, ना० नाल्ह-भणजे। १९(+२०)। ना० सहू व विचार।

[५०]

चालियउ उलगाणउ छंडीय[१] काणि[२]।
अरथ दरव[३] थारा[४] जीव की[५] हाणि।
तइ बूडइ[६] स्वामी[७] म्हे[८] वूडी[९]।
तइ[१०] गयइ[११] स्वामी[१२] ए घर[१३] जाइ[१४]।
अरथ दरव[१५] गाड्या[१६] रहइ।
जेह नइ[१७] सिरिजियउ[१८] तेहीज[१९] पाइ ।।भू०।।

[५०] यह छंद म० ६७, पं० ७४, र० ग्या० ७८, ना० ८७, न० ८१, अ० ८५, प्र० २.३८, स० २.४१ है।

म० .१ है : साधण वोलीय छंडीय काणि। (तुलना० स्वीकृत ४६.१)

" .२ है : ताहरइ राजा गरथ की हाणि।

" .५ है : धन संचइ धरती गलइ।

प्र० स० .१ है : पंच सखी मिली वइठी छइ आइ। (तुलना० स्वीकृत ५२.१)

१. ना० झाली। २. ना० वाग। ३. ग्या० गरथ, र० घर। ४. ना० अ० थाकै, ग्या० घणा, स० लियां, अ० लिया। ५. ग्या० जीवीरी। ६. म० राडइ, पं० र० ग्या० न० अ० वुरइ, ना० मुवइ, प्र० विरो, स० वुरो। ७. पं० र० ग्या० राजा, अ० न० सामी, प्रस स० धणी। ८(+९). म० म्हे रुडी, पं० हम वुरउ, र० हम बुरो, ग्या० ना० हूं बुरी, प्र० मा० विरो, स० मौ वीरो। १०(+११). पं० र० न० तउ मुआ, ना० ग्या० तो मुइ हूं, अ० तो गया, प्र० तोइ विरो, स० तोहि बूरो। १२. पं० र० न० रातउ, अ० राउ जी, ना० राजा तव ही, ग्या० राउ तबही, प्र० थारि, स० थीरो। १३ (+१४). पं० र० ना० न० स० ही घर जाइ, ग्या० ना० परधर जाइ, म० इ घर जाई, प्र० घरि जाय, स० घर जाइ। १५. न० ना० गरथ। १६. प्र० काढो। १७(+१८). पं० जेहि न० सिरजियो, ग्या० जेह नइ सिरज्योउ हुवइ, प्र० जिण कूं सरजीया, स० जीण सीरज्यो होई। १९. पं० सोईय, र० ग्या० सोई, य, ना० सोइ ज, न० तेह नइ, प्र० तेह ज, म० सो फिरि।

[५१]

आकुली[1] बोलि[2] पाछइ[3] पछिताइ[4]।
हिव[5] किउ[6] नाह मनावणउ[7] जाइ[8]।
हर[9] तूठइ[10] वर[11] पामिजइ[12]।
सासू[13] न[14] गिणी[15] न देवर[16] जेठ।
म्हाकउ कह्यु[17] न राखियउ१८।
म्हा तोहे[19] गोरडी[20] छेहली[21] भेटि[22]।।भू०।।

---

[५१] यह छन्द म० ५१, पं० ८०, ग्या० ८४, र० ८५, ना० ६३, न० ८७, अ० ६१, प्र० २.६०, स० २.६ र० है।

म० .५ है : राजा मनि अवरकर वस्यउ।

न० में .३ नहीं है।

प्र० स० मे स्वीकृत .३ यथा .५ है, और .३ है :

मइ तो कांई नवि बोलियो। (तुलना० स्वीकृत .५)

१. अ० न० प्र० आकरी, स० आडो। २ओ। पं० र० ग्या० स० होइ। ३. पं० न० पाछइ, र० ग्या० नइ पाछइ, न० नई, प्र० षरो, स० नइ षरौ। ४. र० इव। ५(+६). म० हिव कउ, ग्या० अब किम, न० पछइ किउ, प्र० नाह बोलावइ, स० नांह बोलावउ। ७. प्र० हूं किण मुषि, स० धन कवन मुखि। ८. म० जाहि, स० जाह। पं० परहर, प्र० र० हरि। १०. प्र० पुज्यो होय, स० पूजो होइ। ११ (+१२). र० परि पाईयै, प्र० तो बाहुडइ, स० बाहुड़ो। १३(+१४+१५): म० देवर गिणइ, ना० न० अ० सासू न० गिणी, प्र० स० देवर मनावई। १६. म० नइ तिहि वड, प्र० अर बडो, स० अरी वडो। १७. पं० काय, ग्या० कहियउ। १८. ग्या० नवि रइइ। १९. म० म्हा तउ, न० हम तुम्ह, ना० म्हा नूं, अ० राउ तुम्ह, ग्या० हम तुझ, प्र० हावि, स० हुइ। २०. प्र० स० गोरी सुं, ग्या० हे गोरडी। २१. म० पं० र० ग्या० ना० अ० न० पाछिली। २२. न० अ० द्रेठि, स० भेट।

[५२]

सात[१] सहेलीय[२] रही[३] समझाइ[४]।

निगुणी हे गुण हूवइ[५] तउ[६] नाह[७] किउं जाइ[८]।

फूल पगर जिउं[९] गाहिजइ।

चांपीया[१०] तेजीय[११] जउ रे[१२] उससाइ[१३]।

मृग रे चरंता मोहिजइ[१४]।

सखी[१५] अंचलि वांधियउ नाह[१६] किउं[१७] जाइ।।मु०।।

[५३]

सात[१] सहेलीय[२] सुणउ[३] म्हारीय[४] वात[५]।

कंचूउ[६] षोलि दिषाडिया[७] गात्र[८]।

---

[५२] यह छंद म० ५८, पं० ६८, र० १०३, ग्या० १०४, ना० ११२, न० १२६, अ० १३५, प्र० २.१८ स० २.१६ है।

म० अ० में .३ नहीं है।

प्र० में .४ नहीं है, और .५ है : एक परा आ भोगंवइ।

स० में .४, .५ नहीं हैं।

१. पं० र० ग्या० ना० न० सखीय, प्र० स० पंच। २. प्र० स० सखी मिलि। ३ (+४). म० वइठी छइ आइ (तुलना० स्वीकृत ६४.१), अ० कहइ समझाइ, प्र० बैठो आय। ५. म० हूई। ६(+७). ना० न० अ० नाह, प्र० तो पीउ, स० तउ प्रीव। ८. पं० कं, म० कउ, र० ना० किम। ९. ग्या० ऊ०। १०. ना० जंपीया। ११. ना० तुरीय, प्र० री जीउ। १२. पं०तुरीय जिम, ग्या० न० अ० तुरीय, ना० उकाहिया। १३. म० सूसाई, न० ऊसास, र० केकाण, ना० जाइ, अ० ऊमाइ। १४. पं० र० ग्या० ना० गोरी मोहिजइ। १५. पं० र० ना० न० अ० भोली। १६. र० प्रिय। १७. पं० कं, र० किम, स० कुं।

[५३] यह छंद म० ५९/१+६०/२, पं० ६६, र० १०४, ग्या० १०५,

जा दीठां[९] मुनिवर[१०] चलइ[११]।
म्हाकउ[१२] मूरष राव न जाणए सार[१३]।

ना-११३, न० १२७/१+१२८/२, अ, १३६/१+१३७/२, प्र० २.१६ स० २.२० है।

म० ५९.४, .५, .६ हैं : अवकर बोलीयउ कोप्यउ है राव।
तिणि कुवचन सखी धण छली।
ढल गयउ (छालीउ—ग्या०) पांसउ नइ
चूक गयउ दाव।

म० ६०,१, .२, .३ है : रोवती ठणकती कहि नइ बात।
केलि गरभ जिसउ उबलउ गात्र।
(तुलना० स्वीकृत १२७.३)
उरि जाडी कडि पातली।
(तुलना० स्वीकृत ६४.७)

पं० ग्या० में स्वीकृत पाठ के अनंतर क्रमशः म० ५९.४, .५, .६ भी हैं, और स्वीकृत पाठ की .४ तथा .५ परस्पर स्थानांतरित हैं।

प्र० सं० में पंक्तियाँ है, क्रमशः (.१) स्वीकृत .६,
(.२) अस्त्रीय चरित्र नवि लहै
विचार (उलषइ गंवार—सं०)।
(.३) स्वीकृत .५,
(.४) स्वीकृत .२,
(.५) तउ (तोहि—प्र०) यतीनो म्हारो बालहो।
(.६) निरचै करि योलगैं चालणहार।

१ (+२+३), पं० र० ना० न० अ० सुणउ सहेलीय, ग्या० सगुणउ सहेलीय। ४(+५). म० मोरी बात, ना० माहरी बात, अ० 'हुं कहुं बात। ६. म० अंचल.

त्रीयां चरित[१४] मइ लष[१५] किया।
राउ नही[१६] सषी[१७] भइंस[१८] पीडार[१९]।।भु०।।

[५४]

आवि दमोदर बैठो छइ[१] पाट।
कैह नइ[२] म्हाका[३] प्रीउ की वात।

ग्या० कंचू. ना० कंचूबो, अ० कंचूयउ, प्र० स० चोली। ७. पं० दिखाया, ग्या० न० अ० दिखाडियउ, ना० दिखाईया। ८, न० तात। ९. पं० र० ग्या० जिणां दीठां न० जिह्य दीठा, अ० जांह दीठा। १० (+११) र० मुनि विरचै। १२. पं० ग्या० ना० अ० न० [में नहीं है]। १३. पं० र० ग्या० ना० न० वात, र० प्रकार। १४. प्र० स० लाख चारित्र। १५. प्र० स० आगइ, ना० [में नही है]। १६. पं० र० ग्या० न० बडउ। १७. पं० ना० न० परि, र० ग्या० पिणि। १८. म० भइस। १९। पं० ग्या० न० पींडाड।

[५४] यह छंद म० ७३, पं० ९६ र० १०१, ग्या० १०२, ना० ११०, न० १०९, अ० ११५, प्र० २.२६, स० २.२९ है। किन्तु .४ के अतिरिक्त पंक्तियाँ म० पं० र० ग्या० ना० में इस प्रकार हैं :—

म० में : (.१) पंडिया कहियइ दामोदर प्रीय तणी वात।
(.२) केहउ रे थावर केहउ रे राह।
(.३) नित नित चालउ करइ।
(.५) ग्रह गणि तिणि मंदा कह्या।
(.६) छोड़ि नइ गोरडी प्रीतणी बात।

पं० र० ग्या० ना० में : (.१) आवि दमोदर प्रीय समझाय।
(.२) ग्रह को पीड्यउ ऊलग जाइ।
(.३) विण दोषइ ग्रह पीडवइ।
(.५) उभीय मेल्हि उलग चालीयउ।

षरौ पयाणउ[४] ऊपरइ।

आठकउ थावर[५] बारमउ राह।

ग्रह गण[६] तो[७] अतिही[८] बुरा।

सिर धुणि गोरी मेल्ही धाह। ।भु०। ।

[५५]

पंडिया[१] हुं थारी गुणकेरी[२] दासि[३]।

ज़ोसीडा[४] दीह[५] मउडउ[६] परगासि[७]।

(.६) रोवती छांडि धणि चालीयउ नाह।

न० में पं० .३ के स्तान पर म० .२ है, और पं० .४, .५ के बीच म० .५, .६ और हैं, शेष पाठ यथा पं० का है।

अ० में म० .१ तथा तं० .३ नहीं है, शेष कुल दस पंक्तियाँ दोनों की हैं।

१. स० बइसि नु। २(+३). स० कहि न० वीरा। ४. स० अयाणउं, प्र० पीयाणो। ५. स० ठाव रवि। ६. प्र० ग्रहि गणा। ७(+). प्र० तिही।

[५५] यह छंद म० ७४, पं० ५०, र० ५४, ग्या० ५३, न० ५७, अ० ६०, प्र० २.२३, स० २.२५ है। ना० में यह छंद तथा इसकी क्रम-संख्या छूट गए हैं।

म० .३ है : कुदिन देई सुदिन परहरे।

तं० ग्या० में .४, और .६ परस्पर स्थानांतरित हैं।

प्र० में स्वीकृत पाठ के पूर्व निम्न पंक्तियाँ और हैं :

राज कूयारि बोलि एक चित्त।

बिप्र हकारीयो वेगि तुरंत।

आया प्रोहित राव का।

१. स० पांड्या वीरा। २. र० गुणा की। ३. म०न०स० दास। ४. पं० जोसी, र० न० ओइसी, अ० जोतिषसु, स० दिन दस। ५. पं० र० ग्या० न० अ० दिन, प्र० बीस, स० महूरत। ६. प्र० मोडा। ७. न० प्रकास। ८. स०

मास च्यारि[८] विलंबाविज्यो[९]।
तेतलइ[१०] ल्यउंगी[११] म्हाकउ[१२] प्रीय[१३] समझावि[१४]।
देसू[१५] हाथ कउ[१६] मूद्रडउ।
सोवन[१७] सींगी कविलीय[१८] गाइ।।भु०।।

[५६]

पंडिया तोहि[१] बोलावइ रे[२] राव[३]।
लेइ पतडउ[४] पंडिया राउलइ आइ[६]।
सुदिन सोधे म्हारा[७] जोसियां[८]।
काढि न पतडउ अरु बोलि न साच[९]।
मास च्यारि राजा[१०] दिन नहीं।

एक। ९. प्र० लगि विलंवज्यो। १०. पं० स्वामी पलटिज्यो दिन, र० स्वामी पडिषिज्यो दिन, ग्या० स्वामी पालटज्यो दिन, प्र० फेरी, स० दूजइ फेरई। ११. पं० र० ग्या० लिउं (लि०र०), प्र० लेई, स० [में नहीं है]। १२. अ० रे, ग्या० न० [में नहीं है]। १३ {+१४). न० पिउ समझाइ, प्र० पीउ समझावि, प्र० प्रिय समजाइ। १५. पं० न० अ० लाष र० सवा, म० डउली, स० देसइ। १६. पं० न० अ० टंका कउ, र० लाखकउ, प्र० हाथां तणो। १७. पं० र० तू नइ सोवन, अ० तो नूं सोवन, ग्या० न० तोनइ सोवन। १८. तं० र० न० कपिली।

[५६] यह चंद म० ७५; तं० ५१, र० ५५, ग्या० ५४, ना० ६३, न० ५८, अ० ६१, प्र० २.२४, स० २.२६ है।

ना० में स्वीकृत प्रथम छः पंक्तियां नहीं है।

१. र० न० पंडिया तो नइ। २. प्र० बोलावइ छै। ३. प्र० राय। ४(+५). प्र० पतडउ लेई करि। ५. पं० न० [में नही है], अ० स० जोसी। ६. म० राउलइं आयु, पं० ग्या० राज माहि आइ, र० राहुलै आइ, न० राउल गुनि आउ, प्र० रावल चालि, स० वेगो आइ। ७. पं० ग्या०, अ० सुदिन देउ म्हाका, र० सुदिन देइ म्हारा; प्र०, स० सूदन (सो दिन—प्र०) कहे रूडा। ८. पं० र० न० स०

स्वामी तित्थ तेरस[११] नइ मंगलवार[१२]।
इग्यारमउ चंद्रमा[१३] देव नइ[१४]।
त्रीजउ[१५] चंद्रमा[१६] घोडिला[१७] जोग[१८]।
जोगिनी काल भद्रा नहीं[१९]।
पुषि नक्षत्र[२०] नइ[२१] कातिग मास।
तठइ राजा[२२] तुम्हे[२३] गम करउ।
आगिलउ[२४] राजा[२५] पुरवइ आस[२६]।।भु०।।

[५७]

चालियउ[१] उलगाणउ[२] छइ[३] सउण।
राजा नइ[४] चालतां बरजस्यइ[५] कउण।

जोइसी, अ० पंडिया। ९. प्र० स० बांचइ (ब्रांच्यो प्र०) पतडउ बोलइ छइ (बोलीयो-प्र०) सांच। १०. स० मास एक लगि। ११. पं० र० न० अ० स० तिथ तेरस। १२. प्र० नै सुभ सोमवार, स० बार सोमवार। १३. पं० ग्यारमउ चंद्रमाहइ। १४. प्र० प्र० देव है। १५. प्र० स० तीसरो। १६. स० चंद्र छइ। (१७+१८). पं० ग्या० थारा घोडला जोग, ना० घोडलां जोग, न० स० षोडिला जोग, अ० त्रीजि सुभ जोग। १९. न० जोगिनी काल भला नहीं। (२०+२१)। प्र० पुष्य नक्षत्र धूरि, म० पुक्षि नक्षत्र नइ। २२. पं० र० न० अ० तिण दिन राजा, प्र० स० जीण दिन सामी, ना० तिण दिन राव। २३. पं० र० ना० न० अ० स० थे। २४. ग्या० तउ आगिलउ, प्र० आगइ, ना० आगली, न० तद आगिलौ, अ० तठइ आगिलौ, स० ज्युं धणी आगइ। २५. पं० र० अ० राउ, प्र० तुमारी, न० राउ थांकी ना० राय सुं, ग्या० राव तुम्ह। २६. पं० अ० पूरइ थारी (थाथी—अ०) आस, र० तुझ पूरइ आस, प्र० पूरै जिम आस. स० पूरइ हो आस, ना० राषज्यो मान।

[५७] यह छंद म० ६६ पं० ८६, र० ६१, ग्या० ६०/१, ना० ६६, न० ११०, अ० ११६, प्र० २.१०, स० २.१३ है।

कह्याय हमारउ जे सुणउ।
स्वामी सेव[६] दुहेली[७] अरु[८] परदे।
कर जोड़ी कामणि[१०] कहइ[११]।
देखि[१२] कुबुद्धीय[१३] धण केरउ[१४] वेस।।भु०।।

[५८]

साधण ऊभी छइ टेकि[१] कमाडि[२]।
कडिहि पटोली[३] चुनडी[४] सार।

पं० र० ग्या० ना० न० .५ है :
कुक्कइ (टहूकै-र०ना०) मोर सुहामणा। (तुलना० म० ६५.५)
पं० .१ है : स्वामी चालण मत लेई छइ सउण।
र०ना०" : स्वामी चालण करो तो जोवो जी सोण (स्वाण-ना०)।
न० " : राजा चालण मतुं लियइ छे सोण।
अ० " : राजा जी चालितउ लेइ छइ सउण।
ग्या० " : चाण मतइ पिछालउ सउण।
प्र० स० .१ है : कुंवरी कहई सुणी सांभर्‌या राय।
.२ " : कोई स्वामी तुं उलगइ जाइ।
.४,, : थारइ छइ साठ अंतेवरी नारि।
.६ ,, : राज कुँवरी निति भोगवि राय।

१. ग्या० चाल्या। २. ग्या० मतइ तउ। ३. पं० उघाल उ, ग्या० घालउ, अ० लेवै छै। ४. अ० राजकुँ। ५. पं० ना० बरजइ छइ, र० वरजै। (६+७). सोहामणी, र० सेवा दुहेली। ८ (+९). भ० अर परदेशं, ना० नयण परदेस। १०. प्र० स० धन। ११. प्र० स० वोनवइ। १२. पं० र० तउ तउ देषि, ग्या० ना० तूं तो (तव-ग्या०) देषि, न० तउ देषि, अ० दंषसुं। १३. अ० सुंबुद्धिया। १४. पं० र० धण कउ, अ० धण केसी।

[५८] यह छंद म० ६८, पं० ८४, र० ८६, ग्या० ८८, ना० न०, ६७

कानै हो कुंडल झिगमिगइ।
पगे हो पाइल षरीय सुचंग[६]।
हीरा जडित माथइ[७] राषडी[८]।
मोनइ सरब गति बीसरी[९] तारी चींत[१०]।

१०४, अ० १०९-११०, प्र० २.५९, स० २.६१ है। अ० में इस छन्द की प्रथम पाँच पंक्तियाँ अ० १०९ तथा शेष तीन अ० ११० में है। म० में पंक्तियाँ हैं:—

(.१) साधण ऊभी रे प्रउलि दुवारि।
(.२) रतन जडित सिरि तिलक निलाड।
(.३) जाल जा लंषी गोरडी।
(.४) सोना की पाइल जलकइ छइ पाइ।
(.५) रतन जडित सिर राषडी।
(.६) नेह नइ नाह कउ ऊलग जाइ।

अ० १०९ मे स्वीकृत .१, २, .३ है; फिर यथा .४ है : वेसर को मोती अति वण्यउ, तथा .५.६ उद्धृत म० की .५, .६ हैं। अ० ११० में .१—५ इस प्रकार है:—

जाह के घर हिरणाषी हुवै नारि। (तुलना० म० १२१.१)
सो क्यों औलगै और को बार। ("वही.२)
हेडाऊ केरइ तुरिय ज्यों। (तुलना० स्वीकृत ४८.७)
हाथ न० फेरइ सौ सौ बार। (तुलना० स्वीकृत ४८.८)आविय लाज न ठेलियइ।

शेष तीन पंक्तियाँ स्वीकृत .३, .७, .८ है।

स० ८ है : नितदिन उगती माषुं दीनतों।

१. म० रे। २. न० टेकि पाकार, न० टेक पुकार। ३. ना० करह पटोली। ४. अ० भाति। ५. ना० पगही पानही, र० पग पानही, न० पगे हो पाइल, पं० ग्या० पागा पाइल। ६. न० षरीय सोभंत, ना० सुचंग। ७. न० रतन जडित सिर,

राति दिवस चालूं करइ[११]।
स्वामी[१२] थां घरि छइ[१३] किसी इह रीति[१४]।।भु०।।

[५६]

लाड गहेलीय[१] हे लाड[२] निवारि[३]।
तुरिय पलाणिया ऊभा छइ[४] वार।
पहिर पटोलीय[५] हे[६] चूनडी[७]।
कुंकम[८] चंदन चरचि तूं[९] गात्र[१०]।

नां० हीरा जडित मु। ८. ना० रीषडी। ६. अ० मोनइ

सर्व वीसर गइ। १०. अ० ताहरी चीत, ग्या० थारीय वात। ११. र० हालुं हालुं करो, म० चलि चलि करउ, ना० ऊलग करइ, न० अ० चालण (चालू—न०) करइ। १२. स० [में नहीं है]। १३. र० ना० था घरि राजा, अ० ताहरइ, घर अछइ, प्र० तोयां घरि बोलवा, स० नित दिन ऊगाही म० थां घरि छइ राजा। १४. ना० कीसी आ रीत, न० किसी छे रीति, प्र० भाषु न० रीति, स० भाषु दीनतो।

[५६] यह चंद म० ७१, पं० ८५, र० ६० ग्या० ८६, ना० ६८, न० १०८, अ० ११४, स० २.६५ है।

किन्तु पं० ना० अ० में .४ है : आड़ीआवि नइ पाकडइ (आपडी-पं०) वाग।

पं० ना० अ० .५ है : दोखउ—पं०) भाजि नइ मन तणउ।

पं० ना० अ० .६ है : सगती (पकत-पं०, संगत-ना०) साई (भाषा—ना०) देइ परण्या गलइ लागि।

ग्या० र० में पंक्तियां क्रमशः हैं स्वीकृत .१, .२, .५, .४, .३ पं० .४; पं० .५ स्वीकृत .६ ।

न० में पं० की ऊपर दूधृत तीन पंक्तियॉ स्वीकृत पंक्तियों के अतिरिक्त हैं।

१. स० लांवडगहेला। २(+३). स० हेला उठि वार। ४. म० हिणाढिलइ, अ० हणहणइ, स० आंगणइ छै। (५+६). स० न आछी। ७. न० चूनडी भाति। ८. र० ना० न तूं तो चोवा, ग्या० तउ चोवा। ६. म० उरि न०, स० षौल,

दिन[११] उगइ[१२] म्हे चालिस्यां[१३]।
हसि हसि[१४] गोरी[१५] पूछि[१६] नइ[१७] बात[१८] ।।ध्रु०।।

[६०]

स्वामी ऊलग जाण की षरीय जगीस।
राज[१] चलण करि[२] द्यउं तो नइ[४] सीषि[५]।
इण विधि[६] राज माहें[७] संचरइ[८]।
बइठा[९] राजा[१०] सभा परधान[११]।

ग्या० चरचि नै। १०. म० लगाइ, स० कराइ। ११. स० उठी।

१२. स० सवारा। १३. म० षाहते स्याह। १४. स० गाढी होई। १५. ग्या० न० गोरडी। १६ (+१७+१८). ग्या० र० गलइ लगाइ, स० गलि लाइ।

[६०] यह छंद म० ६७, पं० ८८, र० ६३, ग्या० ६१ ना० १०१, न० ११२, अ० ११८, प्र० २.५७, स० २.५६ है।

किन्तु म० में स्वीकृत .४, .५ नहीं हैं, और स्वीकृत .८, .९, १० के स्थान पर हैं :

राजा पूछइ मन केरी बात। (तुरना० स्वीकृत ६१.६)
जूठी साची थे मत कहउ। (" " .७)
स्वामी थे मुह आड़ो देज्यो जी हाथ। (" " .८)
ना० में स्वीकृत .६, .७, .८, .९ नहीं है।
अ० में .३ है : राखिज्यो छंदों राज में।
प्र० में .८, .९, .१०, है : सूणि रावल तुंह ज झिण जाय।
राज माहि नातो झिण करो।
राजा तेडी चोषंडी हेवि।

स० में .८ यथा प्र० है, और .९, .१०, नहीं हैं।

१. अ० राजा जी। २. पं० र० अ० चालण की, ग्या० ना० न० चालतां, प्र० नीति गति, स० कुंवर धन। ३(+४). पं० र० ना० देह छइ, न० दियइ छय, अ०

तिणि सुं[१२] मीठा बोलिज्यो[१३]।
नाई साहुणी नइ[१४] घणउ[१५] देज्यो[१६] मान।
वदडी[१७] सरिसउं[१८] नवि हसउ[१९]।
तठइ[२०] राइ बोलाइसी[२१] भीतरि गोठि।
राजा जतन करि बोजिज्यो।
कान नइडा अरु नीची द्रेठि।।भु०।।

[६१]

स्वामी ऊलग जाण की षरीय दुसार[१]।
राज नी[२] नीति[३] जिसी[४] षंडा नी[५] धार।

परीय, प्र० ध्रण दीयै, स० देसउं। ५. अ० जगीस। ६. म० जिण घर, प्र० ईणी परि, ग्या० अण विधि। ७(+८). र० राज माहि गम करे, म० राज माहे वापरउ, ना० जन माहि संचरै, प्र० राज माहें वेसइ्यो, स० राज माहे परिहरई। ९(+१०+११). प्र० स० राज चलायक अरु परधान। १२(+१३). प्र० स० ईसासुं विरोध नहुं बोलिजइ। १४. म० नाई साहणी नइ, र० नाई साहुणी नु, न० सइ साहुणी, प्र० स० नावी साहुणी। १५ (+१६). पं० अ० दूणउ देज्यो, र० दोनु, ग्या० दूणउ जी, न० दूणउ, प्र० सुंघणों, स० सुघराई। १७। पं० र० ग्या० न० वांदीय, स० दासी। १८. म० ग्या० सरिसा। १९. पं० ग्या० न० मति हसउ, र० मति हसै, अ० जन हुवउ, स० झिणा हंसीज। २०. ग्या० तइ। २१. ग्या० राव बोलावसी।

[६१] यह चंद म० ६८, पं० ८६, र० ६४, ग्या० ९२, ना० १०२, न० ११३, अ० ११६, प्र० २.५८, स० २.६० है।

म० में .६, .७, .८ है : राजावंसी भीतर गोठ। (तुलना० स्वीकृत ६०.८)
राज जतन कर बोलज्यो। (" " .९)
ऊचा कान नइ नीचीय द्रेठ। (" " .१०)

पं० र० ग्या० ना० में स्वीकृत पंक्तियों के अनंतर .९, १० है :

मूरष लोक जाणइ नही[6]।
चोर जुवारी नइ[7] कल्लाल[8]।
तिण सुं[9] हसीय[10] म० बोलिज्यो।
राजा जी पूछइ[11] मरम कइ बात।
जूठी सांची[12] थे मत कहउ।
मुहडा आडउ ते दीज्यो[13] हाथ[14] ।।भु०।।

कान नयड़ा पग द्रष्टि वामि (—दूरही ग्या०)। (तुलना० स्वीकृत (६०.१०)
साचनि रति गति साची गात।

न० मे स्वीकृत .३, .४, .५ नही हैं, और शेष स्वीकृत के अतिरिक्त पं० .६, .१० है।

अ० में स्वीकृत के अतिरिक्त .६, १० इस प्रकार हैं :
कान नइडा पग वेगला। (तुलना० स्वीकृत ६०.१०)
बा अंतरंग की कहिज्यो थे साथ।

प्र० स० मे अंतिम चार पंक्तिओं का क्रम है : स्वीकृत .६, .८, .७, १८,।

१. ना० जगीस (तुलना० स्वीकृत ५८.१) न० गीसार, अ० छै सार, स० तो सार। २ (+३). म० राज चलण, पं० राज नी रीति, र० राजा की नीति, ग्या० राजा नी नीति, ना० प्र० राजनीत, न० राजनीतिणं, अ० राजा जी नीति, स० राजनी गति। ४. पं० र० ना० जाणे, न० सु०, म० जसउ, अ० जसी ज्युं। ५. म० षंडा की धार, र० षंडा की धार, अ० षंड गीधार, न० हसिय म० बोलिज्यो आज। ६. पं० र० न० स० न० (नू-प्र०) जाणही, ना० न० जाणीए, प्र० न० जाणइ सार। ७. पं० र० ग्या० ना० अवर, अ० अनइ। ८. म० कोटवाल, अ० कल्हार। ६. पं० र० तिणस्युं, म० तेइसु प्र० जासूं, स० ईणुसूं। १०. स० हंसि। ११. न० पूछस्यइ। १२. र० झूटी साची, अ० जूठी वात। १३(+१४). अ० स्वामी दीज्यो हाथ।

[६२]

छंड्या[1] हो[2] गोरी[3] जेसलमेर।

छंड्या[4] टोडा[5] गढ अजमेर[6]।

छंड्या[7] टउंक विछाल छइ।

छंड्या[8] राणा का[9] रिणवास।

पंडियउ[10] वउलावी[11] वाहुड्यउ।

गोरी राउ उतर गयउ[12] नदी वनास ।।भु०।।

---

[६२] यह चंद म० १००, पं० १०१, र० १०७/१, ग्या० १०७, ना० ११५, न० १२२, अ० १३१, प्र० २.७३, स० २.७९ है।

किन्तु म० ग्या० में .३, .४, .५ हैं : (.३) छंडीया चउवारा चउपंडी।

(तुलना० स्वीकृत ६७.२)

(.४) चंडया हो सइंभरि नागरचाल।

(तुलना० स्वीकृत २०.६)

(.५) छोडयउ देस सचालपउ (मंडोवरउ-ग्या०)।

(तुलना० स्वीकृत ३८.५ तथा २०.५)

न० में स्वीकृत .३ के स्थान पर म० .५ है।

अ० में स्वीकृत .३ के स्तान पर है : जढीया सैंभर नागरचाल।

(चुतना० म० .४)

१(+२.) पं० र० ना० राजा छंड्या (छंडया-ना०) ग्या० राजा छोडया, न० राजा छंडियउ, प्र० छोडीया, स० छोडइ छइ। ३. म० आवू, र० ना० न० भोली, ग्या० तवूअ, प्र० टोडो नै, स० तोडइ नइ। ४. प्र० स० मेल्ही ग्या० छोडउ हे। ५. म० गोरडी, र० तोडा, ना० तोडी, न० तोडा नइ। ६. न० जेसलमेर। ७. प्र० छोडीया, स० छाडयो, ग्या० छोडया। ८. अ० चढीया, प्र० छोडीया, स० छाडया। ९. प्र० स० संइभरि। १०(+११)। र० एक वोलाव्यो, प्र० एकावलान, स० एक वलावे। १२. ग्या० लंघी।

[६३]

पंडियउ[१] बोलावि नइ आयउ गोरीय पासि।
नाटिका[२] जीव[३] न[४] हीयडलइ[५] सांस।
पलिंग[६] हुं ती[७] धण[८] भुइं पडी[९]।
चीर न संभालए न पीवए जी नीर।
जाणे हियडइ हरिणी हणी।
उणिरउ गात्र[१०] उघाडा[११] नइ[१२] विकल सरीर।।भु०।।

---

[६३] यह चंद म० १०१, प० १०२, र० १०७/२, ग्या० १०८, ना० ११६, म० १२३, अ० १३२, स० २.८० है।

ना० में .१ नहीं है।

म०न०अ०स० .१ है : नाह (गोरी राउ—म०, जब राउ-अ०) उतरि गयउ (उतरियउ— न०अ०) नंदी बनास। (तुलना० स्वीकृत ६३.६)

म०पं० र० ग्या० ना० न० अ० .५ है : बादल छायउ चंदलउ।
(तुलना० स्वीकृत ७६.५)

पं० र० ना० न० .४ है : उवा तउ नीर न० पीवइ न० संभरइ (संभरवइ न०) चीर।

स० .६ है : ओको गात्र उघाड़ियो जोबन पूर। (तुलना० स्वीकृत ७६.६)

१. ग्या० पंडिउ। २. र० अ० ना० नासिका न० नासरिकइ, स० नारिका। ३. र० जीभ, स० नाड़िनू। ४(+५). र० नही गलै, ग्या० नइ हियडलइ, ना० न० हीयैजुलै, अ० न० बाहुडे, स० हीयउ नै। ६. पं० भुयं, र० न० भुइ, ना० सुघ. स० भौ। ७. पं० र० न० स० भूती, ना० चली, ग्या० बइठी। ८. पं० र० न० हुई, ना० हूं, ९. अ० धरणी ढली। १०. म० गात्र, अ० बाका गात्र, न० उणरा गात। (११+१२). म० पधारीय, ना० उधाड़ो, न० उघाडइ।

[६४]

सात[1] सहेलीय[2] बइठी छइं[3] आइ।
काढउ[4] न पीवए[5] न ऊपध[6] पाइ।
दांत[7] सूकट[8] लिया[9] गोरडी[10]।
भोली[11] तोथी[12] भलीय[13] दवदंती हे नारि।
सो नल[14] राजा[15] मेल्हि गयउ[16]।
पुरष[17] समउ[18] निगुणी[19] नहीय[20] संसारि।।धु०।।

---

[६४] यह छंद म० १०२, पं० १०३, र० १०८, ग्या० १०९, ना० ११७, न० १८६, अ० १३८, प्र० ३.३, स० ३.२ है।

म० .४ है : वलि वलि वइसइ छइ राजकुमारि।

अ० में स्वीकृत .४ के अतिरिक्त म० .४ और निम्नलिखित पंक्ति है :

सुगुण सहेलिय सीख घइ।

प्र० २ है : धान न० षायि नै सरि नाह।

१. ना० साथ, प्र- स० पंच। २. न० अ० सखी। ३. र० वैठीय स० मिली बइठी। ४. अ० काउ, स० काहरउ (काह्लउ) स० पीवौ। ६. र० ऊपध नवि। ७(+८+९). पं० न० अ० दांत सूकट पडया, ग्या० सूकंट पड़ी, ना० दांत सूका पडया ग्या० दंत सूकट पड़ी, प्र० दंत सकठ बांध्या, स० दांत कष्ट बंध्यो। १०. पं० र० ग्या० डावडी, ना० वडी। ११. ना० न० प्र० स० [में नहीं है]। १२ (+१३). स० तोथी भली हुती। १४. पं० अ० सोइ नल, पं० सो वलि राजा, प्र० मेल्ही। १६. पं० र० ग्या० ना० न० छोड़ी गयो, अ० छंडी गयउ, प्र० वन गयो, स० मेल्हे गयो। १७. अ० पुरुषां। १८. पं० सउं, र० इसो, न० इस, अ० सम। १९. पं० र० ग्या० ना० न० नीच, प्र० नगुण, स० निगुण। १०. ना० न० नहीं, ग्या० सरीर, अ० को नही।

[६५]

रोवती[१] मेल्हि गउ[२] धण कउ[३] रे नाह।
सूनइ मंदिर दीन्हीय छइ[४] धाह।
साधण कुरलइ[५] मोर जिउं।
पाड[७] पांडोसण[८] बइठी छइ[६] आइ[१०]।

---

[६५] यह चंद म० १०४, पं० ६७, र० १०२, ग्या० १०३, ना० १११, नं० १२४, अ० १३३, प्र० ३.२, स० ३.१ है।

म० .२ है : हीयडलइ हाथ नवि लीजए बाह।

" .५" : जोवउ प्री मुंध मेल्ही गयउ।

पं० र० ग्या० ना० न० .४ है : सांत सषी मिल बैठी छइ आइ।

(तुलना० स्वीकृत ६४.१)

पं० .६ है : बोलउ नह अण परि जाइ।

र० .६ है : बोली नाहा हुइ सु इण परि न० जाइ।

ग्या० न० .६ है :- नाउ इण परि कोई माणस जाइ।

ना० .६ है : नाउ उण कन्है कोई माणस जाइ।

अ० .५ यथा म० .५ है।

प्र० स० .१ है : प्रीय बोलावै धन रोवती जाइ।

प्र० .५ है : सोयन स्त्री नै करि गयो।

प्र० .६ है : असी रति नांउ माणस जाय।

स० .६ है : दिवस नइ रात भी चिंतातां जाइ।

१. ना० सेवती। २. पं० र० बाहुडी, ग्या० बाहुडीह, ना० बाहिम, न० छोडि नइ। ३. पं० ग्या० न० चालीयउ, र० चालिउ, ना० छोडीयां। ४. ग्या० दीन्हीय, स० मेल्हेइ छइ, प्र० दीयै जई। ५. र० कुरली, प्र० झूरइ। ६. र० न० अ० प्र० स० मोर ज्युं, म० मोर जउं। ७(+८), ग्या० सात सषी मिलि, स० पांच पडोसण, प्र० पाडि पाडोसण। ९(+१०). प्र० जोवउ११ निसंतान जेउं वइ १२ गया१३।

जोवउ[११] निसंतान जेउं वइ[१२] गया[१३]।
सपीय[१४] इणि कति[१५] नाह[१६] कोइ[१७] ऊलग[१८] जाइ[१९] ।।ध्रु०।।

[६६]

लंघिया[१] चांविल[२] पाछिला[३] पाल[४]।
डावी[५] देवी[६] अनइ[७] दाहिणी[८] माल।
डावी रे[९] महासती[१०] सुर करइ[११]।
वामा हो[१२] राजा नइ[१३] सिंघ सीयाल।
वामा[१४] सारस[१५] कुरलिया।
तुरिय डकावइ[१६] सइंभरि वाल[१७]।।ध्रु०।।

सपीय१४ इणि कति१५ नाह१६ कोइ१७ ऊलग१८ जाइ१९।।ध्रु०।।

देखवा आय। ११. पं० र० ग्या० ना० न० जाहि, अ० जिउ, स० ओ। १२ (+१३), ना० वै ग्रह्या, प्र० स० करि गयो ग्या० ऊगयउ। १४. ग्या० नातु। १५. अ० इण जु, ग्या० इण परि। १६(+१७). ग्या० कोई। १८(+१९). ग्या० माणस जाय।

[६६] यह छंद म० १०५, पं० ६३, र० ६८, ग्या० ६६, ना० १०७, अ० १२४, प्र० २.७४, स० २.८१ है।

म० में .३ तथा .५ परस्पर स्थानांतरित है।

प्र० में केवल .१, .५, .६ हैं, शेष छूट गई हैं।

१. पं० र० लांघई छइ, ग्या० ना० लांघीयउ, प्र० लांघइ २. पं० र० ग्या० ना० राजा जी, अ० राजा, म० चंबल। ३. पं० ग्या० ना० न० चांदिल, अ० ऊंचा विल, र० पागल, प्र० पीलियो, स० पीला हो। ४. ना० घाट। ५. म० वामा रे। ६. पं० क्या० देव्या, म० देवी। ७(+८) म० न० दाहिणी, पं० र० ग्या० ना० दाहिणी, स० जीमणी। ९. म० वामा रे। १०. ना० नासती। ११. पं० सूर करइ, ग्या० प्री प्री करइ, ना० फौकारा, स० फैकरइ। १२. स० डावा। १३. पं० र० ना० राजा, स० सरस, अ० वसिया। १४. प० डावी रे। १५.

[६७]

चालियउ[1] उलगाणउ[2] कातिग मास।
छोडीया[3] मंदिर घर कविलास[4]।
छोडीया[5] चउबारा[6] चउषंडी[7]।
तठइ पंथि[8] सिरि नयण गमाइया रोइ[9]।
भूष गई[10] त्रिस[11] ऊचटी[12]।
कहि न[13] सषीय[14] नींद किसी परि[15] होइ।।भु०।।

[६८]

मगसिरियइ[1] दिन छोटा जी[2] होइ।
सषीय संदेसउ न पाठवइ[3] कोइ।

ग्या० राजा। १६. पं० र० डकाइयउ, ग्या० डकावीउ, अ० चलाबियो ना० पलाणीया, प्र० षुंदावि, स० खुंदावई। १७. ना० संभरैवाल, म० सैंभर राव, स० बीसलराव।

[६७] यह छंद म० १०७, पं० १२०, र० १२२, ग्या० १२६, ना० १३४, न० १४६, अ० १५६, प्र० ३.७, स० ३.८ है।

म० ६ है : राजा वीसल तणइ रे विछोह।

१. म० चालिउ, पं० र० न० अ० चाल्यउ, स० चालीयो। २. प्र०, स० प्रीय तो। ३. पं० र० न० अ० छोड्या, प्र० स० सूना धवल बिलास। ५. पं० न० अ० छोड्या र० चउड्या, प्र० स० सूना। ६. प० ग्या० ४. ना० प्र० स० चउरा, र० चोरां, अ० चउकीय। ७. अ० चउहटा। ८. म० प्र० स० पंथ। ६. प्र० जोय, स० जाई। १०. प्र० स० नहीं। ११. ना० तस, प्र० तर। १२. र० अउचटी, म० अउहटी, प्र० सो छटी. स० ऊछली। १३ (+१४). स० उपरि घडा, प्र० तिहां घटी। १५. प्र० स० नींद कहां थी।

[६८] यह छंद म० १०८, पं० १२१, र० १२३, ग्या० १२७, ना० १३५, न० १४७, अ० १५७, प्र० ३.८, स० ३.६ है।

संदेसइ ही बज[४] पड्यउ[५]।
ऊंचा[६] हो[७] परबत नीचा[८] घाट।
परदेसे[९] पेर[१०] गयउ[११]।
तठइ[१२] चीरीय[१३] न० आवइ[१४] न चालए[१५] बाट[१६]।।भु०।।

[६६]

देषि सषी हिव लागउ छइ[१] पोस।
धण मरतीय को[२] मत दीयउ[३] दोस।
दुषि[४] दाधी[५] पंजर हुई।
धान[६] न० भावए[७] तज्या[८] सिरि न्हाण[९]।

---

१. अ० मगसिर का, प्र० आगैं तो, स० आघण कर २. पं० छोटा रे, र० ना० न० छोटडी, अ० मोटा जी। ३. र० न० पाठव्यो, ना० न० पाठव्या प्र० न० मोकल्यो, स० न० मोकलोऊ। ४(+५). पं० वज्र पडी, र० बीज पडी, ग्या० ब्रज घड्यउ, ना० सांस्या षड्या, प्र० बज पडो, स० बबज पड्यो। ६. म० तठइ ऊंचा, प्र० लंघीया। ७. स० लांध्या। ८. पं० नीचा रे, र० न० नीचा, अ० नीचा हो, प्र० बिसमा, स० दुर्घट। ९. पं० र० परदेसइ, ना० परदेसां अ० परदेशी। १०. र० गया, ना० पड्यां। १२. पं० ग्या० ना० अ० प्र० [में नहीं है]। १३. र० चीरी हो। १४. प्र० स० जणह, ना० नाथै। १५(+१६). पं० न० अ० नहि चलइ बाट, ना० महि उचाट, प्र० न० चालइ बाट।

[६६] यह छंद म० १०९, पं० १२२, र० १२४, ग्या० १२८. ना० १३६. न० १४८, अ० १५८, प्र० ३.९ स० ३.१० है।

म० पं० र० ग्या० ना० न० अ० .५ है : छाहडी गिणइ न० तावडउ।

(तुलना० स्वीकृत ८९.५)

१. पं० र० लागउ हे, म० लागउ वा, ना० लीगी छै। २. र० ना० धण मै तो कोइ, न० अ० घण्ह, मरंती, प्र० धण मरती मोहि। ३. र० न०मत दियौ, ना०

छांहडी धूप नू[11] आलगइ[11]।
देषतां[12] मंदिर[13] हुयउ[14] मसांण।।भु०।।

[७०]

माह मासइ सीय[1] पडइ[2] ठंठार[3]।
दाध छइ[4] बनषंड कीधा छइ[5] छार[3]।
आप[7] दहंती जग[8] दह्यउ[9]।
म्हाकी[10] चोलीय[11] माहि थी[12] दाधउ[13] गात्र[14]।

न० दे देज्यो, प्र० झिण दीयो, स० मति लावउ। ४(+५). प्र० स० टुष भीनि। ६. म० अन्न, र० मो० अन्न, ग्या० मोनइ धान। ७, स० न० भावई, प्र० न० भावि। ८. (+९)। ना० ना० स्त्रि न्हाण, अ० सिरि तजै न्हाण, प्र० निसलभां नाह। १०. गिणइ अनि, स० धुप नू। ११. स० आलगई, आलगै। १२. देषतउ. अ० वाकौ देषतां, प्र० किएक, स० कवियक। १३. झूंपडी, स० झूपड़ा। १४. पं० होइ, र० हुआ, स० होइ।

[७०] यह छंद म० ११०, पं० १२३, र० १२५, ग्या० १२९, ना० १३७, न० १४९. अ० १५९, प्र० ३.१० स० ३.११ है।

ग्या० .६ है : करह पलाणि करि आजिज्यो वेगि।

प्र० स० .२ है : जल थल महीयल सह (बन—प्र०) कीया छार।

प्र० .६ है : तुरी पल्हाणी वेगि घरि आवि।

१. र० स० सिय, प्र० सीह। २(+३). पं० पडय रि ठंठार, र० पडै रे ठंठार, प्र० पडै अपार, स० पडयो अति सार। ४. र० दाधा। ५. म० अंवा की, पं० कीधो, न० कीधा हो, ना० कीधा। ६. म० डालि, र० धार, न०छाड। ७. प्र० स० आक। ८ (+९). म० जग दहइ, ग्या० जगि दहुं, ना० जग दह्या, न० जग दह्यु, प्र० बन दहै, स० बन दह्यो। १०(+११). पं० म्हारा चोलडी, र० म्हारा कांचली, म० प्र० चोलीय, ना- म्हारा चोली न० म्हारी चोली। १२, म० भीतरि। १३. र० ना० थी दाधी, पं० थी

धणीय विहूणी[१५] धण ताकिजइ।
तूंतउ[१६] उवइगउरे[१७] आविज्यो[१८] करइ[१९] पलाणि[२०]।
जोबन छत्र[२१] उमाहियउ[२२]।
म्हाकी[२३] कनक[२४] काया माहे फेरली[२५] आंण[२६]।।भु०।।

[७१]

फागुण फरहर्या[१] कंपिया रूष[२]।
चितइ[३] चकमियउ[४] निसि नीद[५] न० भूष[६]।

दीधी न० सवि दाधा, अ० दाधा, प्र० थकी दाधा जी। १४. न० अ० संधाण।।१५। प्र० धणीय थकां, स० धणीय .न तका। १६. पं० र० ना० स० [में नहीं है], न० थे, अ० थे तो। १७. पं० र० ना० न० अ० वेगा, स० वेगो। १८. स० घर आव। १९ (+२०)। स० तुरीय पलाणि। २१. ना० चित। २२. र० उछाईउय, ना० उकाहीयां, अ० को चाहिवो, प्र० उपाडियो, स० उचाईसउ। २३(+२४). पं० म्हारी कनक. न० म्हांकी, प्र० कनक, स० ईणि कंत। २५(+२६). म० फेरिय आण, ना० भेलीयो आण, अ० फेरि गयउ उवण, प्र० फिर गई आण, स० फेरी छइ आण,।

[७१] यह छंद म० १११, पं० १२४, र० १२६, ग्या० १३० ना० १३८, न० १५० अ० १६०, प्र० ३.११, स० ३.१२ है।

म० में .२ नहीं है और .४ का पाठ है :

नाम न० लेइही रि निरगुणा नाह।

अ० में .४, .५ का पाठ है :

होली रे खेलण म्हे किउं जाइ। (तुलना० स्वीकृत ७२.७)
जोवन चाहिवो जाइ छै।

अ० में यथा .७, .८ हैं : म्हे उलगाणा की गोरडी।
म्हां की उंगली कीरता निगली छै बांह।
(तुलना० स्वीकृत ७२.१०)

प्र० .३ है : जउ जोवन तो बन सषी।

दिन रायां[७] रितु[८] पालटी।
म्हाकउ मूरष राउ न देषइ आइ।
जीवउं तउ[१०] जोबन[११] सही[१२]।
फरहरइ[१३] चिहुं दिसि बाजइ छइ[१४] बाइ[१५] ।।भु०।।

[७२]

चेत्र मासइ चतुरंगी हे[१] नारि।
प्रीय विण जीविजइ[२] किसइ[३] अधारि।

म० में स्वीकृत .५ यथा .३ यथा .५ हैं, और .४, .६ है :

(.४) मूरष लोक न जाणइ सार। (तुलना० स्वीकृत ७३.४)
(.६) सषी बाव फरूकती (फरूकै—प्र०) जाइ गयो—प्र०) संसार।

१. र० फरइ, न० परहरइ, प्र० स० फरक्या, ग्या० फरहर। २. म० डूष। ३. र० चितिहि, ना० चित्त, न० अ० विरह। ४. न० मेचेकीयउ, ना० चूकी। ५. अ० नाठी नींद, ना० प्र० नींद। .६ ना० अ० नै भूष ७. प्र० दिणीयर, स० दिण परषौ। ८(+९).. प्र० विदिसइ पालटयो, स० दिस पालटइ, म० दिन पालटी, पं० रति पालटया, र० ना० दिन पालिट्या, न० दिल पालट्या। १०. पं० र० ग्या० न० जिम धन तिम। ११. ग्या० तिम, स० जूहै। १२. प्र० स० सषी, म० सुखी। १३. पं० फिरहर्या, र० फरहर्या। १४. पं० र० बाज्या। १४. म० र० न० वाउ, पं० अ० वाइ।

[७२] यह छंद म० ११२, पं० १२५, र० १२७, ग्या० १३१, ना० १३९, न० १५१, अ० १६१, प्र० ३.१२, स० ३.१३-१४ है।

पं० ग्या० र० ना० में स्वीकृत .५ नही है। अ० में .५ के स्थान पर स्वीकृत .७ है. और .७, .८ हैं :

मास बसंत सोहामणउ।

कंचूयउ[४] भीजइ जण[५] हसइ।
सात[६] सहेलीय[७] वइठी छइ आइ।
दंत कवाड्या[८] नइ नह[९] रंग्या[१०]।
चालउ[११] सषी आपे[१२] षेलण जाइ[१३]।
आज[१४] दिसइ[१५] स[१६] काल्हे नहीं[१७]।
म्हे[१८] किउं[१९] होली[२०] हे षेलण जांह।
उलगाणइ की गोरडी[२१]।
म्हाकी[२२] आंगुली[२३] काढतां[२४] निगलीजइ[२५] बांह ।।भु०।।

निरगुण नाह न० षेलइ हो आइ।
अ० में .९, .१० नहीं है, वे उसमें पूर्ववर्ती छंद में गई हैं।
स० में स्वीकृत .६, .७ के बीच और हैं :
सूणो सहेली कहुं ईक वात।
म्हाहरइ फरकइ छइ दाहिणो गात।

१. र० हे तुरंगी। २. ना० जीवनै। ३. पं० किसकय, र० न० किसै, अ० स० कवण। ४. पं० कंचू, र० कंचूउ, प्र० चूडलो, स० चूडे। ५. म० धण। ६. म० पाड, न० अ० सखी, प्र० स० पंच। ७. म० पाडोसण, ग्या० प्र० सषी मिलि, स० सपी। ८. प्र० कवीडा। ९(+१०). म० न० अ० नह घस्या। ११. न० आवी। १२. प्र० स० होली। १३. प्र० षेलवां जायं, स० खेलवा जाई। १४(=१५). र० आज दिवस। १६(+१७). म० ते तउ काल्ह न ही, र० सो काल्हि नहीं, प्र० ते कालि नहीं, स० ते इक दिन मांह। १८(+१९+२०). पं० म्हे कउ हेली, र० गहेली म्हे किउं हे, ग्या० म्हाकउ हे होली, न० म्हे तउ होली, ना० म्हां की सषेली, म० म्हे किउ हे भोली। २१. पं० दे गोरडी। २२(+२३+२४). म० आंगुली काढतां, र० म्हाकी आंगुली, प्र० आंगुली देतां, स० म्हाकी आंगूली देखतां। २५. प्र० लगसी स० गिलजे।

[७३]

वइसाषइ[१] धुर[२] लूणिजइ[३] धान।
सीला पाणी अरु[४] पाका जी[५] पान।
कनक काया घट[६] सींचिजइ[७]।
म्हाकउ[७] मूरष राउ न[८] जाणइ सार।
हाथ लगामी[१०] ताजणउ।
ऊभउ[११] सेवइ[१२] राज दुआरि।।भु०।।

[७४]

देषि[१] जेठाणी[२] हिव[३] लागउ छइ[४] जेठ।
मुह[५] कुमलाणा[६] नइ[७] सूक गया[८] होठ।

---

[७३] यह चंद म० ११३, पं० १२६, र० १२८, ग्या० १३२, ना० १४०, न० १५२, अ० १६२, प्र० ३.१३, स० ३.१५ है।

म० में स्वीकृत .४ नहीं है।

अ० में अतिरिक्त हैं :

स्वीकृत .२ के अनंतर : दंत कबाडया हे न घस्या।

(तुलना० स्वीकृत ७२.५)

" .३ ,, ,, : तपति कउ तोय न० लाभइ जी पार।

१. र० न० बैसाषां। २. र० न० धुरि, ना० धार, प्र० स० सषी। ३. र० लुणिज हो, ना० लुणै, स० ल्हणुजै। ४(+५). र० हो पाका, ना० पाका जी, न० अर पाका हो, प्र० नइ पाका, स० पाका। ६(+७). ना० षटकसी। ८. प्र० स० [में नहीं है]। ९. प्र० नाह। १०. ग्या० लगाम नइ, न० लगीम नई। ११. पं० र० उतउ ऊभउ, म० ऊभ छइ, ना० न० अ० प्र० ऊभउ, स० पार कइ। १२. न० अ० सेवइ छइ।

[७४] यह छंद म० ११४, पं० १२७, र० १२९, ग्या० १३३, ना० १४१, न० १५३, अ० १६३, प्र० ३.१४, स० ३.१६ है।

मास दिहाडउ[९] दारुण[१०] तवइ[११]।
धण कउ हे[१२] धरणि न[१३] लागए पाउ[१४]।
अनल[१५] जलइ[१६] धण[१७] परजलइ।
हंस[१८] सरोवर मेल्हिउ[१९] ठांह[२०]।।भु०।।

ना० में स्वीकृत .१, .२ के बीच अतिरिक्त हैं :

धण मरै तो कोइ मत दीयो दोस। (तुलना० स्वीकृत ६९.२)

न०अ० में स्वीकृत .२, तथा .३ के अनंतर क्रमशः अतिरिक्त हैं :

ग्रीसम मास अति गह कीयउ।
जीयत जल विणु को नहीं।

प्र० स० .४ है : धरती पाव न० देणउ जाय।

स० .३ है : सनेहा सारण वहई।

१(+२). पं० र० ग्या० ना० देषि सषी। ३. र० ग्या० न० हिवइ, प्र० स० [में नहीं है]। ४. र० लागो हे, ना० लागो, न० लागउ गलइ, प्र० लागो। ५. न० मोहि। ६. म० कुमिलाणा, ग्या० कुमलाणउ। ७(+८). र० ना० सूकि गया, ग्या० सूकिया, प्र० नइ सूका, स० अरु सूकइ छइ। ९. पं० र० ना० न० अ० दिवस, ग्या० विवस। १० (+११). ना० दारुण हुवै, न० लगइ दारुण दूठ, अ० लूयां दारुण दूठ, प्र० सारणि वहइ, स० सषी लू वहइ। १२. पं० र० ना० अ० धण कउ। १३. ना० धण किन। १४. न० लागए पाल। १५. म० अंग, ग्या० ना० अन्न, प्र० अगनि, स० अन। १६. न० लागइ, ना० [मे नहीं है], न० जलणइ, अ० विना, प्र० स० वलई। १७. म० घट, प्र० वन, स० दव। १८. म० सपी हंस। १९(+२०). पं० ग्य० छंडि गयउ ठाउं, ना० छंडि नै ठांव, न० छंडियो ठाउ, अ० मेल्लि गयउ ठाह, प्र० छोडया ठाम, स० छंडइ छइ ठांइ।

[७५]

आसाढइ धुरि[१] बाहुडया[२] मेह[३]।
षलहल्या षाल[४] नइ[५] बहि गइ[६] षेह।
जंइ रि[७] आसाढ न आवई[८]।
माता रे मइगल जेउं पग देइ।

---

[७५] यह छंद म० ११५, पं० १२८, र० १३०, ग्या० १३४, ना० १४२, न० १५४. अ० १६४, प्र० ३.१५, प्र० ३.१५, स० ३.१७ है।

म० में .३—८ है :

(.३) साध्रण बलि कोइला भाई।

(.४) कोइल कोलइ छइ अब की डाल।

(.५) मोर टहूकइ सषी डूंगरां।

(.६) मूरष राउ न० जाणहे सार। (तुलना० स्वीकृत ७३.४)

(.७) स्वीकृत .३।

(.८) हस सरोवर मेल्ह गउ ठाह (तुलना० स्वीकृत ७४.६)

अ० में .३—.८ है :

(.३) मोर टहूका गिरि करइ। (तुलना० ऊपर म० .५)।

(.४) थलकीयां नदी नइ नीर बहाइ।

(.५) स्वीकृत .३।

(.६) बीज झबूकइ अब मारिस्यइ माइ।

(.७) जा घरे धण विलबिलइ।

(.८) अवरां जासे किउं ओलग जाइ। (तुलना० स्वीकृत .६)

न० में स्वीकृत प्रथम चार के अनंतर की पंक्तियाँ है अ० .४ अ० .७, अ० ८। प्र० स० में स्वीकृत .३, .४ के बीच उपर्युक्त म० .४, .५ भी हैं।

सद मतवाला[९] जिम दुलइ[१०]।
तिहि धरि ऊलग काइं करेइ।।भु०।।

[७६]

स्रावण[१] बरसइ छइ[२] छोटीय[३] धार।
प्रीय विण जीविजइ किसइ[४] अधारि[५]।
सही समाणी[६] षेलइ काजली।
तठइ[८] चिडय[९] कमेडीय[१०] मंडिया[११] आस[१२]।
बांबहियउ[१३] प्रीय प्रीय[१४] करइ।
मोनइ अणष[१५] लावइ हो[१६] स्रावण मास।।भु०।।

१. पं० न० धुरि, ना० अति। २(+३). न० बहु पडया, प्र० स० धड़ूकियां। ४(+५), स० षाल्या। ६. म० वह नई। ७. प्र० स० अजी। ८. र० ना० नावीया, प्र० स० न० बाहुडयउ, ग्या० आवीयउ। .९ ग्या० दस मतवाला, ना० सत मत माता, प्र० सद मतवा, स० सदी मतवाला। १०. ग्या० जउ हलइ, ना० जिम चलै, प्र० घुरै जिउं, स० ज्युं धुलई। ११ ना० प्र० काइ करेस, स० कांई केरस सतो।

[७६] यह छंद म० ११६, पं० १२८, र० १३१, ग्या० १३५, ना० १४३, न० १५५, अ० १६५, प्र० ३.१६, स० ३१८ है।

ना० में .२ नहीं है।

१. र० ग्या० ना० न० सावण। २. ना० बरसै। ३. र० ग्या० छोडीय, स० छाडिय। ४. न० अ० केम, स० कवण। ५. न० अ० निरधार। ६. म० पं० र० ग्या० सहु कोइ, स० सषीय ते, ना० सहू को। ७. प्र० रमइ। ८. प्र० स० [में नहीं है], ना० जठै। ९. प्र० पंखेरूए। १०. ना० के। ११. पं० र० षंडिया, म० मंडइ छइ, ना० कंबेडीया, प्र० मांडी, स० मंडिय। १२. पं० र० ग्या० ना० जाल, न० वास। १३. पं० बाबीहा, र० बावहिया, ना० बाबहियो अ० बाबोहो, म० गाबीहडउ, प्र० बापहियो, स० पपीहो। १४. ना० प्रिउ। १५. म०, आसास, अ० अणख. प्र० असलास, स० सखी असलस। १६. म० लावउ, ना० लगावै

[७७]

भाद्रवइ बरसइ छइ[१] गुहरि[२] गंभीर।
जल थल महीयल[३] सहु[४] भर्या नीर।
जांणि कि[५] सायर ऊलट्यउ[६]।
निसि[७] अंधारीय[८] बीज[९] षिवाइ[१०]।
बादल[११] धरती स्यउं[१२] मिल्या[१३]।
मूरष राउ[१४] न देषइ जी[१५] आइ[१६]।
हूं ती[१७] गोसामी[१८] नइ एकली[१९]।
दुइ दुष[२०] नाह[२१] किउं[२२] सहणा जाइ।।भु०।।

छै, न० अ० लगावै, प्र० स० लावइ।

[७७] यह छंद म० ११७, पं० १३०, र० १३२, ग्या० १३६, ना० १४४, न० १५६, अ० १६६, प्र- ३.१७, स० ३.१९ है।

पं० र० ग्या० ना० न० में 6, .७ नहीं है।

स० में भी .६, .७ नहीं है, किन्तु प्र० में हैं।

स० .५ है : सूनी सेज बिदेश पीव।

१. र० ग्या० बरिसइ, ना० प्र० बरसइ। २. स० मगैहर। ३. ना०, महीयगुल। ४. पं० र० न० सहि, ग्या० सवि, अ० छइ। ५. म० जाणे हो, ना० जाण कर, अ० जाणि करि प्र० जाणेकि। ६. अ० ऊलट्या। ७(+८). न० अ० राति अंधारी, प्र० रैण अंधारी, स० एक अंधारी ९(+१०). म० नइ बरसइ मेह, न० अ० नइ बरसइ छइ मेह, ना० बाजै वाय, प्र० बरसइ मेह, स० बीच खीवाइ। ११. प्र० सषर जो। १२. र०न० सूरख धरती सुं, प्र० धरती है। १३. न०अ० मिलि गया, प्र० नीसर्या। १४. न० मूरष गयउ। १५(+१६). न० न० देषइ आइ, प्र० न० जाणइ सार (तुलना० स्वीकृत ७३.४)। १७(+१८). म० ति गोसामी, न० हूँ तो गोसाइं, अ० हूँ अबल, प्र० हूं तो स्वामी। १९. अ० सू आं एकली, प्र० एकली। २०. प्र० ए दुष। २१ (+१२). म० नाह कउ, पं० नल्ह

[७८]

आसोजइ[१] धण मंडिया[२] आस।
मांडिया[३] मंदिर[४] घर[५] कविलास[६]।
धउलिया[७] चउवारा[८] चउपंडी।
साधण[९] धउलिया[१०] पउलि पगार[११]।
गउष[१२] चडी हरषी फिरइ[१३]।
जउ[१४] घर आविस्यइ मुंध[१५] भरतार[१६]। ।धु०। ।

कं, र० नल्ह किं, ना० नाल किं, न० आ० नाह किउं।

[७८] यह छंद म० ११८, पं० १३१, र० १३३, ग्या० १३७, ना० १४५, न० १५७, अ० १६७, प्र० ३.१८, स० २० ३.२० है।

म० .२ है : साधाण मंडइ छइ घर वास।

प्र० .४ है : दक्षीयर माछा जिम पलटाय। (तुलना० स्वीकृत ७१.३)

प्र० ६ है : कमारा धणी राय।

स० .४ है । म्हांड्या सांभरि का रणिवास। (तुलना० स्वीकृत ६२.४)

स० .५ है : एक वलावै वाहुड्या। (,, ,, .५)

,, .६ है : नाह उत्तरि गयौ गंगा के पार। (,, ,, .६)

१. अ० आसू मासै। २. ग्या० धुरि मंडीयइ। ३. पं० र० ग्या० ना० न० अ० धवला, स० मांड्या। ४. प्र० लीप्या। ५. ना० गिर, प्र० मांड्या। ६. पं० ग्या० न० किवलास। ७. ना० न० धउला, प्र० मांडी, स० मांड्या। ८. पं० चउरा, प्र० चोरी। ९. पं० र० ग्या० ना० न० अ० तव धण। १०. ना० धवला। ११. म० प्रकार, न० पागार। १२. पं० ग्या० ना० न० हरिष, प्र० हरष। १३. म० हरषइ, ना० हरषै हीयो, अ० हरषै फिरइ। १४. पं० ग्या० अ० अव, न० जेहि। १५. पं० न० अ० आविसी, ना० आवीया, म० आवीयउ। १६. ग्या० मूल।

[७६]

हेम की कूंपली[1] मइण की मूंद[2]।
साधण ऊभी रे[3] मत्त गइंद।
चउबारा की[4] चउषंडी।
तठइ[5] बाइ[6] न बाजे ना तपइ सूर।
बादल छायउ[7] चंद जेउं[8]।
रात्र[9] अंधारीय[10] जोवन पूर ।।भु०।।

[८०]

सासू कहइ बहू घर माहे[1] आवि[2]।
चंदरइ[3] भोलइ[4] गिलेसी[5] राह[6]।

---

[७६] यह छंद म० ११६, पं० १४०, ग्या० १४६, ना० १५४, न० १६४, अ० १७३, प्र० ३.५०, स० ३.५३ है।

म० .६ है : रात्र अंधारीय विकल सरीर। (तुलना० स्वीकृत ६३.६) पं० ना० .६ है : उणिरउ (उणकी—ना०) गात्र ऊधाडउ तिलक संदूर।

(तुलना० स्वीकृत ६३.६)

न० अ० .६ है : उवा गात्र उघाड़ा हो विकल सरीर। (तुलना० स्वीकृत ६३.३)

१. ना- पूतली, प्र० कूंपी राजा, स० कूंपी। २. ना० स० मुंध। ३. पं० ना० न० उभी छइ, अ० चालइ छइ, प्र० समरै रि, स० समरई जिम। ४. म० की हो। ५(+६). पं० ग्या० ना० न० अ० पवन, प्र० बाय, स० बाद। ७. प्र० छाद्यो। ८. पं० चंद जं, ग्या० चंद जउ, ना० छद ज्यूं, ना० चंद ज्युं, प्र० स० चंद्रमा। ६. प्र० उवा का, स० औकी गात। १०. प्र० घट माहैं, स० उघाडया (तुलना० स्वीकृत ६३.६)

[८०] यह छंद म० १२०, पं० १४१, ग्या० १४७, ना० १५५, न० १६५, अ० १७४, पं० ३.२२, स० ३.२४ है।

चंद[७] पूलाणउ[८] वनि[९] गयउ।
दूधु[१०] इम उंवरइ[११] मजारि कइ फेरि[१२]।
पवनहि दीवलउ नवि वलइ।
नाह[१३] उडीसइ धण[१४] अजमेरि।।भु०।।

[८१]

अस्त्रीय जनम काइं[१] दीधउ[२] महेस।
अवर जनम थारइ[३] घणा रे[४] नरेस।

म० .२ है : राह विडूधउ रे करसइ तो नूं दाह।

म०.४ है : ऊपरि सिषरइ मूकइ मेह।

पं० ग्या० ना० न० अ० .५ है : थे छउ उलगाणा की गोरडी।

प्र० स० .४ है : खीर (साना-प्र०) की तौलड़ी (पकूड़ी—प्र०) कुं (किं हो—प्र०) रहई सेर।

प्र० स० .५ है : धणी धाकां (थकां—प्र०) धण ताकजइ।

१. प्र० भीतरि। २. पं० अ० आइ, न० आउ, स० आव। ३ प्र० चांद कइ, ना० चंद कइ, न० चंद के अ० चंद। ४. न० भुलावइ, अ० लोभावइ। ५. न० गिलस्यां, अ० मत उग्रहइ, अ० राहु। ६. न० राउ, अ० राहु। ७(+८+९). पं० ग्या० ना० न० प्र० पुलिंदा वनि (पुलंदी वनि—न०), म० चंद पलाणउ बलि, प्र० चंद पूलंतो वनी। १०(+११). ग्या० धूध न० छूटइ। १२. ग्या० मंजारहा फेर, अ० जेम मंजार। १३. ग्या० ना० न० अ० थारउ नाह, स० राव, प्र० राय। १४. प्र० मै नूं, स० तु।

[८१] यह छंद म० १२३/१, पं० १३४, ग्या० १४०, ना० १४८, न० १६१, अ० १७०, प्र० ३.५, स० ३.४ है।

म० में० स्वीकृत .५ के स्थान पर स्वीकृत .३ है, और यथा .३ है :

रूप निरूपम मेदिनी। (तुलना० स्वीकृत ३४.३)

म० में स्वीकृत .८ नहीं है।

रानि[5] न सिरजीय रोझडी[6]।
घणह[7] न सिरजीय धउलीय[8] गाइ।
बनषंड[9] काली[10] कोइली[11]।
हउं बइसती अंबा[12] नइ[13] चंपा की[14] डाल[15]।
भषती द्राष बीजोरडी।
इणि दुष[16] झूरइ अबला जी बाल ।।भु०।।

[८२]

आंजणी[1] काइं नि सिरजीय करतार।
षेत्र कमावती स्यउं[2] भरतार[3]।

पं० ग्या० ना० न० अ० .८ है : तइं तउ काइं सिरजी उलगाणा की नारि। (तुलना० स्वीकृत ३.५)

१(+२). पं० ग्या० काइं दीयउ रे, ना० काइं दीयउ, अ० तइं काइं दीधउ। ३. न० [में नहीं है] ४. स० घड़ा हो। ५. स० रानह म० पं० र० ग्या० ना० न० अ० बनिह। ६. ग्या० स० हिरणली। ७. ना० बनह न, न० काइं न, अ० कां न, प्र० सरहा न, स० सूरह न। ८. स० धीणु। ९. पं० बनि न, ग्या० न० अ० अबं न० (आंबइ न०—ग्या०)। १०(+११). पं० सिरजी रोझडी, ग्या० सिरजी कोकिल। १२(+१३). ग्या० आवि नइ। १४(+१५). ग्या० चंपा हो डालि। १६. अ० जाटणी।

ग्या० १४१ [८२] यह छंद म० १२३/२, पं० १३५, ना० १४९, न० १६२, अ० १७१, स० ३.३२/२ है।

म० में इस छंद की केवल प्रथम तीन पंक्तियाँ म० १२३ की अंतिम तीन पंक्तियों के रूप में पाई जाती है@क्रम है स्वीकृत .१, .३, .२। म० १२३ की अन्य पंक्तियाँ स्वीकृत छंद ७९ में है।

पहिरिण[४] आछी[५] लोवडी।
तुंग तुरीय जिम भीडती गात्र।
साईय लेती सामुही।
हंसि हंसि बूझती प्री तणी[२] बात ।।भु०।।

[८३]

असीय बरस की बूढइ[१] बेस।
दंत कवाड्या[२] सिरि पांडुरा[४] केस।

स० में कुल सात पंक्तियाँ है, जिनमें से स० :१—.४ हैं :

भूली है वइहनडी इणै वीसास।
हूं नीव (<नवि) जाणूं औलगि जास।
बरजती बाप रखावती व्याह।
अंकन कुंवारी रहती सवी।

स० .५ है : ओढ़ण लोवडी काटती झाड। (तुलना० स्वीकृत .५)

स० .६ स्वीकृत .२ है, और स० .७ है :

माई कांइ सिरजी उलिगाणा घरि नारि। (तुलना० स्वीकृत ३.५)

१. अ० जाटणी। २(+३). ग्या० सुं० भरतार, स० जाट ज्यूं। ४. म० पहिरती। .५ अ० छाबल। ६. पं० ना० पीइकी।

[८३] यह छंद म० १२५, पं० १३७, ग्या० १४३, ना० १५१, न० १६६, अ० १७६, प्र० ३.१६, स० ३.२१ है।

म० .३ है : आइए दूती कुठणी।

म० .७ : कह्यउ हमारउ जे सुणइ। (तुलना० स्वीकृत ५७.३)

म० स० .५ : किम भव नीगमीस कामिणी (लोहोडकी—प्र०)।

म० स० .७ : कह्यउ हमारउ जे करइ (सुणइ—प्र०)।

(तुलना० ऊपर म० .७)

आइ अवासइ संचरी।
गलइ[5] लागी[6] अनइ[7] रुदन करंति।
किउं[9] दिन काटइ[10] हे भाणिजी।
रात दिवस मोनइ[11] थारडी[12] चिंत।
जेतलइ[13] आवइ सइंभरि धणी[14]।
तो नइ[15] महा अपूरब[16] करि द्युं[17] मीत ।।भु०।।

[८४]

बात सुणी[1] कूटणी[2] चालीय ऊठि[3]।
पाटलउ लेइ[4] मचकाइयउ[5] पूठि।

---

१. म० बालकइ, पं० न० बुढडइ, बा० बूढे, अ० वाचे हो, प्र० बूढी, स० हो बूढ़ि। २. म० कबाडीया, पं० ना० न० पडया, ग्या० पडयो, प्र० शरा। ३ (+४). म० पांडुरा, स० सिर पांडुरा। ५(+६). न० अ० तठइ गलइ लागी, स० गलइ लागइ। ७. पं० अरु, स० नै। ८. प्र० स० कराई (कराय—प्र०)। ९. पं० न० अ० स० किम। १०. पं० काढइ, ना० काटु। ११. न० इसंचरी ने मुझ, अ० म्हानुं, प्र० मेहै, स० मी। १२. पं० ना० स० थारीय। १३. पं० तेतइ, ना० जितै। १४. स० जइ करउ। १५. पं० न० अ० तेतइ, ना० जेतैं, ग्या० [में नहीं है], प्र० तोहि नीको, स० तोहि नइ कइ। १६. पं० ना० चंचल पाठव, न० एक अपूरब, अ० रूडउ एक पोढ़ौ, प्र० सो पांडीयो, स० सो पटवो। १७. प० करउ थे, म० प्र० करि (कर—म०) दीयउ, स० करि देउं।

[८४] यह छंद म० १२६, पं० १३८, ग्या० १४४, ना० १५२, न० १६७, अ० १७७, प्र० ३.२१, स० ३.२३ है।

पं० ग्या० ना० में .५ है : गाल फाडावउं धारा गल समी (समा—ग्या०)

१(+२). पं० ग्या० ना० न० अ० बात न० मानीय (मीनीय—ना०) प्र० एतो कही नै, स० इतो कहे जब। ३. पं० स० चाली छइ उठि, न० चलि गइ ऊठ,

पेट[६] फडावउं[७] थारउ[८] कूटणी[९]।
कोकउं[१०] देवर अरु[११] वडउ[१२] जेठ।
काढउं[१३] जीभ जिण वोलियउ।
नाक[१४] सरीसा[१५] काटउं[१६] दूनिउ[१७] होठ[१८] ।।भु०।।

[८५]

गोरठी वइठी छइ[१] पंडिया कइ[२] आइ।
कर जोडी अरु[३] लागुं ज[४] पाइ।
राजमती करइ वीनती।
पंडिया कहिज्यो[५] म्हारइ प्रीय नइ[७] जाइ।।

अ० चालि गइ ऊठि। ४. ना० ले पटउ, प्र० दोय पाटा सुं, स० ले पाटो अरि। ५. प्र० माहरी, स० पटकी छइ। ६(=७). पं० ग्या० ना० दांत पाडुं, न० पेट पांडा, अ० पेट फाडां, स० नांक पाट फड़ाउं। ८. पं० दारी, प्र० [में नहीं है], स० हूं। ९. ग्या० कूतारी। १०. पं० हउ तउ कोकउं, अ० कूकां, प्र० तेडो, स० तेतू। ११(+१२). न० अरुउ, स० अरी वड़ो। १३. अ० वाढां हो, न० वढाऊं, प्र० कसूं, स० काटुं। १४(+१५). ना० भाक सरीसा, प्र० ताक सरीसो। १६. पं० काढं, ग्या० काटउं, हे, ना० काटुं, न० चढ़ाल, अ० थाकौ, प्र० उपलै, स० ऊपलो १७(+१८). पं० स० होठ ग्या० हे होठ, न० तुझ होठ, अ० छेद हो होठ।

[८५] यह छंद म० १३०, पं० १४२, ग्या० १४८, ना० १५६, न० १७१, अ० १८२, प्र० ३.२७/३. स० ३.२९/३ है।

प्र० स० में केवल अंतिम दो पंक्तियाँ हैं।

पं० ग्या० ना० न० अ० .४ है : पंडीया कहिज्यो धण का (म्हांका-ना०) नाह नइ जाइ।

अ० .१ : तेडययउ पंडीउ बइठउ छइ आइ।

डावां हाथ कउ[8] मूंदडउ[9]।
ढलिक करि[10] आवइ हो[11] जीमणी[12] बांह ।।भु०।।

[८६]

पंडिया जाइ कहे[1] धण का नाह[2]।
तइ मोनइ दीधी थी[3] जीमणी बांह।

---

१. न० तेडयउ, ग्या० ना० वइठी। २ पं० ग्या० ना० बंभण कइ, न० पंडियउ ३(+४). पं० ग्या० ना० थारइ लागूं जी, न० अरु लागइ, अ० गोरी लागइ छइ। ५. म० थे जाइ। ६(+७). ग्या० धण का नाह नइ। ८. पं० ग्या० ना० न० आंगुलीया की, अ० म्हाकी अंगुली केरी। ९. पं० ग्या० ना० न० अ० मूंद्रडी। १०. ना० ग्या० ना० न० अ० ढलि करि, प्र० स० [में नही है]। ११. म० आयउ, अ० आवी हो; प्र० स० आवण लागौ। १२. पं० ग्या० ना० धण कीय, न० अ० धण केरी।

[८६] यह छंद पं० १४५, ग्या० १५१, ना० १५९, न० १७४, अ० १८५-१८६, प्र० ३.२९, स० ३,३१ है। म० १९० मे .२ मात्र इस छंद की है।

अ० १८५.३—.६ है : (.३) नोल कीधौ छउ बरस कउ।
(.४) तठै हूआ हिव बरस इग्यार।
(.५) दिव्व कीधा था आकरा।
(तुलना० स्वीकृत ४३.५)
(.६) सामी ते सहु वोल तुम्ह दीदा वीसार।

और अ० १८६.१,.२ है : (.१) पंडिया प्रीति राखी नही नाह।
(.२) अगनि साखइ म्हांकी झाली थीं बाहं।

स० में .३ और .४ परस्पर स्थानांतरित है, और स्वीकृत .५, .६ के बीच अतिरिक्त है :

हुं नवि जाणुं य ईभ करै।

१. स० जोसी कहई वीरा, प्र० पंडीत कहे। २. म० धण का नाह सूं, स०

चंद सूरिज[४] दुइ सापिया[५]।
पवन पाणी अरु[६] धरती आकासि[७]।
धूप जयायउ थउ वंभणा।
हउ तउ मूवी हो[९] स्वामी तणइ वेसासि[१०] ।।भु०।।

[८७]

वालुं हो[१] धणीय तुम्हारडउ जांण[२]।
कठिन पयोहरां तिज्यउ परांण।
वालउ जोवन, पिसि गयउ।
जोवन के सिरि वांधिया नेत[५]।

धन की नाह। ३. स० तोयी दीई थी, प्र० ति मोहि दीधा, ग्या० तइं मोनइ दीन्ही थी। ३(+५). स० चंद सूरिज दुइ दीया सखि, ग्या० चंद सूरज वे साखिया। ६. प्र० पाणी पवन नै, स० पाणी पवन अरि। ७. प्र० धूप अकाश, स० घूर अकासि। ८. ना० धूप उगाह्यौ वांभणां, प्र० द्रव्य पुजाव्यो वांभणै, स० दोव पुजाई थी वांभणै। ९(+१०). प्र० मूसी हीं नणदल एणी वेशातो, स० मूसी हे नणदल हूं इणी विसास, ना० हीं तो मुवी हो साही तिणइ वेसास, ग्या० हू मूई स्वामी तिणइ रे देसास।

[८७] यह छंद पं० १४७, ना० १६१, न० १७७, अ० १८६, प्र० ३.४८, स० ३.५१ है। किन्तु प्र० स० में .१—.५ निम्नलिखित हैं :

(.१) वेगि (दया करि—प्र०) मया करि तूं घर चालि।

(.२) कठिण पयोहर छांडि छ्इ (छोडीय—प्र०) ठामि (वाम—प्र०)।

(.३) सिपर ते (सपर जइ—प्र०) धरती रहइ (हे—प्र०)नीम्या, (नम्या—प्र०)।

(.४) अंधला असूर असती (तेउ समा-प्र०) अचेती (अचेत-प्र०)।

(.५) एक सरो घरि आवजू (आविज्यो-प्र०)। (तुलना० स्वीकृत ९३.२) ना० में स्वीकृत .६ के अनंतर भी है : उचरा सेन करु पहियचा साथ।

जिण बांधिया रावण षिस्यउ।

त्रिय कारणि[६] राम[७] बांधियउ[८] सूरा[९] सेत[१०] ।।भु०।।

[८८]

कातिग[१] मासह[२] जणह[३] चलाइ[४]।

नान्हडउ[५] आषर[६] गुपति[७] लिषाइ।

आप हस्तइ[८] लिषी[९] गोरडी।

जिम जिम[१०] बाचसीय[११] तिम तिम हुस्यइ[१२] हेत[१३]।

घणीय[१४] उमाहउ[१५] लागसी[१६]।

सषी[१७] राजा[१८] करिइस्य[१९] घरह की[२०] चित[२१] ।।भु०।।

---

१. पं० वाले हो, ना० बालु हो, अ० हुतौ बालु हो। २(+३). अ० भारो सुजाण। ४. पं० ना० अ० बालयउ (बालो-ना०, बालं—अ०) हो।

५.ना० वांधी नेव, अ० बांधीयो नेत्र। ६(+७), पं० त्रीय कारणि रामि, ना० त्रियां कारणि राणि, प्र० अस्त्री लगि राम स० अस्त्री गेली राम ८(+९+१०). ना० वेध्यौ, न० बांधिसउ सेज, म० बांध्यो सिरि सेत, अ० बांधियो सेत।

[८८] यह छंद म० १३१, पं० १५६, ग्या० १६१, ना० १७०, न० १८९, अ० २००, प्र० ३.२५ स० ३.२७ है।

ग्या० में .५, .६ नही है।

१. प्र० काती, म० कातीय। २. ग्या० मसि (<मासि) म० प्र० मासां। ३. पं० ग्या० साजण, न० णह। ४. प्र० अ० पठाइ। ५. पं० ग्या० न० छाणा, प्र० स० कोरो। ६. प्र० स० कागल, ना० अक्षर। ७. अ० प्रपत। ८ म० आप हथइ, प्र० आप हसि, स० आप हस्त। ९. न० लिषइ, प्र० लो, स० लिषे ना० लिष्या। १०. ना० न० जीम, म० जिउं जिउ। ११. पं० प्र० स० बाचइ, ना० चालस्यै। १२. र० तिम तिम हुवइ, ग्या० तिम हुस्यइ, ना० सुं होइ, न० तिम होवसी, अ० तिउं हुस्यइ।

[८६]

चीरी लिषी[१] धण[२] आपणइ[३] हाथ।
पंडिया हो[४] चालि हेडाऊ कय साथि[६]।
सात सउ कोसकउ[७] गामंतरउ[८]।

---

१३. पं० हित, ग्या० हेज १४(+१५). प्र० जण कोई माहि, स० घणी उपही। १६. ना० अ० लाचिस्यइ, स० उलगइ। १७(+१८). पं० राजा, ना० अ० राजा जी, न० राजा हो, प्र० राय, स० राव। १९. पं० करे से, म० वसय, ना० न० करिसी, प्र० चलायो, स० चलावो। २०. न० घरि केरी, अ० नारि केरी, प्र० धर अ, स० धरा अ। २१. प्र० स० चेत।

[८६] यह छंद म० १३२, पं० १५६, ग्या० १६४, ना० १७३, न० १६३, अ० २०४, प्र० ३.२७/१, स० ३.२६/१ है।

म० में स्वीकृत .३ तथा .४ नही हैं।

प्र० में इस छंद की केवल .१, .३ है।

स० में इस छंद की केवल .१, .२, .३ है।

प्र० स० की शेष पंक्तियां स्वीकृत ८३ तथा ६२ में है।

म० १४६ तथा प्र० ३.३५ और स० ३.३८ में पुनः इस छंद की पंक्तियाँ इस प्रकार आई है :

बाहुड धणह (गोरी—प्र०स०) दिषाली छै वाट।
ऊँचा परवत नीचा (दुर्घट—प्र०स०)घाट।
लांबी बांह देखालियॉ (देखाली-म०)।
देखितो चालिजे (नइ देषता जो जो—म०) देस की सीम।
छाहडी धूप थे (तावउड—म०) थ झीणी (म०—न०) गीणो (गिणइ-म०)।
चीरी राषज्यो धण कौ (जिम थारउ—म०) जीव।

१. पं० ग्या० ना० न० चीरी दीन्ही। २. पं० ग्या० ना० ना० न० गोरी। ३. पं० ग्या० ना० न० पंडया कइ। ४. पं० ग्या० ना० न० स्वामि थे, स० जणह। ५. पं० ग्या० ना० न० चालिज्यो जोवण (जोइ नइ—ग्या०, जो नइ—न०),

पंडिया रूडा[९] चालिज्यो देस की[१०] सीम।
तावडउ गिणज्यो न छाहडी[११]।
म्हारी[१२] चीरी[१३] राषिज्यो जिउं[१४] थारउ[१५] जीव[१६] ।।भु०।।

[६०]

[१]सात[२] सहेलीय[३] बइठी छइ[४] आइ।
छानउ[५] लिषीउ[६] तेह[७] माहि[८] सुणावि[९]।
लालच लिषिया[१०] बहिनडी[११]।

ना० अ० चालिज्यो रुडई जी, स० चलायो हैड़ाऊ कय। ६. पं० सात। ७. न० अ० कोस। ८. स० गाम आंतरै। ६. अ० जतन सुं। १०. न० अ० प्रदेस की। ११. अ० गिणज्यो मत छाहड़ी, म० छाहडीय जनि गिणइ, पं० न० गिणइ न० छाहडी। १२(+१३). पं० ना० न० अ० चीरीय, ग्या० चीरी। १४. म० जउ, पं० ग्या० ना० जिम, न० ज्युं, अ० [में नही है]। १५ (+१६). पं० न० धण कयउ जीव, ग्या० ना० धण कउ जीव, अ० धण केरी जीव।

[६०] यह छंद म० १३३, पं० २२५, ग्या० २३०, ना० २२६, न० १६२, अ० २०२, प्र० ३.२६, स० ३.२८ है।

पं० ग्या० ना० .८ है : से गुण लिख्या है संभरिवाल।

न० में .६, .७ नहीं हैं।

अ० में यथा .६, १० है : (.६) करहउ उमाह्यउ घर भणी।
(.१०)सामी बेगि आवउ हिव सैभरवाल।
(तुलना० उपर्युक्त पं० .८)

प्र० .२ है : तेरी लष्यो तूही समझाइ।

१. ग्या० तठइ। २. न० साथ, प्र० स० पंच। ३. स० सषी मिलि। ४. अ० बैठी। ५. ग्या० जि, स० तैरय, पं० अ० भोली तइ प्र० तेरो, न० भोजी तइ। ६. पं० अ० लिष्यउ, स० लिषी सषी। ७. म० सो, ग्या० गोरी, स० सषी ८(+६). म० तूम्हानयउ, पं० माहि सोणावि, ग्या० सुणाइ, स० मांही सुणाई। १०. न० अ०

साम्हइ[१२] हियडलइ[१३] जीमणी[१४] कूंषि।
दुइ नष[१५] लागा[१६] नाह का[१७]।
आप[१८] समांणी[१९] करती आलि[२०]।
धण विसहर[२१] प्रीयड गारुडी[२२]।
आउ सामी[२३] थारा डंक[२४] संभालि[२५]।।भु०।।

[६१]

नाल्ह म्हाका[१] दुष[२] सहिसी[३] कउण।
म्हे तउ[४] पलिंग[५] तज्यउ[६] नइ परहर्‌यउ[७] लूण[८]।

लिष्या छइ, प्र० लिष्यो है। ११. म० गोरडी। १२. ग्या० ना० न० म्हाकाइ साम्हइ, प्र० सांधी स० सामहै। १३. प्र० हूइ, स० हीयडइ। १४. प्र० स० डावी जी। १५. पं० दुइ दुष, म० दुष दुष। १६(+१७). पं० ना० लागा था प्रीउ का, ग्या० लागा था हाथ का, न० लागा छइ पीउ का, अ० लागा था नाह का, प्र० लागा था देव का, स० लागा था साम का। १८. अ० तव आप, ना० प्र० स० आप, ग्या० म्हाकां। १९. म० समाणी, ग्या० पं० सरेषी, ना० सरीषी। २०. म० स० करत आलि, पं० ग्या० षेलती आल, ना० थे लाघी थी आथ, अ० हुं करती जी आल। २१. म० प्रीय बिसहर, प्र० प्रीय विसारी। २२. म० धणी गारुणी, ग्या० ना० प्रिउ (प्रीय—ग्या०) गोरड़ी, अ० जी गोरडी। २३. न० अ० ते भए लेख्यउ, प्र० जाग जो धणी, स० जागी धणी है। २४. ना० लिष्या है। २५. ना० संभरवाल।

[६१] यह छंद म० १३४, पं० १४३, ग्या० १४९, ना० १५७, न०, १७२, अ० १८३, प्र० ३.३०, स० ३.३३ है।

१(+२). पं० ग्या० ना० अ० पांडया एइ (पंडिया—न०अ०) दुष म्हाका, प्र० ए दुष नाल्ह, स० जे दुष नाल्ह। ३. पं० ग्या० ना० न० अ० जाणिस्यइ प्र० कहे से, स० कहैइगो। ४(+५+६). म० पालथी सेज, पं० ग्या० न० म्हे त पलिंग तिज्यौ, ना० म्हे नो पल्यंक तजोइ, प्र० स० परिरूहयौ पलंग। ७. पं० अ० अनइ परिहर्‌यौ

पान[९] सोपारीय विस[१०] बडइ[११]।
ले जपमालीय[१२] मइ जपउं[१३] नांहि[१४]।
दीह[१५] गिणंता नह[१६] घस्या[१७]।
म्हांकी[१८] काग उडावतां थाकीय[१९] जीमणी बांह[२०]।।भु०।।

[६२]

जाणियउ[१] हो[२] राजा[३] थाकउ[४] जांण[५]।
दुहुं रे[६] काया मिलउ[७] एक परांण[८]।

प्र० अर तज्यां, स० त्रीय तीज्यो। ८. स० न्हाण। ९. प्र० काथो, स० काथ। १० (+११). ग्या० विस पडइ, ना० विस वडेइ, स० ते विष बडौ, प्र० विश वाउ। १२. प्र० कर जपमाली, स० करि जपमाला। १३(+१४). म० जपउ प्री तणउ नाम. न० जपूं छूं नाह, अ० रे जपस्युं नाह, प्र० स० अर जपइ नाह। १५. पं० न० प्र० दिन, ग्या० ना० दिन दिन, अ० दिवद, स० आंगुली। १६. प्र० म्हारा नह, स० दिन। १७. प्र० स० गया। १८. पं० म्हारी, प्र० स० [में नही है]। १९. ग्या० न० अ० थाकी छइ, अ० दूषइ, प्र० दूषि, स० दूषइ छइ। २०. पं० ग्या० ना० प्र० स० बांह।

[६२] यह छंद म० १३५, पं० १४८, ग्या० १५३, ना० १६२, ना० १७८, अ० १६१, प्र० ३.४६. स० ३.५८ है।

म० पं० ग्या० ना० न० अ० .१ है : हूं बालूं हो धणी थारउ सुजाण।

(तुलना ८७.१)

प्र० स० .२ है : जि क्युं ही (जे किम– स०) वांछै (यछै—स०) दूर (दूरी—स०) थी (थ—स०)।

१. म- हूं तउ बालूं, पं० न० अ० बाल, ग्या० ना० बालुं। २. प्र० स० [में नहीं है]। ३. पं० स्वामी, ग्या० ना० म० अ० धणी, न० धण। ४. ना० न० अ० तुम्हारी, स० थारोऊ, ग्या० थारउ प्र० थाको। ५. म० सुजाण। ६. म० अउर. प्र०

सा क्यउं[६] दूरि थी[१०] मेल्हियइ[११]।
कुल की[१२] रे[१३] बेटीय[१४] सील[१५] जंजीर।
जोवन राषउं[१६] मइ[१७] चोर जिउं[१८]।
पगि पगि[१९] तो नइ[२०] पहूच रे[२१] पाप[२२]।
इणि भवि उलगाणउ हूउ[२३]।
अवर भवि[२४] होयउ[२५] कालउ साप।।भु०।।

[६३]

पंडिया जइ तूं चालियउ[१] प्रीय कइ देसि[२]।
हउं रि कहउं वीरा[३] तिउ रि कहेसि[४]।

दोय, स० दुई। ७. म० काया आपे, ग्या० काया करि, ना० काया मिल, न० काया मिलिए, स० का मिल्यां छै, प्र० काया मिले। ८. म० पुराण। ९. पं० ना० न० सा किम, अ० भर जोवन। १०. पं० ना० दूरइ, अ० सामि, ग्या० मन्दिर। ११. पं० ना० न० छोडिजइ, ग्या० छोडतां, अ० छाडिगइ। १२(+१३+१४). ना० कुल की छोडी, प्र० कुल की बेडी, स० कूलह की बेडी। १५. प्र. सयल, स० सीयलै। १६. अ० राखियउ। १७. न० अ० [में नहीं है]। १८. न० मोर जिउं, म० चोर जउ, ग्या० चोरि जउ। १९. अ० पणि। २०. पं० ग्या० ना० तोहि, अ० वोहि, प्र० स० स्वामी। २१. पं० न० पहूचिज्यो, ना० लागिसि, प्र० तो लागै, स० लागुहु। २२. प्र० स० पाय। २३. प्र० हूयो, स० हूवौ। २४. पं० अवर भव, ना० अवर भवै, न० अ० दूसरइ भव, प्र० आवत डै, स० आवतइ भवि। २५. पं० ग्या० होज्यो, न० अ० हूज्यो, ना० [में नहीं है], प्र० भव, स० होइ।

[६३] यह छंद म० १३६, तं० १४४, ग्या० १५०, ना० १५८, न० १७३, अ० १८४, प्र० ३.२८, स० ३.३० है।

१. ग्या० पं० म० तू तउ चालिहो, न० अ० जइ तूं हो चालिसि, प्र० पांडीया चालीया, पांडयो चाल्यो ओका। २. न० प्री कइ, देस, अ० प्रीय तणइ देश। ३.

एक सरां घरि आवज्यो[५]।
थारी बाट बुहारूं[६] सिरह का केसि[७]।
जोवन भरि जल ऊलट्यउ[८]।
थाग न पावुं[९] धरह नरेस[१०]।।भु०।।

[६४]

पंडिया तिम कहेज्यो[१] जिम[२] प्रीय नि रिसाइ।
साधण तुझ विण अन्न न षाइ[३]।

म० पं० र० ना० ग्या० न० अ० रि कहूं स्वामी, प्र० हूं कहूं ते वीरा, स० हूं कहूं बीरा। ४. अ० तिसउ कहेस, प्र० असूं कहैस, स० सोई कहेस। ५. पं० एक बारां घरे आविज्यो, अ० एक रिस्यो घरि आविज्यो, स० एक सारां घरि आविज्यो, ग्या० एक बारां घरि आविज्यो। ६. म० थारी बाट वुहारं, न० अ० थारी बाट बुहारस्यां। ७. न० सिर केरे केस, ग्या० सिराह कइ केसि, ना० सिरह कै केस, अ० सिर करि केस, प्र० सिरहै के केस, स० सिर का केस। ८. न० जोवन भरि जल उभर्‌यउ प्र० भर्‌यो माहा जलटि, स० बिरह महाजल उलटई, ग्या० जोवन जल भरि ऊगयउ। ९. अ० तठइ थाग न० पाऊं जी, प्र० वाग न पामुं स० थाग न पावइ, ग्या० थाग न० पावां। १०. न० अ० सुणह नरेस, ना० धरा नरेस, स० मुंध नरेस।

[६४] यह छंद म० १३७, पं० १५०, ग्या० १५५, ना० १६४, न० १७५, अ० १८७, प्र० ३.२७/२, स० ३.२९ है।

म० न० अ० .१ है : पंडीया वीर तूं इसउ (सोय—न०) सुणेज (सुणेज—न०)।

म० न० अ० .२ है : जिउं तोनइ (जीरांउ—न०, जु तुमै—अ०)हूं

कहूं तिहूं कहेज (तिसहु कहेस—न०, तेम कहेस-अ०)।

पं० ग्या० ना० .४ हैं : सीस फाटहु अछइ दक्षण चीर।

प्र० स० में इस छंद की केवल .१, .३, .४ है। प्र० स० पाठकी शेष पंक्तियॉ स्वीकृत छंद ८३, ८७ में है।

१. प्र० स० तिणी (तीण-स०) परि बोजज्यो, स० वोलज्युं। २. पं० ना० न०

कुहाणी[४] फाटउ रे[५] कंचुयउ।
षोपरि[६] फाठउ तु[७] धण केरउ[८] चीर[९]।
जिम[१०] दव दाधो लाकडी[११]।
तूं तउ[१२] उवइगउ रे आविज्यो[१३] नाणदका[१४] बीर।।भु०।।

[६५]

कहि नइ गोरी थारा प्रीयरा[१] अहिनाण[२]।
थोदा थोड़ा म्हानय[३] दे[४] सहिनाण[५]।

तिम। ३. ग्या० धान न० षाइ। ४. पं० कुणही, न० स० कूंहणी। ५. न० अ० फाटी छइ। ६. म० कोकट, न० पोषरी, प्र० पोषर, ग्या० सीस,। ७. ग्या० न० फाटइ छह। ८. ग्या० दीषिड। ९. म० जीव। १०. प्र० स० जाणे। ११. अ० रे० वांहणी। १२. पं० ग्या० ना० [में नहीं है], न० थे, अ० अब तुं। १३. अ० आवै। १४. न० नणदल रा।

[६५] यह छंद म० १३९, पं० १५१, ग्या० १५६, ना० १६४, न० १८२+१८३, अ० १६४+१६५, प्र० ३.३२ (अंशतः), स० ३.३५ (अंशतः है।)

म० .८ है : ऊंचउ रे घोडउ चडय असमाण।

म० .९ है : सयल उडीसय निरषज्यो।

ग्या० में .२ नहीं है।

अ० में स्वीकृत .८ नहीं है।

न० में सवईकृत .८ के स्थान पर है : तेजीय घोडे अरु लाल कमाण।

अ० में .५, .६ के बीच अतिरिक्त है : इसे अहिनाण हो प्रो अवधारि।

न० ,, ,, ,, : पंडिया प्रीतणा ए अहिनाण।

(तुलना० स्वीकृत .१०)

किण[६] उणहारइ[७] सारिषउ[८]
लहुडा[९] देवर कइ उणहारि[१०]।
एह गोरउ प्रीय सामलउ।
सीस तिलक[११] नितु[१२] नवइरे[१३] विहाण।
उरि चौडउ[१४] कडि पातलउ।
ऊंचल रे[१५] जाडउ[१६] कडि जमडाढ[१७]।

पुनः न० अ० में इस पंति के अनंतर और है :—

बालि कहि गोरडी प्री अहिनाण।
थोडा थोडा म्हानुं दे सहिनाण।

प्र० स० में .२ का पाठ है : जाणी अहिनाणहु लेहु पीछाणि।

प्र० स० में निम्नलिखित दो पंक्तियाँ स्वीकृत .६ तथा .९ के बीच और आती हैं:

पाय लषीणी मोजडी (मोचणी—स०)।
मोटो (मूछ—स०) करिवाण छै डावर हाथि।

प्र० स० में पंक्तियाँ है क्रमशः स्वीकृत९५.१, उपर्युक्त प्र० स० .२, स्वीकृत .३, .८, .७, स्वीकृत ९६.६, .८, स्वीकृत ९५, ६, उपयुक्त प्र० स० की अतिरिक्त पंक्तियाँ, स्वीकृत ९५.९, .१०।

१. ना० प्रीय, न० प्री. प्र० प्रीउ, स० प्रीव का। २. स० सुहिनांण। ३. पं० मोनइ, अ० म्हानुं, मोहि, प्र० माहि। ४. पं० कहि नइ, म० दीयउ, ना० कहि, प्र० सहू। ५. म० अहिनाण। ६. प्र० कुण। ७. प्र० अणुहार। ८. प्र० स० कुण सारिषो (कौण सारिखो—स०)। ९. पं० ना० न० म्हारा लहुडा। १०. ग्या० अहिनाण। ११. पं० ना० न० द्वादस। तिलक। १२(+१३), पं० ना० न० करइ नवइ, ग्या० करइसु, प्र० करि उठाउ, स० उगतई। १४. म० घडि जाडउ, पं० ना० न० अ० उरि जाड़उ। १५(+१६). ग्या० ऊंचउ जोडउ, स० ऊंचउ गोलइ, प्र० ऊंचो गोरो। १७. ना० कडि छै जगडाढ। १८(+१९+२०). प्र० लाष मील्यां माहि लष लहइ। २१. अ० पंथिया। २२. न० अ० प्री तणा, पं० म्हारा प्र तण, ना० प्रीयका, प्र० प्रीउ म्हारो,

लाषां[१८] माहि[१९] पिछाणिजइ[२०]।
पंडिया[२१] प्रीय छइ[२२] एह सहिनाण[२३]।।भु०।।

[६६]

बलि कहि[१] गोरी[२] थारा[३] प्रीयरा[४] अहिनाण[५]।
थोडा थोडा म्हांनइ दे[६] सहिनाण[७]।
किण[८] उणहारइ[९] सारिषउ[१०]।
दाढीय रायकइ[११] भमर भमाइ[१२]।
मस्तक माहे[१३] केवडउ।
माहिलइ[१४] कीइय[१५] जीमणी आंषि[१६]।

स० म्हाको प्रींव छइ। २३. न० ए अहिनाण, प्र० जाणज्यो ए अहिनाण, स० इणतो सहिनाण, प्र० एण सहिनाण।

[६६] यह छंद म० १४२, पं० १५३, ग्या० १५८, ना० १६७, न० १८५, अ० १६६, प्र० ३.३२ (अंशतः), स० ३.३५ (अंशतः) है।

अ० .६ है : लाखा माहि पिछाणजो।। (तुलना स्वीकृत ६५.६)

प्र० स० में पूर्ववर्ती तथा यह एक ही छंद है, जिसकी पंक्तियों का विवरण पूर्ववर्ती छंद के प्रसंग में ऊपर आ चुका है।

१. न० भलि कहि। २. न० गोरडी। ३(+४). पं० थारा पीउ, ना० प्रीय, न० अ० प्री। ५. म० सहिनाण। ६. पं० मोहि दे, ना० मोनै दे, न० अ० म्हानुं दे। ७. म० अहिनाण। ८(+९). ना० कहि नी गोरी किण, म० कुणि अणुहारइ, ग्या० कवण अणहारइ, अ० किण अहिनाणे। १०. अ० परगडउ। ११. पं० ग्या० ना० न० राजा की। १२. पं० भमाहि, अ० भमेह। १३. पं० ना० न० अ० मस्तक माहि छइ। १४. पं० उणरइ माहिलइ, ग्या० ना० राजा जी कै (कइ—ग्या०) माहिलइ। १५. न० अ० टोइयै, ना० कोइयइ। १६. म० दाहिणी आंख। १७. पं० न० अ० छइ। १८. म० भभर सउं। १९. पं० ना० न० ग्या० कडया, अ० कडीया।

कालउ तिलउ अछइ[१७] भमर जिसउ[१८]।
कडि[१९] तरकस[२०] छइ[२१] जहंउ किरवाण[२२]।
तेजीय चडयउ राजा नवलषइ[२३]।
पंडिया प्रीय छइ एह सहिनाण।।भु०।।

[६७]

चोरी जनोइय[१] दीन्ही छइ[२] संठि[३]।
सहस[४] सोनइया बांध्या छइ[५] गंठि[६]।
बरस[७] दीहा कउ रे[८] संबलउ।
[९]घीय घणउ जीमजो[१०] जिम पगि[११] हुवइ[१२] प्राण।

२०(+२१). पं० कस सास, ग्या० न० तरकस साज, ना० तरकस सीझ, अ० तरकस सजइ। २२. पं० जात कुरवाण, ना० कुरवाण, ग्या० तउ कुरवाण। २३. म० रावकइ, ग्या० छइ नवि लषइ। २४. पं० ना० प्रीउ का, न० प्रीतम।

[६७] यह छंद म० १४३, पं० १५८, ग्या० १६३, ना० १७२, न० १६१, अ० २०६, प्र० ३.३१, स० ३.३४ है।

म० .६ है : हुइ हुती दुइ लेज्यो साम की सुजाण।

१. ना० जनोई सुं, प्र० स० जनोईय की। २. म० दीयछइ, स० दीधी, पं० दीधा, ना० दीन्ही सुं, न० दीनी। ३. पं० सांठि, म० सहंति, ग्या० ना० गंठि, प्र० स० गांठि। ४. प्र० गणि करि, स० गिणि। ५. म० ग्या० प्र० बंधिया, न० बांध्या। ६. पं० न० अ० गांठि, प्र० स० सांठि। ७. पं० वर। ८. ग्या० दिहाडा कउ। ९. पं० र० ग्या० ना० पंडिया, म० पंडिया थे। १०. प्र० षाय जिम, स० खाज्यो। ११(+१२). म० जिम थारे पगे, ना० पगे हुवै, ग्या० पगे हुवइ प्राण, स० पगाह। १३. प्र० स० पाये। १४. न० अ० संबर। १५. पं० ग्या० न० अ० चिहुं घडिया समउ, ना० बेऊं घडियां समै। १६(+१७). पं० ग्या० ना० न. करिज्यो मेल्हाण,

पहिरिज्यो[१३] साबरी[१४] पाणही।
चिहुंघडिया माहें[१५] तूं[१६] देइ मेल्हाण[१७]।।भु०।।

[६८]

बाहुडि[१] गोरडी[२] तूं[३] घरि जांह।
हुं[४] लेकरि[५] आवउं[६] थारडउ[७] नांह।
सउण[८] ते[९] बंधिया[१०] गाठडी[११]।
सात सोपारीय दीधीय[१२] छोडि[१३]।
बोलियउ छउ[१४] ते[१५] निरवाहिज्यो[१६]।
पाय लागीय[१७] धण बे कर जोडि।।भु०।।

अ० देज्यो मेल्हाण, प्र० दीए मेल्हाण, स० देइ मिलांग।

[६८] यह छंद म० १४४, पं० १५४, ग्या० १५६, ना० १६८, न० १८७, अ० २०७, प्र० ३.३५/१, स० ३.३७ है।

प्र० स० .४ है : दीधी सोपारी दोय कर च्यार।

स० .६ है : बचन तुम्हारइ लागी छइ नारि।

प्र० में .६ नहीं है।

१. म० वाहुडउ, पं० भण वाहुडी, ना० वहुड, अ० बाहुडि रे, न० छाहूं माहे २. न० अ० स० प्र० गोरी। ३. म० म्हे। ४(+५). म० ले करि, प्र० स० हुं लेइ। ६. पं० आवं हे, न० प्र० आविस्युं, प्र० आविश। ७. पं० न० ना० स० प्र० थारउ, अ० थारो रे। ८(+९). स० सोना तो, प्र० सुणज्यो। १०. पं० वीध्या, न० अ० वांध्या, ना० स० वांध्यौ, प्र० बांध्या। ११. ग्या० गोरडी। १२. पं० दीन्हा छइ, ग्या० न० दीन्ही, ना० दीघी छै, अ० तब दीनी छै। १३(+१४). ग्या० बोल्यउ छइ, न० बोलउ छउ ती, प्र० जो बोलो, स० ज्युं बोलइ। १५(+१६). पं० ना० न० सो निरवाहिज्यो, अ० छौते निरबाहज्यो, प्र० स० जे निरबाहिज्यो ना० ते निरबाहिज्यो।

[९९]

कोस पयाणइ[1] पंडियउ जाइ।
सात[2] अगारा करि[3] बइठउ जी[4] षाइ।
हलवइ हलवह[5] पग ठवइ[6]।
चालतां गोरडी दीधी थी[7] सीष[8]।
ने सह[9] पंडिया नइ[10] वीसरी[11]।
चालिवा लागियउ[12] छोटीय वीष[13]।।भु०।।

[१००]

सातमइ[1] मास[2] पहूतलउ[3] जाइ।
जठइ[4] मानिजइ[5] बलद नइ हल बहइ गाइ।

---

१७. पं० ग्या० ना० न० अ० पाइ पडइ।

[९९] यह छंद म० १४७, पं० १६१, ग्या० १६६, ना० १७५, न० १६४/२, अ० २०८, प्र० ३.३६, स० ३.३९ है।

किंतु प्र० स० .६ है : पडयो संभालै आपणउ पेट।

१. प्र० पीयाणो, म० पयाणय। २. न० साथ। ३. म० रोटा करि, पं० न० अंगा कार, स० अंगा करि, ग्या० अंगारक, प्र० अंगाकारी, प्र० अंगा करी। ४. न० अ० घी घणउ, प्र० स० बैठो हो। ५. अ० अलवीह चालिहो, प्र० सांसतो चालइ, स० सूनो चालै। ६. म० पग भरइ, ग्या० पगिला भरइ, ना० भंग भरै, न० पैग लाभइ। ७. ना० दीन्ही थे, प्र० कहै, स० कह्या हो। ८. प्र० स० संदेस। ९. पं० ना० ते सवि, प्र० स० ते। १०. प्र० स० सघलो। ११. प्र० स० बीसर गयौ। १२. अ० ठमकि चालै करि। १३. म० स० सीख।

[१००] यह छंद म० १४९, पं० १६२, ग्या०० १६७, ना० १७६, न० १६५, अ० २०९, प्र० ३.३८, स० ३.४१ है।

मांड पीजइ[६] कण राषिजइ[७]।
तठइ[८] लाल विहूणी[९] बाजइ[१०] घांटि[११]।
इसीय सकति अछइ[१२] देव की[१३]।
नाहर चोर नवि लागए[१४] बाट[१५] ।।भु०।।

[१०१]

पंडियउ पहुतउ सातमइ मास।
देव कइ थांनि[१] करीय[२] अरदास[३]।

म० स० में स्वीकृत .२ और .३ के बीच और है :

इसउ चरित जिहां अनि घणउ।
सांड विहूणी व्यावइ गाइ।

स० .१ है : अचरिज बात ईम सयल असेस।

१. न० साथमइ। २. ग्या० सथि। ३. ग्या० ना० प्र० स० पहूंतउ न० उतउ किहां, पं० पहूंतउ ले। ४. ना० उठइ मानि, प्र० तिहां, स० ते। ५. म० पूजियइ। ६. म० पीवइ। ७. म० नांषिजइ, पं० राख लिजइ, ना० न० अ० प्र० स० रालिजै। ८. पं० ग्या० ना० उठइ, अ० प्र० स० [में नहीं है]। ९. न० काट विहूणी। १०. म० रे बाजइ। ११ ग्या० स० घंट। १२ [+१३. ना० देवा तणी, अ० स० तिहां देवकी, प्र० जिहां देवको। १४. पं० ग्या० ना३ नहीं तेहनी, न० नीही तेहनि, प्र० न० देवकी, स० नहीं देवकइ। १५. स० पंथ।

[१०१] यह छंद म० १५०, पं० १६३, ग्या० १६८, ना० १७७, न० १६६, अ० २१०, प्र० ३.४४, स० ३.४७ है।

पं० ग्या० ना० न० अ० .५ है : माहिमा आधिकी छइ (दीसइ-ग्या०)
देव की। (तुलना० स्वीकृत १००.५)

पं० ग्या० न० अ० .६ है : मेलउ देई स्वामी राउसुं।

.१० है : तुं सेवकरी करुणा समरत्थ (सेवकां तारण समरथ नाथ—अ०)।

तपीय[४] सन्यासीय[५] तप करइ[६]।
अमर काया[७] रतनालीय आंषि[८]।
जिण दिन[९] मेरू न[१०] मेदनी।
धन धन देव तूंही[११] जगनाथ।
फूल[१२] चहोडीय[१३] पंडियइ[१४]।
चंदन चरचि[१५] अर जोडइ[१६] हाथ।।भु०।।

प्र० स० में प्रथम दो पंक्तियाँ क्रमशः स्वीकृत .६, .४ हैं, स्वीकृत .५ उनमें भी यथा .५ है और शेष पंक्तियाँ हैं :

(.३) अमर स्यंघासन वैसणइ।

(.४) जिण दिन कंठ न० ओर अहंकार।

(.६) जिण दिन स्वामी चंद न सूर।

(.७) जिण दिन पवन पानी नहीं।

(.८) जिण दिन स्वामी आभ न गाभ।

(.९) ये तो जुग सूना गया।

(.१०) तदि तो दीप नीपायो हो आप।।

१. न० अ० धनि, म० थानक। २(+३). पं० अरु करी दासि, न० अ० करै अरदास। ४(+५). ना० तति सन्यासी। ६. अ० रे कापडी। ७. म० अमृत काया, पं० उसकी कनक काया, ग्या० ना० न० कनक काया, अ० अमर वाइक। ८. अ० रउनालीय आंखि। ९. म० दिन दिन, प्र० जिण दिश। १०. म० भेटय। ११. प्र० स० देव देवा। १२. ना० पूज। १३. पं० अ० च्होडइ, ग्या० चडाया, न० चहो।, १४. पं० न० अ० पंडीयउ। १५. बरजि, पं० चरित्र, ना० चरचिअ। १६. म० जनोईय, पं० और जोडइ, ना० जोडै रे, अ० अरु जोडइ।

[१०२]

पंडियउ आइ पहूतउ[1] प्रोलि।

द्वादस तिलक चंदन की पोलि।

---

[१०२] यह छंद म० १५२, प० १६५ (अंशतः) — १६ (अंशतः) और इसी प्रकार र० १६७— १६८, ग्या० १७०—१७१, ना० १७६—१८०, न० १९८—१९९, अ० २१६—२१७, प्र० ३.४३ (पूर्ण), स० ३.४६ (पूर्ण) है।

म० में स्वीकृत .२, .६, .७ नहीं हैं।

पं० १६५, ग्या० १७०, ना० १७६, न० १९८, अ० २१६, में यथा .१ है स्वीकृत .४, यथा .३ है स्वीकृत .५, यथा .६, .७, .८ हैं स्वीकृत .८, .९, .१०, शेप यथा .२ है : सूभर भरिया अरथ भंडार।

और यथा .४, .५ हैं : घरि घरि तोरण मंगल च्यारि। (तुलना० स्वीकृत १२०.४)

घरि घरि अति उजला झलमलइ।

(अ० घरि घरि द्वार धवला घणा।)

(तुलना० स्वीकृत १०२.७)

पं० १६६, ग्या० १७१, ना० १८०, न० १९९, अ० २१७ में यथा .१ है स्वीकृत .१, यथा .२ है स्वीकृत .२, यथा .३ है स्वीकृत .३, और यथा .४, .५, .६ निम्न हैं।

(.४) हाथ बीजोरउ पुहुप की माल। (तुलना० स्वीकृत १०३.२)

(.५) राइ भुवण गयो जोइसी।

(.६) ऊभउ राखियउ पउलि दुवार।

प्र० स० में स्वीकृत .१, .२ है : (.१) प्रोहित निरखै पोलि पगार।

(.२) चंदन तिलक अंगि पौलि कराय।

स० में प्रारंभ में ही और है : यठइ पोथी रामा की छै।

१. ग्या० जाइ नइ वइठउ। २(+३). प्र० कांधि जनोइय, स० कंठ जनोई।

गलइ[2] जनोइय[3] पाट की।
रगत चंदन तणा[4] प्रोलि[5] किमाड[6]।
सरब सोना की[7] पावडी[8]।
ऊँचा तोरणि घरि घरि बार।
घरि घरि[9] उजला झलमलइ[10]।
घरि घरि[11] तुलछीय[12] बेद पुराण।
तिण भुइ[13] पाप न० संचरइ[14]।
तठइ[15] फिरइ[16] जगनाथ की[17] आंण।।भु०।।

[१०३]

पंडियइ राउलइ[1] कियउ रे[2] प्रवेस[3]।
लेइ[4] बीजोरउ[5] मिल्यउ[6] नरेस।

---

४. ग्या० रतन चंदन तणा, म० रंग चंदन का, न० सरभ सो रजत तणा, प्र० स० रगत चंदन की। ५. म० पउल, न० यलि, प्र० पौलि, स० पीली। ६. म० प्रकार। ७. न० सबेरे सोना की, स० सीसम सार की। ८. पं० र० ग्या० ना० न० सांकुली, प्र० स० पाटली। ९(+१०). स० ऊंचा दादुर झलमलइ, प्र० ऊंचा ईडा झलमलइ। ११(+१२). पं० घरि घरि तुसली। १३. म० तिणनु, पं० उणि भुव, र० ग्या० ना० न० उणि भुइ, प्र० जिण भुइ, स० तिण भई। १४. प्र० स० छीपही। १५. पं० र० ग्या० ना० न० अ० ऊठइ, स० तिहां। १६. म० फिरय, ना० फिरइ छइ। १७. ना० जगनाथ घरि।

[१०३] यह छंद म० १५३, पं० १६८, र० १७१, ग्या० १७४, ना० १८३ न० २०२, अ० २२०, प्र० ३.४०, स० ३.४३ है।

पं० र० ग्या० ना० न० अ० में .३ है : नमण कीधी राजा पूरबइ।

१. पं० र० रावल गनि, ग्या० रावल, म० राजन, प्र० स० जाइ। २. ग्या०

कुसल कुसल अहो देवता[७]।
गंग जमुन[८] जां लगि बहइ नीर[९]।
चंद सूरिज जां लगि तपइ।
तां लगि[१०] राज करउ[११] अजमेरि[१२]।।भु०।।

[१०४]

चीरी[१] दीन्ही पंडियइ[२] राउ कइ[३] हाथि[४]।
पंडिया[५] आवुयउ कहि किण साथि[६]!

लीयउ रे, प्र० कीयो। ३. प्र० राय परवेश। ४. म० हाथ, न० देइ। ५. म० बीजरउ। ६. म० भेंटा, न० मिले, स० दुज मीलइ, प्र० मिलीया। ७. प्र० सु प्रस्न हूआ, स० सं प्रसन्न हुवो। ८. गंगा नदी रउ। ९. म० जा वहइ नीर, पं० र० ग्या० न० जां (जी—ग्या०) नीर बहाइ, ना० जितै नीर विहाय, अ० जहां नीर वहाइ, स० जव लगि बहै नीर। १०. न० तौ लगि, प्र० अविचल। ११(+१२). पं० राज की कीरति हुवइ, र० राज की कीरति रहाइ, ग्या० ना० कीरति तुम्हरि जाइ (रहाइ—ग्या०), न० कीरति अबिचल थाइ, अ० अविचल राज तुम्ह थाइ, स० राजा सयल परिवार, प्र० राज छै तुमा सरीर।

[१०४] यह छंद म० १५७, पं० १६५, ग्या० २००, र० १६७, ना० २०६, न० २२६, अ० २४८, प्र० ३.४, स० ३.४४ है।

पं० र० ग्या० ना० न० में ,५ है : जइ तुम्हे राव जी नावीया।

,, .६ ,, : तउ धण हीयडउ फाटि (फूटि—ग्या०) मरेसि। (तुलना क्रमशः १०५.५, .६)

न० में इनके पूर्व अतिरिक्त है : मंडीयउ कागद करि धरइ

प्र० स०में स्वीकृत .२ यथा .१ है, और अन्य पंक्तियाँ निम्नलिखित है :

(.२) लांघ्या कूं फरवत दुरघट घाट।

(.३) तुम कारण दूत रतरा (दूत रमिरां—स०)।

कुण राणी[७] तो नइ[८] पाठव्यउ[९]।
राणी राजमती[१०] तो नइ[११] दीयउ संदेस[१२]।
ठाकुर थे[१३] घरि आविजो।
जीतां[१४] जोबन किहां रे लहेस।।भु०।।

[१०५]

पंडिया गोरडी[१] तइ[२] किण परि[३] दीठ।
मोती[४] परोवती[५] गउषि[६] बईठि।

(.४) सूना सांभर का रिणवास।

(.५) सूना चउरी (चउरा—सं०) चउषंडी।

(.६) सूना मंदिर गढ (मढ़—स०) कबिलास।

१. पं० ग्या० हिवइ चीरी, न० उतो चीरी। २. म० वाची, ना० दीधी पंडीया, न० पंडीया। ३. ना० [में नही है]। ४. ना० [में नहीं है]। ५. म० अ० कहि रे (कहि न० रे—अ०) पंडिया। ६. म० [में छूट गया है], पं० आव्याउ कुण संघाति, अ० आयो कुण साथि, ना० आयो कवण के साथ, प्र० स० तू आवो कवण कइ साथ। ७. पं० र० किणइ। ८. पं० र० ग्या० तुम्हें अ० तोहि। ९. पं० ग्या० मोकल्या, र० ना० अ० मोकल्यउ। १०. र० राणी राजमती यै। ११. पं० ग्या० ना० तुम्ह, र० पाठव्यौ, अ० तहि। १२. ग्या० दीया जी संदेस र० [में नहीं है], ना, दीया संदेस। १३. अ० ठाकुरा तुम्हे। १४. अ० जातो, म० जीतो रे।

[१०५] यह छंद म० १५८, पं० १६६, र० १६८, ग्या० २०१, ना० २१०, न० २३०, अ० २४६, प्र० ३.५२, स० ३.५५ है।

प्र० स० .५ है : एक सरां घर आवज्यो। (तुलना० स्वीकृत ६३.३)

,, .६ ,, : चढ़तो जोबन किहां किहां लहेस। (तुलना० स्वीकृत १०४.६)

ग्या० .२ है : उण भुय पग देइ कहउ जी संदेस।

(तुलना० स्वीकृत .४)

चित[7] चोषइ[8] मन[9] ऊजलइ[10]।
पग[11] दुय[12] अंतर[13] दीयउ रे[14] संदेस।
जउ रे तू[15] आज न[16] चालीयउ[17]।
तउ[18] धण[19] हीयडलउ[20] फूटि[21] मरेसि[22]। ।भु०। ।

[१७६]

भीतरि[1] सांचर्या[2] दूअनय[3] राइ।
पाट महादे[4] राणी लीयउ[5] बुलाइ[6]।

उसमें छंद की .३—.६ के स्थान पर केवल स्वीकृत पूर्ववर्ती छंद की .५, .६ है।

१(+२), प्र० गोरडी, ना० गोरी नै। ३. पं० र० ग्या० ना० किण विधि, प्र० को दुप, स० किणइ दुप। ४. प्र० स० चावल। ५. प्र० स० वीणती, ना० पोवत। ६. र० गोषै। ७(+८). र० चित दोषो, प्र०स० मुपि मइलइ। ९(+१०). पं० मन ऊमलयउ, र० मन ऊपनो, ना० मन आरती, स० चित ऊजलइ, प्र० चित निरमल। ११. पं० र० उणि तउ, ग्या० उण। १२(+१३). पं० र० ना० न० ग्या० भुइ पग देइ, प्र० स० दुइ पग उतरी। १४. पं० कहउ, ग्या० कहउ जी, र० ना० न० नै कह्यो, प्र० स० कह्यो हो। १५. पं० र० ग्या० ना० न० अ० तुम्हे। १६. पं० र० ग्या० ना० न० रावजी। १७. पं० र० ग्या० ना० न० नावीया, अ० चालीस्यइ। १८(+१९) ना० न० साधण, अ० तउ साधण। २०. पं० हीयउ, र० ग्या० हियडे, ना० हीयडै। २१. पं० र० ना० न० फाटि। २२ म० नरेस।

[१०६] यह छंद म० १६८, पं० १९९, र० २०१, ग्या० २०४, ना० २१३, न० २३३, अ० २५७, प्र० ३.६०, स० ३.६२ है।

पं० र० ग्या० ना० न० .६ है : राणी कोडि टका कउ दीन्हउ छइ हार।

,, .७ ,, : म्हाकी भावज नइ संपिज्यो।

,, .८ ,, : जिह कयउ पीहर छइ भोज की धार।

उलगाणउ घर चालियउ[७]।
नयण भरे[८] अरु कियउ जुहार[९]।
चिरजीवे हो म्हाका वीर[१०] तूं।
म्हारउ आंसूय[११] रालतां[१२] भीनउ छइ[१३] हार।।भु०।।

[१०७]

रहि रहि[१] बीसल[२] घर[३] मम जाहि[४]।
थारा[५] करिस्यां[६] च्यारि वीवाह[७]।

(तुलना० स्वीकृत १०८.६)

प्र० स० .४ है : संदेसी नया (सा नईआ—प्र०) उपरि पान।

,, .५ ,, : म्हा बइठा से बावरो।

,, .६ ,, : रहो तो उडीसा परधान।

१. पं० र० न० तब भीतरि। २. म० चालीयउ, अ० सीख। ३. पं० म० दूउदउं, र० ना० दोनूं, अ० करावी हो, प्र० दुहै, स० दोई। ४. पं० र० ग्या० ना० न० अ० भानमती। ५. ग्या० लीयउ जी, प्र० लीधा, स० लीय। ६. ग्या० प्र० बोलाय, स० बोलाई। ७. पं० र० ग्या० ना० न० अ० चालिस्यइ। ८. पं० ग्या० ना० अ० नयण भरइ, र० नाण भरय। ९. पं० र० ग्या० ना० न० अ० अरु करइ (करिय—र०) जुहार। १०. म० वीर तूं, र० म्हांका वीर सूं, न० म्हांका वीर जी। ११. अ० म्हांके। १२. अ० नाखतां। १३. अ० भीगो जी।

[१०.७] यह म० १६६, प० २००, र० २०२, ग्या० २०५, ना० २१४, न० २३४, अ० २५८, प्र० ३.६२, स० ३.६४ है।

म० में .६ नहीं है।

१. म० ना० रहु। २. पं० र० न० वीरां तू, प्र० स० प्रधान तुं। ३. पं० र० हरि, ग्या० न० अ० घरहि, ना० वीर, प्र० घरहां, स० जी। ४. पं० न० जाह, ग्या० अ० म० जाउ, ना० म जाल, र० म० जाइ, न० में जाइ प्र० न जाय, स०

दोई गोरी[८] दोइ सामली[९]।
राइ भतीजी हो[१०] राज कुमारी[११]।
बहिन दिवाड़ूं[१२] राइ की[१३]।
थारा व्याह करावुं[१४] गंग नइ[१५] पारि[१६]। ।भु०। ।

[१०८]

रहि रहि[१] बहिनडी[२] तूं[३] मांम म हारि४।
म्हारइ[५] सहस अस्त्रियां[६] घरि नारि[७]। ।
एक एकां थी[८] आगली[९]।
एक अस्त्री[१०] छइ[११] म्हाकइ[१२] रतन संसारि।

मतो जाई। ५. न० थारा हो, स० थारो। ६. र० करेस्यां, अ० करां, प्र० करू हूं, स० कराऊं हूं। ७. र० च्यारे बीवाह, प्र० थारो व्याह, स० दो तो व्याह। ८. प्र० स० एक गोरी। ९. प्र० स० दूजी सामली, ग्या० सामली। १०. म० राजभतीजी, अ० राजमती जिसी, प्र० रायभ्तीजो। ११. प्र० स० नयण सुंतार। १२. म० मंगावं, ग्या० दिवावां, र० न० दिवावुं, न० देवातूं, १३. म० राज की धार, पं० ना० न० तो नइ रावली, र० राउकी, ग्या० तोनै रावकी, स० देवकी। १४. अ० व्याह करावां हो। १५. अ० गंगा के, प्र० गंग, स० गंगा कई। १६. प्र० दूवारि।

[१०८] यह छंद म० १७०, पं० २०१, र० २०३, ग्या० २०६, ना० २१५, न० २३५, अ० २५९, प्र० ३.६३ स० ३.६५ है।

प्र० स० .२ है : अक घरि (छइ—स०) साठि अंतेवरी नारि।

म० में .४, .५ नहीं है।

१. र० ना० न० रहु रहु। २(+३). म० बहिन. प्र० बैहनडी, स० बइहन। प्र० वचन म हारि, स० वचन नू हारि। ५. अ० [में नहीं है]। ६. म० सहस स्त्रीयां, अ० सहस त्रीयां। ७. पं० र० न० छंइ घर की नारि, ग्या० अछै घरि नारि, ना० घरे वारि, अ० अछइ म्हां घर नारि। ८. म० एकांह थी। ९. प्र० चढ़ाय थी।

प्रेम पियारी[13] बालही।
बाइ[14] उणरउ[15] पीहर[16] छइ[17] मांडव धार[18]।।भु०।।

[106]

कंठ भरे भरे[1] दीधा छै पान[2]।
उतउ देस उडीसा कउ[3] परधान[4]।
आधी जी चादर बइसणइ[5]।

1(+11). अ० पिण इकत्री छइ। 12. पं० म्हारइ, प्र० स० [में नहीं है]। 13. अ० प्रेमपियारी नइ। 14. पं० र० ग्या० ना० अ, प्र० [में नहीं है]। 15(+16+17), म० ताहरउ पीहर, ना० पीहर, न० जिणकउ पीहर छइ, प्र० जेके पीहर, अ० स० जाकर पीहर छइ। 18. पं० र० ना० न० अ० गढ मांडव धार।

[106] यह छंद म० 171, पं० 202, र० 204, ग्या० 207, ना० 216, न० 236, अ० 262, प्र० 3.64, स० 3.66 है।

म० .1 है : इय दुअउ हिबय बीसल राव।

,, .2 है : सयउ अंतेउर लीय बोलाय।

,, .3 है : देव बिछोहउ कांइ कीयउ।

अ० .5 है : मोटो हो क्षत्रियां जाणियइ।

प्र० स० .1 है : सेवा पूरी चाल्यो धरि राव।

,, .2 है : ठाली लागै मिलै छइ राइ।

प्र० स० .3 है : स्वीकृत .5, प्र० स० .4 है स्वीकृत .4।

,, .5 है : कालिमाहे (जुग—स०) पाप जे बापर्‌यो (न अवतर्‌यो—स०)

,, .6 है : राजि के कारण विणसस लंक।

1. न० ग्या० अ० कंठ भरे भरि। 2. र० दीना पान। 3. र० न० देस उडीसा की (के—न०), न० दीयौ सौ उडीसा को. ग्या० दो सै उडीस कौ। 4. न० राज्या

म्हाका सगा सुणीजा[६] संक्या आज[७]।
पूठि उघाडी म्हाको हिव हुई[८]।
तइं तउ त्रिया कै कारणि[९] फेडियउ राज[१०]।।धु०।।

[११०]

सांढिया[१] भरउ[२] तुम्हे[३] सउ च्यारि[४]।
भरिज्यो[५] अरथ नइ गरथ[६] भंडार।

वहु मान, अ० राजान। ५. र० ना० आधी चादर बैसतो, ग्या० आधी चादरि वैसणौ। ६. र० न० म्हाका सणेजां, म०सगा रे सणेजा। ७. चाल्या हो आज, अ० हो चालिस्यइ आज, म० की लोपी माम (तुलना० स्वीकृत ४५.४), प्र० स० ताकसी पूठि। ८. पं० ग्या० पूठि उघाडी बहु वइसतइ (बडसता—ग्या०), म० पूठ उघाडी हिव हुई। ९. ग्या० तौ स्त्रीयां कारण, अ० त्रिया वाचा कै कारण, म० स्त्री रूप कारण। १०. अ० छांडियउ राज, म० वोलउ हो राव।

[११०] यह छंद म० १६७, पं० १६८, र० २००, ग्या० २०३, ना० २१८, न० २३२, अ० ३६३, प्र० ३.५८—५६, स० ३.६१। किंतु प्र० स० का पाठ म० १६४, म० १६५ में है।

स० १६४=अ० २६५=प्र० ३.५८=स० ३.६१/१ है (स० में .४, .५, .६ नहीं है) :

अणीया हाथीया सइ दुय च्यारि।

(तुलना० स्वीकृत ११६.५ का म० पं० र० ग्या० ना० न० अ० का पाठ)

आणीया अरथ नइ द्रव्य भंडार। (तुलना० स्वीकृत .२)

आणीया हीरा पाथरी। (तुलना० स्वीकृत .३)

आणीया तेजीय तरल तुषार। (तुलना० स्वीकृत ११६.२ का म० पं० र० ग्या०

भारिज्यो हीरा पाथरी।
बोलेउ हो पूरव्यउ बोल विचारि[7]।
कह्यउ हमारउ जे सुणउ[8]।
तउ[9] काल्हि[10] चालिज्यो[11] एतीय बार[12]।।मु०।।

मा० न० अ० का पाठ)

कवाइ पहिरावं पाट की।

काल्ह चलउ ए (चालवो राय—प्र० एतीय बार। (तुलना० स्वीकृत .6)

और म० 165=अ० 260=प्र० 3.59=स० 3.61/2 है :

ऊगउ सूर नइ हूअउ परभाति।

दीधा हाथीय सय दुय साथि।

(तुलना० स्वीकृत 119.5 का म० पं० र० ग्या० ना० न० अ० का पाठ)

दीधा हीरा पाथरी। (तुलना स्वीकृत .3)

दीधा तेजीय नाल्हउ मन्त गयंद।

कर जोड़ी नाल्हउ मास भणइ।

राजा जी चालिस्यइ मास बसंत।

स० में उपर्युक्त .1, .2, .3 नहीं हैं।

1. पं० ग्या० सांठि, ना० साठडी, न० साठडियां, अ० हिव सांठिया। 2. म० सांठि। 3. म० भराय। 4. म० दुह च्यांरि, ग्या० सहस अठार, ना० न० अ० सहस विच्यारि। 5. र० भरो थे। 6. पं० र० अरथ दरब, ग्या० अरथ गरथ, ना० दरब नै अरथ। 7. म० संभारि। 8. म० जे सुणइ, र० ग्या० अ० जउ सुणो। 9(+10). म० कोइ दिन, पं० र० ग्या० ना० न० तउ तुम्हे, अ० तो काल्हि। 11. म० मेलावउ, अ० चालो तुम्हे। 12. म० एतीय वास।

[111] यह छंद म० 177, पं० 208, र० 210, ग्या० 213, ना० 222,

[१११]

जोगिनउ[१] एक[२] अपूरब राइ[३]।
जइ[४] मन करइ तउ[५] सइंभरि[६] जाइ।
चंचल चपल सुचालणउ७।
कोकउ[८] जोगी[९] पूंछउ[१०] मांम[११]।
जो मांगइ[१२] थे आपिज्यो[१३]।
पाटण[१४] सरिसा बारह गांम ।।भु०।।

[११२]

[१]जोगिनउ[२] बोलय[३] सुणउ[४] नरेस[५]।
आप[६] तूं राजा[७] नयर[८] परदेस।

न० २४२, अ० २६६, प्र० ३.६७, स० ३.६८ है।

पं० र० ग्या ना० न० .५ है : थे तउ पूछउ जोगी नइ (जोगनौ —ग्या०) बोलावइ राइ (लीयो रे बोलाइ—ग्या०, नैडो बोलाइ—ना०)। प्र० स० .४ है : रूप सुंदर नै (अपूरब— स०) बालिय बेस।

,, .६ ,, : पाटण सरिसा नयर असेस।

१(+२). पं० न० तठइ जोगिनउ, र० अठै जोगनो, ग्या० ना० तठै जोगियो (जोगनौ—ग्या०) एक, अ० तठइ जोगिय एक, प्र० स० जोगी एक। ३. म० राव, ना० अ० आइ। ४. म० जउ, अ० आंखि, प्र० स० [में नहीं है] ५. र० मनतौ, अ० टमकै माहि। ६. न० अजमेर। ७ र० सुचांचलो, न० प्र० चालणो, स० अरि चालणइ। ८. अ० राइ कहइ। ९. अ० तुम्हे। १०. अ० पूछिज्यो। ११. अ० नाम। १२. स० ज्यौ मागौ। १३. स० ज्युं आलज्यौ, म० सो सुंपस्यां। १४. पं० र० उणिनइ पाटण।

[११२] यह छंद म० १७६, पं० २१०, र० २१२, ग्या० २१५, ना० २२४, न० २४४, अ० २७३, प्र० ३.६८, स० ३.७० है।

राजभवणि[9] राणी[10] घणी[11]।
तउ[12] कहि नइ[13] कागल[14] किणइ[15] देसि।
दिवि दीठी[16] नवि ऊलषउं[17]।
स्वामी[18] गढ अजमेरि[19] गउ भुलइ पडेसि[20] ।।भु०।।

म० में ३, .४ नही है।

प्र० स० .२ है: विण उणिहारां किहां लहेस।

,, .४ ,,: ऊचै गोलइ लांबइ नाक।

,, .५ ,,: जिणी परै (जीव पराया—स०) धण जामलइ (ओलषई—स०)।

,, .६ ,,: चीरी दीज्यो (दीजां—प्र०) [प्रभु—स०] धण कइ हाथि।

१. म० हिवइ। २. म० जोगी हो, पं० र० ग्या० ना० जोगिनउ, न० संभलि जोगी, अ० जोगिय, प्र० स० जोगी। ३. र० वोलियो, ना० बोलै, न० प्र० स० कहइ, अ० पूछइ जी। ४. पं० ग्या० ना० न० [में नहीं है], र० सुन हो, प्र० स० सुणि। ५. र० अ० नरेस, ग्या० धारि नरेस, म० अ० स० धरह नरेस। ६. पं० र० ग्या० ना० अ० अभूमियउ। ७. पं० र० ना० अ० आप, ग्या० रावल। ८. पं० र० ग्या० ना० अ० अरू। ९. प्र० राजघरिणि, स० राजधणी। १० (+११). प्र० रावल धणी, ना० राणी। १२(+१३). अ० तूं तिहां, ना० जाय नै, ग्या० तूं कहि नै। १४. अ० कागद। १५. अ० कवण कु देस। १६. म० दीठी मूंध, पं० र० दिठि दीठी, न दृष्टि दीठी। १७. न० अ० ओलखां। १८. पं० र० ग्या० ना० न० अ० [में नहीं है]। १९. पं० अ० अजमेर, र० अजमेरि, न० अजमेर माहें। २०. म० हुं— भूलय देस, ग्या० गयो भूलि पडेसि, ना० गं जुलइ पडेस, न० भूल पडेस, अ० महिभूमि पडेस।

[११३] यह छंद म० १८०, पं० २११, र० २१३, ग्या० २१६, ना० २२५, न० २४५, अ० २७४ [तथा २७५], प्र० ३.६९, स० ३.७१ है।

[११३]

सांभलउ जोगी[१] कहइ नरनाथ[२]।
कोमल[३] पदम छइ[४] धण केरइ हाथ।

पं० र० ग्या० ना० न० .६ है: उण रइ (धण कइ-ग्या०) सोवन चूडली (चूडिलौ—ग्या०) झलकइ (झलकै छै—ग्या०) हाथि
.७ है : चूड़ि कहूं कइ (किना—ग्या०) चूडिलउ।
.८ : थे तउ (थे-ग्या०) चीरी देज्यो धण कइ हाथि।
अ० २७५ की पंक्तियाँ इस प्रकार है :
(.१) राउ कहइ सुणउ गोरखनाथ।
(.२) रतन कचोलो छइ मूध कै हाथ।
(.३) ख्याल घणउ गोरी मोरीयां
(.४) स्वीकृत .४।
(.५) मीठो थोडी गोरी बोलिहै।
(.६) म्हांकुं चित्त न० वीसरइ जी नवलह नेह।
(.७) पं० र० ग्या० ना० न० .६।
(.८) साथ सखी तणै नित रहइ साथ।
(.९) सहस त्रीया माहि जाणियै।
(.१०) पं० र० ग्या० ना० न० .८।
स० .३ है : हिव होसी काचकी कामली।
,, .४ ,, : रीस भूलउ रे प्रभु उणीहार।
,, .५ ,, : जोगी गोरडी इणि उणीहार।
प्र० में इनके अतिरिक्त .३ तथा पं० र० ग्या० ना० न० .६ भी है।
१. न० जोगी कहइ, पं० भलि जोगी, र० ना० न० सांभलि जोगी, अ० सभलउ

मूंगफली जिसी[6] आंगुली।
उणरा[7] कठन पयउहर[8] काजली रेह[9]।
बोलती बोल[10] छइ[11] आकुली[12]।
दांत[13] दाडिम[14] धण[15] चीता कय लंकि[16] ।।भु०।।

[114]

उणरा अहर धड़ूकइ[1] लहलहइ बांह[2]।
कइ लेष मोकलइ[3] कइ मिलइ नाह[4]।
अंग फड़ूकइ तन लवइ[5]।

जोगना। २. म० एक गोरखनाथ, प्र० स० सुणि (कि—प्र० त्रीभुवण नाथ। ३(+४). म० क़मल पदमासण, पं० र० ग्या० ना० न० रतन कचोलउ, प्र० स० पदम कमल छै। ५. म० दूध का हाथ, पं० र० अ० ना० स० धण कइ हाथि। ६. ग्या० ना० सी। ७. प र०-ना० एतउ, अ० [में नहीं है]। ८. र० कठिन पयउहर, म० अ० अहर प्रवालीय। ९. पं० र० काजली रेषि, अ० बदन मयंक, म० काजल रेह। १०. ग्या० बोलती बोलै। ११(+१२). ग्या० छै कालरी, न० ठइलरी, ना० छै काजली, प्र० आकुली। १३(+१४). म० ससि बदनी। १५. अ० अनइ। १६. अ० चीत्र कइ।

[११४] यह छंद प० २१७, र० २१६, ग्या० २२२, ना० २३१, अ० २७६, प्र० ३.७७, स०३.७८ है।

प्र० स० .१ है : आज सषी म्हारो फरकै अंग।

प्र० स० मे .२ नही है।

प्र० स० .५ है : हेत (चित-प्र०) जणायो हे सषी।

अ० .५ है : गात्र गोरी तण-ऊलसइ।

१ पं० ना० उण अहिर फड़ूकइ, ग्या० अ० [ह] र फड़ूकइ, अ० गोरी का अहर फरूकइ नइ। २ ना० नहकै वांह। ३. पं० र० ना० कइ लिखे मोकलइ, अ०

उणि रइ कडिया चीर[6] पुणि ना रहइ ठाइ[7]।
मो मन अधिक उमाहियउ।
जाणउ आज मिलेस्यइ[8] सही सइंभरि राइ[9] ।।भु०।।

[११५]

जोगिनउ[1] जाइ नइ वइठउ जी[3] प्रोलि।
भसम[4] सरोरि नइ[5] विभूति की[6] चौलि।

चोरी आवइ काइ। ४. पं० र० ना० कइ मिलइ आप। ५. पं० र० ना० अहर फड़ूकइ तन लवइ, ग्या० अरह फड़ूकइ तन तपइ, न० अ० अहर फरूकइ तउ प्री मिलइ प्र० अंग फड़ूकइ मन हंसइ, सं अंग फड़ूकइ चित हसै। ६. पं० उणिरइ करीया चारी, ना० उणिरा कडिकौ पणि अ० चीर पिसइ सवि, प्र० स० केहडच्चा को (रो-स०) चीर, ग्या० कडि चीर। ७. अ० नवि रहइ ठाइ, प्र० स० खीसे खीसो (खसखस-प्र०) जाय। ८. र० ना० जाणो आज मिलै, प्र० स० सकै तो मिलै मोहि तुझ मिलसी-स०)। ६. ग्या० सपी संभरिवाल, अ० सही धण केरो नाह, प्र० स० सीभर्यो राइ।

[११५] यह छंद म० १८३, पं० २१६, र० २२१, ग्या० २२४ ना० २३३, न० २५३, अ० २८१.१+२८३/२ (२८१.१, .२, .३, तथा २८३ .४, .५, .६,) प्र० स० में किंचित् भिन्न पाठ के साथ प्र० ३.७४+प्र० ३.७५, स० ३.७६/१ + स० ३.७७/२ है।

अ० २८१ की शेष ४ है : पाट मा दे राणी लियउ रे बोलाइ।
(तुलना० स्वीकृत १०६.२ तथा म० १८२.४)
,, .५ ,, : वीसल दे की रे भूजडी। (तुलना० म० १८२.५)
,, .६ ,, : राजमती कुंजाइ बधाइ। (तुलना० म० १८२-६)
अ० २८३ की शेष .१ है : बात सुणाइ बांदी वइसि विचारि।
.२ ,, : हरपि धणइ रे भीतर गइ।
.३ ,, : राणी नइ दासी कीधर संभाल।

आक धतूरा सिरि[7] घणा[8]।
हिव[9] राणी नइ बंदिडी[10] ढोलती[11] वाइ[12]।
साधण मोतीय प्रोवती।
बात सुणी[13] मोतीय दीय उछालि[14] ।।भु०।।

स० ३.७६ है : जोगी बइठो पउलइ जाइ। (तुलना० स्वीकृत .१)
बभूत सरीसी षोलि कराइ। (,, .२)
आक धतूरा सिर (विस—स०) धणा। (,, .३)
बोलइ बोलतो वचन सुठाल (सुठोल-प्र०)।
राय लेष (लीष्यो—स०) ले आवीया।
वेगी बधावइ चंपा की माल।।

म० ३.७७ है : राय आंगण जोगी पोहतो जाइ।
जाइ प्रधान सूणाव्यो (सुणावइ—प्र०) माही।
सघलो रावल हलहलै (कलमलै - प्र०)।
सा धन पोवती मोती की माल (माहि थाल-प्र०)।
(तुलना० स्वीकृत .५)
बांदी (दासी—स०) जाइ सूणाबीयो।
(तुलना० स्वीकृत .४)
तब धन उठो मोतीय रालि। (तुलना० स्वीकृत .६)

१. पं० तब जोगिनइ, र० ना० त० तब जोगिनो। २(+३). म० आइ पहूतलउ, पं० न० बइठउ जाइ नइ, र० जाइ अरू बैठो, ना० गयौ जाइ, अ० जाइ बइठउ जी। ४(+५). म० बिष समी घटि, र० न० भसम सरीरि, ना० भसम सरीर कौ ग्या० सीस तिलक, अ० अंग कीन्ही छइ। ६. म० वेदन की। ७. पं० र० ना० न० अति, स० विस। ८. स० धणवै। ९. पं० र० ग्या० तठइ, ना० अ० [में नहीं है]। १०. पं० र० ग्या० ना० न० दासी। ११. ग्या० ढोलइ छइ। १२. म० वाय। १३. पं०

[११६]

चीरी मेल्ही[१] धण[२] आपणइ[३] हाथि।
सात[४] सहेलीय[५] चालीस छइ[६] साथि[७]।
जाइ[८] वइठी सबे चउषंडी[९]।
पहिलीय[१०] वाचइ[११] मणकइ[१२] उल्हासि[१३]।
सा धण आंषिकउ[१४] सोर जिउ[१५]।
जाणि करि[१६] वइठी छइ[१७] प्रीयंतणै[१८] पासि[१९] ।।भु०।।

उण ततपिण, र० ना० उठी ततपिणि, ग्या० ततषिण, न० ऊठती, अ० वात सुणता १४. न० छल्या ठाइऊं, अ० दियउ रे उलाल।

[११६] यह छंद म० १८८, पं० २२३, र० २२५, ग्ला० २२८, ना० २३७, न० २५८, अ० २८७, प्र० ३.७६, स० ३.७९ है।

म० .३ है : चउवारा की गोरणी।

म० .४ है : चीरी वाची धण कूपली वोलि।

ना० .५ है : जाणि वाछड़ सुं रहस्य। (तुलना० स्वीकृत ११७.२)

अ० .५ है : सात सषी माहें गहगही।

१(+२). पं० ग्या० ना० न० अ० दीन्ही (दीधी—ना० न०) जोगी, र० दीन्ही राणी, म० करिवहिटी धण, प्र० झेली धण, स० मेहली धण। ३. पं० राणी कइ, र० जोगी कै, ग्या० ना० धण कइ; न० अ० धण केरे। ४(+५). पं० र० ग्या० ना० न० अ० सात सषी, प्र० स० पांच सहेली। ६. पं० र० ना० न० मिलि चालीय, ग्या० मिलि वइठी छइ, अ० मिलि वांची नी, प्र० लीधा, स० मिलि धण। ७. ग्या० आइ। ८. न० राजा। ९. ग्या० ना० न० अ० सखी वइठी चउषंडी प्र० स० करि वैठी चउपंडी। १०. पं० उतउ पहिलीय, अ० चीरी। ११. ग्या० अ० बांची। १२(+१३). र० ग्या० ना० न० अ० मनह उल्हास. प्र० ऊपली योलि, स० ऊपली आलि। १४. अ० आंपि, प्र० खेलत, स० पेलती। १५. क कउ सोर जइ, र० प्र०

[११७]

चीरी[१] रही[२] गोरी[३] गलइ लगाइ[४]।
जाणि करि[५] बाछडइ स्यु[६] मिली[७] गाइ।
नइणां थी[८] लोही पडइ[९]।
परिहसि रूनी[१०] भीनउ छइ[११] हार[१२]।

किसोर ज्युं, स० कसोर ज्युं। १६. पं० बात जाणित, र० उवा तो जाणि कि। १७. पं० बइठउ, र० ना० न० अ० स० बइठी, प्र० बैठी उवा कइ। १८. पं० पीयउ कइ, म० प्रीय तणी, प्र० पीउ की, स० प्रीव को। १९. पं० साषि, प्र० स० षोलि, ग्या० पालि।

[११७] यह छंद म० १८७, पं० २२४, र० २२६, ग्या० २२९, ना० २३८, न० २५९, अ० २८८, प्र० ३.७८, स० ३८० है।

म० .६ है : तिण बिन बउलीया बारह मास।

ना० .७ है : जिण बिध थे सात द्वइ।

,, .८ ,, : सात सहेली बैठी छै आय। (तुलना० स्वीकृत ९०.१)

न० में .२ नही है।

अ० मे यथा .६ म० .६ है, और स्वीकृत .६ यथा .७ है।

अ० .३ है : आषडीये आंसू नवि रहै।

स० .४ है : कब में भेटस्यां सांभर्‌या राव।

१. म० हिव चीरी, पं० र० न० चीठी। २. पं० र० ना० न० ग्या० राखी, अ० लीनी। ३. प्र० स० धण। ४. पं० ना० गल लाइ, र० गलिज लाइ, ग्या० अ० गलइ लगाइ, प्र० ही धायडलै लायं, स० हीयडउ लगाई। ५. पं० र० जाणि कि। ६(+७). पं० र० ग्या० बांछडइ मिलीय छइ, ना० बाछइ मेली, प्र० बांछरू हो डैली, स० बाछरू है मेल्ही। ८. अ० आंषडियाए। ९. पं० र० ग्या० ना० न० लोही चुवइ (चबइ—न०)—अ० आंसू नवि रहै, प्र० आंसू षरयां, स० आंसू खेरिया। १०.

जिण विण[१३] घडीय न जीवती[१४]।
हिवइ[१५] ताहि स्युं[१६] हुवा[१७] चीरी विवहार[१८] ।।भु०।।

[११८]

जोगी थां कौनु कहइ हो बात।
भइंसि कउ दहीय[१] नइ घी अरू भात[२]।

पं० र० ग्या० अ० उवातउ परिसि (परिसर—अ०) रूनी (डूनी-ग्या), ना० उवा परिहसि रूनी, न० उवातउ पारसिर रूनी, प्र० करै पर हूंसो। ११. प्र० भरा। १२. प्र० भंडार। १३. प्र० ज्या विण, स० जीवन, ना० जिण विध। १४. प्र० न० धारतां, स० ते नवि रहई। १५(+१६). ग्या० तिहस्यउं ना० नारसूं, न० जिण विधि, प्र० त्यासूं स० जीणसूं। १७. ग्या० हुउ, प्र० हूयो, स० हुवा। १८. प्र० कागला बिवहार, अ० बरसह बार, स० कागली बैहार।

[११८] यह छंद म० १८६, पं० २२६, र० २४८, ग्या० २३१, ना० २३१, न० २६०, अ० २८६, प्र० ३.७६ स० ३.८१ है। किंतु पं० ग्या० ना० न० अ० में .१ है:

उतउ (हिव—अ०, तू—ग्या०, ना० न० में यह शब्द नही है) भूषउ जोगिनउ नवि कहत बात।

र० में स्वीकृत .३ नहीं है।

र० .१ है : उणिनै दूध अरू ठाँढउ भात।

ना० में .३ और .५ परस्पर स्थानांतरित हैं, और .४ का पाठ है:

तौ नैउ नी दूध नै ठाढो भात (तुलना० स्वीकृत .२)

अ० .३ है : आगइ बइसि जिमाडिस्यां। (तुलना० नीचे म० .३)

अ० में स्वीकृत .२ तथा .४ परस्पर स्थानांतरित है।

प्र० स० का पाठ इस प्रकार है :

जोगी था कौनु कहइ हो बात। (तुलना० स्वीकृत .१)

दूध कटोरइ पाइसुं।
आछा चावल[3] घणीय निवात[4]।

दूध तलवट नै (दुधइन्निहावऊं) घणी निवात। (तुलना स्वीकृत .४)
भैस को दहीय नै सीलो (र गरड़ाकौ—स०) भात। (तुलना० स्वीकृत .२)
सूसतौ (सांसतो-प्र०) जीमे बीरा जोगिया। (तुलना० स्वीकृत .५)
पदमिणि अंगै (आगलि—स०) गालइ छइ वाइ।
आगलि बइसी जीमाडीयउ (जीमावीयउ - स०)।
(तुलना निम्नलिखित म० .३)
हसि हसि पूछइ प्रीउ की बात। (तुलना० स्वीकृत .६)
म० की पंक्तियाँ है:
(.१) हिव कुल्हडउ दूध नई सीयलउ भात।
(.२) बाषडउ दहीय नइ घणीय निवात।
(.३) आंगण बइसि जिमाडियउ।
(.४) तउ हसि हसि कहि म्हारा प्रीय तणी बात। (तुलना० स्वीकृत .६)

म० का यह छंद पं० २२७, र० २२६, ना० २४१, न० २६१, अ० २६० है, और इन प्रतियों में म० .२ के 'दहीय नइ' और 'घणीय निवात' के बीच की शब्दावली भी जो म० में छूटी हुई है निम्नलिखित प्रकार से आती है :-

थाणडउ दहीय नइ [ऊन्हउ जी भात।
मल्हि मल्हि आज परूसिस्यां।
उष्णिनइ दूध कटोरइ] घणीय निवात।

१. ना० भइसि नउ दहीय, प्र० भइसि रउ दहीय। २. र० नइ घी अरू भात, ग्या० घणउ रे छइ भात, पं० नइ घेउर भात, ना० घणा निवात (तुलना० स्वीकृत .४) अ० नै चावल भात। ३ अ० ऊन्हों हो दूध नइ। ४ ग्या० घणा रे निवात।

सुसतउ जीमे[५] वीरा जोगिया[६]।
हंसि हंसि कहउ[७] म्हारा प्रीय की वात[८] ।।भु०।।

[११६]

जोगी कहइ सुणि मोरी माइ[१]।
दिन तीजे[२] आवइ घरि[३] राइ[४]।
हमही[५] देहि वधामणी।
दीधा मोती[७] अरथ[८] भंडार।

५(+६). ना० न० सुसतउ जी में म्हारा जोगीया, अ० सुसतइ सुसतइ जी में जोगना। ७. पं० हिवइ हंसि हंसि कहउ, न० हिव हसि कहि, अ० अवि हसि कसि। ८. न० म्हाका पिउ की बात, प्र० म्हांका प्री तणी बात।

[११६] यह छंद म० १६१, पं० २२८, र० २३०, ग्या० २३२, ना० २४२, न० २६२, अ० २६१, प्र० ३.८०, स० ३.८२ है।

हिव ल्हावइ छइ अरथ नइ गरथ भंडार। (तुलना० स्वीकृत ११०.२)

ल्यावइ छइ तेजीय तरल तोषार। (तुलना० स्वीकृत ११०.४ का म० प्र० स० का पाठ)

ल्यावइ छइ हीरा पाथरी। (तुलना स्वीकृत ११०.३)

ल्यावइ छइ (नब गज—पं० र० ग्या० ना० न० अ) हरतीय कुंजर च्यार।

(तुलना० स्वीकृत ११०.१ का म० प्र० स० का पाठ)

कह्यउ हमारउ जइ जुणउ। (तुलना० स्वीकृत ११०.५)

तो नइ कंत मिलावस्यउं एतीय बार।

म० का पाठ पं० जैसा ही है अंतर यह है कि पं० .२ और .३ म० में परस्पर स्थानांतरित हैं, एक सातवी पंक्ति के रूप में अतिरिक्त है :

ल्यावइ छइ सोनउ सोलहउ (तुलना स्वीकृत ११०.३)

दीधा हीरा[९] पाथरी।
काल्हि[१०] आवइ[११] राजा[१२] एतीय बार[१३] ।।भु०।।

[१२०]

आज[१] सषी[२] तलहटी घुरइ निसांण[३]।
घरि आवियउ[४] बीसल[५] चहुआण।
घरि घरि रलिय[६] बधामणी।
घरि घरि तोरण मंगलच्यार।

---

१. स० माई, प्र० माय। २. स० तीसरई। ३(+४) स० घरी राय प्र० तोरो नाह ५(+६). स० हमरै देही, प्र० हमही देउ। ७: म० पं० ग्या० र० ना० न० अ० ल्यावइ छइ अरथ नइ। ८. म० पं० ग्या० र० ना० न० अ० गरथ। ९. म० पं० ग्या० र० ना० न० अ० ल्यावइ छइ हीरा। १०(+११). म० पं० र० ग्या० ना० न० अ० तो नइ। १२(+१३). म० प र० ग्या० ना० न० अ० कंत मिलावस्यउं।

[१२०] यह छंद म० १६२, पं० २३१, र० २३३, ग्या० २३५, ना० २४५, न० २६५, अ० २६५, प्र० ३.८४, स० ३.८६ है।

किन्तु म० प्र० स० का पाठ है :

(.१) हिव बारमइ (प्र० स० में यह शब्द नहीं है) बरस घरि आवीयउ राउ। (तुलना० स्वीकृत १२३.१)

(.२)बाजित्र बाजिया निसाणी घाउ। (तुलना० स्वीकृत २६.२)

(.३) घरि घरि गूड़ी (गढि माही—स०) ऊछली। (स्वीकृत .५)

(.४) घरि घरि तोरण मंगलच्यार। (स्वीकृत .४)

(.५) रानी कुंवरि (हरष बढ़ी—म०) हरषी (हरषइ—म०) फिरइ।

(.६) जउ (जीव—स०) घरि आवीयउ मुंध भरतार (धण को नाह—प्र० स०)। (तुलना० स्वीकृत १२२.१)

अ० में .३ तथा .५ परस्पर स्थानांतरित है।

घरि घरि गूडी ऊछलइ[७]।
अव[८] सषी[९] घरि आवियउ[१०] मुंध[११] भरतार[१२] ।।भु०।।

[१२१]

ऊलग पूगि घरि आवियउ[२] भरतार।
जाणि करि उतरी[३] समुंद कउ पार[४]।
कलंक न कोई सिर चढिउ[५]।
बाधतउ जोबन[६] विरह की झाल[७]।
लंछण को लागउ नही।
पगि पगि[८] सषीय न[९] झंषियउ आल[१०] ।।भु०।।

न० में .३ नहीं है।

१ (+२). न० आज। ३. ग्या० घुरया रे नीसाण, अ० घुरया नीसाण। ४. पं० घरि आयउ, अ० वार वरसे घरि आयउ, ग्या० सही आयउ। ५. अ० [में नहीं है]। ६. अ० रंगि। ७. र० ना० ऊछली। ८(+९). अ० अव देषि सखी। १०. ना० अ० आयउ, ग्या० आयउ घरि। ११(+१२). अ० मुंध अजमेरि।

[१२१] यह छंद पं० २४३, र० २४५, ना० २५७, न० २७६, अ० ३०७, प्र० ३.८६, स० ३.८८ है।

र० न० अ० .५ है : बारह बरस वेदन सही।

,, .६ ,, : आवियउ को नहीं मूंघ सिरि आल।

प्र० [illegible] .८ है : अण वलइ दव (वन-प्र०) परजलै।

(तुलना० स्वीकृत ७४.५)

१. अ० ओलग थी। २. पं० आवउ। ३. पं० र० ना० जाणि उत्तरी, प्र० जाणि कि उतरइ, स० जाणिक उलटइ। ४. अ० समुद्र के पार, स० समंद अथाह।

हिव घरि आवियउ[1] संइभरि वार[2]।
अरजन जिम[3] धण करइ सिंणगार[4]।
भमुह कोवंड चहोडिया[5]।

---

५. अ० कलंक न० लायउ रे कामिनी, प्र० अकल कलंक मोहि न० चढयो, सं० अकलंक क्रलंक मौ चढच्यौ। ६. प्र० स० सामुहो जोवन। ७. अ० बिरही की झाल, स० बीरह वीकराल। ८. पं० म्हा तउ पगि। ९(+१०). प्र० सषी गो मांडता आल, स० मो सषी मंडइ आल।

[१२२] यह छंद पं० २३२, र० २३४, ग्या० २३६, ना० २४६, न० २६६ अ० २६६, प्र० ३.६४/ ३.६५, स० ३.६६/३.६७ है।

प्र० ३.६४ तथा स० ३.६६ इस प्रकार है :

बारां बरसां मील्यो जब (धन-स०) नाह।

तुलना० स्वीकृत १२३.१)

अरजण ज्युं धण लीयो सनाह। (तुलना० स्वीकृत १२२,२)

कसतूरी मैवट (मरदन—स०) दीवलै गहिरी बाट।

साधण पान समारिया।

जाइ करि बैठी [धण—स०] प्रीउ की षाट।।

प्र० ३.६५ तथा स० ३.६७ इस प्रकार है :

अरजण ज्युं धण लीयो सनाह। (तुलना० स्वीकृत .२)

गलि पैहरयो (पैहरइ-स०) टंकावल (टंकाडिलो—स०) हार।

कंचुकी (कंचु—स०) कसण तब (ते—स०) खोलिया।

(तुलना० स्वीकृत १२२.४)

कूंकू चंदन तिलक (सिरह—स०) स्यंदूर। (तुलना० स्वीकृत १७.४)

कर जोड़ी (जोड़े—स०) नरपति कहइ (नाल्हो कवि—प्र०)

नव कुच कंचू[६] मेहिल्या षंचि[७]।
कन पियारइ[८] कारणइ।
तिण कारणि[६] धण मेल्हिया संचि[१०] ।।भु०।।

[१२३]

बारां बरसां धण मिलियो नाह[२]।
हियडलइ हाथ[३] गला माहे बांह[४]।
अवली सवली चूंबणी[५]।
अति रंग थी राजा लीयउ टीप[७]।
सही सहेली माहि लाजसुं[८]
म्हाकउ भइरव कंचूयउ[६] भीनड छइ पीक[१०] ।।भु०।।

कामनी कंत सुरंग रमि (रमइ रस—स०) पूर।।

१. पं० तब घरि आवीयउ. ना० अब घरि आवीयउ, अ० जव घरि आवीयउ। २. र० सैं भरतार, पं० मुधि भरतार, ग्या० ना० न० अ० मूंध भरतार। ३. र० अरजन, ग्या० आरचीनर जिम। ४. पं० विण करइ सिणगार। ५. पं० भुमह कोवंड चहोडिया, ना० भुंह कोवंड चहोडीया, ना० भुमण कोवंक चहोड़िया, अ० भमुंह कोदंड चडावियउ। ६. अ० नव कुच कंचूयउ। ७. अ० मेल्हियउ षंचि, षं० मेल्हा षंचि। ८. अ० प्यारा केरइ। ६. अ० अहर कंचू, ना० [में नही है], ग्या० विण कारणि। १०. ग्या० धण मेल्हीय सिचि, अ० धण मेल्हिया खंचि।

[१२३] यह छंद पं० २३६, र० २१८, ग्या० २४०, ना० २५०, न० २७०, अ० ३००, प्र० ३.६६, स० ३.६८ है।

१. स० बारमइ बरस। २. पं० ग्या० घरि आवयउ राउ, र० ना० घरि आवीयो नाह, प्र० मिलीयो नाह। ३. अ० हीयडइ। ४. ना० अ० अंक भरि बांह, र० षवा, मांहि बांह। ना० अ० अवली सवली करइ चूंवणी, प्र० स० अवली सवली चूंडली। ६. ना० अति रति भरि राजा जी, प्र० स० अति रंग स्वामी।। ७. ग्या० लीयउ

[१२४]

मुलकइ[१] हसइ[२] आलिंगन देइ[३]।
पलिंग[४] न बइसइ अनइ[५] पान न लेइ।
ऊभीय देइ[६] उलंभडा[७]।
आंगुली[८] तोडइ छइ[९] मोडइ छइ[१०] बांह।
नाह भरोसउ[११] न करुं[१२]।
तइं तउ[१३] बार[१४] बरिस किउं मेल्हीय[१५] नाह।।भु०।।

चीपि, अ० ल्यै छै पीक, प्र० भर्यौ छै पीक, स० भरिजे है पीक (तुलना ६)। ८. पं० ना० सखी सहेली चमकउ हूबउ, र० सहे सहेली चमको, ग्या० सषी सहेली चमकउ हीयउ, अ० सही सहेली चमकउ भयउ। ९. पाकइ भइख कउ कंचू, प्र० म्हारी भैरव चोली, स० अति रंग स्वामी (तुलना० .४)। १० ग्या० भीनउ छै फीकि ना० चोली नो छै पी, अ० भीजउ छै पीक, प्र० काई भरी पीक, स० भरिजै छै पीक (तुलना .४)।

[१२४] यह छंद म० १६४, पं० २३७, र० २३९, ग्या० २५१, ना० २५१, न० २७१, अ० ३०१, प्र० ३.६२. स० ३.६४ है।

म० .६ है : मोनइ ऊभडी मेल्हि तूं उलग जाइ।

१(+२). म० हसइ मलूकइ, पं० र० हडि हडि हसइ, ना० हठ हठ हेसे, न० हड हड हसि, अ० हसि हसि राइ, प्र० स० रूठी गोरी। ३. र० आलिंग देह, प्र० अंग न० लाय, म० पं० आलिगण देइ, स० अल्यंग नू लेहि। ४(+५). म० पलिग न आवइ अनइ, प्र० स० पल्यंग बइसइ नवि। ६. पं० र० ऊभी दे, स० ऊभी दइ छई। ७. स० औलंभा। ८ (+९). म० आंगूली मरोडइ, प्र० आंगुली गहिता, स० करि लागइ अरि। १०. म० धण झालीय, अ० मरोड्इ छइ, प्र० मुरडइ, स० कोड पूछइ। ११. पं० र० ना० न० अ० पुरषां भरोसउ, प्र० कंत भरूंसो, स० कंत भरोसो। १२. म० को नहीं, पं० ना० करं, र० न० करो, न० मग करइ, अ० नत करउ, स० कांइ करौ। १३. स० तइ तउ। १४. पं० नारह। १५. पं० की मेल्ही हो, प्र० किम रहीजै, स० किम रहज्यो।

[१२५]

ठसकला[१] मुसकला[२] मोनइ[३] न सुहाइ।
धण कइ[४] हियडलइ[५] हाथ म लाइ।
लाज नही[६] प्रीय[७] निरममा[८]।
म्हाकउ वारयउ[९] तूं किउं[१०] ऊलगइं जाइ।

---

[१२५] यह छंद म० १६५, पं० २३८, र० २४०, न० २७२/१, अ० ३०२, प्र० २.४०, स० २.४३ है।

म० में .५, .६ नहीं हैं।

प्र० स० में स्वीकृत .४ यथा .६ है, और .४, .५ हैं :

(.४) निगुणी राजा भारौ किसी बेसास। (तुलना० स्वीकृत ४५.२)

(.५) कर की बांधू हूं दिन गिणूं।

एक अन्य छंद म० ७०, न० १०६, अ० ११२ प्रायः इसी शब्दावली का अन्यत्र भी है :

ठसकला मसकला मो न सुहाइ।
म्हारइ हीयडलइ हाथ मलाई।
म्हानइ मेल्हीय तुम्ह चालिस्यइ।
दुष तणउ गुझको नहीं छेह।
देह सूकी नइ पिंजर हुई।
तुझ विण रात रोवतां जाइ।।
घडीय बरस मुझ होइस्यइ।
निठुर नाह अम्ह मूकि कीइ जाइ।।भु०।।

१(+२), अ० सामी ठसकला मसकला, प्र० स० चटकला मटकला। ३. पं० र० अ० प्र० मो, स० मोही। ४(+५). म० कठिन [प] योहर (तुलना० स्वीकृत १२६.३), अ० म्हाकै रे हीयडलै, प्र० धण कि हययै, स० धन कइ हीयडउ।

बालउ रे वैस[11] न देषही[12]।
हिवइ[13] निगुणा नाह[14] मोहि किसइ[15] मेलाहि[16]।।भु०।।

[१२६]

ऊलग जाइ तइं किसउ कियउ[1] नाह।
मोडि उसीसउ[2] नइ सूतउ[3] बांह।
कठिन पयोहर नू मिल्या।
केली गरभ सा नू मिल्या गात।
जांघ जोडावउ[4] नू निरषिया[5]।

---

६. म० लाज नही। ७(+८). अ० तोइ निरममा, प्र० प्रीउ नैमरमां स० प्रीय स्त्री मरम मां। ९. म० हूं वरजूं, पं० म्हारा हो वारउ, र० म्हारो वार्यउ, अ० म्हांको वरज्यौ, प्र० रोवती मेल्हि, स० मेल्ही। १०. न० अ० तूं, प्र० स० काई। ११. र० बालउ वीस, अ० बालीक, वेस। १२. र० न० देषडी, अ० न० पेषियउ। १३. अ० [में नहीं है]। १४. अ० निगुण हो नाह। १५(+१६). अ० मुहि मोहि भलाइ।

[१२६] यह छंद म० १६८, पं० २४०, र० २४२, न०, २७३, अ० ३०४, प्र० ३.६८, स० ३.१०० है।

म० में ३,.४ नहीं है।

पं० र० न० अ० .४ है : अंगसुं (तइनउ अंग सुं०—पं०न०) अग न०

पं० र० न० अ० .४ है : भीडियउ राउ (भी ड्यो नहीं मेलि—अ०)।

पं० .५ न० : जंघ जुगल मोड्या नही (जंघ न० जोडी दे जंघ सुं०—अ०)

पं० .७ र० : अमृत अधर नहु घूटिया।

प्र० में .३ के 'नूं मिल्या' के अन्तर .४ के 'नूं मिल्या' तक की शब्दावली छूट गई है।

१. पं० र० न० तइं/तउ किसउ क्यिउ नाह, अ० प्र० तइं की कीयउ नाह, स० काई कीयो नाह। २. पं० न० मोडि उसीस, र० मोड्यौ सीसै, अ० भीड

रंग भरि[6] रयणि न[7] षेलियउ[8] षेल[9]।
देव सतायो[10] तूं फिर[11] आउ[12]।
स्वामी[13] घी विणजियउ[14] नइ[15] जीमियउ तेल[16] ।।धु०।।

[१२७]

झूना कउ[1] उलपट[2] झूना कउ[3] ताव[4]।
ठमकि ठमकि[5] धण मेल्हतीय[6] पाइ[7]।
मंदिर चाली प्रीउ कइ[8]।

करि गात्र, स० प्र० मोडी उसीसो। ३. पं० र० न० न० दीन्हीय, स० नू सूतो। ४. म० जागतउ उलग। ५. प्र० न निरष्यो नाह, स० नू नीरखीयौ।

६(+७). पं० र० राउ जी (राजा—र०) सेज बिछाइ, म० निसि अंध्यारी, न० राजा से लग छाइ, अ० सेजि बिछावन, स० रंग भरि रयणि। ८. म० नइ खेलइ छइ, अ० खेलिया, स० नू भार्डायो। ९. पं० र० अ० खेलि। १०. म० देस सरष, प्र० राजा जी। ११(+१२). प्र० देव संतापीयो, स० राजा तुं० फिरई। १३. पं० र० तइ तउ, न० ते तउ, प्र० स० [में नहीं है]। १४. अ० घी विणजी, प्र० पी वसायो, स० घीव वीसाही। १५. पं० र० न० अ० अरु, स० तुं। १६. स० जीमो छइ तेल, प्र० जीमो तेल।

[१२७] यह छंद म० १९९, पं० २३४. र० २३६, ग्या० २३८. चा० २४८, न० २६६, अ० २६७, स० ४.४०/ है।

ग्या० .५ है : सेज पहूतीय सुन्दरी।

स० .३ है : आवी अवासई साचरी। (तुलना० स्वीकृत ८३.३)

स० .४ है : थीएडइ हरीप मन रंग अपार।

स० .५ है : धन दीहाडउ आज कउ।

स० .६ है : कुंवर जगायउ छइ बीसल राउ।

१. पं० र० ना० ग्या० छींट कउ, न० अ० सावटू, स० चौथा को। २. पं० र० ना० उलवट, न० अ० चरण हो, स० लैहंगो। ३ ना० झीमा को। ४. पं० र० ना० ग्या० अ० ना० चाउ, म० तार। ५. पं० ठमकती ठमकती, म०

सूकड चंदन[६] भरीय कचोल[१०]।
संजत करि सेजइ चडी११।
तठइ[१२] सुगुणी[१३] सरिसी[१४] करइ किलोल।।ध्रु०।।

[१२८]

कनक काया[१] जिसी[२] कूंकूं रोल[३]।
कठिन पयोहर हेम[४] कचोल।
केलि गरभ जिसी कूंवली५।
घायल जिउं धण[३] षंचइ अंग[७]।
मोडि कडि चालइ गोरडी।
उण की[८] विरह वेदन[६] नवि जाणइ[१०] कोइ।

ठमि ठमि। ६(+७). पं० ना० मेल्हइ छइ पाउ, र० ग्या० मेल्हइ पाउ, म० मेल्हउ पाय, अ० मेल्ही जी पाउ, स० छइ पाव। ८. ग्या० प्रीउ कन्हइ।

९, पं० र० ना० न० अ० चोवा चंदन। १०. पं० भरउ, र० भर्‌यो कचोल। ११. म० चढ़ी। १२. ना० न० अ० ग्या० [में नहीं है]। १३. ग्या० सुगणा। १४. पं० र० ना० न० अ० ग्या० स्वामी सुं० (सामि सुं—न०)।

[१२८] यह छंद म० २०२, पं० २४६, र० २४८, न० २७८, अ० ३१०, प्र० ३.९९, स० ३.१०१ है।

म० में स्वीकृत .४, .५, .६ नही हैं। इनके स्थान पर केवल निम्नलिखित पंक्ति है :—

तारउ उलग घर पचइ नइ कटिवाल।

प्र० स० में .५ के स्थान पर है : कडि (कां—प्र०) चालउ गोरी करइ। १. अ० कनक काजि। अ० सउं, स० घट। ३. म० कुंकुं की रोल, र० कूंको रोल, अ० कुंकुम रोल, प्र० स० कूंकूं लोल। ४. पं० रतन। ५. पं० र० सी कूंवली, म० जिसी आंगुली, प्र० जिसी कूंयली। ६. पं० धलइ धण जउ, न० गोलइ जिम। ७. पं०

१

हे गौरीनंदन! हे त्रिभुवन-सार! नाद-भेद तुम्हारे उदर-भंडार में [रहता] है। [तुम्हारे] मुख में एक दाँत झलकता है। [तुम्हारा] वाहन चूहे का है, और [तुम्हारा] तिलक सिंदूर का है। हाथ जोड़ कर नरपति [कवि] कहता है कि [वह तिलक ऐसा लगता है] जानो रोहिणी नक्षत्र में सूर्य तप रहा हो।

[तुम्हारी कृपा से] मै सूर्य के तले स्थित भुवनों को देख रहा हूँ।

मूंसा<मूषक=चूहा।

२

दूसरा कडवक (छंद), हे गणपति! गा कर मै [तुमको] नमस्कार करता और तुम्हारे पैरों लगता हूँ। तुम से, हे लंबोदर! मै विनय करता हूँ। सिद्धि और बुद्धि के तुम भांडार हो। [गणेश-] चतुर्थी को मै तुम्हारा धारण करता हूँ। तुम [मेरा] भूला हुआ अक्षर स्थान पर ला देना।

कडवइ < कडवक=छन्द।

३

हंसगामिनी और मृगलोचनी नारी [अपने] सिर को सँवारती और दिन गिनती है। उस क्षण वह राजद्वार पर खड़ी हुई और चारों ओर [अपने] नाथ को देखती है। [हे विधाता!] तूने राजसेवक की स्त्री का सृजन क्यों किया? उसका सारा दिन [पति की] चिन्ता करते हुए जाता है।

लोयण<लोचन। नाह<नाथ। उलगाणा<अवलग्न=सेवक, राज-सेवक। दीह<दिवस। झूर<जूवल्=सूखना, क्षीण होना, चिंता करना।

४

हे हंसवाहिनी सरस्वती देवी ! तू करों में वीणा धारण करती है। जूठा—अन्य की रचना पर आधारित—कवित्त कुलहीन [कवि] ही कहता है। हे शारदा माता! तू मुझे वर दे। मेरे भूले [-भटके] अक्षरों को तू लौटा ला। तेरे तुष्ट (प्रसन्न) होने पर अक्षर जुड़ जाते (मिल जाते) हैं। नाल्ह [कवि] यह अपने दोनों हाथ जोड़ कर कह रहा है।

तुठी<तुष्ठ=प्रसन्न। वषाण<वक्खण<व्याख्यानम्=कहना, वे<द्वय=दो।

५

नाल्ह [कवि] रस भर कर रसायण (रसमयी वार्ता) का गान कर रहा है। त्रिभुवन-माता शारदा [उससे] तुष्ट है। मैं [एक] राजसेवक के गुणों का वर्णन कर रहा हूँ। गुणी और सुमानस जन ! तुम [इस] रास को सीखना। नारी स्त्री-चरित्र लाख प्राप्त कर ले, [किन्तु] एक ही आखर (वचन) से उस समस्त का विनाश हो जाता है।

माइ<मातृ। माणस<मानस=अन्तःकरण। लह<लभ्=प्राप्त करना।

६

भोजराज का दीवान मिला (एकत्रित) है। बहुत से अगवान लोग बैठे हुए हैं, [जिनमें] चारों दिशाओं के राय (राजा) और राणा [भी] हैं। रानी जी विनय करती हैं, "हे नरेन्द्रराज [भोज] ! अपने [जीवन के] दिन रहते वर देख कर राजकुमारी का विवाह कर दीजिए।

अगवानि<अग्रायन[?]=आगे आकर मिलने वाले। विंद<वद्य[?]=वर।

७

"हे पंडित!" [किसी ने कहा,] "तुझे राजा बुला रहा है। हे पंडित! तू पत्रा (पञ्चाङ्ग) लेकर राजभवन में आ।" "हे मेरे ज्योतिषी !" [राजा ने कहा,] "तू मुझे—मेरी कन्या के लिए—अच्छा वर खोज दे। नागर, चतुर और सुजान [वर] लावे,

[जिसको देख कर] स्वर्ग में देवता मोहित हो जावे। वीर और विचक्षण बीसलदेव चौहान को [लावे]।

पंडिय<पंडित। रावल<राजकुल=राजभवन। जोसी<ज्योतिषी।

८

ब्राह्मण और भांट को राजा ने बुलाया। लग्न की सुपारी [उनके हाथ] उसने भेज दी [और कहा, "तुम अजमेर गढ़ को जाओ। [वहाँ] पीढ़े पर बिठा कर [बीसलदेव के] पैर पखारना और कहना कि कन्या राजा भोज की राजमती है, जिसके, हे राजा बीसलदेव ! [तुम] वर हो।"

बंभण<ब्राह्मण। पषाल<प्रक्षालय्=धोना।

९

"[वह] राजा अजमेर गढ़ मे निवास करता हैं। [वह] चौहानो के कुल मे [उसका] तिलक और श्रृंगार है। छत्तीसो कुलो के [राजपूत] उसकी सेवा करते है। मदमत हस्तियों पर पलॉन पड़ती है। उसके घर में एक लाख घोड़ो पर पाखर पड़ी रहती है। [ऐसे] बीसलदेव चौहान को वर के रूप मे लाओ।"

ऊलग<ओलग्ग<लग्=सेवा करना। पलान<पयाण=घोड़े-हाथियो की साज। पाखर<पक्खर=अश्व-कवच।

१०

[ब्राह्मण और भॉट ने जाकर बीसलदेव को लग्न की] सुपारी दी और राजा [बीसल देव] हर्षित हुआ। अधिक उत्साह से वह मन में आनदित हुआ। घर-घर गुड़ी (पताका) उछल (फहरा) रही है, कामिनियॉ मंगलाचार (मगल गीत) गा रही है। [घर-घर में चर्चा है कि] चौहानो के कुल का उद्धार हो गया, यदि घर मे परमार जाति की स्त्री आवेगी।

उछाह<उत्साह। जइ<यदि।

११

राजा वीसलदेव ने ब्राह्मण को प्रसन्न कर विदा किया*। [उसको] हाँसला (कंठ का एक आभूषण), ताजी घोड़ा, कुलाह (टोप) और कवा (लंबा अँगरखा) दिया। सोलह कलाओं का (खरा) सोना—अथवा खरे सोने की मुद्राएँ—रेशन, रेशमी वस्त्र और पक्का पान दिए। हाथ जोड़ कर राजा कहता है, "अगले (उस अन्य) राजा के सम्मुख, [मेरी] ममता रखना (निवेदन करना)।"

साह<साधय्=प्रसन्न करना। माम<ममत्व।

१२

मिलनी (वैवाहिक रीति विशेष) हुई, और तब राजा हर्षित हुआ। सूर्य [अपने] मंडल में छिप रहा। कौतुक [देखने] के लिए देवता आए हैं। स्वर्ग से देव-विमान आये है। अप्सराएँ—सुन्दरियाँ— [कुदृष्टि-निवारण के लिए] लवण उतार रही हैं। हे वीसलदेव चौहान ! तुम धन्य हो, धन्य हो।

लुक<लुक्क=छिपना। लूण<लवण। अपछरा<अप्सरा।

१३

[वीसलदेव ने] गणपति की पूजा की, और [उसकी] यान—सवारी—चल पड़ती है। चौरासी (मंडलाधिकारी) लोगों को दूना (विशेष) सम्मान मिला है। सात सहस्र नेजा (भाला) के धनी—भलइत—हैं। पालकी में पचास सहस्र [बाराती] बैठे हुए हैं। हाथी सात सौ सुसज्जित किये गये हैं। पैदल की पंक्ति का अंत नही है। सेना ने

*तुलना० 'पद्मावत' ४१६.३,८.:

समदन दीन्ह पान ऐ वीरा। भरिकै रतन पदारथ हीरा।

भेंटि घाट समदन कै फिरे नाइ कै माथ।

छिताई वार्ता (ना० प्र० सभा संस्करण) छंद १६४: समदे आप आपने देस।

चढ़ाई कर दी (बारात चल पडी), ध्वजाएँ फहरीं और [ऐसा प्रतीत हुआ] जानो बीसलदेव प्रत्यक्ष देवता हो।

जांन<यान=सवारी। सिणगार<शृंगार। पालीय<पाली=पंक्ति। परदल<पद-दल। छेह<छेक=अंत। परतिष्य<प्रत्यक्ष।

१४

बीसलदेव ने बाघेरा (स्थान विशेष) को छोड़ा। ब्राह्मण वेद-पुराण का उच्चारण कर रहे हैं। कामिनियाँ मंगल [गीत] गा रही है। पंचवाद्यों की रुनझुन हो रही। [बीसल देव ने] मेघाडंबर—एक रेशमी वस्त्र का छत्र★—सिर पर धारण किया। [इस समय] सकल संसार स्ववश और सिद्धार्थ—कृतार्थ—है।

रायल<सकल

१५

[बीसलदेव ने] पैरों में कंकण (कलाई का सूत्र) और सिर पर मौर बाँधा। पाँचवीं मंजिल में वह चित्तौड़ दुर्ग [पहुँच] गया। [उसका] रेशम का लाल फुलड़ा है। बाजे बज रहे हैं और नगाड़े गर्जन कर रहे हैं। राजा विवाहने के लिए चला। खेहाडंबर—उड़ती हुई धूल के गुबार—ने भानु को आच्छादित कर लिया है।

मौर<मउल<मुकुट। फूंद<स्पंद, किंचिन्त हिलना। खेह=धूल।

१६

राजा [बीसलदेव] धार नगरी में उतरा। राजकुमारी [राजमती] मन में हर्षित हुई। [उसने कहा,] 'हे सखी ! जाकर [उनकी] आरती करो। वे कलाओं से संयुक्त

★'आईन-ए-अकबरी', [अनु० जैरेट, जि० १, पृ० १३६] में 'मेघाडंवर' महावत के ऊपर छाया करने के लिए लगाए जाने वाले छज्जे को बताया गया है, जिसको अबुल फज्ल ने अकबर का आविष्कार कहा है।

पूर्णिमा के पूर्ण चंद्र हैं। उन्होंने स्वर्ग के देवताओं और मनुष्यो को मोहित कर लिया है। वे गोकुल में प्रत्यक्ष गोविद जैसे हैं।"

गोवल<गोकुल। परतिष्या < प्रत्यक्ष।

१७

राजा वीसलदेव तोरण मे आया। [राजमती की] सात सखियों ने मिल कर कलश की वंदना की। मोतियों के अक्षत पड़े [फेंके जा रहे हैं। चोवा-चंदन (लगाया) और सिदूर का तिलक [किया जा रहा] है। दाहिने-बाएँ आरती हो रही है। वीसलदेव ऐसा प्रतीत हो रहा है] जानो तोरण में सूर्य उदित हुआ हो।

आषा<अक्षत। अवली-सवली<असव्य+सव्य=दाहिने-बाएँ।

१८

[राजमती की] सात सहेलियाँ आकर बैठी हुई हैं। राजा [भोज] मातृ-पूजा के लिए जा रहा है। सीपों में चंदन भर लिया गया है। कत्था, सुपारी और पक्का पान [ले लिया गया है]। वीसलदेव ने प्रेम-पूर्वक पाणिग्रहण किया है। [राजमती के साथ बैठे हुए बीसलदेव ऐसा लग रहा है] मानो रुक्मिणी के साथ कृष्ण बैठे हुए हों।

माइ<मातृ। हथलेवउ=पाणिग्रहण। रुषमणि<रुक्मिणी।

१६

मालवा देश मे उछाह (आनन्दोत्साह) हुआ। राजमती का विवाह रचा गया। मंडप चंदन के काष्ठ का था। चौरी सोने की थी, और मोतियों की मालाएँ थीं। पहले फेरे पर दायज में आलीसर (स्थान विशेष) और उसके अतिरिक्त माल (स्थान विशेष) दिए गए।

उछाह<उत्साह। मांडहउ<मंडप।

२०

राजा [बीसलदेव] दूसरा फेरा। [इस फेरे पर] राजकुमारी की माता भानुमती ने दामाद को दायज दिया है। उन्होंने अर्थ और समस्त भंडार दिया है, और दिया है सपादलक्ष देश, सॉभर सर के साथ नागरचाल (स्थान विशेष), विछाल, (स्थान विशेष) के साथ तोड़ा (स्थान विशेष) तथा टउंक (स्थान विशेष), और बूँदी (स्थान विशेष) के साथ कुडाल देश।

सवालखउ<सपादलक्ष।

२१

राजा [बीसलदेव] तीसरा फेरा फिरा। [राजा भोज ने] समस्त अंतःपुर [की रानियो] को बुला लिया, और राजमती के साथ दायज में [उन्होने] ताजी और केकांण। [घोड़े] दिए, मंडोवर का देश दिया, और समुद्र के साथ सोरठ और समस्त गुजरात को दिया।

सगल<सकल। अंतेउर<अंतःपुर। पलिंग<पर्यङ्क।

२२

[भोज के] हाथ मे तबालू और अंजली में नीर थे। [उनके] गले मे जनेऊ था, और चीर का उसका परिधान था। छत्तीसो कुलों के [राजपूत] देख रहे ते। रेशम का [विना हुआ] पलंग, और सावटू [वस्त्र विशेष] की चादर राजा [भोज] ने ढायज में दिए हैं. और बारह गढ़ के साथ उन्होंने चित्तौर का दुर्ग दिया है।

तंबालूय<त्रंबालुक। परिहण<परिधान। पलिग<पर्यङ्क।

२३

राजकुमारी [राजमती] पीढ़े पर बैठी हुई है। उसकी कटि मे रेशम की अच्छी चूनड़ी है। [उसके] कानों मे कुंडल जगमगा रहा है। सिर से [लगी हुई] राखड़ी है,

और ललाट पर तिलक है। [उसके] रूप को देख कर राजा [बीसलदेव] हँसा—प्रसन्न हुआ। परमार कन्या [राजमती] ने त्रिभुवन को मोहित कर लिया है।

पाट<पट्ट=फलक, पीढ़ा। पटोल<पट्ट दुकूल [?] रेशमी वस्त्र। सार=अच्छी। निलाड़<ललाट।

२४

[विदाई की तैयारी में] स्थान-स्थान पर घोड़े पलाने गए—अश्व-कवच से सुसज्जित किए गए और राजा [बीसलदेव] सास को जुहार [नमस्कार] करने के लिए चला। छत्तीसो कुलों के [राजपूत] मार्ग में [खड़े] हैं। माणिक्य और मोतियों से भरा [विदाई का] नारियल था। आशीर्वाद देते हुए सास ने [बीसलदेव] की वंदना की, "तुम अजमेर में अविचल राज्य करो।"

पलान<पर्याण=अश्व कवच। नालेर<नालिकेर।

२५

पहिरावनी [वस्त्राभूषणादि पहनाने की रस्म] हुई, और राजा [बीसलदेव] हर्षित हुआ। बाजे बज रहे हैं और नगाड़ों पर चोट पड़ रही है। दोवड़ और दुड़बड़ी बज रहे हैं। बरबू, भूंगल और भेरी भी बज रहे हैं। समस्त धार [नगरी] सुहावनी [बनी हुई] है। [अब] धार का दीपक [राजमती] अजमेर चला है।

वाजित्र<वाद्य=बाजा। घाउ<घात=आघात, चोट।

२६

राजा [बीसलदेव] के द्वार पर नगाड़े बजे, और मन में बीसलदेव चौहान हर्षित हुआ। [उसने अपने मन में कहा,] "मैंने राजा भोज की कन्या से विवाह किया है और [भोज की] राजकुमारी ने मेरा अंचल बाँधा है! आज का दिन धन्य है कि [मेरे] घर में परमार-कन्या आवेगी।"

बार<द्वार। दीह<दीवस।

२७

विवाह आदि करके राजा [बीसलदेव] घर आया। समस्त जन (प्रजा) में उत्साह (हर्ष) हुआ। राजा [बीसलदेव] ने प्रधान [अमात्य] से कहा, "या तो मुझ से सृष्टिकर्त्ता तुष्ट हुआ, या मैंने विधि का लिखा [अपने भाग्य का लेखा] पाया, तो यह मै राजा भोज की चौरी पर जा चढ़ा [राजा भोज की कन्या का पाणिग्रहण किया]"

तूठ<तुष्ट=प्रसन्न

२८

सॉभरवाल [बीसलदेव] ने [राजमती से] गर्वपूर्वक कहा, "मेरे समान दूसरा भूपाल नही है। मेरे घर (राज्य) में साँभर [नमक] निकलता है, चारों ओर जेसलमेर का थाना है, [एक] लाख घोड़ों पर पाखरें (अश्व कवचें) पड़ती है, और हे गोरी! अजमेरगढ़ में राज्य (शासन) के लिए [सिहासन पर] बैठना होता है (अजमेरगढ़ में राज्य करता हूँ)।"

भूआल<भूपाल। थांण<स्थान।

२९

"हे साँभरवाल (बीसलदेव)!" [राजमती ने कहा,] "गर्व न करो। तुम्हारे सदृश और बहुतेरे भूपाल है। एक [तो] उड़ीसा का स्वामी है। ये दो वचन मेरे चाहे मानो, चाहे न मानो। जिस प्रकार तुम्हारे [राज्य मे] सॉभरसर [नमक] निकालता है, उसी प्रकार उसके घर (राज्य) में हीरे की खाने [हीरा] निकालती है।"

सारिष<सदृश।

३०

"तेरा जन्म, हे गोरी!" [बीसलदेव ने कहा] जेसलमेर मे हुआ और विवाह करके तू अजमेर लाई गई; तू बारह वर्ष की छोकरी है; और, कहॉ उड़ीसा और जगन्नाथ [पुरी] है, मै अन्न छोड़ता हूँ, और पानी तजता हूँ। हे गोरी ! [नहीं तो] तू अपने जन्म की वार्ता कह।"

३१

"यदि तुम पूछते हो, तो हे धरा-नरेश, सुनो!" [राजमती ने कहा]। "हरिणी के वेश में मै वन खंड का सेवन करती थी, और एकादशी निर्जला [रहा] करती थी। [एक दिन] वन में एक अहेरी ने मेरे हृदय में दो वाण मारे और मेरा मरण जगन्नाथ जी के द्वार पर घटित हुआ।'

जइ<यदि। आहेड<आखेट। वि<द्वय=दो।

३२

"मरणावस्था में हरिणी (मैं) ने जगन्नाथ-जी का स्मरण किया। त्रिभुवन नाथ आ पहुँचे-जो शंख, चक्र और गदा के धारण करने वाले हैं, और [उन्होंने कहा] "हे हरिणी ! मन में विचार करके [वर] माँग।" हरिणी (मै) ने कहा, "हे त्रिभुवन-! यदि तुम तुष्ट हो, तो हे स्वामी! पूर्व देश में जन्म का निवारण करो (पुनः पूर्व देश में मुझे जन्म न दो)।"

समर<स्मृ=स्मरण करना।

३३

"पूर्व देश के लोग कुत्सा के (घृणित) होते है। पान-फूल का भोग [वे] नहीं पाते हैं। [चावल के] कण संचित करते है और तुष (भूसी) खाते हैं।* (जब कि) अति चतुरता ग्वालियर गढ़ में, (रूपवती) कामिनी जेसलमेर में और भले (सुन्दर) पुरुष अजमेर गढ़ में (होते हैं)।"

कुच्छ<कुत्सा। कुक्कस=तुप, भूसी।*

३४

"मैने [इसीलिए] हे स्वामी !" [राजमती ने कहा,] "जन्म मारवाड़ के देश में माँगाः और [माँगा] राजकुमारी [होना], और अशेष रूप [माँगा कि] रूप मेदिनी (पृथ्वी) में [मुझे] निरुपम [प्राप्त] हो; परिधान लोवड़ी (लोमपटी) का [सुलभ] हो और

* तुलना० ना कण कुक्कस साहिआ रव्वडिया मा दडव्वडउ। संदेश

मेरी कटि क्षीण (पतली) हो; मै अच्छी [सुन्दर], और वर्ण की और पतले शरीर की स्त्री होऊॅं; मेरे अधर प्रवाल के रंग के, दॉंत दाड़िम [जैसे] हों।"

परिहरण<परिदान। लोवडी<लोमपटी। झीण<क्षीण। धण<धन्या। अहर<अधर।

३५

राजा बीसलदेव चित्त में चमक (चौक) गया। स्त्री की वात उसके मन में बस गई। [उसने कहा,] "हे गोरी! तुमने मेरी विसराहना (निंदा) की। मुझे और तुझे बारह वर्ष की [एक-दूसरे से अलग रहने की] कानि (शपथ) है। ऊलग (सेवा) के मिस (बहाने) मै जाता हूॅं, जिससे हीरे की खान मेरे घर में [भी] आ जावे।"

चमक्किअ<चमत्कृत। ऊलग<ओलग्गा<अव+लग्=सेवा, चाकरी।

३६

"मैंने, हे राजा!" [राजमती ने कहा,] "तुम्हें विरस (रुष्ट) कर दिया, मैंने [यह] अपराध किया; [फिर भी] पग की पानही से रोष कैसा? कीड़ी के ऊपरी कटकी (सेना) कैसी। मैंने [तो] हँसी की, और तुमने उसको सच्चा करके जाना। [मुझे] खड़ी छोड़ कर तुम क्यों चले? हे स्वामी ! जल के बिना मछली कैसे जीवित रह सकती है?"

ऊभीय<ऊर्ध्वित=खड़ी। माछ<मत्स्य।

३७

"हे सॉंभरधनी [बीसलदेव]!" [राजमती ने कहा] "तुम क्यों ऊलग (चाकरी को) जा रहे हो। मेरे मार्ग के लिए तुम करह (ऊॅंट) भेज दो। मैं अपने पीहर जाऊँ, और अर्थ और द्रव्य-भंडार लाऊॅं, हीरा और [बहुमूल्य] पत्थर लाऊॅं, और मालवा के साथ धार को लाऊँ।"

उलग<ओलग्गा<अब+लग्=सेवा, चाकरी। करह<करभ=ऊँट। पीहर<पितृ गृह।

३८

"हे गोरी।" [बीसलदेव ने कहा,] "[तब तक,] मैं तुम्हारे वचनों की प्रतीति नही कर सकता, जब तक मैं अपने नयनों से न देख लूँ। मैं कल ही चाकर होकर जाता हूँ। मै ब्राह्मण को टेरता (बुलाता) हूँ कि वह आज ही दिन गिन [कर शोध] दे। मैं यह सपादलक्ष देश छोड़ता हूँ। हे! गोरी भतीजे को बुलाकर मै [उसे] राज्य सौंपता हूँ।"

काल्ह<कल्ल<कल्य=कल। ओलगाणउ<अवलग्न=सेवक, चाकर। सवालषउ<सपादलक्ष।

३९

"ऊलग (चाकरी) को जाने के लिए, हे स्वामी !" [राजमती ने कहा,] "कौन कहता है? [वह जिसके] घर में कुल्हड़ में नमक [तक नहीं होता, या [जिसके] घर में अकुलीन स्त्री कलह करती है, या जिसे ऋण से दबे हुए होने के कारण घर नही सुहाता (अच्छा लगता) या जो योगी होकर घर से निकल पड़ता है, या तो कोई [अपना सा] मुँह लेकर ऊलग (चाकरी) को जाता है।"

ऊलग<ओलग<अव=लग्=सेवा, चाकरी। लूण<लवण।

४०

"तुम ऊलग (चाकरी) को जाने की बात करते हो,' [राजमती ने कहा,] "तो मै भी अपने राजा के साथ आती हूँ। मैं [उसके साथ] बाँदी (सेविका) होकर निर्वाह करूँगी। मै [उसके] पाँव दबाऊँगी और [उसको] पंखा झलूँगी [जब वह सोवेगा] मै खड़ी-खड़ी [उसके] पहरे मे जागूँगी। और इस विधि से [मैं] अपने राजा (स्वामी) की सेवा करूँगी।"

ऊभीय<ऊर्ध्वित=खडी। पुहर<प्रहर। ऊलग<ओलग्ग<अव=लग्न्=सेवा, चाकरी।

४१

"हे पागल मुग्धे!" (राजा ने कहा,) "तुझे वाय लग गई है (बकझक सवार

हो गई है)। (भला) कोई स्त्री लेकर ऊलग (चाकरी) को जाता है? हे भोली नारी! तू वाचली है। चन्द्रमा को किस प्रकार कूड़े से (कूड़ा उछाल कर) ढाँका जा सकता है? रत्न छिपाने से किस प्रकार छिप सकता है? फिर, पूरबी राजा वचन का हीन (निर्वाह न करने वाला) है, [इसलिए स्त्री का साथ रहना और भी अनिष्टकारी हो सकता है]।

गहिली<ग्रस्ता [?]=आविष्ट, पागल, भ्रांतचित्त। कूड़<कूट।

४२

उलगाणा [चाकर] चला, किन्तु स्त्री उसे जाने नहीं दे रही है। [वह कहती है,] "या तो [मुझे] तू मार डाल, और या तो साथ ले चल" उसका अञ्चल पकड़ कर स्त्री इस प्रकार कह रही है, "दो दुःख, हे स्वामी? मुझे संध्या समय पीड़ा पहुँचाते हैं : [एक तो] यौवन [जो] मुझे मरोड़ कर मारता है, और [दूसरा संतानहीन होना, किन्तु] इसमें दोष ही कैसा, यदि नारी वन्ध्या (संतानहीन) है।

उलगाणा<अवलग्न=सेवक, चाकर। धण<धन्या। बाँझ<बंध्या।

४३

"हे गोरी !" [राजा ने कहा,] "तू मुझे छोड़ दे और मुझे तू जाने दे। यदि मैं बरस-दिन रहूँ, तो मुझे तेरी शपथ है। तू ने अपने कठिन पयोधरों (हृदय) पर दिव्य (अग्नि)* रख लिया है। हे गोरी ! तू हँस कर अपने विचार कह। यह दिव्य (अग्नि) तूने आकर कर रक्खा—बढ़ा रखा है। इस दिव्य (अग्नि) में सुर-नर सभी [जल कर] क्षार हो चुके है।"

दिव<दिव्य। आकर<अग्र। छार<क्षार।

४४

"हे स्वामी!" [राजमती ने कहा,] "मैने तुम्हारी आशा छोड़ दी है। मैं अब योगिनी होकर वन-वास करूँगी, या तो वाराणसी (काशी) में तप करूँगी, या तो

---

*सतीत्व अथवा सत्य का परीक्षा पहले जलती हुई आग, तप्त तैल, तप्त लौह आदि के द्वारा दी जाती थी। इस पदार्थ को दिव्य कहते थे।

केदार पर्वत पर चढ़ूँगी, या तो हिमालय में [जाकर] गल जाऊँगी, और या तो गंग-द्वार (गंगा जहाँ से निकलती हैं) में कुदान दूँगी (कूद पड़ूँगी)।

झंफ<झम्प=कुदान। दुवार<द्वार।

४५

"हे स्वामी !" [राजमती ने कहा,] "मैंने तुम्हारी आशा छोड़ दी है। तुम [हृदय के] मलिन हो; तुम्हारा विश्वास कैसा? तुमने स्त्री को बाँदी [चेरी] करके [भी] नही गिना। सगों और स्नेहियों में तुमने मेरा ममत्व (सम्मान) लुप्त (समाप्त) कर दिया है। [मेरे ऐसे] जीवित से मृतक बड़ा (अच्छा) है, [इसलिए] हे धनी (स्वामी)! [मेरे जी में यह आता है कि मैं प्राण त्याग कर] तुम्हारा फंदा जला दूँ।"

वेसास<विश्वास। सुणीजा<सु+निज=आत्मीय। माम<ममत्व।

भावज मर्यादा छोड़ कर कह रही है; उसने अंचल पकड़ कर [वीसलदेव को] ला बिठाया है। वह खड़ी-खड़ी उसको उलाहना दे रही है, "या तो स्त्री [राजमती] तेरे हृदय में समा नहीं [स्थान नही पा] रही है; या वह स्त्री जिह्वा की तेज है; [आखिर] किस दुःख से हे देवर! तू ऊलग (चाकरी) को जा रहा है?"

उलंभडा<उपालम्भ=उलाहना। ऊलग<अव+लग्=सेवा, चाकरी।

४७

खड़ी-खड़ी भावज [वीसलदेव] को सिखावन दे रही है, "रत्न के कटोरे को तू कैसे भीख में दिए डाल रहा है?* उसे तू पैरों से क्यों ठेल (ठुकरा) रहा है? ऐसी स्त्री राजाओं की नारियों में नहीं होती; ऐसी तो देवालयों में मूर्त्तियों भी नही पाई जाती। यह स्त्री हरिण के [से] नेत्रो और मधुर वचनों वाली है। यह तो दैव की बनाई हुई और विधि की गढ़ी हुई है। मैने तो ऐसी स्त्री सूर्य के नीचे (संसार भर में) नही देखी है।"

*तुलना० घालि कसौटी दीजिए कनक कचोरी भीख। पदमावत, छन्द २६६।

ऊभडी<ऊर्ध्वित=खड़ी। कचोल<कच्चोल=कटोरा। करल<करलि=हरिण की एक जाति। निपाई<णिप्फाइय<निष्पादित। विहि<विधि।

४८

स्त्री कहती है, "हे राजपुत्र ! सुनो। ऊलग (चाकरी) को जाने में बड़ी कठिनाइयाँ है। तुमने राजा भोज की कन्या से विवाह किया है। उस सोलह वर्ण के (खरे) सोने को तुम राख क्यो कर रहे हो? स्वामी ! मेरा जीवन-मरण [तुम्हारे] चरणों में ही है। [मेरे] स्वर्ण-कटोरो (कुचों) का भार तुम अपने हृदय पर धारण करते हो; [फिर भी] मै हेड़ाउ (लेंहड़ी* वाले) के उस घोड़े की भाँति (उपेक्षिता) हूँ, जिस पर वह (लेहड़ी वाला) सौ-सौ दिनों तक हाथ नही फेरता।"

ऊलग<ओलग्ग<अव+लग्गओ=सेवा, चाकरी। कुसूत<कुसूत्र। छार<क्षार। कचोल<कच्चोल=कटोरा।<हेडा [दे०]=घटा, समूह। तुरिय<तुरंग।

४९

"हे नारी" [बीसलदेव ने कहा] "कड़वी बात न कह। मैंने तुझे चित्त से विस्मृत करके छोड़ा है। जिह्वा नई (पुनः) नही निकलती। दावाग्नि का जला [वृक्ष] नवीन पत्ते लेता है, किंतु जिह्वा का जला [मनुष्य] नही पल्लवित होता है।" नाल्ह कहता है, यह बात सभी कोई सुन लो।

दाधा<दग्ध।

५०

"हे उलगाणे (चाकर) !" [राजमती ने कहा,] "तू मर्यादा छोड़ कर जा रहा है, (इससे) तेरे अर्थ, द्रव्य और जीवन की हानि होगी। [और] यदि तू डूबा, तो मै भी डूबी; यदि तू गया, तो यह घर भी गया। अर्थ और द्रव्य तो (धरती में) गड़ा रह जाता है, किन्तु जो इसका संचय करता है, [यह] उस को खाता है।"

*गाय-बैलों अथवा घोड़ो के वे झुण्ड जिन्हे व्यापारी वेचने ले जाते है।

ऊलगाणउ<अवलग्न=चाकर, सेवक। अरथ<अर्थ। दरव<द्रव्य।

५१

"आकुलता पूर्वक (विना सोचे-समझे) बोलने पर" [वीसलदेव ने कहा,] "(मनुष्य) पीछे पछताता है। इस प्रकार कहीं पति को मनाया जाता है? शिव के तुष्ट होने पर (पति) प्राप्त होता है। तैं ने तो न सास को गिना (कुछ समझा), न देवर और जेठ को। मेरा कहना भी तैं ने नहीं माना। हे गोरी ! (इसलिए) मेरी-तेरी यह अंतिम भेंट है।"

तूं<तुष्ट=प्रसन्न।

५२

सात सहेलियाँ [राजमती को] समझा रही हैं। [वे कहती हैं,] "हे निगुणी ! यदि (स्त्री में) गुण ही हो तो स्वामी क्यों ऊलग (चाकरी) को जावे? [वह तो स्वामी को वैसे ही रक्खे] जैसे फूल को पगड़ी में रक्खा जाता है। [उत्तर में राजमती ने कहा,] "ताजी घोड़ा यदि। [विगड़ कर] उसासें भरने लगे, तो उसको दावा जावे; चरते हुए मृग को मोहित कर लीजिए; किंतु, हे सखी ! नाथ (स्वामी) को अंचल में किस प्रकार बाँधा जा सकता है?

नाह<नाथ=स्वामी।

५३

"हे सात सहेलियों !" [राजमती ने कहा,] "मेरी वात सुनो। मैंने [अपना] कंचुक खोल (हटा) कर अपना शरीर दिखाया, जिसको देख कर मुनिवर भी विचलित हो जावें। किन्तु मूर्ख राजा मेरा मूल्य नहीं जानता? मैंने लाख त्रिया-चरित्र किया। [किन्तु सव व्यर्थ गया]। वह राजा—नरपाल नहीं, हे सखी ! भैसों को रखनेवाला—महिषपाल है।"

लष<लक्ष। पीडाड<पीडार<पिण्डार=भैसों या गायों का रखनेवाला

५४

दामोदर (ज्योतिषी) आकर पीढ़े पर वैठा हुआ है। [राजमती उससे कहती है,]

यह शव्द अपशव्द के रूप मे प्रयुक्त होता है। देखिए मोनियर विलियम्सः संस्कृत इंग्लिश डिक्शनरी).

"हे ज्योतिषी !] तू मेरे प्रिय (पति) की बात कह। वह प्रयाण पर बहुत [आतुर] है।" [ज्योतिषी ने कहा,] "[तुम्हारे पति के] आठवें स्थान पर स्थावर (शनि) और बारहवें पर राहु है; ग्रहगण तो बहुत ही बुरे है।" (यह सुन कर) गोरी ने सिर पीट कर धाह छोड़ी (वह चिल्ला उठी)

पयाण<प्रयाण। धाह (दे०)=पुकार, चिल्लाहट।

५५

"हे पंडित !" (राजमती ने कहा,) "मैं तुम्हारे गुणों की दासी हूँ; हे ज्योतिषी ! (यात्रा का) दिन तू मंद करके (देर) प्रकाशित करो; चार महीने तू (मेरे पति को) विलगावे; तब तक मै अपने पति को समझा लूँगी। (मैं तुझे) हाथ की मुद्रिका, और सोने की (सोने से मढ़ी) सींगों वाली कपिला गाय (पुरस्कार में) दूँगी।"

पंडिय<पंडित। जोसी<ज्योतिषी। दीह<दिवस। मउडउ<मंद (?)= शनैः।★ मुंद्रडा<मुद्रा। कविलीय<कपिला।

५६

(किसी ने कहा,) "हे पंडित ! तुझे राजा बुला रहा है; तू, हे पंडित, पत्रा लेकर राजभवन में आ !" (पंडित से राजा ने कहा,) "हे मेरे ज्योतिषी ! (यात्रा के लिए) तू शुभ दिन शोध; पत्रा खोल और सत्य बतला।" (ज्योतिषी ने कहा,) "हे राजा! चार मास तक (यात्रा के लिए उपयुक्त) दिन नहीं है। हे स्वामी ! त्रयोदशी की तिथि और मंगलवार को, जब चंद्रदेव ग्यारहवें स्थान पर होंगे, तीसरे स्थान पर भी चंद्रदेव होंगे, योग घोडिला (अश्विनी) होगा, योगिनी, काल और भद्रा नहीं होंगेः पुष्य नक्षत्र और कार्तिक मास होगा, तब हे राजा ! तुम जाओ [जिससे] वह अगला (अन्य) राजा तुम्हारी, आशा पूर्ण करे।"

रावल<राजकुल=राजभवन। पतडा<पत्र=पञ्चाङ्ग।

★दे० 'मुग्धाव बोध भौक्तिक' के अंत में दिए हुए 'औक्तिक पदानि' शीर्षक के अन्तर्गत 'मुंडइ, : प्राचीन गुजराती गद्य संदर्भ (संपा० मुनि जिन विजय) पृ० १८६।

५७

उलगाणा (चाकर) शकुन लेकर चला। "राजा को जाते हुए कौन मना कर सकता है?" (राजमती ने कहा,) "यदि तुम मेरी बात सुनो, तो हे स्वामी ! सेवा (चाकरी) दुखदायक होती है, और परदेश (का निवास) तो होगा ही; मैं कामिनी हाथ जोड़ कर कहती हूँ; (फिर,) इस दुर्बुद्धि स्त्री की वय की ओर भी देखो।"

उलगाणउ<अवलग्न=सेवक, चाकर। सउण<शकुन। वेस<वयस्।

५८

स्त्री किवाड़ टेक कर खड़ी है। (उसकी) कटि में पटोर (रेशम) की सुन्दर चूनड़ी है। (उसके) कानों में कुण्डल जगमगा रहा है। पैरों में वहुत चंगी (अच्छी) सोने की पायल है, और मस्तक पर हीरक जटित राखड़ी (शीशफूल) है। (वह बीसलदेव से कहती है,) "मुझे अपनी सब गतियाँ (युक्तियाँ) विस्मृत हो गई है, (और केवल) तुम्हारी चिंता है। रात-दिन तुम 'चलूँ', चलूँ,' करते हो। हे स्वामी! तुम्हारे घर में यह कैसी रीति है?"

कमाड<कपाट। राषडी<शीशफुल।

५९

"हे लाड़ से आविष्ट स्त्री" (राजा ने कहा,) "तू अपने लाड़ (प्रेम) का निवारण कर; घोड़ा पलाना हुआ (सजा हुआ) द्वारा पर खड़ा है; तू रेशमी चूनड़ी पहन; कुंकुम (केशर) और चंदन अपने शरीर में तू लगा। दिन निकलते ही मै चला जाऊँगा। हे गोरी ! हँस-हँस कर (प्रसन्न मन से) मुझसे वातें पूछ।"

गहेली<ग्रस्ता(?)=आविष्ट, पागल, भ्रांतचित्त। तुरिय<तुरग। पल्लाण, पर्याणय+अश्व आदि को सजाना।

६०

"हे स्वामी!" (राजमती ने कहा,) "ऊलग (चाकरी) को जाने की तुम्हारी बड़ी इच्छा है, तो मैं तुम्हें राजकीय चलन की सीख (शिक्षा) दे दूँ। इस प्रकार राज्य में

चलना चाहिए: राजसभा में प्रधान [अमात्य] बैठे हों, तो उनसे मीठा बोलना; नाई और साहनी को बहुत आदर देना; बाँदी के साथ मत हँसना। वहाँ यदि राजा गोष्ठी में तुम्हें [राजभवन के] भीतर बुलावे, तब हे राजा ! यत्न करके (सोच-समझकर) बोलना, कान [राजा के] निकट हों और दृष्टि नीची हो।"

ऊलग<ओलग्गा<अव+लग्=चाकरी, सेवा। जगीस<जिगीषा=इच्छा। साहुणी<साहणी<साधनिक=सेनापति। गोठि<गोष्ठी। द्रेठि<दृष्टि।

६१

"हे स्वामी।" [राजमती ने कहा,] "ऊलग (चाकरी) को जाने की तुम्हें बहुत दुसार [बेकली] है। किंतु राज-नीति खड्ग की धारा जैसी होती है। मूर्ख लोग उसको नही जानते हैं। चोर, जुवाड़ी और कलाल—इनसे हँसकर न बोलना। राजा जी मर्म की बात पूछें, तो तुम झूठी-सच्ची मत कहना, और मुँह के सामने तुम हाथ रख लेना।"

दुसार<दुःशल्य=बेनंगे काँटे के गड़ने की बेकली।*

६२

"[राजा ने] जेसलमेर को छोड़ा। [उसने] टोडा और अजमेर गढ़ को छोड़ा। [उसने] टउँक और बिछाल को छोड़ा। [उसने] राणा के रानिवास को छोड़ा।' पंडित [राजा को] पहुँचा कर लौटा, [और उसने कहा,] "हे गोरी ! राजा बनास नदी [के पार] उतर गया।"

६३

पंडित [राजा को] पहुँचा कर गोरी (राजमती) के पास आया। [उसने देखा कि] न [राजमती की] नाड़ी में जीवन के लक्षण हैं, और न [उसके] हृदय (वक्ष) में साँस है। वह स्त्री पलंग से पृथ्वी पर पड़ी है, वह न चीर संभाल रही है, और न

---

*तुलना० भेदि दुसरा कियौ हितौ तन भेदै सार। बिहारी : दो० ४४३, बिहारी-रत्नाकर।

जल पी रही हैं; मानो हृदय में मारी हुई हरिणी हों; उस [राजमती] का गात्र खुला हुआ और विकल है।

हिय<हृदय। पलिग<पर्यङ्क। उघाडा<उद्घाटित<खुला हुआ।

६४

सात सहेलियाँ आकर बैठी हुई है; [राजमती] न काढ़ा पीती है और न ओषध खा रही है; गोरी (राजमती) ने दाँतों को सिकोड़ (विठा) लिया है। [उसकी इस दशा को देख कर सहेलियों ने कहा,] 'हे भोली [स्त्री]! तुझ से भी भली (अच्छी—रूपवती) दमयंती थी, किंतु उसे भी राजा नल छोड़ गया था। पुरुष के समान निगुणी संसार में [अन्य] नही होता है।"

दवदंती<दमयंती।

६५

स्त्री (राजमती) को पति (वीसलदेव) रोती छोड़ गया। [राजमती] सूने राजभवन में धाह दे (चिल्ला) रही है। वह स्त्री मोर की भाँति कूक रही है। [उसके] मुहल्ले की पड़ोसिनें आकर बैठी हुई हैं। [वे कह रही है,] "देखो वह (पति) निस्सतान की भाँति [छोड़कर] चला गया। हे सखियो! इस प्रकार भी कहीं कोई पति ऊलग (चाकरी) को जाता है।

चाह [दे०]=पुकार, चिल्लाहट। पाड<पाडय<पाटक=मुहल्ला। ऊलग<ओलग्गा<अव+लग्=सेवा, चाकरी।

६६

[वीसलदेव ने] चंवल और [उसके] वाद आने वाला खाल (नाला) पार किया। वाएँ हाथ की ओर उसे देवी (श्यामापक्षी) तथा दाहिने उसे माल (पक्षि-विशेष) मिलीं; वाएँ [ही] महासती (शृगाली) स्वर कर रही थी; राजा के वाएँ सिंह और शृगाल [आए]; वाएँ [ही] सारस कूके। वीसलदेव [ऐसे शकुनों के साथ] घोड़ा आगे वढ़ा रहा था।

खाल [दे०]=नाला। डाव [दे०]=बायाँ हाथ। माल=पक्षि-विशेष।*
सीयाल<शृगाल=स्यार।

६७

[राजमती ने कहा] "चाकर [बीसलदेव] कार्तिक मास में गया। वह मंदिर (घर) तथा शयन गृह (?) को छोड़ गया। वह [अपनी] चौपाल और चोखंडी (चार खंडों का राजभवन) छोड़ गया। तबसे उसके मार्ग में सिर दिए रो-रोकर मैने अपने नेत्र गँवा दिए; मेरी भूख जाती रही, और तृषा भी उचट गई। कहो न सखी! फिर नीद कैसे आवे?"

उलगाणउ<अवलग्न=सेवक, चाकर। कविलास<कैलाश=शयन गृह [?]। तठइ<तत्र।

६८

"मार्गशीर्ष में दिन छोटा होने लगा है। हे सखी! [मेरा पति] कोई संदेश भी नहीं भेजता है। संदेशों पर [मानो] वज्रपात हो गया है। [मार्ग में] ऊँचे परवत और [पर्वतों के] नीची घाटियाँ पड़ती हैं। [मेरा पति] परदेश और परभूमि को गया है। वहाँ से न चीठी आती है, और न कोई वहाँ के मार्ग जाता है।"

वज<वज्र। तठइ<तत्र।

६९

"हे सखी! देखो, अब पौष लग गया है। इस मरती हुई स्त्री को कोई दोष मत देना। मै दुख में दग्ध होकर पंजर [मात्र] हो गई हूँ। धान्य (अन्न) भाता नही है; शिर का स्नान छोड़ दिया है; छाँह और धूप नही लगती है (शरीर दो) में किसी का अनुभव नही करता है); देखते-देखते राजभवन श्मशान हो गया है।"

को<कः=कोई। मसांण<श्मसान।

*दे० मोनियर विलियम्सः संस्कृत-इंगलिश डिक्शनरी।

७०

"माघ मास में ऐसा ठंठार [सुखा कर ठठरी मात्र कर देनेवाला शीत] शीत पड़ रहा है कि उसके द्वारा वनखंड दग्ध होकर क्षार (राख) कर दिया गया है। [विरह में] अपने दग्ध होने के साथ-साथ संसार दग्ध हुआ [दिखाई पड़ रहा] है। मेरी चोली के भीतर से [भी] शरीर दग्ध हो गया है; स्वामी के विना स्त्री इस प्रकार दिखाई पड़ रही है। [हे स्वामी !] तुम करह [ऊँट] पलान करके वेग (अविलंव) आओ। यौवन का छत्र उमड़ा हुआ है। मेरी कनक-काया में तुम [अपनी] आन फेर जाओ।"

सीय<शीय। दाधा<दग्ध। करह<करभ=ऊँट। पलाण<पर्याणय्= अश्वादि को सुसज्जित करना।

७१

"फाल्गुन फर-फर कर रहा है जिससे वृक्ष कॉपने लगे है। चित में मै चौक गयी हूँ, रात में न नीद आती है और न भूख लगती है। दिन सुन्दर होने लगा है, और ऋतु पलट गई है। [किंतु] मुझको मूर्ख राजा आ कर नहीं देखता है। जीवित रह जाऊँगी तभी तो यौवन [का सुख भी], हे सखी ! होगा। चारों दिशाओं में वायु फरहरा रही है, और वह [लता-वृक्षादि में से होकर वेग से वहने के कारण] वज रही है।"

रूष<रुक्ख<वृक्ष। चमक<चमक्कि<चमत्+कृ। राय<राज्<चमकना, शोभित होना। सही<सखी।

७२

"चैत्र मास में नारियाँ [रंग-बिरंगे वस्त्रों से सुसज्जित] हो चौरंगी हो गई हैं। किन्तु मै प्रियतम के विना किसके सहारे जीवित रहूँ? मेरी कंचुकी भींग जाती है, और लोग हँसते हैं। सात सहेलियाँ आ कर वैठी हुई हैं। उनके दाँत कौड़ों जैसे चमकाए हुए और नख रंगे हुए है : [वे कहती हैं,] 'सखी ! चलो; [होली] खेलने के लिए हम लोग चलें। जो [वयस] आज दीख पड़ रही है, वह कल नही रहेगी।"

[मै कहती हूँ,] "मैं होली खेलने किस प्रकार जाऊँ? मै तो उलगाने [चाकर] की स्त्री हूँ; तुम मेरी उँगली काढ़ कर [पकड़ कर] बाँह निगलती [पकड़ती] हो।"

कंचूय<कंचुक=चोली। कवाड<कपर्द=कौड़ी।

७३

"धुर वैशाख में धान्य (अन्न) काटा जाता है; पानी शीतल और पान पका होता है; कनक-काया [रूपी वृक्ष] को [जल के] घड़ो से सीचते (तृप्त करते) है। मूर्ख राजा मेरा सार (मूल्य) नही जानता है। हाथ में घोड़े लगाम और चावुक लेकर खड़ा हुआ वह राज-द्वार पर सेवा करता है।"

लुण<लू=छेदना, काटना। सीला<शीतल। ऊभउ<उर्ध्वित=खड़ा। ताजण<तज्जण<तर्जन=चाबुक।

७४

"हे जेठानी ! देख, यह जेठ लग गया है। मुँह कुम्हला गया है और ओष्ठ सूख गए है। इस मास के दिन अत्यन्त तप्त होते है। [मुझ] स्त्री के पैर धरती पर नहीं पड़ पाते हैं; [मानो] आग जल रही है, और स्त्री [राजमती] उसमें प्रज्वलित होती है। हंस [अब] सरोवरों के स्थान [उनके जलहीन होने के कारण] छोड़ कर चले गए हैं।"

दिहाडा<दिवस। तव<तप्। ठांइ<स्थान।

७५

धुर आषाढ़ में मेघ लौट आया है। खाल (नाले) खल-भल करके वहने लग गए है, और धूल बह गई है। यद्यपि यह आषाढ़ है, किन्तु [मेरा स्वामी] नही आ रहा है। [मेघ प्रमत्त] होकर मदगलित [हाथी] की भाँति [आकाश में] पैर रख रहा है, वह सद्यः मदोन्मत की भाँति ढुलक रहा है। [पता नहीं] चाकरी में (मेरा पति)

उस घर में [वहाँ] क्या कर रहा है।"

मेह<मेघ। खाल [दे०]=नाला। जड<यदि। माता<मत्त। मइगल<मदगल। सद<सद्यः। मतवाला<मतवाल [दे०]=मदोमत्त। ऊलग<ओलग्गा<अव+लग्=सेवा, चाकरी।

७६

"श्रावण [का मेघ] छोटी धारो में वरसता है। [ऐसे रिमझिम के दिनों में] प्रियतम के विना किसके सहारे जीवित रहा जाए? सखियाँ और समवयस्काएँ कजली खेलती हैं। कमेड़ी (कपोती) पक्षी ने आशा लगा रक्खी है। पपीहा [भी] 'पिउ-पिउ' करता है। [केवल] मुझे श्रावण मास अनख (रोष) लगाता है।"

७७

"भाद्रपद [का मेघ] गहरी और गम्भीर वर्षा का रहा है। जल-थल और मही तल से सव [जगह] जल भर गया है, मानों सागर ही उलट पड़ा हो। रात्रि अंधकारपूर्ण होती है, [वादलों में से] विजली फेंक उठती है। वादल [जल-भार से नीचे आ जाने के कारण] धरती से मिला हुआ [दिखाई पड़ता] है। [ऐसे समय में भी] मूर्ख राजा आकर [मेरी दशा] नहीं देखता है। हे स्वामी! एक तो मै स्त्री हूँ और दूसरे अकेली हूँ। यह दोनों दुःख, नाल्ह कहता है, [एक साथ] कैसे सहन किए जावें?"

भाद्रवइ<भाद्रपद। खिव<क्षिप्=फेंकना।

७८

आश्विन में स्त्री (राजमती) ने आशा लगाई। उसने राजभवन (घर) और शयन गृह को सजाया, उसने चौपाल और चौखंडी (चार खंड के राज-राजभवन) की सफेदी कराई; उस स्त्री ने पौरी (ड्योढ़ी) तथा प्राकार (परकोटा) की भी सफेदी कराई। गवाक्षो पर चढ़ी हुई वह हर्षित फिर रही थी, कि [कदाचित्] उसका मूढ़ भर्त्तार (पति) घर आ जावेगा।

आसोज<आश्विन। पउलि<प्रतोली। पगार<प्राकार। गउखि<गवाक्ष। मुंध<मुग्ध=मूढ।

७९

[राजमती ऐसी हो रही थी मानो] हेम (स्वर्ण) की वह कुप्पी हो जिस पर मोम की मुद्रा (तह) लगी हो। वह स्त्री (राजमती) खड़ी हुई मत्त गजेन्द्र [के समान] किसी क्षण चौपाल मे और किसी क्षण चौखंडी (चार खंड के राजभवन) में [दिखाई पड़ती] थी। उस समय [उसके लिए] न वायु बज रही—हरहरा रही—थी, और न सूर्य तप रहा था। वह ऐसी प्रतीत हो रही थी जैसे बादल से छाया हुआ चन्द्रमा हो। [एक ओर] अंधकारमयी रात्रि थी, [दूसरी ओर] उसका पूर्ण यौवन था।

कूंपली<कुंपय<कूपक=कुप्पी। मुंद<मुद्रा। ऊभी<ऊर्ध्वित=खडी। गयंद<गजेन्द्र। तठइ<तत्र। वाइ<वायु। छायउ<आच्छादित।

८०

सास कहती, "बहू ! घर में आओ; [अन्यथा] चन्द्रमा के भूल (धोखे) में [तुम्हें] राहु निगल लेगा। [क्योकि तुम्हारा मुख] विशाल (पूर्ण) चन्द्रमा बन गया है। दूध किस प्रकार मार्जारी (बिल्ली) के फेरे से बच सकता है? पवन [के झोके] से दीपक नही जल सकता। [तुम्हारा] स्वामी तो उड़ीसे मे है, और तुम स्त्री अजमेर में हो।"

गिल=निगलना, भक्षण करना। पुलू=विशाल, या उन्नत ओना। मंजारि<मार्जारी। दीवल<दीप। वल<ज्वल=जलना।

८१

"हे महेश !" [राजमती कहती है,] "स्त्री का जन्म तुमने [मुझे] क्यो दिया? हे नरेश (नरों के स्वामी) ! और जन्म तुम्हारे पास [देने के लिए] बहुतेरे थे, [फिर भी तुमने मुझे] अरण्य का रोझ (नील गाय) नहीं बनाया घने [वन] की धोरी गाय भी नही बनाया, न वनखंड की काली कोयल बनाया कि मै आम और चम्पा की

डालों पर बैठती और अंगूर तथा बीजोरी (फल विशेष) खाती। यह अबला बाला इन दुःखों में झूर (सूख) रही है।"

रोझ<ऋश्य=नीलगाय। धण=घना वन। द्राष<द्राक्षा। बीजोर<बीजपूर। झूर<ज्वल्[?]=सूकना, चिंता करना।

८२

"हे विधाता !" [राजमती कहती है,] "[तुमने मुझे] आंजनी (जाटनी) क्यों नहीं बनाया? [तब] मै अपने भर्त्तार (पति) के साथ खेत कमाती, अच्छे ऊनी वस्त्र का मेरा परिधान होता, ऊँचे घोड़े के समान अपना शरीर [स्वामी के शरीर से] भिड़ाती, स्वामी को सामने से लेती, और प्रियतम से हँस-हँस कर उनकी बातें पूछती।"

सिउं<समं=साथ। पहिरिण<परिधान। लोवडी<लोम पटी। भीड[दे०]=भिड़ाना, मुठभेड़ करना।

८३

अस्सी बरस की वृद्ध वयस् की [एक कुटनी] जिसके दाँत कौड़ों जैसे किए (चमकाए) हुए, और शिर के बाल पांडुर (श्वेत) थे, [राजमती के] आवास पर आ पहुँची। वह [राजमती के] गले लग कर रोने लगी। [वह कहने लगी,] "हे भानजी ! तू दिन कैसे काट रही है? रात-दिन मुझे तेरी चिंता रहती है। जब तक सांभरपति (बीसलदेव) आवे, तुझको एक महाअपूर्व मित्र (जार) कर दूँ।"

वेस<वयस् कवाड<कपर्द।

८४

कूटनी की बात सुनकर [राजमती] उठ कर चली गई। उसने पाटा लेकर [कूटनी की] पीठ कर जमा दिया, [और कहा,] "हे कुटनी ! मैं तेरा पेट फड़वाती हूँ, मैं देवर और बड़े जेठ जी को बुलाती हूँ तेरी वह जिह्वा निकालती (निकलवाती)

हूँ जिसने ऐसी बात कही है, और नाक के साथ [तेरे] दोनों ओष्ठों को कटवाती हूँ।"

पूठ<पृष्ठ। सरीसा<सदृश।

८५

गोरी (राजमती) आकर पंडित के [घर पर] बैठी है। [वह कहती है,] "हाथ जोड़ कर मैं पाँय लगती हूँ।" राजमती विनती करती है, "हे पंडित! मेरे प्रियतम से जा कर कहना कि [तुम्हारी] स्त्री [इतनी दुर्बल हो गई है कि उस] के बाएँ हाथ की मुद्रिका ढलक कर (ढीली हो कर) उसकी दाहिनी बाँह में आने लगी है।"

मूंदडा<मुद्रा।

८६

"हे पंडित !" [राजमती कहती है,] "[मुझ] स्त्री के स्वामी (बीसलदेव) से जाकर कहना [कि स्त्री ने इस प्रकार कहा है,] : 'तैंने मुझे [अपनी] दाहिनी बाँह दी थी। [जब तैंने मेरा पाणिग्रहण किया था], और उस (पाणिग्रहण) के दो साक्षी तो सूर्य और चन्द्रमा थे; [उसके अन्य साक्षी थे] वायु, जल, धरती और आकाश, और ब्राह्मण ने धूप जगाया था। मै तो स्वामी के विश्वास में मर (मारी) गई।"

साषिया<साक्षी। बंभणा<ब्राह्मण। वेसास<विश्वास।

८७

"[और कहना कि स्त्री ने कहा है,] : 'हे स्वामी ! तुम्हारे ज्ञान (समझने) को मै आग लगा दूँ [जिस के कारण] [मेरे] कठिन पयोधरों ने प्राण त्याग कर दिए हैं (वे निर्जीव-से हो गए है) और [मेरा] बाल (नव) यौवन खिसक चला है। यौवन के सिर पर मैने [शील का] बधन बाँध दिया है, जिस वन्धन के बाँधने से रावण गिरा था। [तनिक विचार करो,] स्त्री के कारण [ही] शूर राम ने सेतु बाँधा था।"

म० में यह १५६ है, पं० १६४, र० में १६६, ग्या० में १६६, ना० में २०८, न० में २२८ अ० में २४७। किंतु पं०, र०, ग्या०, न०, अ०, में .१, .२ हैः

पंडीया कीधी फिर संभालि।

निरषि करि दीठउ संभरिवाल।

अ० में .७ नही है, और उसमें .६, .८ के स्थान पर हैः

राजा कै पासि बैठौ तब राइ।

चोरीय बांचै तब हाथ लोकाइ।

किन्तु जब राजमती ने ब्राह्मण को प्रिय का सहिनाण दिया था, तब उसने नही कहा था कि वह राजा को बाल्यावस्था में देख चुका था।

१. पं० र० न० ना० ग्या० अ० राइ चहुआण। २. पं० पिछाणिया। ३. ना० उठै कुमरि, ग्या० उण कर, पं० र० उव तउ कुंवर, अ० उणि तौ रे, न० उणइ। ४. पं० र० दीठा छइ, अ० दीठउ, न० दीठउ हुतउ, ना० दीठी छइ। ५. पं० र० ना० वालइ वेसि, अ० थोलक वेस, न० बालउ बेस। ६ पं० अ० उचोउ, ग्या० ऊंचउ, र० ऊंचा, न० तूंबो। ७ न० नइ पातलउ। ८ पं० न० तठइ वाइटा, र० तठइ, ग्या० उठइ। ६. पं० र० न० राजा नइ, र० राजा, ना० राजा, ग्या० बइठो राजा रइ। १०. पं० न० र० न० ग्या० नत सनमनि, र० समभांति। ११. पं० र० कागद, ग्या० कागल। १२. पं० र० ना० ग्या० करि धरइ। १३. पं० र० ना० ग्या० उतउ चोरी देखितां। १४. पं० ना० ग्या० झांपीयउ सानि, र० झांपियो सान।

(२७)

राजा सुं मिलीयउ[१] पूरब्यउ राउ[२]।
नीलाषा[३] दीन्ही[४] राज[५] कुलह कबाइ।
दीघउ[६] सोनउ [सोलहउ]।
दीन्हा[७] ढोल अवर नीसाण[८]।

आंसू नांषि[१०] पूरिवउ[११] विनवइ[१२]।
सिद्धि करउ[१३] वीसलदेव[१४] चहुआंण ।।भु०।।

(ऊपर की .१, .२, .३, .६ तुलना० क्रमशः म० १७४.१, स्वीकृत ११.२स्वीकृत ११.३ तथा म० १७३.८ से)

म० मे यह १७२ है, पं० में २०४, र० मे २०६, ग्या० में २०६, ना० मे २१८, न० में २३६, अ० में २६५। किन्तु पं० र० ग्या० ना० न० अ० मे .३ है:

दीन्ही हीरा पाथरी। (तुलना० स्वीकृत ११०.३)

और ग्या० अ० में .५ है: पूरब्या राउ विदा करइ (नै वीनवै-ग्या०)।

१. अ० जिहां मिल्यउ, ना० मील्यौ थी। २. पं० र० ना० वीसल राइ (वीसलो राउ र०)। ३. पं० र० अ० ग्या० न० लाष, ना० लाषा। ४. पं० र० अ० ग्या० ना० तिहां। ५. ग्या दीन्हा। ६. अ० दीघउ छइ। ७. अ० दीघा जी। ८. ढोल। ९. पं० नइ नीसाणि, ग्या० वली नीसाण, अ० अनइ अवर नीसाण, ना० न० र० अनइ नीसाण। (१०, पं० र० न० रोवइनइ, ना० रोइ नइ, ग्या० राय। ११. र० ना० पूरव्यो न० पूरव कै, ग्या० पूरव्या नै। १२. न० धणी। १३. पं० र० थे तउ सिद्ध करउ, ग्या० थे सिद्ध करउ, अ० सिद्ध करउ तुम्हें न० सीष दीधी। १४. पं० थे वीसल, र० न० वीसल।

(२८)

हूयउ रे[१] मुकलावउ[२] हरषीयउ[३] राइ[४]।
सगलाई[५] बंदिण[६] लीया रे[७] बोलाय[८]।
वीसलदेव[९] घरि चालीयउ[१०]।
दीन्हा[११] अरथ नइ गरथ भंडार[१२]।
दीन्हउ[१४] सोनउ सोलहउ[१५]।
कर जोड़ी[१६] अरू लागउ पाय[१७]।
माया काम[१८] बस्वालिया।

सिद्धि करउ[१९] वीसल वीर म लाइ[२०] ।।भु०।।

(ऊपर की .१, .४, .५, .८ की तुलना० क्रमशः स्वीकृत २५.१ स्वीकृत १००.२, स्वीकृत ११.३ तथा म० १७२.६ से)

म० मे यह १७३ है। पं० २०३, ग्या० में २७८, र० में २०५, न० में २३७, ना० मे २१७, अ० में २६४। समानता केवल अंतिम पंक्ति में है, किन्तु हो सकता है कि शेष पंक्तियाँ ऊपर की शेष पंक्तियो के स्थान पर हो।

पं० र० अ० ग्या० न० ना० का पाठ --

राउ सुं मिल्यो पूरव्यो राउ। (तुलना० म० १७२.१)
कृष्ण बांभण तठइ लीयो वोलाइ।
समुझाइजै प्रोहित राउ का।
तठै आंचलि आंसू लूहै राउ।
मुख थी बोल न नीसरै।
सिद्धि करो थे वीसराउं।

(२६)

राजा स्वउं[१] मिलीतउ रे[२] पूरब्यउ राउ[३]।
घर लिंषि[४] मोकलाउ[५] तुम्हांनइ[६] सुणाइ[७]।
रतन पदारथ संपीया।
सगा रे[८] सणीजा कीं[९] जातीया[१०] पूठि।
पूरबीयउ राउ[११] चालीउ[१२]।
बीसल राउ[१३] चाल्यउ घर उठि[१४] ।।भु०।।

(ऊपर की १, .४ की तुलना० म० १७२.१, तथा स्वीकृत १०९.४, .५ से)

म० में यह १७४ है, पं० में २०५, र० में २०७, ग्या० में २१०, ना० मे २१९, न० में २३९, अ० में २६६। किन्तु न० में 'रतन पदारथ, (.३) से 'ऊठि' (.६) तक की शब्दावली छूट गई है।

१. पं० राजा स, र० राजा सुं, अ० बलि राउ सुं। २. पं० र०

न० ग्या० वोलीयउ, अ० वीनवइ। ३. पं० र० न० ग्या० वीसल राव। ४. पं० र० अ० ना० ग्या० धणि लिपि। ५. पं० र० अ० ना० मोकल्यउ। ६. पं० किउ, र० कियो, अ० एह, ना० (+७) सुमभाव ग्या० कै। ७. पं० र० अ० सुमाइ, न० समाउ। ८. प० र० अ० ना० म्हाका सगा। ९ पं० र० अ० ना० सुणीजा। १०. पं० न० ग्या० थाकी, र० अ० थांकिय। ११. र० पूरवीराउ। १२. पं० अस वोलियउ, र० ना० ग्या० इम वोलियौ, अ० इम वीनवइ। १३. पं० र० ना० तव वीसल राउ, अ० वीसल दे। १४. पं० र० ना० घरि ऊठि, अ० घरह कुं ऊठि।

(३०)

तोइ राजा उतरउ नगर मझारि।
नफर चलाव्यउ[१] दिवस गिणाइ[२]।
धीरय[३] देज्यो राणीयां[४]।
दिन दस महि[५] पठावय[६] हो राइ[७]
राजमती सउ[८] जाय[९] इमि कह्यो।
गोरी घर नउ[१०] मोहीयउ[११] वीसलराउ ।।भु०।।

म० में यह १७६ है, पं० में २०६, र० में २०८, ग्या० में २११, ना० में २२०, न० में २४०, अ० में २६७। किंतु पं० र० ग्या० ना० न० अ० में .१ है:

[उड़ीसा की-पं० र० न० ग्या] तलहटी ऊतर्‌यउ वीसल राइ।

(तुलना० म० २१.१)

१. पं० र० पदावइ, ग्या० षंदाया, अ० कोई अछइ, न० षंदाइ, ना० षंदाइ नइ। २. अ० वेगिजो जाइ। ३ अ० (+४) राजमति कुं धीरय दीयइ। ४. ना० धीरज दीयो राणीयां। ५. पं० र० अ० न० ना० ग्या० दिवस चिहुं माहि। ६. पं० र० न० ना० ग्या० पहुंचिज्यो, अ० आविस्यइ। ७. पं० र० न० जाइ, अ० [में नही है]। ८. पं० र० अ० न० ना० राजमती नै, ग्या० राणी राजमती नै। ९. पं० (+१६) अम (अस) कहे,

अ० जाइ कहइ, र० न० ना० ग्या० इम कहे। १०. पं० र० न० ना० ग्या० घर नइ, अ० घरह। ११. पं० र० अ० ना० ग्या० उमाहियउ, न० ऊम्हा।

(३१)

नगरीय माहि हो पठह वजाइ।
को अछय जो[1] अजमेरहां[2] जाय[3]।
लाष टंका देउं[4] उचित का[5]।
तिहां कागल लिष[7] दीयउ[8] आपणइ[9] हाथ[10]।
दिन चउथइ[11] म्हे[12] आविस्यां।
राणी राजमती नइ[13] दिउ समाधि[14] ।।भु०।।

(तुलना० ऊपर की .६ की म० १८२.६ से)

म० में यह १७६ है, पं० में २०७, र० में २०६, ग्या० में २१२, ना० में २२१, न० में २४१, अ० में २६८।

किन्तु पं० र० ग्या० ना० न० अ० में .१ तथा .४ इस प्रकार हैः

(.१) तठइ पडह दिवावइ वीसल राउ।

(.२४) हउ तउ र० (ना में नही है) चीरी लिषि द्यउं मनह।

(ना० में नही है) सुभाइ (चीरी धउं आपइ हाथ लिपाइ—अ०)।

१. पं० र० ग्या० छइ कोई, अ० न० छइ कोई आज, छइ कोई अैसी, र० ना० कोइ आज। २. पं० र० अजमेरइ अ० अलमेरहि, न० अजमेरह। ३. पं० र० अ० न० जाइ। ४. पं० देव र० द्युगा। ५. पं० गाठिका अ० न० ना० ग्या० रोकड़ा, र० विका। ६. न० ग्या० (न० नही है)। ७. न० चिठी लिखी, ग्या० चीरी लिष। ८. न० ग्या० द्युं। ९. न० ग्या० मनह। १० न० सुया, ग्या० सुहाइ। ११. पं० दिन चउ नइ, अ० न० ना० ग्या० दिन चिहुं माहें, र० दिन चिहुं में। १२. न० म्हो। १३. पं० र० ना० ग्या० सातवंती राणी नइ, अ० राणी राजमती

कुं, न० राजमती नइ। १४. पं० र० न० ना० ग्या० कहिज्यो जाइ, अ० जो कहइ जाइ।

(३२)

जोगिनइ[१] राव कउ[२] कीयउ रे[३] आदेस।
भगवा कापड़ मइला वेसि४।
कापि आधारीय [illegible] जटा।
सोवन सींगीय[५] पूरइ छइ[६] नाद।
रतन जडित पग मोजडी७।
वज्र[८] कछोटीय[९] नइ पावडी पाय[१०]।
गढ़ अजमेर नइ[११] गम करउ।
वे कर जोडीय[१२] पगि पडइ[१३] राइ[१४] ।।मु०।।

(ऊपर की .२, .५ की तुलना क्रमशः म० १८४.२ तथा म० १४०.५ से)

म० मे यह १७८, पं० में २०६, र० में २११, ग्या० में २१४, ना० में २२३, न० में २४३, अ० में २७०।

१. पं० र० न० ना० ग्या० (+२) आइउ जोगी (जोगिनौ-ग्या) २. अ० गउजी, पं० र० न० ना० राजा। ३ अ० करइ, ग्या० दीयै। ४. ग्या० मैलो जी भेग। ५. पं० र० ना० उणितउ सोना सीगी, ग्या० उणि सोना ठींसागीय अ० उणिरे सोवण सीगीय। ६. पं० र० ग्या० न० पूरियउ। ७. ना० री मेपली, ग्या० कांधे मेखला, पं० र० न० की मेंपली, गलि मेखली (तुलना० म० १८६.५)। ८. पं० र० उकइ वजर, न० ना० उणरइ वज्र। ९. र० ना० कछोटडी। १०. पं० न० ना० पाउडी पाइ, र० पाउडी पाग, अ० चाखड़ी पाइ। ११. पं० र० गढ़ अजमेरा, अ० गढ़ अजमेर कुं। १२. पं० र० तठइ करि जोडी, अ० न० ना० ग्या० कर जोड़ी। १३. पं० ना० ग्या० नइ पगि पडइ, अ० राजा लागइ छइ, न० पग पडइ छइ। १४. अ० पाय।

(३३)

जोगीय[1] सिद्धि बोलइ तिणि ठाइ[2]।
बचन दुइ संभलउ दुइ हम च्यारि[3]।
गुटिका विद्या अम्ह कन्हइ[4]।
गुटिका लेकरि[5] करूं परदेस।
आंषि फुरूकइ[6] हूं गम करू[7]।
तत षिण हूं साधू[8] परदेश ।।भु०।।

म० मे यह १८१, पं० मे २१३, र० में २१५, ग्या० में २१८, ना० मे २२७, न० मे २४७, अ० २७२।

१. पं० र० तव जोगिनउ, अ० न० ग्या० जोगिनउ। २. र० तिहढांइ। ३. पं० र० अ० न० ना० ग्या० दुइ ('दुइ'—ग्या० में नही है।) म्हाका सांभलउ राइ। ४. र० ग्या० छै अम्ह कन्हड कन्हइ, पं० अ० छइ म्हो कन्हइ। ५. पं० र० म्हे गुटक उगीलि, न० ना० गुटका मिलि, अ० म्हे ल्हि गुटिको। ६. पं० गुर उपदेसि, ग्या० कहां परदेस। ७. पं० र० ना० आपि ठमका माहि सचरौ, अ० आंखि टमकैरै गम करा, न० ग्या० आंषि मटकइ माहि संचरा। ८. पं० ग्या० म्हे (म्हेतउ—अ०) अण विधि, र० अ० इण विधि, र० न० ना० म्हे इण विधि। ९. पं० राव साधौ, अ० न० राव जी साधा, ना० र० राव साधां।

(३४)

जोगिनउ[1] पहुतउ[2] गढ़ अजमेर।
फिर कर[3] जोइया[5] च्यारह फेर[6]।
प्रउलीया[7] प्रोलि[8] उपाडि नइ[9]।
तठइ[10] पाट महादे रांणी[11] लीयउ रे बोलाय[12]।
बीसल दे की[13] रे गोयेडी[14]।
रांणी राजमती नय द्यउ[15] समाधि ।।भु०।।

(ऊपर की ९ की तुलना० म० १७६.६ से)

म० मे यह १८२ है, पं० में २१८/१–२१६/२, र० मे २२०/१–२१८/२, ग्या० में ३२३/१–३२१/२, ना० में २३२/१–२३०/२,

न० में २५२/१--२५०/२, अ० में २८०/१--२८१/२ इन समनांतर छन्दों के शीषार्द्ध देखिए। म० में इस प्रमाद का कारण यह है कि दोनों छन्दों के .४ में केवल 'नैदेह' तथा 'लीयो' का अन्तर है। इस छन्द की टिप्पणियों के अन्त में

पं० २१६.१, .२, .३, ना० र० २१८.१, .२, .३, ना० २३०.१, .२, .३ ग्या० २२१.१, .२, .३ क्रमशः इस प्रकार हैः

तव जोगनउ आवउ हो संभरि माहिं।

नीकीय नगरीय सूव [स]वसाइ।

नवलषी नविषंड जाणिजइ।

(तुलना० अ० २७८.१, .२, .३)

पं० २१८.४, .५, .६, र० २२०.४, .५, ना० २३२ .४, .५, .६ ग्या० २२३.४, .५, .६ क्रमशः इस प्रकार हैः

तउ तउ राजमती राणी नइ देपाइ (देहि पेदाइ-ग्या०)

लिषउ आयाउ राउ चहुआण कउ।

हउ मुषि वचनि कहुं समुझाइ।

(तुलना० अ० २८०.४, .५, .६)

अ० २७८.४, .५, .६, .७ क्रमशः इस प्रकार हैः

जोगिनौ हरखियउ तव मन माहि।

आधउ चालइ जोगी मनह उछाहि।

प्रह चिकासि पधारियउ।

आइ पहुतउ जी अजमेर माहि ।।भु०।।

१. पं० र० तव जिगिनउ। [२. पं० नहीं है]। ३. पं० र० अ० फिरि करि। ४. पं० र० अ० ग्या० दीठा जी। ५. पं० च्यांर देश, र० च्यारिउं सेर, अ० च्यारि ए सेर। ६. अ० उघाडियै। ७. अ० न० [मे नही है] र० तो। ८ अ० पाटमादे राणी, पं० पाट महे दे राणी न० पाठ मे राणी। ९. ग्या० री०। १०. पं० अ० न० भूजडी, र० भूजली, ग्या०

भोजा। ११ अ० राजमती कुं। १२. पं० र० न० देज्यो जाइ, अ० जाइ बधाइ, ग्या० देज्यो जी जाइ।

(३५)

हिव[१] जोगी[२] नय आय[३] कीयउ प्रवेस[४]।
भगवा कापडा मइला वेस।
कुसल कुसल आइस कह्यउ[५]।
हिवइ[६] साइ छइ[७] ठिय[८] निरमल इ[९] चित्र।
दुषि दाधी[१०] पंजर हुई।
जाइ रे साधण गोवय मंदिर वाट[११] ।।भु०।।

(ऊपर की .२ की तुलना० म० १७८.२ से)

म० में यह १८४ है, पं० मे २२०, र० में २२२, ग्या० मे २२५, ना० में २३४, न० में २५५, अ० में २८४। किन्तु अन्तिम पंक्ति पं० र० ग्या० ना० में इस प्रकार है:

उणिरै (गोरी नै-ग्या०) दिवस न भूष न नीद्रडी रात्रि।

अ० में यह निम्नलिखित तीन और पंक्तियों के साथ म० की अंतिम पंक्ति के पूर्व आती है :

वीसलदेव विरहै करी।
गोरी नित्त हियै वहै अधिक उचाट।
बार बरस पूरण भया।

१. पं० र० ना० न० ग्या० तठंइ, अ० तब। २. ग्या० जोगी नइ, अ० जोगना कुं। ३. पं० र० अ० ग्या० न० राणी, ना० राणी नुं। ४. पं० र० अ० ग्या० न० ना० कीयउ आदेस। ५. अ० न० कहै, पं० कहउ। ६. पं० र० अ० न० ना० उवा तउ, ग्या० तब तइ। ७. पं० र० अ० न० ना० ग्या० गोरडा। ८. पं० र० अ० न० ग्या० दीठी। ९. पं० र० अ० ना० ग्या० निर्मल गात्र, न० निरमल बान। १०. अ०

उठि उठि। ११. अ० मंदिरे जोवइ प्री तणीवाट।

(३६)

हिव[1] जोगिनउ प्रोलि[2] बइठउ छइ[3] आइ[4]।
सीस जटा घटि भसम लगाइ[5]।
आरधी राउ[7] कलमलय[8]।
सुललित[9] वांणीय रूप[10] असेस[11]।
राजमती तू तउ[12] गोरडी[13]।
वीसल राजा नुं न दीयउ संदेस ।।भु०।।

म० में यह १८५ है, प० मे २२१, र० में २२३, ग्या० में २२६, ना० में २३५, न० में २५४, अ० में २८२। किन्तु पं०, र०, ग्या०, ना० न० क० में अन्तिम पंक्ति इस प्रकार है।

गोरी दिन चिहुं माँहि आविस्यइ धरह नरेस।

१ पं० र० तव, न० अ० ग्या० ना० [में नहीं है]। २. पं० अ० न० ग्या० जोगिनउ द्वारि, र० जोगिनउ द्वारे, ना० जोगने बारणे। ३. पं० र० ग्या० बइठउ। ४. पं० र० जाइ। ५. र० घटि भस्मीय लाय, न० धरि भसम लगाइ, ग्या० भसि भसम लगाइ। ६. पं० र० अ० न० ना० ग्या० आधइ। ७. पं० र० अ० न० ना० ग्या० अंतेवर। ८. र० अ० न० ग्या० कलमली, ना० कलानलीस। ९. पं० र० उतउ सुललित, ना० लाल। १०. पं० र० अ० न० ना० ग्या० कहइ। ११. प० र० अ० न० ना० ग्या० सदेस। १२. पं० ना० ग्या० सुं कहइ, अ० सुं तुम्ह, र० न० सुंदु १३. पं० ना० जोगीयउ, अ० कहउ, अ० कहउ, न० कहइ जोउनउ, र० ग्या० जोगिनउ।

(३७)

कवण देसावर[1] कवण थे थांन[2]।
थारा[3] दरसण कइ[4] बलिहारीय जाउ[5]।

घांघल्या ल्यउ थारी[६] जीम की[७]।
दिन दस मांहि[८] आवउ जउ हो[९] राउ[१०]।
रतन जडित तो नइ[११] मेषली।
सोना की मुद्रा[१२] घालिस्यउ काँनि[१३]।
नयणा[१४] राउजी[१५] जब देखस्यउ[१६]।
देषि जगी म्हांरा विरह की बात ।।भु०।।

म० मे यह १८६ है, पं० मे २२२, र० मे २२४, ग्या० में २२७, ०ना० में २३६, न० में २५६+२५७, अ० में २८५+२८६। पं० र० या० ना० में अतिम पक्ति का पाठ है : जोगी बचन साचइ करि म्हारउ ानि।

नं० अ० मे ऊपर की प्रथम चार पंक्तियां न० २५६ और अ० २८५ ी प्रथम चार है, और शेष चार पंक्तियाँ न० २५६ और अ० २८५ की थम चार है, और शेष चार पंक्तिया न० २५७ और अ० २८६ की तिम चार हैं। अ० २८५ शेष दो है:

सोना रूपा की द्युं जीभउी।
लाख टका द्युं तुरत गिणाइ।

और न० २५७ अथवा अ० २८६ की शेष दो है:

जौगना तोहि वधाइय देसि।
थारे सोना री सीगीय नाद पूरेसि।

१. र० स्वामी कोण दिसाउर। २. र० न० कोण सुठाउ, पं० ना० ० कवण सुठाइ, अ० कवण थारउ ठाउ। ३. पं० थाराइ। ४. अ० नही है।]। ५. र० बलिय जाउं। ६. न० थारा। ७. न० जीभ (न का, ना० जीभांरी, ग्या० जीनका। ८. पं० र० ना० ग्या० स्वामी चिहुं माहि, अ० न० दिन चिहुं मांहे। ९. पं० जे आवइ, र० ना० आवै, अ० जइ आवसी, ग्या० आवेसी। १०. र० आप। ११. पं० र० ग्या० द्यउ न० दिउं, ना० द्यु। १२. प० र० न० थारे सोना मुद्राव, ग्या० थारइ सोबन मुरकी, न० हारा जडित मुद्रा। १३. पं०

र० ना० ग्या० घालुं जा कानि, न धुं कानि। १४. पं० र० न० ना० ग्या० नयणो। १५. पं० रा राउ, न० ना० राइ, ग्या० राव जी। १६ पं० र० न० ना० जव देखिस्यउं, ग्या० देप देपस्यां।

(३८)

तिण[1] वालंभ म्हानइ सउ[2] कह्यउ[3]।
तिणि[4] म्हानइ[5] दीधी छइ[6] जीमणी बांह।
साचउ कह्यो[7] जोग[8] पालज्यो[9]।
कहि[10] घरि आवस्यइ[11] मूंघ कउ[12] नाह ॥भु०॥

(ऊपर की .२ की तुलना० स्वीकृत ८६.२ से)

म० में यह १६० है, पं० में २२/२, र० में २२६/२, ना० मे २४१/२, न० में २६१/२, अ० में २६०/२ है। ना० में .३ हैः सो वात राजा पाली नही।

न० मे .३ नही है।

१. पं० र० ना० तिणइ, अ० [में नहीं है]। २. पं० र० ना० विलंवी हिव, न० विलंवाणउ हिव, अ० मोसुंरे क्यु। ३. पं० र० कहउ। ४ पं० र० ना० स्वामी, अ० उणि, न० [में नही है]। ५. पं० र० मोनइ, अ० मोकुं, ना० मैने। ६. पं० र० अ० दीन्हीं था, न० ना० दीधी थी। ७. पं० र० सा अ० साच कहउ। ८. अ० तुम्हे। ९. पं० र० ना० पाला नही, अव जोगना। १०. पं० र० न० हिवइ कवे, अ० कव। ११. पं० र० न० ना० घरि आवइ हो। १२. पं० र० न० ना० धण कौ।

(३९)

जउ घर अवीयउ[1] मूंध कउ कंत।
साधण साधि स्यउ[2] मिलीय हसंत।
कलस वंदावइ[3] हरषइ फिरइ[4]।
धण वोलावइ[5] वीसल[6] घर माहि[7] आवि[8]।

बाजा जी वाजीया जागीय ढोल[९]।
आदित ध्यायउ कुल वडउ।
बोलइ छइ बंदण जयजयकार।
घरि घरि गूडी ऊछली।
घरि घरि तोरण मंगलच्यारि ।।भु०।।

(ऊपर की .६, .१० की तुलना० १०.३, १२. ३, तथा १०.४, १२०.४से)।

म० मे यह १६३ है, पं० मे २३२, र० में २३५, ग्या० में २३७, ना० में २४७, न० में २६७, अ० में २६५ (संख्या दुहराई है)। किंतु अंतिम दो पंक्तियाँ पं०, र० ग्या० ना० न० अ० में हैः

आज संसार सूयस वस्यउ।
सखि जउ घरि आवायउ वीसल चहुआण।

इनमें .७, .८ भी किंचित् भिन्न और इस प्रकार है :

आनंद (हरषि-अ०) वधावा उछल्या।
बंभण भाट करइ छइ वषाण।

ग्या० में .४, .५ नही है।

१. पं० र० ना० ग्या० सखी घर आवीयउ न० अ० घरिहि पधारीयउ। २. पं० न० ग्या० साधण सामि सिउं, अ० साधण सखीयसुं, र० साधण मिली। ३. पं० र० ना० ग्या० कलस जचारा, न० कलिनस वीरा ४. ग्या० बधावीया, अ० हरष सुं पं० र० वांधीया, न० वीचिया, ना० बाहीया। ५. पं० र० ना० न० हरष चढ़ी धण बोलायउ वोल। ६. अ० आकरा तिथि धण बोवायउ वोल। ७. पं० र० अ० न० ना० दे घरि। ८. अ० न० आवीयउ पं० आवीया, र० आईऊ, ना० आवीयो। ९. र० बाजिया ढोल।

(४०)

हे नकटी तूं तउ[१] देस ऊतारि[२]।
गलइ पहिरती फूलां की माल[३]।
लहुडउ सउं घूंघट काढ़ती[४]।

छाती कउं वड़उ[६] तू देती हे[७] उलालि[८]।
कोयउ[९] आंजती[१०] आंष कउ[११]।
ए दुप[१२] मेल्ही म्हे[१३] माथइ[१४] मारि[१५] ।।भु०।।

म० में यह १६६ हैं, पं० में २३६, र० में २४१, ना० में २५३, न० में २७२/२, अ० मे २०३।

१. पं० र० तूं, अ० (+२) देसां मांहि उतारि। २. पं० र० पाट उतारि न० चीर उतारि। ३. न० फूल नी माल। ४. पं० नान्हे सउ, र० न० नान्हउ सउ। ५. पं० अ० गूं घट काढती। ६. पं० र० तउ गात कउबड़, अ० गात्रकौ तू बड़ौ, न० गात्र को वाड़। ७. पं० र० अ० देतीय। ८. पं० रालि, र० डालि। ६. र० काया, अ० वांका। १०. अ० अंजती। ११. प० र० आंकुडद्या, न० आंपडद्या। १२. प० र० तिणि घणि, अ० तिणि तुषे, न० तिणि। १३. अ० म्हे मूंकी। १४. न० चितह। १५. न० ऊतारि।

(४१)

रूसणा कउ[१] स्वांमी कहइ विचार[२]।
रूसणउ मीठउ मूंध भारतार।
प्रीति पारेवा आगली।
प्रीति मीठ[३] स्वामी[४] माछली नीर[५]।
प्रीति[६] मीठी मोंरा[७] दादुरां[८]।
स्वामी[९] प्रीत मीठी अम्हानय[१०] अरध संसारि[११] ।।भु०।।

म० मे यह १६७ है, पं० में २४२, र० में २४४, ना० में २५६, न० में २७५, अ० मे ३०६।

१. पं० रूसण कयउ। २. पं० र० अ० सुणाउ विचार, भी। ५. न० जीसी। ५. पं० माटली नीर। ३(+७). पं० र० प्रीति मोरां न० कवण विचार। ३. र० प्रीति मोरां अरू, न० प्रीति मेहा। ८. अ० मेह सुं। ६. पं० र० अ० न० [में नही है]। १०. पं० म्हाक, अ० तिमि, र० न० म्हाकै। ११. पं० न० अरध सरीरिइ, र० अ० अधर शरीर।

(४२)

सूकड़स्यउ[१] धण[२] खोलीया[३] अंग[४]।
तिलक सिंदूर सउं मंडीया[६] अंग[७]।
कृष्नागरनी गाव[८] चोलीया[९]।
गलि कुसमावलि[१०] पहिरती हार[११]।
झूषर कयसउ मोहीयउ।
त्रिभुवन मोहीयउ[१२] जाति पमारि[१३] ।।धु०।।

(ऊपर की .६ की तुलना० स्वीकृत २३.६ से)

न० में यह २०० है, पं० में २३५/१, र० में २३७/१, ग्या० में २३६/१, ना० मे २४६/१, न० में २६६/१, अ० में २६८। किंतु इसकी अंतिम दो पंक्तियॉ पं० र० ग्या० ना० न० अ० में है : झबकि करि दीवउ (दीवलउ—न० अ०) बोलीयो (संजीइयो—ग्या० न० अ०)

तठइ साईया (सवाया-ग्या०) हूया छइ मुंध भरतार।

१. र० न० सूकडि सिउं, ग्या० चंदन स्यउं। २. अ० न० गोरी। ३. पं० र० षोलीयउ, ग्या० षोलाउ। ४. अ० अंगि। ५. पं० र० न० ना० ग्या० न० [में नही है] सीसि ससोभत, अ० सीस सिदूर। ६. पं० मानिय, अ० समारियउ, र० न० ना० मांडियउ। ७. पं० र० मंग, अ० अंगि, न० उमंग। ८. पं० र० किस्नागर, अ० कृष्ण अगर चोऔ, न० उणामरच, ना० कृष्णागर कौ, ग्या० कृष्णागर चोवौ। ९. पं० चोचउ लीयउ, अ० न० लाइयउ, र० ना० बोलयो। ११. अ० (+११) गलहै हिसउ गोरी कुसुम नउ हार, पं० उणि गल पहिरउ कुसुमावलिइ माल, न० ना० गलि कुसुमावालि पहिरा हार। १२. अ० तठइ उमाहिया। १३. अ० तिन्है मुध भरतार।

(४३)

नागर[१] पांन आगइर[२] वाय[३]।
काथउ[४] सोपारीय[५] लावसउ जाय[६]।

संजत करि[७] सेजइ चढ़ी[८]।
राइ रांणी[९] रह्या तिहां धरि गलि लाय[१०] ।।भु०।।

(ऊपर की .५ की तुलना० स्वीकृत १२७.५ से)

म० में यह २०१ है, पं० में २३५/२, र० में २३७/२, ग्या० में २३९/२, ना० में २४९/२, न० में ३६६/२, अ० में २६९/२ अ० के पूर्वार्ध्द की पंक्तियाँ है :

सात सहेलीय मिलीय छै आइ।
बाहिर चौखंडी बैठी रे जाइ।
प्रेम प्रीतम तणउ जोइवा।
एक एका सु हंसइ हसाइ।

ना० में इस छंद की .१ नहीं है।

१. पं० अ० न० ग्या० [में नहीं है]। २. र० अडागरा, न० आडीगहर, ग्या० अडागर। पं० आडगरा, अ० अडोगर। ३. पं० र० अ० चाविजइ, न० विह्यजइ। ४. ना० सुन्दर। ५. ना० वाटीया। ६. पं० ग्या० नड फडस कपूरि, र० अरू पडसीयो कपूर, अ० नइ सुरभि कपूर, न० सूभी रे कपूर ना० सुरभि कपूर। ७. र० सजनि दुइ, पं० अ० ग्या० ना० साजित हुई। ८. पं० ग्या० सेजडी। ९. र० तठै राणी, न० ग्या० तठै राउ राणी। १०. पं० र० ना० हुआ लपट पूरि, अ० ग्या० न० हुआ लटपट पूरि।

२

म० न० अ० स० के अतिरिक्त छंद

(४४)

मिलीय सहेलीय कीयइ छइ[१] वात।
अगर चंदन स्यउं छाटीया[२] गात।
ऊकडा[३] लेजो[४] आकरा।

काथा[५] सोपारी[६] पाका जी पांन।
डूड़ा[७] तेजीय जालवउ[८]।
(तुलना० ऊपर की .४ की स्वीकृत १८.४ से)

म० में २० है, न० में .२६, अ० में २७, प्र० में १.४२, स० में १.४७।

किन्तु ऊपर की .३, .४, .५ प्र० स० में यथा .४, .५, .६ है और प्र० स० .१, .२, .३ हैं :

कूंपर चढावत बोलै (भाट-प्र०)

अगर चंदन (तणी-प्र०) कीजइ बोल (आडि-प्र०)। (तुलना० म० २०.२)

भला भला ताजी चढ़ैं (ते चलावो-प्र०)। (तुलना० म० २०.५)

१. अ० न० न० कीजइ छइ। २. अ० छांटई न छांटीजइ। ३. न० ऊकटणा, प्र० ऊंडा, स० ऊंटां। ४. अ० न० लेज्यो, प्र० लीधा, स० लीअइ। ५. प्र० स० आचरै। ६. प्र० स० बीड़ा। ७. अ० न० रूढ़ा-रूढ़ा। ८. अ० न० चालणा। ९. म० आया, न० हाल।

(४५)

काइं न[१] सराह्यउ[२] गोरी पूरब्यउ देस[३]।
पाप तणी[४] नहीं जिहा[५] प्रवेस।
जिण दिसइ अरथ[६] उदउ करइ।
एक बाणारसी अनइ[७] मिलइ।
जिहां न्हायां जाइ[१०] जनम का पाप[११]।।भु०।।

म० में ४० है, न० में ५१, अ० में ५३, स० में २.२१। किन्तु स० में .३, .४, .५, .६ है :

(.३) अति चतुराई दीखइ धणी।

(.४) गंगा गया छै तीरथ योग।

(.५) वाराणसी तिहां पर सजे।

(.६) तिणि दरसण जाइ पातिग हासि।।

प्र० में यह छन्द नही है।

१. अ० कान, स० क्युं। २. स० वीसरांयो। ३. न० स० पूरव देस। ४. अ० न० स० पाठ तणउ। ५. स० तिहां। ६. स० सूरज, न० सूर। ७. अ० अउर न० अरह। ८. न० सायर संग। ९. अ० सुरसर। १०. न० जावइ। ११. अ० सवि पाप।

(४६)

भाटिणी[१] कहइ सइंभर राउ[२]।
सिसर[३] पूनिम षंड किम धाईयइ[४]।
कला संपूरण भोगवइ।
चोवा[५] चंदन अंग विलाइ[६]।
चतुर[७] चउरासीया[८] साचवुं[९]।
विलवलती काइं[१०] मेल्हीय जाइ[११]।।भु०।।

म० में ८२ है, न० में ६१, अ० में ६५, प्र० में २.४१ तथा स० में २.४४। किन्तु न० अ० में उपर्युक्त .५ नहीं है, और .२ और .३ के वीच निम्नलिखित पंक्तियाँ अधिक है :

देषता मानव चित हरइ।

मृगनयणी अरु अवला जी बाल (नारि-न०)।

सगुण गुणवंती नयण विसाल। (तुलना० म० ४३.५, ६,.४)

१. स० कुंवरी। २. अ० क्षुणि सैंभर वाल, स० सुणी सांभर्या राव। ३. अ० प्र० ससिहर, स० सीसाहर। ४. अ० कि षंड थाइ, स० पूरा हो जाई, प्र० पूरो जाय। ५. प्र० तूंया। ६. स० तिलक सोहाई, प्र० अग लगाय। ७. स० चरित्र प्र० चिरता। ८. प्र० चारासी। ९. स० हूँ आलंबू, अ० चालाती। १०. न० मूंध। ११. प्र० मेहली नै जाय।

(४७)

आज स्वांमी[१] मोनइ[२] निट्ट विहाण[३]।
पडिवा कइ दिव[४] कहीयउ[५] जांण[६]।
आज न राउलउ[७] सापडयउ[८]।
स्वामी तुम्ह स्यउ हूं रमती[९] करतीया आल[१०]।
सदा स[११] सनेहीय सूवती।
आज मूव छउ तिउ[१२] पडूअ जंजाल[१३]।।भु०।।

म० में ८३ है, न० में ६२, अ० में ६६, प्र० में २.४२, स० में २.४५ किन्तु .४, .५, .६ प्र० स० में है :

(.४) पारि पहुर माही नूं मीली अंष (नविलागी आंष-प्र०)।

(.५) उछइ पांणी ज्यु माछली।

(.६) जिव जारि (जो सूनू-प्र०) ति उठुछु (तो ऊठऊ) झंषि।

इसके अतिरिक्त प्र० में .२ नही है - केवल 'मुझ राति' शब्दावली उसकी आई है।

१. अ० सखी। २. अ० मोकुं, प्र० [में नहीं है]। ३. स० बिहाण। ४. अ० रहउ तहु। ५. स० कहइ छइ। ६. न० न जाण। ७. अ० निरालउरे, स० बीरालइ, प्र० निरालो। ८. अ० सीपड़े, स० सीय पडय्यो. प्र० सीर पडयो। ९. अ० न० सामिसुं हसि हसि। १०. अ० करती हुँ आल। ११. न० सदा। १२. अ० आज सूनी सामी, न० आज सूनी हूँ। १३. न० पडीय जंजाल।

(४८)

बीज अंधार शुक्र जी वार[१]।
महूरत नहीय छइ[२] चित्त[३] बिचार[४]।
महा[५] विग्रह[६] ऊपजइ।
जे उलिगाणउ[७] जो उलग जाइ।
आवण कां[८] संसा[९] पड़इ[१०] ।।भु०।।

म० में ८४/१ है, न० में ६३, अ० में ६७, प्र० में २.४३, स० में २.४६। किन्तु न० अ० प्र० स० में .६ भी है, जो म० में नहीं हैं:

बहूँ ही (जाणि-प्र० स०) हीमालइ गलिस्यां जी (राजा गलिया हो- प्र० स०) जाइ। (तुलना० स्वीकृत ४४:५)

(न०) हूँ जाग जिगाणि हुई साथि रहाइ।

१. अ० नइ सुक्रजी वार २. स० नहीया, प्र० न। ३. न० सरवर प्र० स० कहइ। ५. प्र० स० दर नारि। ५. अ० न० घुरि माहें। ६. प्र० स० उपग्रह। ७. प्र० स० जे नर उलग। ८. स० इण महूरत, प्र० जायणहार। ९. न० सांसउ। १०. न० पडयउ।

(४९)

त्रीजई[१] घरि घरि[२] मंगलचार[३]।
चिहुं दिसइ कामणि करइ शृंगार[४]।
रमइ सहेलीय[५] काजली।
घरि घरि कामिणी रमइ छइ[६] बाल[७]।
चंद्र बदनी[८] विलषी फिरइ।
वेगि पधारउ[९] वीसल राव।।भु०।।

म० में ८४.२ है, न० में ६४, अ० में ६८, प्र० २.४४, स० में २.४७। किन्तु प्र० स० में अंतिम पंक्ति है : स्नेह (नेह-प्र०) तूठी राजा औलगी मेलही (मेल्हि)।

१. स० ती तें, प्र० कीजिय। २. अ० न० धुरा लगि। ३. अ० न० मंगलवार। ४. स० सयगार, प्र० सिणगार। ५. न० सहेलीय मिली। ६. प्र० स० मंडइ छइ। ७. न० आइ, प्र० स० खेल। ८. अ० तबहि चंद्र बदनी। ९. अ० आज रहियइ घरे, न० इउ किम चालियइ।

(५०)

चउथि अंधारीय[१], मंगलवार[२]।
चंद उजवालउ करइ[३] घरि बारि।

बरत कीयउ[४] घरि आपणइ।
चउथि जुहारउ तुम्ह[५] सइंभर राव।
बचन अम्हारउ मानिजो।
हरषय कीयउ जोइणी६ छाइं।।भु०।।

म० में ८५ है, न० में ६५, अ० में ६६, प्र० में २.४५, स० में २.४८ है। किन्तु न० में .१, .२, .३ नहीं है।

१. अ० न० अंदारी नइ। २. अ० आदितवार, स० नई मंगलवार। ३. अ० स० घरि। ४. स० बरति करइ, प्र० बरत करा। ५. अ० प्र० स० [में नहीं है]। ६. अ० हरष करी रहियइ, न० हरष करेज्यो स० हरषि के पूजो, प्र० हरष का पूजो।

(५१)

पांचमि कउ दिन पहुतउ जी[१] आइ।
आवतउ होइ घरि[२] छंडी जाइ[३]।
तूं अजमेरां कउ राजीयउ[४]।
पुत्र[५] नहीं अछइ कलत्र[६] परिवारि।
सइंभरि थाभणइ बइसणइ[७]।
राइ चहूँआंण किउं उलग जाइ[८]।।भु०।।

म० मे० ८६ है, न० में ६६, अ० में १००, प्र० में २.४६, स० में २.४९।

१. अ० पहुतृइ छइ। २. अ० आज तुम्हें वर, न० आज मोनइ तू०, प्र० अठै तोए, स० ऊडत होइ। ३. अ० छाडि म जाइ, न० छोडि जाइ स० छोडो हो राय। ४. अ० राजची। ५. अ० न० प्रीति। ६. अ० न० नही तुम्ह कलत्र, स० कलत्र सहू, प्र० कलत्र लषमी। ७. अ० न० थारइ जी उग्रहै, प्र० स० धाणउ बइसणइ। ८. प्र० स० औलगि नीवारि।

(५२)

रहि रहि कांमिणि[१] अंचल छोड़ि।
उलग जाइ ले आवउ[२] कोडि[३]।

दे उडीसइ नइ[४] नग करउ[५]।
दुष्ट[६] वचन वोल्या[७] तिणि ठाइ।
छठि म्हे निश्चइ चालिस्यां[८]।
राजा९ उमाहीयउ उलग जाइ।।भु०।।

म० मे ८७ है, न० में ६७, अ० में १०१, प्र० में २.४७ स० में २.५०। किन्तु न० में .४ है :

कुवचन वोलण तणा ए पग।

और प्र० स० में .५, .६ हैं :

(.५) छउ सातन दिन आवीयो। (छठि को दिन ऊगीयो-प्र०)।

(.६) निहचइ औलगि चालणहार (चालै राय-प्र०)

१. अ० न० गोरडी। २. अ० स्यावां हीरा हम, स० हूं आऊं। ३. स० न वहोड़, प्र० वहोड़ि। ४. न० स० [में नहीं है]। ५. अ० गम करां। ६. अ० गोरडी, अरा० ये। ७. अ० वोलै जी वयण, स० वचन। ८. अ० चालण नवि धुं, न० मनद विचि वासिया। ९. न० मेलि (मेल्हि।

(५३)

राइ वचन सुण्या[१] राजकुमारि[२]।
पलिंग छोड़ी पडइ[३] धरती पडइ[४] नारि[५]।
वेटी राजा भोज की।
उठि उकरइ[६] वीसल राव।
कर जोड़ी[७] नाल्ह कहइ[८]।
स्वामी९ सातिम कउ दिन राणी मनावि१०।।भु०।।

म० मे ८८ है, न० मे ६८, अ० में १०२, प्र० में .२.४८, स० में २.५१ किन्तु न० मे .४, .५ हैं :

(.४) कर झाली ऊंची ल्यै वीसल राउ।
(.५) नाह कहउ सामी सुणउ।

और प्र० स० में .४ है :

उठूइ उछंकि लेइ (राय धरि-प्र०) अंकमाय (अकरबाल-प्र०)

१. न० स० सुणि हो। २. न० स० राजकुमार। ३. अ० स० छाड़ी, न० प्र० छोड़ि नइ। ४. प्र० धरती ढली। ५. प्र० [में नहीं है]। ६. अ० ऊंची हो झालि लै, न० कर झाला ऊंची लै। ७. अ० कर रु जोडि। ८. अ० गोरी भणइ, स० नरपति कहइ, प्र० नाहलो कवि। ९. न० प्र० स० [में नहीं है]। १०. अ० न० मेल्हि म जाइ, स० रहियौ हो राव, प्र० रह्यौ भूपाल।

(५४)

चंद बदनी धण दीठी[१] नाइ।
सिसहर[२] भाण[३] गिल्या जाणे[४] राह।
आंसूअ राल्या[५] मोर जिउं[६]।
कामिण यात[७] परीछी छइ वाइ[८]।
आठमि कउ दिन[९] आवीयउ।
बरत करइ[१०] जिहां[११] बीसलराउ ।।भु०।।

म० में ८९ है, न० में ९९, अ० में १०३, प्र० में २.४९, स० में २.५२।

१. अ० न० विलषी। २. स० सीसहरण। ३. स० जाणे। ४. न० जिम, स० छइ। ५. मासइ जी, म० झाल्या। ६. म० जोर जउ। ७. स० कत मिल्या तिणी ठाई, प्र० कंत परीसिणय। ८. अ० परीछवै, न० परछवौ। ९. अ० वरत करउ तुम। १०. न० करेज्यो। ११. न० तुमे, स० घरि, प्र० तिहां।

(५५)

नवमिइ घरि घरि मंगल होइ।
घरि घरि पूज रचइ[१] सवि कोइ।
नव[२] दिन पूजा नव रतां।

बल वाकुल थे बड़ा कराइ[३]।
भोग लेई जगदीश्वरि।
इणि षरि पूजइ[४] बीसलराउ।।भु०।।

म० में ९० है, न० में १००, प्र० में २.५०, स० २.५३। किन्तु न० में म० .५, .६, .७ के स्थान पर हैं :

(.५) इण परि वेग तूं पूज रचाइ (तुलना० ऊपर की .६)

(.६) देवी पूजी सु प्रसन हुई।

(.७) जिम मनइ मनोरथ सफला जी थाइ।

अ० में १०४ इसी विषय का है, किन्तु पाठ इस प्रकार नितांत भिन्न हैं :

चालस आज सो वीसलराउ।

राजमाहे हुवउ एक कहाउ।

जाल झलंपी गोरडी। (तुलना० स्वीकृत ५८.३)

तव आइ बोली पलंक कै छेह।

आज तौ कोई चाल नहीं।

नवमी के दिन कीजै तव नेह ।।भु०।।

१. स० पूज करइ। २. न० नवमइ। ३. न० ले भोस कराइ, स० पूजा रचौ ठाई, अ० पूजा रचि राय। ४. स० पूजइ छइ।

(५६)

दसराहा दिन हरषीयउ[१] राइ।
तुरिया वालि छोड़े वाजाइ[२]।
चउरासीया तिहां[३] आवीया।
बाजा हो[४] वाजइ घुरइ नीसांण।
राजा आहेडइ चालीयउ।
उडीय षेह नइ छाया[५] भाण[६]।।भु०।।

म० में ६१ है, न० में १०१, प्र० में २.५१. स० मे २.५४। इन्तु न० में .२, .३ हैं :

(.२) वाड हंती छोडया तुरा विलाइ।

(.३) चतुर चउरसिया सवि मिला।

(तुलना० स० ४५.४, स० ७०.३)

अ० १०५ इसी विषय का है, किन्तु पाठ इस प्रकार नितांत भिन्न है :

दसमी के दिन चढ़े राय भुवाल।

चतुर चौरासीया झाक झमाल।

आज आहेडउ रे चित बस्यउ।

पास ऊभी गोरी ढोली छै बाउ।

आवस्यां सांझ सहू।

समा बोल दीधउ तब बीसल राउ ।।भु०।।

१. न० आवियउ, स० पहुँचो छइ। २. प्र० स० पलाण्यां छइ छाये हो ठाई। ३. स० सहु, प्र० जीहां। ४. न० बाजिय। ५ओ। न० नइ चालियउ स० गइ सूझई, प्र० न० सूझे। ६. प्र० सूर।

(५७)

हरि बासर[१] दिन पहुंतउ[२] राइ।

चंद वदनी तव[३] लागी[४] पाइं।

बरत करिज्यो[५] घर आपणइ।

पारणउ कीजसी[६] द्वादशी योगि।

वली वइगा[७] पधारिजो।

स्वामी[८] तेरसि कइ दिन कीजस्यइ[९] भोग ।।भु०।।

म० में ६२, न० में १०२, अ० में १०६, प्र० में २.५२, स० मे २.५५ हैं। किन्तु न० में .५, .६ है :

(.५) दुइ दिन राजा धरि रहइ।

(.६) जिम वले कीजियइ तेरसी भोग।

प्र० स० में केवल .५ का पाठ न० के समान है : दोई दिन स्वामी थे विलंवज्यो।

१. अ० इग्यास कउ, न० इग्यार। २. अ० न० स० पहुतउ छइ। ३. स० धन। ४. अ० स० लागै छै। ५. न० करउ रे, स करू। ६. स० पारणो कीधो। ७. अ० मुहुरत भलै। ८. अ० प्र० स० ओंडमें नहीं है]। ९. प्र० कीज्यो।

(५८)

चउदिसइ वात[१] करउ[२] भूपाल।
सामुहीय छींक हणीय कपाल[३]।
चउरासिया[४] तिहि[५] वोलीया[६]।
सुणउ वर माल थे[७] सांभरो[८] राउ।
कुसल उलग करी बाहुडउ।
आवती तेरस उलग जाइ।।भु०।।

म० में ९३, अ० में १०७, न० में १०३/१, प्र० में २.५३, स० में २.५६/१। किन्तु न० में उपर्युक्त .२ तथा .३ के बीच अतिरिक्त है : चंदवदनी हम बीनवइ।

और न० अ० में .४ का पाठ है : सुणविवा लोचे (सउण बचालउ जी - अ० स०) बीसलराउ।

स० में भी .४ का पाठ अ० न० का है। किन्तु उपर्युक्त .६ उसमें नहीं है।

१. स० वरत। २. न० करेइ. प्र० जो कपाल। .४ अ० न० (+५) चतुर चउरासियां। ५. स० सहू, प्र० जीहां। ६. न० करइ पुकार। ७. प्र० [में नहीं है]। ८. सींभरा [राव]।

(५९)

अमावसि दिन[१] पहुतलउ[२] आइ।
पितरां[३] पूजि की[४] जीमावि नइ जोइ[५]।

आवउ प्रोहित राउ कउ।
सराध करावी[६] सइंभरां राइ[७]।
भोजन[८] भगति राणी करइ।
आगलि बइसि जीमासइ हो[९] राउ[१०] ।।भु०।।

म० में ६४ है, न० मे १०३/२, अ० मे १०८, प्र० में २.५४, स० में २.५६।

१. अ० न० स० अमावसि कउ दिन। २. अ० न० स० पहुतउ छइ ३. न० पितरांने। ४. अ० स० (+५) पिड भरावै छै राउ, न० षेट पराइउ जाइ, प्र० पिड भरावबा जाय। ६. स० सरायो, प्र० सरावी। ७. न० तूं बीसल राउ। ८. न० भाव। ९. अ० प्र० जीमाडियउ, न० णउमणियउ, स० जिमायो छइ। १०. न० आइ।

(९०)

रहु रहु गोरडी[१] मूंध[२] म रोइ।
ले लोटउ[३] मुष काजल धोइ।
फुटि रे हीया निसाहसी[४]।
सोनउ सोलहउ काइं कियउ[५] लोह[६]।
झलिहलि[७] दीयउ रे[८] फूटु नहीं।
राजा बीसल तणइ[९] रे विछोह ।।भु०।।

म० में १०३ है, न० में १२५, अ० मे १३४, प्र० में ३.४ स० में ३.३। किन्तु प्र० स० .४ है : पाथरी घडीयो कै त्रीषठ (त्रिणक लै०प्र०) लौह।

१. स० वेहनडी। २. स० बचन तू, प्र० मनह। ३ओ। स० लोटिका प्र० लोठी। ४. न० उसाससूं, स० नी बालूवा, प्र० नूं भालवुं। ५. अ० न० दहि कियउ। ६. न० छार। ७. न० (+८) आज हियानूं, प्र० (+८) झलहलायो। ८. अ० रेह, स० [मे नहीं है]। ९. स० साउणा प्रीतम तणो, प्र० म्हारा सगुणा स्वामी तणैं।

(६१)

जाकइ[१] घरि[२] हिरणाषीय नारि।
ते किम भमइ[३] परायइ[४] वारि।
कइ मूया कइ मारिया।
वलीय[५] न पूछीय[६] धण केरीय[७] आस[८]।
विरह विआकुल वीनवइ।
धण मरती नवि लावए बारि[९]।।भु०।।

म० में १२१, न० में १६६, अ० में १७५, प्र० में ३.२३. स० में ३.२५। किनतु .५ की पाठ न० अ० प्र० स० में इस प्रकार है।

नयण दुइ (ने-सै०) स्त्रावण (सारंग-स० प्र०) हुइ रह्या (रह्यो स०)। १. अ० न० जांह कै, स० जेकै। २. न० बार। ३. अ० किम जाइ जी, न० किम जावइ। ४. अ० अबरां के, न० अवरां तणी, स० पार कइ। ५. अ० न० जोवलीय, प्र० बलती। ६. अ० न० पूछीय। ७. प्र० धण की। ८. अ० बात, न० प्र० स० सार। ९. न० सार, प्र० स० बार।

(६२)

राय उडीसइ जी रहीयइ जाइ[१]।
राज अजमेरह माहि।
दस बरस इम[२] नीगमए[३]।
इग्यारमय[४] बरस पहुतउ छइ आइ।
राजा[५] अजीय न बाहुडउ[६]।
तेडावइ[७] बंभण वेग[८] पठाइ।।भु०।।

म० में १२६ है. न० में १७०, अ० में १८१, प्र० में ३.२४, स० में ३.२६।

१. प्र० रह्या उने ठाइ, न० रह्यउ रे जाइ, स० रहीयो। २. अ० बरस इग्यार। ३. अ० न० स० नीगम्या। ४. अ० बारमउ। ५. अ०

अ० राजा जी। ६. अ० वाहुडय्या। ७. अ० हिव तेड़िवा. न० प्र० तेड़ी, स० तेड़ी। ८. न० प्र० स० जणाइ।

(६३)

बरस बावीस[1] मउ[2] बालक[3] वेस।
दंत कबीडाया[4] किरुलसा[5] केस।
हाट सेरी मांहि[6] सोइज्यो।
कय रे जोइज्यो घरि राजदुवारि[7]।
कय रे गांधी कय हाट।
कइ एते ठउडे[8] जोइजो[9] सइंभरुवाच[10]।।भु०।।

म० में १४१ है, न० मे १८६, अ० मे १६८, प्र० में ३.३३, स० में ३.३६। किन्तु उपर्युक्त .५ के स्थान पर अ० न० में दो पंक्तियाँ हैः

कइ रे पटुवा के हाट मे (हाटड़ी-न०)।
कइ रे सुधा सुरियां की शाल।

और अंतिम पंक्ति के स्थान पर अ० न० में है :- छानउ नहीं राजा सइंभर वाल।

प्र० स० में उपर्युक्त .५, .६ नही है।

१. अ० बरस बतृतीस, न० बर बत्तीस। २। अ० अ० हो, न० स० कौ। ३. अ० बालै, न० चंगो रे, स० वाला। ४. अ० दंत कवाडय्या, न० कमाडय्या। ५. अ० कुरलित, न० अंकुलित, स० किलकिल। ६. अ० सेरी विच, न० सेरा विच, स० बिहार्‌या कइ। ७. अ० अ० सही राजदुवारि, न० स०राजदुवारि। ८. अ० (+६) ईये ठौड़े फिरि जोइज्यो, न० ए छोडे जोइ लीजो। १०. अ० वाल, प्र० राय।

(६४)

पंडीयउ बोलइ[1] धरह नरेस[2]।
एक सती[3] तो नइ[4] दीयउ रे[5] संदेस।

तू चिरजीवे[६] बहिनडी।
धणीय[७] म्हारउ[८] अछइ[९] सइभर राव।
तूं तउ[१०] उड़ीसा क धणी।
म्हाकउ[११] उलगाणउ धरि दे नइ खदाइ[१२] ।।भु०।।

म० में १५४ है, न० में २०३, अ० २२१, प्र० ३.४६, स० में ३.४९।

[किन्तु म० १५३ में ब्राह्मणजिस 'नरेश' से मिला है वह अजमेर का राजा है। न तो वह धार का है, और न उड़ीसा का।]

१. अ० वीनवै, न० स० कहै हो, प्र- स- कहै सूणी। २. अ० न० सुणउ नरेस। ३. स० (+४) उणी गुणवंती। ४. अ० तुम्हां, न० तूनइ। ५. स० कह्योउ। ६. अ० न० तू बीर हं, स० तू० बीरा में। ७. (+८)ओ। अ० म्हारउ उलगाणउ धणी, स० लाडिलो धणी, प्र० आमारौ प्रीउ। ८. अ० म्हाकउ। ९. अ० छइ। १०. प्र० स० तूं। ११. अ० न० थांकौ, प्र० स० थारउ। १२. अ० न० हम (मो-न०) धरहि पाठइ, स० घरि बेगि पाठव, प्र० घरि पडाय।

३
म० अ० स० के अतिरिक्त छंद

(६५)

पंडीया गोरडी[१] किण परि[२] दीठ।
संदेसइ कइ[३] मिस[४] आवीय नीठ[५]।
आंसूय मोरे लीया[६]।
जउ[७] दुबल[८] हुइय छय षरीय करंक।
आषंडीए ए रतनावली[९]।
तूट पडइ[१०] रतनालीय[११] धण कउ[१२] कंत ।।भु०।।

म० में १५९ है, अ० २५०, प्र० में ३.५३/१, स० मं ३.५६।

१. अ० बलि कहि गोरडी, स० पंडीया ते गोरडी। २. अ० किण विध, स० किणइ दुख, प्र० को दुख। ३. स० संदेसोई। ४. स० कह्यो। ५. स० धन नीठ। ६. अ० रालइ धण मोरज्युं, स० षडै जगी रेलिया। ७. अ० स० [भें नही है] ८. अ० स० दूबली। ६. अ० प्र० स० रतनालीयां। १०. स० पड़ैलो। ११. अ० स० [में नही है], प्र० लो। १२. अ० स० धणकेरो हो। १३. प्र० स० लंक।

(तुलना० .१ की स्वीकृत १०५.१ से)

(६६)

जउ जउ रे[1] पंडीयउ कहइ[2] संदेस।
तिम तिम झूरइ[3] धरह[4] नरेस।
कइ रे तूं कांमणि कांममी [5]।
कइ रे तुंरीय कउ[6] समउ[7] जंजीर।
कइ रे तूं बंधण[8] बांधीयउ।
एक दरसउ[9] तुम्ह घरह संभालि[10]।
साधण सूरइ[11] अति धणउ[12]।
थोहर आंगणइ[13] सूकीय[14] पाकी डाल[15] ।।भु०।।

म० में १६० है, अ० में २५१, प्र० में ३.५३/२, सं० में २.५७। किन्तु .७ के स्थान पर अ० में है।

अउर विमासण जन करउ।

१. स० जीम जीम। २. अ० दियइ रे। ३. अ० झूर। ४. अ० झुरइ। ५. अ० कामिणे कामिण्यो, स० कांमणी कामणै, प्र० कामण कामण्यो। ६. अ० रे जडियो, स० भरीयो, प्र० तुं तुल भरीयो। ७. अ० सवल। ८. अ० बंधणे। ६. अ० एक रिस्यउ, स० एक सरां, प्र० एक सरौ। १०. अ० तुम्हे घरि दिसा हालि, स० प्र० राइ धरह सीधावि। ११. प्र० स० नल। १२. प्र० स० प्यंगल हुई। १३. स० ओकई, प्र० थारै आंगणे। १४. अ० स० सूकइ। १५. अ० चंपा की डाल प्र० स० चंपा की माल।

(६७)

पंडीयइ चीरी दीन्ही राउ एइ हाथ।
कागल बाचतां झंपीयउ हाथ।
गुपति पणइ[1] तिण[2] वांचीयउ[3]।
नव जोवन नव रंगइ नेह[4]।
अहनिसि झूरइ[5] गोरडी।
वीसल राजा[6] तणइ रे[7] विछोह[8] ।।भु०।।

(तुलना० .१, .२ की क्रमशः स्वीकृत १०४.१ तथा म० १५६.८ से)

म० में १६१ है, अ० में २५२, प्र० में ३.५४, सं० में न.५८ है। किन्तु म० .१, .२ के स्थान पर अ० में हैः वलि वलि चीरीय हाथि ले राउ।

कागल वांचै हो सभर राइ।

और प्र० स० की .१, .२ हैः
(.१) दुष्ट गचन बोल्या तिठि ठाई (नृप जाय-प्र०)
(.२) ले चीठी आपी तणी राई (ले चीरो आप छै वाय-प्र०)

१. प्र० स० इसा गूपती बचन। २. अ० सवि, स० तो, प्र० उण। ३. अं० वांचीया, प्र० वंचीया। ४. प्र० नवरंगो नेह। ५. स० समरई। ६. स० सांभल राजा, प्र० सींभरया राव। ७. स० तणो, प्र० तणै। ८. स० सनेह, प्र० बिज्योग।

(६८)

चीरीय बाचतां[1] दीठउ राइ[2]।
ततषिण देव षधारीय आइ।
कांइ वीसल[3] विलषउ[4] भयउ[5]।
सूना पाटग[6] देस षंघार[7]।
कर जोड़ी राजा कहइ[8]।
देहि विदा बलि मुझहि मुरारि[9] ।।भु०।।

म० में १६२ है, अ० में १५३, प्र० में ३.५५, स० में ३.५६।

१. स० बांची। २. पेखियउ राइ, स० देखों तब राई। ३. स० राजा। ४.(+५) स० मन बिलखायो। ५. प्र० फार। ६. अ० सूनौ हो फाटण। ७. अ० देवगधार। ८. अ० राजा भणइ. स० नै राई बनाई। ९. अ० हिव मोहि म० मार, स० मौ मुगती दातार, प्र० गो श्री कृष्न मुरारि।

(६६)

चीरीय बांचीय[1] दुय जण[2] राइ।
वीनवय[3] जोसीय ऊभडउ[4] आइ।
उलगाणानय[5] बेग[6] चलाविज्यो।
वचन अम्हारउ[7] जाणि म जाणि[8]
ऊभडउ[9] जोसीय[10] वीनवइ।

गोरडी छंडिस्यइं हिव वलीय११ प्रांण ।।भु०।।

(तुलना० .३, .४ की क्रमशः स्वीकृत १०६.३ तथा २६.४ से और ५ की ऊपर की .२ से)

म० में १६३ है, अ० में २५५, प्र० में ३.५६, स० में ३.६०। किन्तु .५ अ० में इस प्रकार है।

जो किम राइ न चालिस्यै।

और प्र० स० .२, .३, .६ हैः

(.२) करणो जोसी ऊभौ तीणी ठाइ।
(.३) आज़ि चलावै देव हइ।

स० (.६) ये घरि चालो नू लावो हो वार।

प्र० (.६) ईम करतो देव की आण।

१. अ० बचावीय, स० बाचइ छइ। २. अ० दुहुं जणा, स० दोही। ३. प्र० स० करणो। ४. अ० ऊभीय, स० उभौ तिणि। ५. अ० ओलगाणा कुं। ६. अ० [में नही है]। ७. अ० वचन अम्हाकौ। ८. स० मांनो नू मांन। ९. स० कर जोड़े, प्र० कर जोड़ी। १०. स० दूज, प्र० नै। ११. अ० ततषिण।

(७०)

मलयइ लागी[१] वेरू[२] राना राइ[३]।
राजा नइ[४] राणीय लीयउ रे[५] बुलाइ।
वीसल दे[६] घर पाठवइ[७]।
नमि नमि दुइ जण[८] करइ जुहार।
राज करजो घरि आपणइ।
रांणी[९] कोडि टकां कउ[१०] नवसर[११] हार[१२] ।।भु०।।

(तुलना० .६ की म० ८१ से)

म० में १६६ है, अ० में २६१, प्र० में ३.६१, स० में ३.६३। किन्तु ऊपर की .६ अ० में यथा .४ है, और ऊपर की .४, .५ के स्थान पर यथा .५, .६ है:-

भावज म्हांकी कुं सौंपज्यो।

गिहर को पीहर अछइ भोज की धार। (तुलना० स्वीकृत १०८.६)

स० में .१, तथा .२ परस्पर स्थानांतरित है, और प्र० स० .३ है:

उलिगाणउ घरि चालियो। (तुलना० स्वीकृत १०६.३)

१. अ० स० गलहि लागी, प्र० गलि लगाय। २. अ० वेऊ, स० अरू, प्र० तिहां। ३. अ० रूना हो राइ, स० रूदन कराइ, प्र० दोय रोय। ४. अ० पाट मा दे, प्र० राजा। ५. स० लेइ। ६. स० उलिगांणउ। ७. अ० हिव चालिस्यै। ८. स० दूणौ। ९. स० राणी नइ दीयो। १०. प्र० राणी [ट] का कोट को। ११. प्र० दीधो। १२. प्र० हार।

४

म० स० के अतिरिक्त छंद

(७१)

चालउ उलगाणउ लेइ छइ सउण।
राजा नइ चालतां बरजस्यइ कउण।

सात बरस आगे रही[१]।
चीरी दे न देइ[२] नवि मोकल्यउ कोइ।
हिवइ कइ गोरडी तपइ।
इसीय बातां नहु जुगतीय न होइ ।।भु०।।

(तुलना० .१, .२ की स्वीकृत ५७.१, .२ से)

म० में यह ५३ है, प्र में २.३३, स० मे २.३६। किन्तु प्र० स० में १, .२, .५, .६ इस प्रकार है:

(.१) ऊलग जाण सजौ कियो–प्र०) समदाव।
(.२) हसि करि गोरडी पूछइ राव (नाह–प्र०)
(.५) लाहा लेता जनम गौ।
(.६) तुय करे (तै करै राजा –प्र०) तिसी तोथी (तुझ थी–प्र० होइ।

१. सं पेहलो रह्यो, प्र० पहैलो रहूँ। २. स० जणह, प्र० झिण। ३. प्र० मत मोकलो।

(७२)

पंडीयउ चाल्हउ जगनाथ कइ देस।
छंडीया गढमढ[१] सयल असेस।
छंडीय[२] परबत दूभर घाट।
उत्तर दिसहि[३] चालीयउ[४]।
चालीयउ प्रोहित राव कइ।
देस उडीसय प्रोहित राव कइ।
देस उडीसय[५] पहुतलउ[६] जाइ ।।भु०।।

म० में यह १४८ है, प्र० में ३.३७, स० में ३.४०। किन्तु स० में ऊपर की .५ यथा .३ और .४ तथा .५ हैं:

(.४) जाइ पर भूमि कियो प्रवेश।
(.५) घाठ दुर्घट ते लांघीया।

१. प्र० स० मंदिर। २. म० छंडीया चउवारा चउपंडीया (तुलना० स्वीकृत ६२.३)। ३. प्र० दिसा जो। ४. प्र चालीयउ वाट। ५ स० सातमइ मास। ६. प्र पौहूतो।

(७३)

पंडीयउ पूछ्य किहां परधान।
राजा कहइ[1] विवाणउ मान[2]।
एक अंतेउर वाहरउ।
देस उड़ीसा कउ परधान ।।धु०।।

(तुना० .३ की म० १०६.५ से तथा .४ की स्वीकृत १०.२ से)

म० में यह १५५ है, स० में २२१। किन्तु स० में ६२.४, मात्र मिलती है, जो स० .६ है, शेष निम्नलिखित है:

(.१) पांडयो उसारै तेडयौ छइ राई।

(.२) छीनी उलगी मांई सूं कही।

(.३) नां ईम कहीयो देव सूं।

(.५) लाख पाखर आंगइ जुड़इ

१. स० राइ चलायो। २. स० चउगिणइ मान।

५
मं० न० अ० के अतिरिक्त छंद

(७४)

दक्षिण भूम कउ[1] एह विचार।
सनांन तणउ जिहां नहीं आचार।
कांचली नहीं नारी तणइ।
पहिरण की नवि जाणइ ए सार।

कछोटा तिहां[2] पहिरणइ।
बालउ देस नउ जनम[3] अवतार ।।भु०।।

म० में यह ४१ है, न० में ५३, अ० मे ५५। किन्तु न० अ० में .४ है:

(न०) लीह नइ लाज नहीं जिण देस।

(अ०) लाज नै लीह को नहीं सचार।

१. अ० न० देस कउ। २. अ० जिहां। ३. न० तणउ रे आचार।

(७५)

बात[1] रीति हुई[2] मारू कइ देस[3]।
रांतीय कांछली फूटरा वेस।
नीली धड़ ऊपर[5] भली[6]।
झीण लंकी[7] महा[8] दीसइ ए नारि[9]।
सरस कंठ ति सोहामणउ ।।भु०।।

(तुलना० .४ की स्वीकृत ३४.४ से)

म० में यह ४३/१ है – केवल छंद-संख्या नहीं है, न० में ५४/१, और अ० में ५६/१।

[म० न० अ० तीनों में केवल ५ पंक्तियाँ इस छंद में है, जब कि शेष सर्वत्र ६ पंक्तियों से कम का छंद नहीं है।]

१. अ० बारूय, न० वारूं है। २. अ० न० [नहीं है]। ३. अ० न० मारू तणै देस। ४. अ० न० लोवड़ी। ५. अ० न० कांचली। ६. अ० पहिरणै, न० तिहां पहिरणइ। ७. अ० पातलै लंकि, न० पातकी लंक। ८. अ० नै, न० नइ। ९. अ० भीनहि हो वानि, न० फूटरी ए नारि।

[७६]

तीरथ धणा तिहां[1] मारूकइ देस[2]।
कुच दुइ फूटरा अधर सविसेस।
रूप अधिकी छइ मेदनी।

सगुण गुणवंतीय नइण बिसाल।
देषतां मानव चित हरइ।
मृग नइणी अरू अबला जी बाल ।।भु०।।

(तुलना० .३ को स्वीकृत ३४.३ से, और .४, .५, .६ की क्रमशः न० ६१, तथा अ० ६५-की .६, .४, .५ से)

म० में यह ४३.२ है, न० में ५४/२, अ० में ५६/२ तथा ५७।

अ० में निम्नलिखित पंक्तियाँ .१ अनन्तर अधिक हैः

वेसि भलै गोरी कामिनी (भला तिहां नार का–न०)।
जिहां ठंडा हो पाणीय निरभय देसि।

और अ० में .२ अनन्तर अधिक है–वयणे हो बांकीय बोलणी।

किन्तु अ० में म० ५३.३ यथा उसकी ५५७.६, म० ५३.२ यथा ५६.२ और ऊपर की पंक्ति तथा ५७३ है। छंद का संगठन पूरी रचना में कहीं इस प्रकार नहीं हुआ है। इसलिए यद्यपि म० पाठ में एक पंक्ति कम है, किन्तु अ० के पाठ से उसकी ठीक पूर्ति नहीं होती।

१. अ० न० छै। २. अ० मारूअ देसि, न० मारू मणइ।

(७७)

नीका हो[१] उलग पट[२] नीका हो[३] वेस[४]।
बांह सुआली[५] भूलइ केस[६]।
लंक चीताह कउ धण्ह ज्यउ[७]।
डसल[८] भुवंगा[९] अहर प्रवाल।
कठन पयोहर तनक स्याह।
धन फेरइ सउ सउ वार ।।भु०।।

(तुलना० .६ की स्वीकृत ४८.८ से)

म० में यह ६९ है, न० में १०५ और अ० १११। किन्तु न अ० में उपर्युक्त .६ नहीं है, और अन्त में ये तीन पंक्तियाँ और हैः

इसडीय अउर न राजकुंआरि।
राज जी देखि कर मोहियउ।

कर दोइ सुं करै काम विकार।

और न० मे म० .१ के पूर्व भी निम्नलिखित दो अतिरिक्त पंक्ति हैः

जांह के घर हरियाषी नारि। (तुलना० म० १२१.१)

तांह कउ नाह उलग जाइ। (तुलना० म० ६८.६ तथा म० १२१.२)

१. अ० चंगा हो। २. अ० चरण, न० उलपट। ३. अ० न० चंगा हो। ४. न० वाम। ५. सुहालडी, न० मुहाली (सुहाली?)। ६. अ० कडरुल्या केस. न० रुल्या केस। ७. अ० न० धण हर्‌यउ। ८. अ० न० दसण। ९. अ० न० सुचंगा जी।

(७८)

गोरडी[1] बोलइ हो[2] धरह नरेश[3]।
एक सती तोनय उ रे[4] संदेस।
तू वीरउ उवा[5] बहिनडी।
धणीय म्हारउ[7] अछइं[8] संभर राउ।
राउ[9] उडीसा कउ[10] धणी[11]।

धाकउ उलगाणउ म्हांकय१२ परण पठाऊ१३ ।।ध्रु०।।

म० में यह १३८ है, न० में १८१, अ० में १६२। [किन्तु इस छंद में 'धरह नरेस' को सम्बोधन है, और .५, .६ में उड़ीसा के राव को। यह ध्यान देने योग्य है।]

१. अ० (+२) गोरी कहइ सुणउ, न० गोरडी कहे। ३. अ० न० पूरब नरेस। ४. अ० न० तो नय दीयउ रे। ५. अ० न० हूं। ६. न० थारी बहिनडी। ७. अ० न० म्हांकउ। ८. अ० छइ। ९. आ० तं तउ, न० देस। १०. न० उड़ीसइ जे। ११. न० जोइआ। १२. म्हे। १३.

घरे पठाइ।

६
म० अ० के अतिरिक्त छंद

(७६)

दया विहूणउ वीसलराउ[1]।
मंदिर छोडि बिदेसइ[2] रे जाइ[3]।
हूं छउ षरीय दयामणी।
सांसह[4] जोवन विरह की झाल।
वासइ मोर सुहामणा।
दूभर श्रावण[5] पावस[6] कालि ।।भु०।।
(तुलना० .५ की पं० ८६.५ तथा अ० ११६.५ से).

म में यह ८५ है, अ० में १४१। [ऊपर की समस्त तिथियाँ आश्विन की है, जव की इस छंद में श्रावण पावस कहा गया है। यह दर्शनीय है।]

१. अ० थे वीसल राउ। २. अ० परदेसह। ३. अ० जाउ। ४. अ० सामी हो। ५. दूर रयणि। ६. अ० जिउं पावस।

७
पं० न० अ० के अतिरिक्त छंद

(८०)

राजमतीय कुमरीय[1] मन स चितवइ[2]
हसिवि[3] बेटी वावा पहि[4] जाइ।
सुणउ नरेसर वीनती।
रूपइ कंद्रप मोहिनी जाणि[5]।

सुरगिहि मोह छइ[६] देवता।
जोइज्यो वर अति सगुण[७] सुजाण ।।भु०।।

(तुलना .६ की स्वीकृत ७.५ से)

पं० र० ग्या० ना० में यह ६. है तथा अ० न० में ७।

[अपने रूप के बारे में पिता से इस प्रकार बाते कहना जैसी .३, .४, .५ में है असंभव है, और उसी प्रकार हँसते हुए .६ की बात कहना भी।]

१. अ० नामइ कुमरि। २. अ० मन भाइ, र० ना० मनहि चिताय, न० मनह सुहाइ। ३. र० हस हस बेटी, न० हसतीय बेटी, ना० हसहवि। ४. न० बाबा पासहि। ५. र० मोही जाणि। ६. अ० मोहइ। ७. न० इक सगुण।

(८१)

तठइ व्याहण[१] चालियउ बीसलराउ[२]।
चिहुं दिसे थाणा[३] भोज पठाइ[४]।
तुरीय भला चढ़ि आविज्यो[५]।
जे थाणा थाटते वोलावीया राय।
कुलीय छत्तीसइ जे चड़इ[६]।
वाजा हो वाजणा अवर मढ़ाइ[७]।
सात सहस पाइक गुडइ[८]।
भाट बाभण तठइ[९] करइ वषाण।
मयमत हस्ती सिंगारजइ[१०]।
इसि परि चालीयउ११ राइ चहुआण१२ ।।भु०।।

पं० मे यह १४६ है, ग्या० में १५, ना० न० र० में १६, अ० मे १७। किन्तु न० अ० मे ऊपर की .४, .५, नही है, और .१ के अनंतर निम्नलिखित पंक्ति अधिक है:

चतुर चउरासीया कीजै संभाल।

१. अ० न० परणवा। २. अ० चालीयहु वीसल भूपाल, न चालइ वीसल राउ। ३. ना० थीणा। ४. अ० भोज का। ५. अ० न० तुरीया भला चढ़ि आवज्यो राय। ६. र० कुलीय छत्तीसइ जे चढ़इ। ७. अ० ऊपर मढाइ। ८. अ० सात सहस पायक चिल्या, न० पास सहस पाए पडै। ९. अ० न० वांभण भाट तव। १० अ० न० मयमत्त हत्ति सिगारीय। ११. ना० इण परिचालीयो, अ० इण परिचाल्यउ, न० परणिवा चालियउ। १२. ना० वीसलराव।

(८२)

संजइ छइ[1] राजमती कउ वीर[2]।
माणिक मोतीय जड़्योउ जंजीर[3]।
लाप सवा पापरि पडइ[4]।
पालषी वइठी[5] लप सवा एक[6]।
आगइ हो गइवर वहु गुडइ[7]।
पाला हो पाइकां अंत न पार।
सालहेलउ हुवउ[8] राइ परिवार।
मोटउ हो क्षत्री मालवइ।
तठइ तुरीय संपीया चमर ढुलाइ ।।भु०।।

पं० में यह २३/१ है, ग्या० में २४, ना० न० र० में २५, अ० में २६ किन्तु ग्या० र० अ० में .९, .१० नहीं है। ['वीर' शब्द 'वर' के लिए असंभव लगता है]।

१. अ० जोवै, न० जोवइ छइ। २. न० वीद। ३. अ० जडाउ जंजीर। ४. ना० लाप सचाइक पयक पडै। ५. अ० न० पालकी वइठा छै। ६. अ० न० सहस पंचास। ७. अ० न० ना० आमइ गयवर वहु (अति–न०) दुड़इ। ८. अ० सामहलउ हूयउ, र० ना० सामुहउ हूई हुआ ना०।

स्वीकृत १३.४ में है : "पालषी बाइटा छइ सहस पंचास।' इसमें इसका ढाईगुना कर दिया गया है : 'पालषी बइठा लख सवा एक।'

(८३)

जानीवासइ पधार हो[1] राइ।
राज परोहित लीयौइ बोलाइ।
व्याह करावण देइ छइ दान।
अरथ भंडार नइ अति घणउ मान।
दीन्हा छइ तेतीय हांसला[2]।
तुम्हा हांसीय सेरिसउ कोटि हिंसार[3] ।।भु०।।

पं० में यह ३३ है, ग्या० मे ३५, न० में ३७, ना० र० में ३६, अ० में ३९। किन्तु ग्या० न० ना० अ० में पं० .२, तथा पं० .३ के अनन्तर क्रमशः निम्नलिखित पंक्तियाँ और हैं जो पं० में छूटी हुई हैं :

आवि पुरोहित रावला राव आ (आवो पुरोहित राव का–र०)।

सुंप्या खीरोदक सावदू।

र० में इनमें से प्रथम है, द्वितीय नहीं है।

१. अ० कोट सिगार।

(८४)

जूवा रमण[1] बइसारइ छइ[2] राय।
सात सोपारी फूलि[3] कियउ पसाउ[4]।
सवा लाख कउ मूंदडउ[5]।
राजा जी जीतउ छइ साते दाइ।
राजमती बिलषी हुई[6]।
हसइ मुलकइ वीसल राइ[7]।।भु०।।

पं० में यह ३४ है, ग्या० में ३६, न० में ३८, र० ना० में ३७, अ० में ३८

१. अ० जूवटइ रमणि। २. अ० न० ना० बइसारीयउ। ३. अ० फल न० फूले, ना० फूलां। ४. अ० कीधउ पसाय, ना० की माल, न० पसाय। ५. र० अ० मूद्रडउ, पं० समुदडउ। ६. अ० भई। ७. न० तठइ बीसल राइ, ना० तब वीसल राव।

(८५)

हुई पहिरावणी[१] हरषीयउ राय।
दीन्हां तेजीय कूलह कबाइ।
हीरा नइ[२] माणिक धणा।
अणपरि[३] पहिरावीयउ जात दुवारि[४] ।।भु०।।

(तुलना० .१ की स्वीकृत २५.१ से तथा .२ की स्वीकृत ११.२ से)

पं० में य ३५ है, ग्या० में ३७, न० में ३६, ना० र० में ३८, अ० में ४०। किन्तु अ० मेंइसकी छूटी हुई पंक्तियाँ भी हैं। :

(.४) हस्तीय एक सौ दीया सिणगारि।
(.५) बांदा बांदीय अति धणां।

न० में केवल उपर्युक्त .४ है, उसमें भी .५ नहीं है।

१. ना० दीन्हा छै। २. अ० न० ना० हीरा अरु। ३. र० अ० इण परि, ना० इणि। ४. जाति पसार।

(८६)

राज अरु गोरडी[१] पडीय छइ काणि[२]।
जाणि कि चाक दीधी षलहाणि[३]।
राजा गर्व्व बोलीयउ[४]।
सो बचन गोरडी[५] म्हाकउं क्यउं न सुहाइ[६] जीभ दोषउ[७] दुह जिण हूयउ[८]।
तिणि वचन बांधियउ[९] उलग जाइ ।।भु०।।

पं० में यह ५३ है, और ग्या० में ५७. न० में ६०, र० में ५७, ना० में ६५, अ० में ६३।

१. अ० हिव राजा नै गोरडी, ना० राजा नै गोरडी। २. न० अछंइ कांणि। ३. ना० पणहार। ४. अ० गरब करि बोलीयउ, न गरबा बोलीयउ। ५. अ० इसा वचन गोरडी, ना० सो बचन। ६. अ० गोरी तो न सुहाइ, न० किम न० सुहाइ। ७. अ० जीभ कउ दोष। ८ अ० न बिहु जण हुआ, ना० दो भजण हुआ। ९. अ० वचन कउ बोधीयउ।

(८७)

ना हमि गरजू भोज की धार।
ना हमि गरजू अरथ भंडार।
ना हमि गरजू हीरा तणा।
गोरी अधिक संराहीयउ पूरब्यउ राइ।
हमि तउनि[१] किउं करि गिण्या।
ऊलग कइ मिसि[२] देषण जाह[३] ।।भु०।।

पं० में यह ५७ है, ग्या० में ६१, न० में ६३/२, र० में ६१, ना० में ६६, अ० में ६७।

१. अ० हमि नातइन, न० हम नइतइत। २. अ० उलगण कइ मिसि। ३. न० जाउं।

(८८)

हउ तउ बोलतों बोलइ[१] थीइ छन सुहाइ[२]।
तउ धण पाहण[३] लीयउ उचाय४।
सो हम ऊपरि[५] रालीयउ।
हिवइ दूसण[६] किणइ न देणउ जाइ[७]।
ऊछइ तपि हरि ध्याईय।
तउ प्रीय बाल[८] अम्ह हीय जाइ[९] ।।भु०।।

पं० में यह ५८ है, ग्या० में ६२, न० में ६४ , र० में ६२, ना० में ७०, अ० में ६८।

१. अ० न० हूं तौ बोलू (बोला—न०) र० हो तो बोलतां बोल। २ अ० तुम्हां सो, न सुहाइ, र० तीरव नइ ना सुहाइ। ३. अ० तउ धण पाथर। ४. अ० लीयउ रे बुलाइ। ५. र० अ० सो पग ऊपरि। ६. अ० न० हिव दोस। ७. न० न कहि देणउ हो जाइ। ८. अ० तउ मोही छांडी, न० तउ मुझ मेल्हा। ९ अ० न० प्रीउ उलग जाइ।

(८६)

तइं तउ ऊछ्ज गोरी बोलिया बोल।
तइं नवि राषीयउ प्रीय तणउ तोल।
तइं कहउ[1], तिम कोई, नवि कहइ।
म्हे राजा पाट सवि[2] चलित्रा मेल्हि[3]।
वचन थारा भणी[4] नीसरा।
हस्तीय बं[illegible] मेल्हि ण जाइ[5]।
सांभरि म्हेलिस्यां नवलषी।
म्हे तउ सांच करेस्यां६ पूरव्या राइ ।।भु०।।

पं० में यह ५९ है, ग्या० में ६३. न० में ६५. र० में ६३, ना० में ७१ और पुनः ७७, अ० में ६९।

न० ना० में .५, .६ नहीं है।

ना० में यह ७१ है, किन्तु ना० में ह पुनः यथा ७७ भी है।

१. र० तइ कह्यो। २. अ० म्हे तउ राजनइ पाटि सवि। ३. अ० टालिस्यां मेटि, र०न० चालिस्यां मेल्हि। ४. अ० वचन विरोध्या। ५. अ० मेल्हिस्यां गाउ, र० मेल्हिस्यां जाइ। ६. अ० भहे तो सेव करस्यां सही, न० म्हे तउ सेव करेस्यां।

(६०)

तिन गुनह वकसइ[१] स्वामी सहु कोइ[२]।
सुख जे करहि[३] सु तुम्ह थीइ होइ[४]।
थे न्हा लीजउ[५] भर षमा[६]।
तइ तउ एक वच[७] कहि बाली देहि[८]।
लालच करि कहइ कामिणी।
किम उलग चालइ[६] नवल सनेह[१०] ।।भु०।।

पं० में यह ६० है, ग्या० में ६४, न० में ६६, र० में ६४, ना० में ७२, अ० में ७०।

१. र० स्वामी तानि गुनह बकसइ, न० तिन मुहत बगसइ। २. अ० सहु कोइ। ३. अ० सुख करूं जउ, र० सरब जे करउ, न० सरस करउ हूजे। ४. म्हाके मनि होइ। ५. अ० थे हिवै होवौ जी। ६. न० भारी षमा। ७. अ० एक ही वचन। ८. अ० दीजिए छेह। ८. किंउ उलग चालिस्यउ। १०. अ० नवलै जी नेह।

(६१)

उलग जाता किम रहइ नारि।
बोलीया बोल ते चित्तह विचारि[१]।
बोल्यउ हो पालउ आपणउ।
उतइ षाणि उग्राहिस्या[२] त जिन रहइ।
बेगि मिलिस्यां तुझ नइ आइ[४] ।।भु०।।

पं० में यह ६१ है, ग्या० में ६५, न० में ६७, र० में ६५, ना० अ० में ७३। किन्तु आगे यह छंद पुनः पं० में यथा ८७, अ० में यथा ११७, र० में यथा ६२, ना० में यथा १००, और न० में यथा १११ है।

१. अ० न० घणउ म बोलि हे मुगध गमारि। २. अ० तठइ खांणि

उगराहिस्यां न० कुवइ उग्राहिस्यां। ३. अ० म्हांको चित तुम्ह पास छै गोरी। ४. अ० तोसूं जीवता आइ, अ० बली तुझवै आइ।

(६२)

वरिइज नइ रे धण[1] बरिसता मेह।
साठि दिवस लगइ[2] तुज सुं सनेह।
मिलिस्यां बरस बारह पछइं।
मनह उमांहा[3] नइ तू हकास[4]।
सांवरि[5] नीर मचीर भरि।
कलह कामणि तणउ नेह निवास[6] ।।भु०।।

पं० में यह ६५ है, ग्या० में ६६, न० में ७१, र० में ६६, अ० में ७५। किन्तु .३ र० ग्या० ना० न० अ० इनमें इस प्रकार है :

नाल्ह रसायण इम भणै।

१. अ० न० बरज न० हो धण, र० बरजि नइ हे धण। २. र० अ० सात दिवस लगि ३. र० मनहि उहिकाही तो कास। ४. अ० न० करूं प्रवास। ५. र० सांभर। ६. अ० न० नेह बिणास।

(६३)

कातिग स्वामी तू आवण देहि।
कुदिन न चालिजइ[1] बरिसइ हो मेह[2]।
लालच करि कामणि कहइ।
पगि पडी हुइ[3] नव कर जोडि[4]।
मुषि माहि करइ दसे आंगुली[5]।
हा हा जोवनइ माहि म छोड़[6] ।।भु०।।

पं० में यह ६८ है, ग्या० में .७५, न० में ७४, र० में ७२, ना० में ८०, अ० में ७८।

१. ना० को दिन चालिनै। २. अ३ वरसतै मेह : ३. अ० न० ना० पगि पड़ि वीनवै। ४. अ० न० दुइ कर जोड़ि, ना० वे कर जोड़ि।

५. ना० आंगुरि। ६. अ० न० भर माहे हमहि न० (मत–न) छोडि, ना० मम छोड।

(६४)

गहिली हे मुंधि कि षरीय गुवारि[1]।
हीयडलइ नयण नही हे नारि[2]।
तीरथराज[3] प्रयाज जा४।
मो हइ तिरी[5] उढीसा तणी जगीस[6]।
रहस्यां पहर[7] त पल घडी।
तउ सषी चालिस्यां[8] विस्वा वीस ।।भु०।।

पं० में यह छंद ६६ है, ग्या० में ७६, र० में ७३, न० में ७५, ना० में ८१, अ० ७६। किन्तु ना० में .५ का 'रहस्या' तथा .६ का 'विस्वास' शब्द नही है।

१. अ० तुं खरी गमार, र० मूंध षरी गमार, ना० मूंध तू षरीय गिमार। २. अ० र० ना० थारइ नहीं नार। ३(+४). ना० तरथरा गया ज्यु। ४. अ० न० प्रयाग सुं। ५. अ० मोंहि, र० मोहै तिउं रा, ना० मोनु तौ। ६. अ० उड्डीसा की खरीय जगीस, ना० उडीसा तणी जगीस। ७. र० रहस्यां, ना० म्हें तो रहस्या। ८. अ० उलग चालिस्यां।

(६५)

जइ धण मरिसी[1] गंग माहे जाइ।
उलग जात[2] न रहाइ३।
अस वचन[4] किम बोलिजइ।
मरस्या जे[5] निकुलीणी नारि[6]।
तुं तउ कुलवंती[7] किम मरइ।
एतउ झोर मिसि[8] छोडी हे नारि ।।भुं०।।

पं० में यह छन्द ७१ है, ग्या० में ७४, ना० मे ८३, र० में ७५,

न० में ७७, ना० में ८३, अ० में ८१। किन्तु अ० में अंतिम के स्थान में निम्नलिखित तीन पंक्तियाँ हैः

(.४) मइ (तू–न०) नवि छोडी तू चितह उतारि।

(.५) इवइ गोरडी तू तपै। (तुलना० म० ५३.५)

(.६) अजुगती वात न वोलीय नारि। (तुलना० म० ५३.६)

ग्या० न० में इनमें से .४ मात्र है।

१. न० कइ धण मरसी। २. र० अ० ना० ऊलग जाता जी। ३. अ० न० तोई न रहाइ, र० ना० तो न रहाइइ। ४. र० अ० ना० इसी वचन। ५. र० न० अ० ना० मरस्यइं जे। ६. न० अकुलीणीय नारि। ७. ना० इस कुलवंती। ८. ना० सीता हे रामै।

(६६)

तिथ महूरत सो गिणइ नारि[1]।
व्याहण चालिजइ[2] कोइ कुवारि[3]।
ऊलग जातां हो[4] दिन किसा।
वचन का दाधां[5] हो निसरि जाहि[6]।
भरणि भद्रा[7] ले नवि गिणइ।
झूठी हे गोरी म्हानइ[8] षुणस न० देइ ।।भु०।।

पं० में यह छंद ७३ है, ग्या० में ७७, ना० में ८६, न० में ८०, र० में ७७, अ० में ८४। किन्तु अन्त में ये दो पंक्तियाँ अ० में और हैः

रइ न सकै सै भर धणी।

वलि वीजै चालिवा त्रे वडि थाइ।

१. र० सो गिणै। २. अ० व्याहण चालइ जउ। ३. अ० न० राजकुमारि, र० काइ कुवारि, ना० काइ नूं वार। ४. अ० उलग जातां रे। ५. न० वचन का दीधा। ६. ना० नीकल जाय। ७. अ० भरणी नइ भद्रा। ८. अ० न० म्हारा षुणस म लाइ।

(९७)

कनक कचोला[१] हुनं विष हुआ[२]।
विष बल्ली[३] नवि छिवणी जाइ[४]।
अमृत फल था[५] ते विष हुया[६]।
कडवी[७] जिसी नली होइ[८]।
मरम परायउ नवि छेदियइ।
तेतलंउ अण[९] दुषत मार म जोइ[१०] ।।भु०।।

पं० यह छंद ८३ है, ग्या० में ८७, न० में ९०, र० में ८८, ना० में ९६, अ० में ९४।

१. ना० कनक कचोलडै। २. दोनुं विष हूआ, न० विष हुआ, आइ, ना० दुन विष थाय। ३. अ० विष की रे बेलड़ी, न० विलवणी। ४. अ० न० नवि पीवणी जाइ; र० नवि चाबणी जाइ, ना० नव पीलणी जाइ। ५. अ० अमृत का फल, ना० अमृत का फल, ना० अमृत फल। ६. अ० ते विष समा, ना० ता विष हुआ। ७. अ० कड़इ रे, ना० कडसब। ८. अ० वउली, जिउं धण होइ, र० न० जिसी नीबोली (निवली—न) होइ, ना० बास नीबोहली होइ। ९. अ० इणि विधि, ना० ते तो अलपत, र० ते तो अषत, न० तूं तउ अति। १०. अ० दुखिणी अधिक वा जोइ, र० तुषत भारणीय जोइ, न० भाटणी जोइ।

(९८)

उलग जातां किम रहा नारि।
बोलीया बोल नइ चितइ विचारि।
बोल्यउ पाला म्हें तउ आपणउ।
बइसि उगाहिस्यां हीरा की षांण।
मृहि विलषाणइ जिन रहइ।
म्हें तउ वइगा आविया देषे हे नारि ।।भु०।।

पं० में यह छंद ८७ है, ग्या० में ६०/२, न० में १११, र० में ६२, अ० में ११७, ना० में १००। और किन्तु पं० में यह छन्द पहिले यथा ६१ आ चुका है, अ० में यथा ७१, र० में ६५, न० में ६७, तथा ना० में ७३।

(६६)

तुरीय पलागणीया[1] वीसल राउ।
गोरडी दीन्हीय[2] लांबीय बांह[3]।
आषडीया जल नवि रहइ४।
जाणि की सरवर फुटी छइ पालि[5]।
दूमइ लायउ[6] वाहला[7]।
झूरतीय छोडिय[8] संभरि वाल ।।भु०।।

पं० में यह छंद ६१ है, ग्या० में ६६, र० में ६६, ना० में १०५, अ० में १२२, न० में ११६।

१. अ० हिव तुरी पलाणिया। २ अ० दीधी हो। ३. र० लांबीय धाह। ४. अ० फूटिय पाल। ५. र० फूटीय पालि। ६. अ० न० दुख लायौ मोकुं (मूनइ–न०) । ७. र० अ० बाल है, ना० बालहउ। ८. अ० झूरती छोरि बयउ, र० झूरती छोडिय, न० झूरती छोडि गउ।

(१००)

आगइ[1] प्रिय की वइरणि[2] नदीय वनास।
नव साधण धरि[3] मंडइ आस[4]।
चांबिल चठय[5] नइ उतर्‌या[6]।
इव तउ बरिसि[7] सुहावा मेह[8]।
नदीय वहइ प्रीय बाहुडइ।
दुध पाणी जिम[10] वधइ सनेह[11] ।।भु०।।

पं० में यह छंद १०० है, ग्या० में १०६, र० मे १०५, ना० में ११४, मे १२१, अ० में १३०।

१. ना० आवै। २. र० बयरणि, ना० प्रीय कै। ३. अ० साधण बइठी, ना० साय धण धरि। ४. अ० न० छंडिय आस। ५. अ० बोल चढ्या। ६. अ० नव ऊतरै। ७. अ० ना० हिव तूं तौ बरस, र० अ तो बरिसिं। ८. अ० सुहारै मेह, न० सुहावा महियलि मेह। १०. अ० दूध पाणीइं। ११. अ० वहै सनेह।

(१०१)

थे भली सराही दवदंती हू नारि।
बारह बरस नल कीन संभलइ[१]।
जे चित आवइ सांभरि धणो।
जाणउ जे[२] अपहछ करउ[३]।
तउ तउ धरणी माता[४] लइ नइ विहार[५] ।।भु०।।

पं० में यह छंद १०४ है, ग्या० में ११०, र० में १०६ ना० में ११८, न० में १३०, अ० में १३६। किन्तु ना० र० न० अ० में पं० की छूटी हुई पंक्ति ४ भी है —

(ना० र० न०) हियइडलै दुष न सहणो जाइ।
(अ०) हियडलइ दुख को नहीं पार।

१. अ० नल न कियउ संभार, र० न० नल कीन सभाल, ना० न० [ल] कीधी संभारि। २. अ० जाणु जाइ। ३. अ० आपच करू, र० न० आपहच करूं, ना० आपहच करौ। ४. अ० ना० तूं तौ धरतीय माता, र० तउ धरतीय माता, न० कू तउ धरतीय माता। ५. अ० हे देहि विहार, र० लै विहार, ना० देइ विहारि।

(१०२)

उवा तउ सूनइ मंदिरि छइ बइठीय आइ[१]।
जोवतां गउषि चढ़ी मुरछाइ।
नाह नइ देषउं[२] चिहु दिसि[३]।

बानइ विरह संतावइ[४] कोलह अंत[५]।
जोवन गाजइ जण हसइ[६]।
उवा तउ[७] मइण की विधि[८] घोलइ मुहि कंति[९] ।।भु०।।
(तुलना० .३ की स्वीकृत ३.४ के पं० पाठ से)

पं० में यह छंद १०५ है, ग्या० में १११, र० में ११०, ना० में ११९, न० में १३१, अ० में १४०।

१. अ० ना० बइठी छइ आइ। २. अ० नाह दीसइ नहीं, र० नाह न० देखउं, ना० नाह नै देखे। ३. र० अ० चिहुं दिसइ, ना० चिहु दिसि। ४. अ० विरह संताप कौ, न० ना० बिरह संतावइ। ५. अ० को नही अंत न० को नवि लहइ सार अंत, ना० को लहइ आम। ६. अ० जोर सुं न० धण हसइ। ७. अ० न० ना० [में नहीं है]। ८. अ० मयण की वेदन, न० मायण की विधि। ९. अ० नहीं लहै कंत, न० मोल विलहि कंत, ना० षोलै विहकंत।

(१०३)

हिवइ राजा पहुतडउ उडीसइ जाइ[१] जगनाथ।
असीय सहस चउरासीया सीध[२]।
जाइ वसावउ गोइरइ[३]।
प्रह फूटी अरू घुर्‍या नीसाण[४]।
रावल गुन[५] इम संचरइ[६]।
तब मन हरष्यउ[७] वीसल चहुआण ।।भु०।।
(तुलना० .६ की पं० ११८.६ से)

पं० में यह छंद १०६ है, ग्या० ११२, र० १११, ना० १२०, न० में १३२, अ० में १४२।

१. र० अ० उड्डीसइ। २. अ० र० ना० न० असीय सहस चउरासिया राउ कै साथि, न० र० असीय सहस चउरासिया साथि। ३. ना० जाइ

बसा गांव गोइरे। ४. अ० अरू घुर्या छइ नीसाण। ५. अ० [illegible] लगनि, न० लाउ लघुइत, ना० रावल मन। ६. ना० अ० महि [illegible] संचर्या, न० मइ संचर्या। ७. ना० तव मन रहषीयो।

(१०४)

राजा जी भेंटीउ[1] राज प्रधान[2]।
तुम्ह दिव रावउ[3] दुणउ जी मान।
आधीय चादरि बइसणा।
सहस सोनीया उपरि पान।
म्हांथी तउ अउरु चढा यात[4]।
कहइ उडीसा का परधान ।।भु०।।

(तुलना० .३ तथा की क्रमशः स्वीकृत १०६.३ १०६.२ से)

पं० में यह छंद १०७ है, ग्या० मे ११३, र० में ११२, ना० में १३३। अ० में १४३ है।

१. अ० राजा जी भेटियउ। २. अ० राउ परधान। ३. अ० हमहि दिवडउ जी, र० न० तुम्हहि दिवारो, ना० तूम्ह दरवारै। ४. अ० ना० म्हां की तूं चढ़ाइतो (चढ़ावतो–ना)

(१०५)

मंत्र बइरागर[1] बहु विधि जाण[2]।
जिण रीझाव्यो[3] राय चहुआण।
बात गुपति सबे प्रीछवी[4]।
उणि तउ राणी भानमती नइ दीजा बइसरि[6]।
राणी जी सांभलउ वीनती।
उतउ मोटउ[7] षत्रीय कुलह सिंणगार।
उलग आयउ छइ आपणी।
उव तउ[8] राणी राजमती भरतार[9] ।।भु०।।

.६ की क० २१.७ से)

पं० मे यह १०८ है, ग्या० मे ११४, र० में ११३, ना० में १२२, न० में [illegible]४, अ० में १४४।

[अ[illegible] जो बीसलदेव की वास्तविकता प्रकट हुई है, उसके पूर्व यहाँ यह क[illegible] विपरीत है कि बीसलदेव 'राजमती भरतार' है।]

[illegible]. अ० न० मंत्री बैरागर, ना० मंत्री बैरागर केरे। २ अ० बहु बुधि जाण, न० बहु बुधिनउ जाण। ३. अ० तव जाकूं रीझव्यउ, ना० जि[illegible] पहिराव्यो, न० जिणतइं रीझव्यउ। ४. अ० वाक गुपति सहु प्राछवी। [illegible] अ० न० उण तउ राणीय कुं (नइ–न), ना० राणी भानुमती। ६. अ० न० कीथी छइ सार, ना० दीनी छै सार। ७. अ० मोटो, न० मोनउ। ८. अ० न० ना० [में नही हैं]। ९. अ० राणी राजमती तणउ [छै–ना०] [illegible]भरतार।

(१०६)

जाहि ह्मे मंत्री[१] वार म लाउ।
वेगि बोलावउ[२] बीसलराउ।
मान महत देइ कोकिज्यो[३]।
मंत्री आलसूआ माहि आईय गंग[४]।
करम परापति आपणई।
आजु दीहाहउ सतीय सुचंग ।।भु०।।

पं० में यह १०९ है, ग्या० में ११५, र० में ११४, ना० में १२३, न० में १३५, अ० में १४५। किन्तु अ० में .१ के अनन्तर निम्नलिखित पंक्ति अतिरिक्त है :–

वेगि वुलावौ जी वार म लाउ। (तुलना० ऊपर .१+.२)

१. अ० जाउ मंत्रीसर। २. ना० वेगि ले आवो। ३. न० मान भहुत दे लागज्यो, ना० मान महुंत वे लावज्यौ। ४. अ० न० आवी छइ गंग ना० आवीय गंग। ५. अ० सफल सुरंग, न० ना० सही सुरंग।

(१०७)

आवीयउ मंत्रीय जिहां छइ राउ।
वेगि पधारउ करउ पसाउ[१]।
राणी बुलावइ थानइ राउ जी[२]।
तब हसि चडीयउ राय चहुआण[३]।
साथि चउ रासिया साझता[४]।
सहस करिण जाणे उगीयउ भाण[५]।।भु०।।

पं० में यह छद ११० है, ग्वा० में ११६, र० मे ११५, ना० में ११४, न० में १३६, अ० मे १४६।

१. र० करीय पसाउ। २ अ० राणा बोलावइ राउ की। ३. र० अ० न० ना० तव हसि हयवर चढयउ अहुआण। ४ओ। पं० साथि चउरासिया अति धणा, ना० साथ चौरासी सती। ५. र० जाणे उडय्यो भाण।

(१०८)

भानमती दुवारिइ[१] आवीयउ राइ।
राणी जी मन माहे[२] कीयउ सुभाइ[३]।
रतन कंवल दीयउ वइसणउ[४]।
तठइ राजा वीसल[५] करइ छइ जुहार[६]।
राणी असीस दइ राय जी।
तउ चिलजीविजै[७] सं परिवारि[८]।।भु०।।

पं० मे यह छंद १११ है, ग्या० में ११७, र० में ११६, ना० में १२५, न० में १३७, अ० मे १४७।

१. अ० भानुमती घरि, ना० भानुमती राणी दुहारइ। २. अ० मान देइ राणी किद्द। ३. अ० अपसाउ ना- हूबे सुवाव। ४. अ० रतन कंवल दीधउ वैसणइ। ५. न० इत तइ राजा वीसल। ६. अ० करइ जुहार। ७. अ० ना० तूं चिरंजीवे ओ। ८. न० सहू परिवार, ना० वीसल राय।

(१०६)

तठइ राणी जी पूछइ[१] गूझ की वात।

किण विधि आवीया कोस सइ सात।

सविधि हमस्युं ते कहउ[२]।

म्हा चित मैं छइ[३] ऊलग की चाऊ[४]।

चाकरी करिस्यां राउ की।

इणि परि बोलइ[५] वीसल राउ।।भु०।।

पं० में यह छंद ११२ है, ग्या० में ११८, र० में ११७, ना० में १०६ न० में १३६, अ० में १४८। किन्तु अ० में ऊपर की .४ तथा .६ परस्पर स्थानांतरित है।

[पं० १६, १६०, १६१ तथा अ० के समानांतर छंदों में इसी प्रकार इस घटना की पुनरावृत्ति है।]

१. अ० पूछइ राणी तव, र० तठै राणी बूझइ झइ। २. अ० विधि थे हम सुंक कहउ, ना० सा विधि मासिउं ते कहै। ३. अ० म्हाकइ चित छइ, न० म्हां बिन छै। ४. अ० ना० ओलग कउ चाउ। ५. अ० तब हसि बोले हो, र० इण परि बोलियउ।

(११०)

आहमति बान[१] कहु मत राइ।

उलग कउ मिसि[२] कहउ था[३] काइ।

साचउ कहउ म्हासु तुम्हे।

थांकइ नवलषी[४] सांभरि उग्रहइ देव[५]।

राज थानिक अजमेर माहि[६]।

राजा सो कउ[७] करइ पराइय सेव।।भु०।।

पं० में यह छंद ११३ है, ग्या० में ११६, न० में ११८, ना० में १२७, न० में १३६, अ० में १४६।

[पं० १८६, १६०, १६१ और इसी प्रकार अ० के समानांतर छंदों

में इस घटना की पुनरावृत्ति है।

१. अ० न० उवा तुम्हे बात, र० अ० तुम्हि बात। २. र० उलग मिसि करो। ३. अ० मतां कहउ, र० थे कहो कांइ, ना० थे करौ कांइ, न० मन कहाइ। ४. ना० जाकइ नवलषी। ५. अ० सइंभर उग्रहइ देव। ६. अ० राउ अजमेर कउ राजियउ, न० ना० राज थानक कारइ गढ़ अजमेर, र० राजा थांको वैसणो गढ़ अजमर। ७. अ० ना० सो किउं।

(१११)

अम्ह घरे एक छइ राजकुमार।
तिणि अवकर बोलीयउ अविचार[1]।
तिणि बड़ा करि ना गिणा[2]।
उणि विसिराह्यउ[3] सांभरउ देस[4] ।।भुं०।।

पं० में यह छंद ११४ है, ग्या० मे १२०, र० में ११९, ना० में १२८, न० में १४०, अ० में १५०। किन्तु अ० न० ना० ग्या० में छंद की .५, .६ भी है जो पं० में नहीं हैं :-

(.५) सराह्यउ उड्डीसउ गोरडी।
(.६) म्हे तिण ओलग आया परदेस।

[पं० १८६, १६०, १६१ और इसी प्रकार अ० के समानांतर छंदों में इस घटना की पुनरावृत्ति है।]

१. र० बोलचव्या अविचार। २. ना० तिणा वडै कर ना० गिण्यौ, र० तिण अम्हे ओकर नवि गन्या, न० तृण वडइ करि म्हातइं गिण्या। ३. अ० उग विसरायउ। ४. अ० संभर देस।

(११२)

एतलउ वचन राणी सुण्यउ जाम।
मंत्र वइरायर[1] पूछियउ ताम।
बात कहा हीआ तणी[2]।
म्हे तउ भाईय[3] करिस्यां वीसलराउ।

छानउ पूरबी राज थी[४]।
जउ तुम्हि मित्र[५] करउ पसाउ।
दूजीय ठाहर ना० कहउ[६]।
तन्न म्हा मन हुउ उछाह[७] ।।धु०।।

पं० में यह छंद ११५ है, ग्या० में १२१, र० में १२०, ना० में १२६, न० में १४१, अ० में १५१।

१. अ० ना० मंत्री वैरागर। २. अ० वात कहियइ हीया तणी, र० वात कही सर्वहीया। ३. ना० म्हे तो। ४. अ० छांनउ पूरव्या राउ थी। ५. र० अ० जउ थे मंत्री। ६. ना० न० दूजी (तउम्हा-न०) ठहरना रहौ (हुअउ-न०)। ७. अ० न० म्हां मनि होवै तो अधिक उच्छाह।

(११३)

कर जोड़ी मंत्री कहइ वात[१]।
वडीउ आलोचणी[२] कीधीय मात[३]।
म्हां चिति मानी छइ षरी[४]।
नवलषी सांभरि कउ रषवाल[५]।
राजा भाई ला सारिपयउ[६]।
हिवइ तिलक देई[७] पहिरायउ भूगल ।।धु०।।

पं० में यह छंद ११६ है, ग्या० में १२२, ना० में १३०, न० में १४२, अ० में १५२।

१. ना० मत्री करे छै वात। २. अ० वड़ी आलोचणी। ३. अ० कीधी तइं मात न० कीधी मनि, कीधा वात। ४. अ० म्हां मनि मानै छइ अति खरी। ५. ना० तणो रखवाल। ६. अ० राज भाई लहइ सारिखउ। ७. अ० न० तिलक करि नइ, ना० तिण क दे।

(११४)

हुआ उतारइ[१] राय चहुआण।

पउलि पश्चिम तणी दीयउ मेल्हाण।
साथि बइरागर मंत्रि छइ।
बंभण भाट करइ बषाण।
चउरास्या सहि हरषीया[२]।
मनि हरष्यउ[३] वीसल चहुआण ।।भु०।।

पं० में यह छंद ११८ है, ग्या० में १२४, ना० में १३२, न० में १४४, अ० मे १५४। किन्तु .१ ना० में नहीं है।

१. अ० कीयउ उतारइ, न० दीय उतारउ। २. अ० चउरासीया मन हरषिया। ३. अ० दान घइ अधिक।

(११५)

जेतलउ षरच सजा तणइ सोइ।
भानमती राणी पूरवइ होइ।
लूण कपूर स वेसह[१]।
नव कर कापड़ा[२] सावटू चीर।
चउरास्या नइ जूजा[३]।
बहिणी मनि[४] बधावए वीर।[५]
काणि म करिज्यो षरच की[६]।
तउ तत सांभरि धणी[७] छइ म्हाकउ बीर ।।भु०।।

पं० में यह छंद ११६ है, ग्या० में १२५, र० में १२१, न० में १४५, अ० में १५५।

१. अ० न० ना० लूण कपूर सरिसउ सहू। २. र० अ० ना० नवरंग कापडा (कापड़ी-न०) ३. ना० चोरास्यां नै बूझवा। ४. अ० बहिनीय मान। ५. अ० ववार छइ धीर। ६. न० कांमण करज्यो षरच की। ७. अ० तूं सइंभर धणी।

(११६)

बारह मास[१] वउलावीया नारि।

देव मेलउ दीयउ[२] कइ धण मारि।
सूकि पाकि पंजर हुई।
जिमि भमर पुरंदर केतकी वास।
तिम मोरइ प्रीय[३] गम कीयउ[४]।
सेज वीसारी गोरी आवासि।
उभी हो साधण विलविलइ।
मइ तउ दुषि वउलावीया[५] वारह मास ।।भु०।।

(तुलना० .३ की म० १२२.८ से)

पं० में यह छंद १३२ है, ग्या० में १३८, ना० में १४६, न० में १५८, अ० में १६८। किन्तु अ० में .६ का पाठ है : जाइ कीधउ परदेश कउ वास। (तुलना० म० १२२.५), और ना० में उपयुक्त .५, .६ नहीं हैं।

१. ना- बारस वरस। २. अ० न० देव मेलौ करै, ना० देव मेलौ दै। ३. अ० तिम म्हांके मनि प्रिय, न० तिम म्हारे प्री। ४. अ० गम करी, न० गम कीऊ परदेस। ५. अ० न० इम (एम-न०) वौलाविया।

(११७)

धुरिहि सीयालउ[१] उल्हरिउ नाह[२]।
रिण पइसंती[३] धणी लीयउ सनाह[४]।
दिन छोटा निसि आगली।
लइ वउ आषडया[५] ताला दीधी[६]।
चित अवरा सूं भोलव्यउ[७]।
सीप ना काइरा[८] न दीध[९] ।।भु०।।

पं० मे यह चंद १३३ है, ग्या० में १३९, ना० में १४७, न० में १६०, अ० में १६९।

१. ना० धुरि। २. अ० उलस्यउ। ३. अ० रणह पेसंता। ४. अ० रे लेइ सनाह, न० लियउ सनाह, ना० धण मिल्यो सनांह। ५. अ० ना०

तैल तालिय, ना० तै लौ मन क्यै आडा। ६. अ० मोहि किम दीध, ना० नाला दीध। ७. अ० न० चित अवसासउ तइ कीयउ। ८. अ० न० साख न० काईय, ना० सीष न० किइय राइ। ९. अ० न० तइ माकुं (मुनइ-न०) दीध, ना० तै दीध।

(११८)

साई संकल जड़्या[1] कर जड़्या जंजीर।
कर तुम्हि पहते समुन्द कइ तीरि।
कइ कही कामणि भोलव्यउ[2]।
एक रिसउ स्वामी[3] धुरि संभालि[4]।
धण वलि पंगुल हुइ रही५।
कुमिलाणीय जिम[6] चंपा की डाल[7] ।।भु०।।

(तुलना० .२ तथा .४ की क्रमशः पं० १५७.२ तथा स्वीकृत ६३.४ से)

पं० में यह छंद १५६ है, ग्या० में १५२, ना० में १७६, ना० में १६०, अ० में १८८।

१. अ०ना० सामा संकले (सांकली-ना०) जड्य्या, न० स्वामा संकल जंपा। २. अ० कइ किणि कामण कामण्यां। ३. एक रसौ करउ, न० एक रिसउ आवो। ४. अ० घरहि संभाल। ५. अ० धण खल पंगुल हुइ रही, ना० धण बल पंजिर होइ रही। ६. अ० हुं कुमलाणी जिम। ७. ना० चंपीय डाल।

(११९)

कागल ठाहर धण थरइ चीर[1]।
मस्त ठाहर करइ[2] नयण थी नीर।
लेषणि ठाहर नइ करूया।
अषर ठाहर[3] मुषि झरइ तंबोल[4]।
श्वेत पटोलीय लिषि दीयउ।

मिलि वटवाडा[५] करइ लोल ।।भु०।।

पं० में यह छंद यथा १५५ है, ग्या० में १६०, न० में १८८, ना० में १६६, अ० में २०३ है।

१. अ० ना० करइ चार। २. अ० मताय ठाहर करइ, ना० मत ठाहर करै। ३. ना० अर ता (टा) हर। ४. अ० मुख कौ तंवोल। ५. अ० न० तिमि वटवाला जा, ना० मिल वडवाह।

(१२०)

वाट वटाउ धण का वीर।
तुम्हे उतरि जावउ[१] समुद कइ तीरि।
साधण हुइ छइ लातरी[३]।
लाज छोडी तुम्हें अरु[४] कहय तुम्हे बात[५]।
उलगाणा सूं अम कहे[६]।
तारी मुंध ऊमही ऊल्हस्या गात[७]।।भु०।।

(तुलना० .२ की पं० १४६.२ से)

पं० में यह छंद १४७ है, ग्या० में १६२, न० में १६०, ना० में १७१, अ० में २१०।

१. अ० तुम्हे उतरि जाइज्यो। २. अ० न० गंगा के तीर। ३. अ० साधण हुइ छइ लाकड़ी। ४. अ० ना० लाज छोडी अरू। ५. अ० कहु इक बात, ना० तुम्ह कहौ वात। ६. अ० ओलगाणा सुं तम इम कहे। ७. अ० नइ ऊलस्या।

(१२१)

पंडियउ वारि[१] बइठउ छइ जाइ[२]।
गयउ पडिहार अरु वीनव्यउ राइ[३]।
परदेशी कोई पंडीयउ।
म्हे स्वामी भेटिवा[४] आवीया राज दुवारि ।।भु०।।

पं० मे यह छंद १६७ है, ग्या० में १७२, र० में १६६, ना० में १८१, न० में २०० अ० में २१८। किन्तु ग्या० र० ना० न० अ० में छंद की .३ .४ भी है जो पं० में बाद के छंद की प्रथम दो पंक्तियों के रूप में आती है :-

(.३) राज (एक-र० ना०) सुणउ इक वीनति (मुझ बातड़ी-र०, मुझ बीनती-ना०)।

(.४) एक अपूरब सुणउ जी विचार।

१. ना० वाहिर २. अ० बइठउ तिहां जाइ, ना० बैठो जाइ। ३. अ० तिहां वीनव्यउ राइ। ४. अ० ना० भेटिवा। अ० आयउ छइ राजदुवारि, र० आवीयो राजदुवारि।

(१२२)

किहां बसउ बंभण[१] किह तोरो ठाउं[२]।
जोसी कहइ थारा नगर कउ नाउं।
देव देसंतरी दुरि कउ।
राण राजमती दीयउ षन्दाउं[३]।
बरस बारह उलग रह्यउ।
तुम्ह धरि आवीयउ बीसल राउ ।।भु०।।

पं० में यह छंद १७० है, ग्या० में १७५, र० में १७२, ना० में १८४, न० में २०४, अ० में २२२।

१. अ० कां बसउ बांभण। २. अ० कहां तोरउ ठाउ। ३. र० ना० दीयउ षंदाइ।

(१२३)

झूठउ रे बंभण[१] बोलि म आल[२]।
किम आवइ[३] बीस[३] भूवाल।
जिह घरि सांभरि उग्रहइ।

ऊतउ सगलय[४] भूम तणउ रपपाल।
सोरठ पाटण कउ धणी।
अम्ह घरि किम आवइ राइ भूवाल।।भु०।।

पं० में यह छंद १७१ है, ग्या० में १७६, र० में १७३, ना० में १८५, न० में २०५, अ० में २२३।

१. अ० जूठउ रे वांभण। २. वोलै छै आल। ३ओ। अ० इहां किम आवै। ४. अ० ओ तउ पश्छिम।

(१२४)

वंभण भणइ[१] तूं नि सुणी भूवाल[२]।
विह घरि थी[३] धण रूप विसाल४।
चिहुं देसा उवा लप लहइ।
हस्ती तिणी धण कहउ कुवोल।
सहि नि सकउ संभर धणी।
तउ धण[५] मेल्ही हो राइ निटोल ।।भु०।।

पं० में यह छंद १७२ है, ग्या० मे १७७, र० मे १७४, ना० मे १८६, न० में २०६, अ० में २२४। किन्तु न० अ० में .३, .४, .५ है :

(.३) राजा जी कव करि वोलियउ।
(.४) सहि न० सक्यउ तिणि वाल्यउ जी वोल।
(.५) तिणि वले राजा चटकियौ।

ना० में .६, .४ नही है और .५ तथा पं० में है।

१(+२). अ० वंभण भणइ सुणि निसुणी भुवाल, र० वंभण भणाह पूं० निसिण भूपाल। ३. अ० तिहां घरि छइ। ४. न० ना० धण रूप रसाल। ५. अ० मेल्हि गयउ राइ निटोल।

(१२५)

राजमती हसि बोलीया बोल।
राजा कइ चित्त बस्यौ कुवोल[1]।
समझायउ समझय नहीं।
उतउ राणीय सं[2] मेल्हउ छे घर वास[3]।
ऊभी मेल्ही गोरडी।
अणि विधि राऊ[4] आयऊ[5] तुम्ह पासि।।भु०।।

पं० में यह १७३ है, ग्या० में १७८, र० में १७५, ना० में १८७, न० मे २०७, अ० मे २८५।

१. न० बस्यो तेह क बोल। २. अ० तउ राणी तणा। ३. अ० मेल्हा रणवास। ४. अ० इण विध ए, र० इण विधि राउ। ५. अ० आवियौ तुम्ह पासि।

(१२६)

जब बंभण दीधो[1] घर कयउ भेउ[2]।
तब लाधउ कुल कयउ [illegible]उ।
झूझ प्रकासउ पारीयइ[3]।
मोटो छइ हींदू बडउ नरेस[4]।
वचन कइ करणि धण तिजी[5]।
हिवई संपउ[6] उडीसा कउ देस ।।भु०।।

पं० मे यह १७४ है, ग्या० मे १७६, र० में १७६, ना० में १८८, न० मे २०८, अ० में २२६।

१. ना० तव। २. अ० घर केरउ भेउ। ३. र० अ० ना० न० गूझ प्रकास्यौ रे पंडियइ। ४. अ० हिदूयउ वडउ नरेस। ५. अ० वचन कारण जिण धण तजी। ६ओ। अ० हिव सुंपरयुं हम।

(१२७)

चमकि अरु ऊठीयउ[1] पूरिव्यउ राउ।
मंत्र वडरागर लीयउ बुलाइ।
कुवण राजा मोनइ उलगइ।
हिव देह नउ[2] मुझ तेहि परिमाण।
गढ अजमेरा कयउ धणी।
मंत्रि म्हारइ कुण वीसल चहुआण[4] ।।भु०।।

पं० में यह १७५ है, ग्या० में १८०, र० में १७७, ना० में १८६, न०. में २०६, अ० में २२७ है।

१. अ० चमकि कर ऊठिय ऊठियऊ। २. अ० तेह नउ। ३. अ० कवण छइ, र० ना० मंत्री कवण म्हारै। ४. अ० वीसल दे चहुआण।

(१२८)

दिया हकारा जी नगर तझारि।
घरि घरइ राज[1] फिरइ पडहार[2]।
नगरि दुहाई संचरी।
सबे ठाकुर[6] घरि बारी रह्या।
राइ आप आहेटइ मिसि चढइ[5]।
सिंह सिकार नइ षेलण जाइ[6] ।।भु०।।

पं० मे यह १७६ ऐ, ग्या० में १८१, र० में १७८, ना० में १९०, न० में २१०, अ० में २२८।

१. अ० घरि घरि राउला, ना० घरि रावला। २. र० फिरै पटधार। ३. अ० सबहि ठकुरालाह, र० परिवस्याहो राइ, ना० सवर बारा होइ। ४. अ० सहित परिवार। ५. अ० आप आहेड़ा कइ मिसइ, र० ना० आप आहेडा मिसि चडे। ६. अ० खेलण जास्यइ हो सिंह सिकार।

(१२६)

फिर्‌या नकी[1] फेराईय आण।
घरि घरि सज्या छइ[2] तुरीय केकाणि[3]।
देस देसाह का नीकल्या।
राजा जी सरव[4] बटावी छइ आण[5]।
छत्र चउरासीया ताणीया।
नरवर[6] सरव जुहारण जाइ[7] ।।ध्रु०।।

पं० में यह १७७ है, ग्या० मे १८२, र० में १७६, ना० में १६१, न० मे २११, अ० में २२६।

१. अ० कुकम हुयउ तब, र० फिर्‌या नकीब, ना० स्वामी की अब। २. ना० घरि घरि राज्या। ३. अ० हो करह केकाण। ४. अ० राजा जी पूरब्यइ। ५. अ० सरवर ठाम, ना० बरती आंम। ६. अ० तठइ सरव राजा मिल, र० नरवै जी, ना० राजा सब मिलिय। ७. अ० सरब करै प्रणाम, ना० करै प्रमाण।

(१३०)

पदम सरोवरि बइठउ छइ आइ[1]।
आपण श्रीय मुषि वचन कहाइ।
अहो जिण पूरब आसंगीयउ[2]।
षाडउ हो समुद पषालीयउ जाइ[3]।
आवण पइ राजा कहइ।
थे वइगा हो आणिज्यो वीसल राउ४।।ध्रु०।।

पं० मे यह १७८ है, ग्या० में १८३, र० मे १८०, ना० में १६२, न० मे २१२, अ० २३०।

१. र० बइठो छै राइ। २. अ० जिणि घर पूरब आसथी, ना० पूरब राव मिलि आसघी। ३. अ० पखालियउ समदूह आव। ४. अ० ले आव्रउ बीसल राउ।

(१३१)

चिहुं दिसि राजा कई[1] चमर ढुलाइ।
वंद सहोदर[2] बइठा छइ आई।
परिगह दलमल सहि मिल्या[3]।
तठइ पूरिब्यउ राजा बषाणइ छइ[4]।
गढ अजमेरां कयउ धणी।
वेगा आणउ[5] बीसल चहुआण ।।भु०।।

प० में यह १७६ है, ग्या० में १८४, र० में १८१, ना० में १६३, न० में २१३, अ० में २३१।

१. अ० पूरव दिसि राजा। २ र० अ० वृन्द सरोवर। ३. अ० परिगह दल महलइ मिल्या, ना० परिग्रह दल मिल्या। ४. र० अ० करइ बषाण, ना० कहइ छइ वपाण। ५. अ० थे वेगि बोलावउ, र० बेगि आयो।

प० में यह १८० है, ग्या० में १८५, र० में १८२, ना० में १६४, न० में २१४, अ० में २३२।

(१३२)

दहिणी दिसि राजा[1] चंवर ढुलाइ।
दषिण दिसि राजा बइठे छइ आइ।
सिहर कलिंग पुर उपहइ[2]।
उण रइ सगली सेना पइठी छइ आई।
आपण पइ राजा कहइ।
थें वइगा आणउ[3] बीसल राइ[4] ।।भु०।।

१. अ० चिहुं दिसि राजा के। २. अ० तठइ सहर कलिग उग्रहइ। ३. अ० थे वेगि बीसल दे० कुं, ना० थे वेग ले आविज्यो। ४. अ० ल्यावौ बुलाइ।

(१३३)

आगिलि दिसि राजा[1] चमर ढुलाइ।

राउ का ऊलग बइठा छइ आइ।

बसइ राजा बाणारसी[2]।

उतउ कनवजाइ[3] दिवाईय आण[4]।

आपण पूरब्यउ बीनवइ।

थे तउ वेगा आणउ[5] वीसल चहुआण ।।भु०।।

प० में यह १८१ है, ग्या० मे १८६, र० मे १८३, ना० में १६५, न० में २१५, अ० मे २३३।

१. अ० उत्तर दिसि राजा। २. अ० प्रथमै बाणारसी कौ धणी। ३. अ० कनउज जाइ। ४. अ० दिवारी जी आण। ५. अ० थे तोड ल्यावौ, ना० वेग आणौ।

(१३४)

पाछिली दिसि राजा[1] चवर ढुलाई[2]।

सींघल दीपी राजा[3] बइठउ आइ[4]।

आप नरेसर वासीयउ[5]।

तठइ पूरब्यउ राजा कराइ सुभाइ।

म्हांकी हो एही ज वीनती[6]।

थे तउ[7] वेगा आणउ[8] वीसल राण ।।भु०।।

प० में यह १८२ है, ग्या० में १८७, र० मे १८४, ना० १६६, न० में २१६, अ० में २३४। किन्तु अ० में .३ है: देसपति महिलउ दीयइ।

और ना० में .२, .३, .४ नहीं है।

१ अ० न० पश्चिम दिसि राजा। २. ना० करइ सुभाव। ३. अ० सिंघल द्वीप को। ४. अ० बइठउ छइ आइ। ५. न० आयु नरेसुर। ६. र० म्हांकी हो एह वीनती। ७. अ० थे वेगि मेलौ, ना० [में नही है]। ८. अ० वेगा आणी वीसल राउ, र० वेगि वे आणो वीसलो राउ।

(१३५)

इतउ सुणीइ[1] राजा मंदिरी जाइ।
भाणमती राणी ली छइ बोल [I] इ[2]।
हसि राजा आलिंगीयउ[3]।
राणी हेहि तोनइ[4] कहुं सुभाउ[5]।
जो भाई करि बोलीयउ[6]।
सो थां कउ भाई[7] म्हानइ दिप [I]इ[8] ।।भु०।।

(तुलना० .२ की स्वीकृत २०.२ से)

प० में यह १८३ है, ग्या० में १८८, र० में १८५, ना० में १६७, न० में २१७, अ० २३५।

१. अ० मनहि विमासी, र० इतनो सुणा, ना० इतरौ सुणि। २. अ० लियइ बुलाई। ३. अ० हसिय आलिगण नृप दियइ, न० हंसि नइ राजा आवीयउ। ४. अ० राणी तोनां। ५. अ० कहुँ सदभाइ। ६. अ० जो भाई तइ बोलावियौ। ७. अ० ना० थारा सो भाईय। ८. अ० मोहि दिखाउ, ना० मुझने देपाव।

(१३६)

भानमती होलइ[1] सुणि राइ।
एता दिन[3] संभालीयउ काइ[4]।
इतनी हो आरति राज की[5]।
किउ तइ आज पूछीया राइ[6]।
भाव भलइ आणाविज्यो।
थांकउ चूडियउ हो सिगलउ परिवार[7] ।।भु०।।

पं० में यह १८४ है, ग्या० में १८९, र० मे १८६, ना० में १६८, न० में २१८, अ० में २३६। किन्तु ग्या० र० ना०, न०, अ० में .७, .५ का पाठ है:

(.४) आज किउं पूछियउ किउ करी सार।

(.५) भाव भले ते मानिज्यो।

१. अ० भानुमती कहइ। २. अ० सुणौ जी राइ। ३. अ० इतना दिवस। ४. अ० न० संभरयो काइ। ५. अ० इतनी गाढ़ राजा किउ करी, ना० इतने अढेतिस जाई कुंकरी। ६. र० ना० पूछीया कीधीय सार। ७. अ० सहु परिवार।

(१३७)

तब हसि करि[1] राजा आलिंगन देहि।

भानमती मुझ कहउ सु एह[2]।

राजमती लिखि मोकल्यउ।

चीरी दे बंभण दोयउ षंदाइ।

बार बरस ऊलग हुया[3]।

थां घरि आव्या हो[4] वीसल राउ ।।भु०।।

प० में यह १८५ है, ग्या० में १६०, र० मे १८७, ना० में १६६, न० में २१६, अ० में २३७।

१. अ० तब हसि। २. अ० मुझ कुं कह्य भेउ। ३. अ० बार बरस ओलग लह्यउ। ४. अ० थां घरि आयउ छइ र० न० थां घरि आयो हो।

(१३८)

तब आपणउ बंभण[1] लीयउ बोलाइ।

भानमती राणी[2] लिष्यउ वचाइ।

सरस वचन धण वांचीया[3]।

तब पंडियइ[4] बात कही समझाइ।

भोज राजा की चजंरी चढ्यउ[5]।

उतउ उलगणउ[6] देज्यो घरह षंदाइ ।।भु०।।

प० में यह १८६ है, ग्या० में १८१, र० में १८८, ना० में २००, व में २२०, अ० २३८।

१. अ० तव राजा पंडियउ। २. अ० राजमती राणी। ३. न० सार वचन तिण वाचिया। ४. अ० पठियइ। ५. अ० चमरी। ६. अ० न० सो ओलगाणउ। ७. अ० न० म्हां कै घरहि पठाइ, ना० दीज्यो घरह पठाइ।

(१३९)

पछिम पउलि[1] मेल्ही पडदार।
बंभण भाट करह जइकार।
नट नाटिक दीसइ घणा।
उणि रइ कौतोहल दीसइ दरबारि[2]।
भीतरि जाइ सुणावीयउ।
थारी बहिनड़ी[3] कोकइ राजदुवारि[4] ।।भु०।।

प० में यह १८७ है, ग्या० में १९२, र० में १८६, ना० में २०१, न० में २२१, अ० में २३९।

१. अ० हिन्न पश्चिम पोलि। २. अ० कउतिग दीसइ जी राय दरबार। ३. ना० तो क्युं थारी बहिन कौ। ४. अ० तेडियउ राय दुआरि, ना० कोकीयौ राजदुवारि, र० कोक्यो राजदुवारि।

(१४०)

रायंगणि जब[1] आवीयउ राउ।
कामणी ढोलइ[2] सीतल बाउ।
एक चंदन लेपन करइ।
एक सषी करि[3] देहि तंबोल।
एक गोरी फूल बधावही[4]।
एक सषी करइ चंदन षउलि ।।भु०।।

प० में यह १८८ है, ग्या० में १९३, र० में १९०, ना० में २०२, न० में २२२, अ० में २४१। किन्तु ग्या० र० न० अ० में उपर्युक्त ३. यथा .६ स्थान पर यथा .३, .४ निम्नलिखित है :-

सफल दीहाडउ आज कउ। (तुलना० स्वीकृत २६.५)

ए सखि वदइ अमृत बोल।

१. अ० राय आंगणि जब। २. अ० कामिणी ढोलइ छइ। ३. अ० एक सखि बीडउ। ४. अ० कामिनी फूल बधावही।

(१४१)

तेडावा आव्या राजा[१] वीसल राउ।
पूरबी राजा कीयउ[२] अधिक उछाह[३]।
दीनी हो चादर वइसणइ[४]।
कवण देसावर कुण तू देव।
कवण की थे उलग करउ[५]।
हूं नवि जाणं रावलउ भेव ।।भु०।।

(तुलना० .३ की स्वीकृत १०६.३ से)

पं० में यह १८६ है, ग्या० में १६४, ना० में २०३, र० में १६१, न० में २२३, अ० में २४२। [किन्तु प० ११२, ११३, ११४ अथवा अ० १४८, १४६, १५० के होते हुए इस छंद में घटना की पुनरावृत्ति।]

अ० न० में .२ के बाद निम्नलिखित पंक्तियाँ और हैं :

वीसल दे सुं विनय करइ।

तठइ कर ग्रहै राजा जी कंठ लगाइ।

१. अ० नजरि आव्यउ जब, ना० आव मिल्या तब। २. अ० पूरव्यउ राजा जी। ३. अ० सममुख आइ। ४. अ० आधी हो चादर वैसणइ। ५. अ० ओलग कवण की तुम करउ।

(१४२)

जइ तू हो पूछइ[१] धरह नरेस[२]।
म्हारइ उग्रहइ[३] सइंभरि देस।
थाणउ गढ़ अजमेर महि[४]।
म्हे तउ वचन[५] बांधीया आवीया हेव[६]।

साधण बरस बारह हुआ[७]।
म्हे उलगाणा थाहरा देव[८] ।।भु०।।

(तुलना० .१ की स्वीकृत ३१.१ से)

प० में यह १६० है, ग्या० में १६५, ना० में २०४, र० में १६२, न० में २२४, अ० २४३।

[पं० ११२, ११३, ११४, अथवा अ० १४८, १४६, १५० के होते हुए इस छंद में भी घटना की पुनरावृत्ति है।]

१. अ० जइ तुम्ह पूछउ छउ। २. अ० धरह नरेस। ३. अ० म्हारइ उग्रहइ छइ। ४. थाणउ गढ़ अजमेर कहि। ५. अ० वचन का। ६. र० बंध्या आविया एथ। ७. अ० ना० साधण वरस बारह तजो। ८. अ० श्रांका नरदेव।

(१४३)

एतलैउ वचन[१] कहउ किणि काज[२]।
सफल जनम हुव मुझ आज[३]।
जइ तुम्ह सुं भेटा हुई।
तउ थे लेहु[४] उडीसा कउ देस।
म्हा तुहेइ सप्पउ राउ जी[५]।
हिवइ आपा उगाही[६] हो धरह नेस[७] ।भु०।।

प० में यह छंद १६१ है, ग्या० में १६६, र० में १६३, ना० में २०५ न० में २२५, अ० में २४४।

[किन्तु पं० ११२, ११३, ११४, अथवा अ० १४८, १४६, १५० के होते हुए इस छंद में भी घटना की पुनरावृत्ति है।]

अ० में .५ का पाठ है:

मया करहु तुम्ह देव जी।

१. अ० इतनउ जी वचन। २. ना० कहउ किण काज। ३. अ० मुझ दुवइ छइ आज। ४. अ० तुम्ह लेहु, ना० तुम्हे लेवौ। ५. र० म्हे तुम्हां संप्रो राउ जी, ना० म्हे थाने राज सो सुंपीयौ। ६. अ० र० आप

उम्हाहउ, ना० आप उग्राहो। ७. अ० धरह नरेस।

(१४४)

तब हसि बोल्यउ[1] राउ चहुआण।
तुम्हारउ वचन[2] सामी परमाण।
वीनती एह म्हांकी सुणउ।
म्हें तउ चालतां मोरीय दीन्ही थी बांह[3]।
बरस बारह पाछइ आविस्यां।
हिवइ तुम्हि कहउ[4] जिम घरि जांह[5] ।।भु०।।

प० में यह १९२ है, ग्या० में १९७, न० में २२६, ना० में २०६, र० में १९४, अ० में २४५।

१. तब हसि बोलइ जी। २. अ० तुम्ह तणो वचन। ३. अ० गोरी नै दीधी छइ बांह। ४. अ० हिव म्हांकु धड दूवउ, र० हिवै तुम्हें कहो, ना० हिवै कह्यौ। ५. अ० तउ घर जांह, ना० ज्युं तुम्हें घरे जाह, न० हाथ मरे जांह।

(१४५)

तब पंडियउ अरु कोक्या परधान[1]।
पूरब्यउ राउ दीयै बहु मान[2]।
आघा पधारउ देव जी[3]।
स्वामी तुम्हि जाणउ सुधि सहिनाण[4]।
म्हां बइटा हा सोझिलइ[5]।
पंडिया राइ वीसल चहुआण[6] ।।भु०।।

पं० में यह १९३ है, ग्या० में १९८, न० में १९५, ना० में २०५, अ० में २४६, न० मे २२७।

१. अ० पंडियो कोको हो कहइ परधान। २. अ० चाहुइ बहु मान, न० लियहि बहु मान। ३. र० देवसी। ४. अ० सुद्ध सरिनाण। ५. अ० म्हां बइठां ही सोझल्यौ। ६. अ० पडियउ चाहइ जी तब ताइ चहुआणइ

उहु तउ धरती[३] भूलि न देईय पाउ[४]।
इतरी प्यांति करि गम करइ[५]।
जोगी दूजइ दिन आव्यउ सइभरि माहि[६] ।।भु०।।

पं० में यह २१५ है, ग्या० में २२०, र० में २१७, ना० में २२६, न० में २४६, अ० २७७।

१. अ० जोगन चालइ तव। २. ना० गुरु का वचन समरो धण। ३. अ० तउ धरतीय। ४. अ०भूल न देवइ हो ठाइ, ना० भूल न दै छै पाउ। ५. अ० मनकीय खंतइ गम करइ। ६. अ० जोईय सैंभर जाई।

(१५०)

राय चउरासीयां[१] देइ छइ सीष।
छमकती छमकती चालिज्यो वीष।
तुरिय म लाविज्यो तिजिसाउ[२]।
पावन वाहनइ[३] जिम संचरइ राइ[४]।
सुंदरी आइ हीयडइ चढ़ी[५]।
म्हे तउ पाणीय पीस्यां[६] उवा कन्हइ जाइ[७] ।।भु०।।

पं० में यह २२६ है, ग्या० में २३३, र० २३१, आ० में २४३, न० में २६३, अ० में २६४/१+२६३/; अ० में उपर्युक्त १, .२, .३ अ० २६४ .१, .२, .३ हैं, और .४ .५, .६ अ० २६३.४, .५, .६ हैं।

१. र० राउ चोरसीया नै। २. र० ना० अ० न० तुरीयम लाविज्यो ताजणउ। ३. अ० ना पवन वाहन। ४. ना० जिम संचरइ कोइ। ५. अ० सुन्दरि आवि हियउ चढ़ी। ६. अ० पाणी पीस्यां, ना० पाणै पापिस्यां। ७. अ० ना० उणि कन्है जाइ, न० उणि कहल जाइ।

(१५१)

नयर उडीसा थी चढ़इ राइ[१]।
आसणि हयवर[२] लाष पसाउ[३]।

ठकुराला सवे गयल छइ।
तठइ जुलमती तुरीय[४] चउरासिया साथि।
मजिल[५] मजिल तुरी गटीयाइ[६]।
उतउ दिवस गिणइ[७] नवि गिणइ राति[८]।
चीतलता चिति गोरडि वसी[९]।
तठइधुरि ह [स्या] ढोल[१०] नइ भरहरी भेरि[११]।
राजा मतिहि आणंदीयउ[१२]।
जब दिठि दीठउ[१३] गढ़ अजमेर ।।भु०।।

पं० में यह २३०, ग्या० में २३४, र० में २३२, ना० में २४४, न० मे २६४ है। किन्तु पं० २३० .१, .२, .३, .४, .५ क्रमशः अ० १६३ .१, .२ .३, .४ .५ हैं और पं० २३० .६, .७, .८, .९, .१० क्रमशः अ २६४, ६, .७, .८, १० है।

१. अ० जब उढयउ राय, ना० चालीया राय। २. अ० कुशल की दक्षणा। ३. अ० कीध पसाउ। ४. अ० जिलमती तुरीय, ना० चुलमती तुरीय। ५. अ० ना० चउरासीया छइ साथि। ६. र० ना० अ० न० मजिल मंजिल तुरी पालटै, (पालटीयै०र०)। ७. अ० न० ना० दिवस न गिणै राजा। ८. अ०। ९. र० अ० ना० चालतां चित्त गोरी वसी (बसी गोरीड़ी-र०)। १०. अ० ना० घुर रह्या ढोल, र० तठै गुराह्या ढोल। ११. ना० गुरहरा भेरि। १२. र० न०आ राजा मनि, आन दीयो। १३. ना० जव राजा दीठउ।

(१५२)

तब बोलइ वीसल चहुआण।
अजीय तूं मूंध न मेल्हइ मान[१]।
इकु माण तुज ही मलइ[२]।
बरम बारह तूं छोडी हे नारि[३]।
कुवचन थी ऊलग गयउ[४]।
अजू तू गरव न[५] छोड़इ गमारि[६] ।।भु०।।

पं० में यह २४१ है, ना० में २५५, र० में २४३, न० में २७४, अ० में ३०५।

१. अ० न० मूंकइ हो माण। २. अ० रण माणै तूंही मली, र० रहु माण तुझही मलै। ३. अ० छडी हे नार। ४. अ० वचन कै वेध्यउ ओलग गयउ। ५. र० अजी कहव। ६. अ० न० छंडी गमारि, र० तूं न तिजै गमारि।

(१५३)

सवत सहस सत्तिहित्तरइ जाणि[1]।
नल्ह कवीसरि कही अमृत वाणि[2]।
गुण गुंथ्यउ चउहाण का।
सुकल पक्ष पंचमी[3] श्रावण मास४।
रोहिणी नक्षत्र सोहामणउ[5]।
सो दिन गिणि[6] जोइसी जोडइ रास[7] ।।भु०।।

पं० मे यह २४५ है, ना० में २५६, र० में २४७, न० में २७७, अ० में ३०६।

१. अ० तेर सतोत्तरइ जाणि, न० सहस तिहुत्तर जाणि। २. अ० सरसीय वाणि, न० रसीय वपाणि। ३. अ० सुक पंचमी, न० सुकुल पंचमी। ४. अ० नइ श्रवण मास। ५. अ० हस्त नक्षत्र रविवार सुं। ६. अ० सुभ दिन, र० सो दिन जोई। ७. अ० पं० जो सी रे जोड़ियउ रास, र० जोइसी जोडयो रास।

८

पं० अ० के अतिरिक्त छंद

(१५४)

चालउ उलगाणउ[1] सउण बुलाय[2]।
साधण प्रीय वउलावण जाइ[3]।
रहि न सकइ पगला भरइ।

हुई दाहिणी भैवरी[४] सउण सुचंग[५]।
वउलाया धण पगा लाग।
स्वामी नइ आइ नइ[६] कुसल वंदाई[७]।
गुहकइ छइ राजा दाहणउ।
तुरीय[८] डकाईयउ संभरि राय।।

(तुलना० .८ की ६६.६ से)

पं० में यह छंद ६२ है, ग्या० में ६८ र० में ६७, ना० १०६, अ० में १२३। किन्तु अ० में उपर्युक्त .५, .६ नहीं है, उनके स्थान पर यथा .४, .६ उसमें निम्नलिखित है :

(.४) नीठे नीठे समझाविय नारि।
(.६) धण कुंवारि तुरी चढैं राइ।

१, र० चाल्यो उलताणो। २. अ० बोलावण। ३. धण जीवड़ौ। ४. अ० दाहिणी भैरवी। ५. अ० फहकरइ, र० सुचंग, ना० सुणौ सुणौ सुचंग। ६. ना० स्वामी गहू। ७. र० कुसल पठाइ, ना० कुशल बुलाइ। ८. अ० तठै तुरी काठिया।

(१५५)

एक सुणउ मुझ वीनती।
एहु अपूरब सुणह विचार।
रे पडिहार म लावउ वार।
वेगि ऊली बुलावउ[१] सभा मझारि।
बांभण कुवण ते संतरी।
तब पउलीय पंडियउ लीयउ बोलाइ।
आवउ देव दया करी।
जोसीयर तुझ बोलावइ राइ[३] ।।भु०।।

(तुलना० .१, .२ की पं० १६७.३, .४ से)

पं० में यह छंद १६८ है, ग्या में १७३, र० में १७०, ना० में

१८२, अ० में २१६।

१. र० अ० ना० योगो बोलावउ जी। २. अ० पंडिया तोहि, र० जोइसी हो। ३ अ० ना० नौनै बोलावइ छइ राइ।

(१५६)

धन्य हो पंडीया धन्य हो राइ।
नफर षंदाया दिवस गिणाइ[1]।
धन्य हो जोगी दरसणी।
जिणि वेगि ले मेलउ धण कउ नाह[2]।
धन्य दिहाड़उ आज कउ।
राणी राजमती मिल्यो बीसल राउ ।।भु०।।

(तुलना० .५ की स्वीकृत २६.५ से)।

पं० में यह छन्द २४४ है, ना० में २५८, र० में २४५, अ० में ३०८। किन्तु ना० र० अ० में उपर्युक्त .५, .६ नहीं है, और उपर्युक्त .३ के पूर्व निम्न लिखित और है :-

धन्य हो गोरी गुण भरी।
धन्य हो पूरव्यउ सयण कहाइ।
धन्य वैरागर मत्रवी।
भानुमती राणी धन्य सभाइ।

१. अ० मुहूरत दिवस दियउ धन्य गिणाई। २. र० मेलव्यउ धण को नाह।

६

र० न० के अतिरिक्त छंद

(१५७)

चाल्यो पंडीयो[1] गयो अजमेर[2]।
जोआ[3] छइ गढ राच्या रेही छेह।
जोई छइ गढ़ री तलहटी।

जोई छइ हस्ती घोड़ा तणी लास[४]।
जोआ[५] छइ चोहटा चोषंडी।
तठइ राज करंतो जोयउ बीसल चहुआण[६]।।भु०।।

र० ना० में यह छंद ११ है, न० में १२/२।

१. ना० चाइयो पांडयो। २. ना० गढ़ अजमेर। ३. ना० जोया। ४. ना० घोड़ा तणी साल। ५. ना० जोया। ६. ना० वीसल चहुआण।

१०

न० अ० के अतिरिक्त छंद

(१५८)

देस मालव माहे नगरीय धार।
लोक वसै धनी मनहि उदार।
वापि कुवा सरवर छया।
राज करइ राजा भोज सुजाण।
न्याय जसइ जगि दीपतउ।
इण मांहि परतापी इंद्र जिम आण ।।भु०।।

न० अ० में यह छंद ६ है। स० १२ इसी विषय का है, किन्तु उसका पाठ नितांत भिन्न है।

(१५९)

चालियउ ओलगाणउ उलालीय[१] वाग।
तोरणइ तूंलबे काला रे नाग।
मत तोकुं देखि राउ बाहुड़ै।
काले घड़ै साम्ही[३] आवि कुंभारि[४]।।
तोना ओढावां रे लोवड़ी[५]।

आज तूं वाजि रे सामुही वाउ।
रजी ऊडै ज्यु[६] धरि रहै राउ ।।भु०।।

(तुलना० .१, .२ की म० ७८.१, .२ से)

यह न० में ११६, और अ० में १२७ है। न० में उपर्युक्त .३ नहीं है।

१. न० [में नहीं है]। २. न० तोरणे लवइ। ३. न० का लइ धड़ई सुमुही। ४. न० आनि कुंभार। ५. न० तो नइ उढ़ाविसुं दो ववसार। ६. न० राजी उडई नइ।

(१६०)

ततखिण राउ चढ्यउ कर जोडि।
तुरीया पलाणिया लालथी चोडि।
सोरठी झलकै काख में।
जरह रंगावलि कस्या छे आणि।
पायका वृंद आगइ पुलइ।
राजा हो चंचल चडीयउ तुरग ।।भु०।।

(तुलना० .३ की क० १४०.३ से)

यह छंद न० में १२० तथा अ० में १२८ है।

(१६१)

पंडिया तुं कहे जिम प्रीय न रीसाय।
साधण तुझ विन अन्न न खाइ।
देइ कइ हेति आधार ल्यइ।
सोइ अंग लागइ नहीं स्वाद न देइ।
पाय लागी लालच करइ।
हूं तउ नेह जोडउं जिम माछली नीर।

प्री वीसारी जी गोरड़ी।
हिव वेग पधारो जी साहस वीर ।।भु०।।
(तुलना० .१, .२ की स्वीकृत ६४.१, .२ से)
यह छंद न० में १८०, अ० में १६२ है।

११

पं० स० के अतिरिक्त छंद

(१६२—३०२)

ये छंद सभा के संस्करण में प्रकाशित हैं, इसलिए इनकी केवल संकेत संख्यायें नीचे दी जा रही हैं!

स० १.६ = प्र० १.६, स० १.७ = प्र१.७, स० १.६ = प्र० १.८/२, स० १.१० = प्र० १.८/१, स० १.११ = प्र० १.६/१, स० १.१२ = प्र० १.६/२, स० १.१३ = प्र० १.१०, स० १.१६ = प्र० १.१३, स० १.१७ = प्र० १.१४, स० १.१८ = प्र० १.१५, स० १.२० = प्र० १.२०, स० १२३ = प्र० १.२३, स० १.२४ = प्र० १.२४, स० १.२५ = प्र० १.२५, स० १.२६ = प्र० १.२६, स० १.३२ = प्र० १.३२, स० १.३३ = प्र० १.३३, स० १.३४ = प्र० १.३४, स० १.३५ = प्र० १.३५, स० १.३६ = प्र० १.३६, स० १.३७ = प्र० १.३७, स० १.३८ = प्र० १.३८, स० १.३६ = प्र० १.३६, स० १.४१ = प्र० १.४०, स० १.४२ = प्र० १.४१, स० १.४६ = प्र० १.४४, स० १.५० = प्र० १.४६, स० १.५१ = प्र० १.४८, स० १.५३ = प्र० १.५०, स० १.५४ = प्र० १.५१, स० १.५५ = प्र० १.५२, स० १.५६ = प्र० १.५५, स० १.६३ = प्र० १.५६, स० १.६४ = प्र० १.६०, स० १.६५ = प्र० १.६१, स० १.६६ = प्र० १.६२, स० १.६७ = प्र० १.६३, स० १.६८ = प्र० १.६५, स० १.७० = प्र० १.६७, स० १.७२ = प्र० १.६६, स० १.७४ = प्र० १.७०, स० १.७५ = प्र० १.७१, स० १.७६ = प्र० १.७२, स० १.७७ = प्र० १.७३, स० १.८३ = प्र० १.५७,

स० १.८५ = प्र० १.७६, स० १.८५ = प्र० १.७७ : कुल ४७ छंद

स० २.१४ = प्र० २.१३. स० २.१६ = प्र० २.१५, स० २.२१ = प्र० २.२०,
स० २.२२ = प्र० २.२१, स० २.२३ = प्र० २.२२, स० २.२४ = प्र० २.२३/१,
स० २.२८ = प्र० ३.२५, स० २.३४ = प्र० २.३१, स० २.४० = प्र० २.३७,
स० २.४२ = प्र० २.३६, स० २.५७ = प्र० २.५५, स० २.५८ = प्र० २.५६,
स० २.६३ = प्र० २.६१; स० २.६४ = प्र० २.६२, स० २.६६ = प्र० २.६३,
स० २.६७ = प्र० २.६४, स० २.६८ = प्र० २.६५, स० २.६९ = प्र० २.६६,
स० २.७० = प्र० २.६७, स० २.७१ = प्र० २.६८, स० २.७२ = प्र० २.६९,
स० २.७३ = प्र० २.७०, स० २.७४ = प्र० २.७१, स० २.७५ = प्र० २.७२,
स० २.८२ = प्र० २.७५, स० २.८४ = प्र० २.७७, स० २.८५ = प्र० २.७८,
स० २.८६ = प्र० २.७९ : कुल २८ छंद

स० ३.५ = प्र० ३.६, स० ३.२२ = प्र० ३.२०, स० ३.४२ = प्र० ३.३९,
स० ३.४५ = प्र० ३.४२, स० ३.४८ = प्र० ३.४५, स० ३.५४ = प्र० ३.५१,
स० ३.६१/१ = प्र० ३.५७, स० ३.६७ = प्र० ३.६५, स० ३.६८ = प्र० ३.६६,
स० ३.७१ = प्र० ३.७०, स० ३७३ = प्र० ३.७१, स० ३.७४ = प्र० ३.७२,
स० ३.७५ = प्र० ३.७३, स० ३.८३ = प्र० ३.८२, स० ३.८४ = प्र० ३.८१,
स० ३.८५ = प्र० ३.८३, स० ३.८७ = प्र० ३.८५, स० ३.८९ = प्र० ३८७,
स० ३.९० = प्र० ३.८८, स० ३.९१ = प्र० ३.८९, स० ३.९२ = प्र० ३.९०,
स० ३.९३ = प्र० ३.९१, स० ३.९५ = प्र० ३.९३, स० ३.९९ = प्र० ३.९७,
स० ३.१०२ = प्र० ३.१००, स० ३.१०३ = प्र० ३.१०१ कुल २६ छंद

स० ४.१ = प्र० ४.१, स० ४.२ = प्र० ४.२, स० ४.३ = प्र० ४.३,
स० ४.४ = प्र० ४.४, स० ४.५ = प्र० ४.५, स० ४.६ = प्र० ४.६,
स० ४.७ = प्र० ४.७, स० ४.८ = प्र० ५८, स० ४.९ = प्र० ४.९,
स० ४.१० = प्र० ४.१०, स० ४.११ = प्र० ४.११. स० ४.१२ = प्र० ४.१२,

स० ४.१३ = प्र० ४.१३, स० ४.१४ = प्र० ४.१४, स० ५.१५ = प्र० ४.१५, स० ४.१७ = प्र० ४.१६, स० ४.१८ = प्र० ४.१७, स० ४.५६ = प्र० ४.१८, स० ४.२० = प्र० ४.१६, स० ४.२१ = प्र० ४.२०, स० ४.२२ = प्र० ४.२१, स० ४.२३ = प्र० ४.२२, स० ४.२४ = प्र० ४.२३, स० ४.२५ = प्र० ४.२४, स० ४.२६ = प्र० ४.२५, स० ४.२७ = प्र० ४.२६, स० ४.२८ = प्र० ४.२७, स० ४.२६ = प्र० ४.२८, स० ४.३० = प्र० ४.२६, स० ४.३१ = प्र० ४.३०, स० ४.३२ = प्र० ४.३१. स० ४.३३ = प्र० ४.३२, स० ४.३४ = प्र० ४.३३, स० ४.३५ = प्र० ४.३४, स० ५.३६ = प्र० ४.३५, स० ४.३७ = प्र० ४.३६, स० ४.३८ = प्र० ४.३७, स० ४.३६ = प्र० ४.३६, स० ४.४१ = प्र० ४.३८, स० ४.४२ = प्र० ४.४०, : कुल ४० छंद

१२

र० के अतिरिक्त छंद

(३०३)

गढ़ अजमेर धण करइ छइ सिणगार।
सात सहेली बइठी छइ सार।
उवा पहिरइ छइ नवलषा हार।
उवा अगर चंदण घसि लावइ छइ गात्र।
नयण में काजल मुखहि तंबोल।
संजत कर सेजइ चड़इ।
सातां सहेल्यां रउ मलीया मान ।।भु०।।

(तुलना० उपर्युक्त .६ की स्वीकृत १२७.५ से)

यह र० ४२ है।

[केवल सात चरण होने के कारण इसकी छंद-रचना ग्रंथ के अन्य समस्त छंदो से भिन्न है।]

(३०४)

इसी न काई हो दीठी नारि।
कांई इसी सोरठ देस मझार।
ना गुणवंत विद्याधरी।
संगल द्वीप समुद्र के पारि ।।भु०।।

(तुलना० .१ की स्वीकृत ४७.४ से)

यह र० ८४ है।

[केवल चार चरण होने के कारण इसकी छंद-रचना ग्रन्थ के अन्य समस्त छंदो से भिन्न है।]

(३०५)

सवीय नै धाइ समझावण जाइ।
राजकुमरि तूं मन्दिर आवि।
जै दुष छै तो अति घणो।
हीयडले माहि न क्युं सुहाइ।
बेटि तूं राजा भोज की।
तोहि रूठी कोइ धान न षाइ ।।भु०।।

(तुलना० .४ की स्वीकृत ४६.४ से)

यह र० में १०६ है।

१३

ना० के अतिरिक्त छंद

(३०६)

मांग सीष धरि चाल्यौ छै राव।
राजा जी सुं करइ जुहार।
बीछडता हीय गहबरइ।

कर जोडी अरू इस भरइ।
थे छउ मोटा राजवी।
म्हे थांनु दासीय दीनी छइ राइ।
लाज बहे ज्यों कुलतणी।
नीर नयणे भरि लागै छै पाय ।।भु०।।
यह ना० में ४१ है।

(३०७)

दीन बचन स्वामी तुम कहो कांइ।
आरत काम करज्यो मन माहि।
थोडै कहै घणो मानिज्यो।
थे सिर का सेहरा माथे का मौड।
म्हां सारू कांम जणाविज्यो।
स्वामी कर न सकै थांइरी होड।
थे सब धरती का धणी।
राजा जी वीसल नै द्यै बांह।
मिल पधारो थे घरि दिसै।
जब थे गढ अजमेर जांह।
इतनौ कह्यौ थे मांनज्यो।
पटराणी करज्यो राणीया माहि ।।भु०।।
यह ना० में ४२ है।

(३०८)

सेज वाले कीजै समुदाय।
भीत[र] बइठा छै रांणी राव।
जोडइ दुहुं जै सारिषी।
यै विधाता चढै बिनांण।

किण जांणै किण ऊपरा।
लाल नगरी चढीयौ छइ राव।
नयर पाडल पुर पधार।
नगरी थकी चढीयो छै राय।
नयर मांडल पुर पहुती आइ।
ताण्या लाल गिराडचा।
हयवरां गयवरां को नहीं पार।
चौंरास्यां गहमह धणी।
सभा सोहइ छइ राव की लार ।।भु०।।

वह ना० में ४३ है। किन्तु इस छंद में दो छंदो की पंक्तियाँ मिली हुई ज्ञात होती है।

(३०६)

डेरै डेरै तहं भूपाल।
चउरास्यां तणी संभाल।
वीसल दे अति हरष सुं।
उजल सुंषडा अनै पकवान ।
भोजन गत करै ठाकुरां।
चिवल सोपार पाका पांन।
केवड काथ कपूर सुं।
आयइस हाथ दइ चहूआंण ।।भु०।।

यह ना० में ४४ है।

(३१०)

मांडलपुर थी चढ्यो चहूआंण।
पंचाली कीधी मेल्हाण।
डेरा दीया नय ऊपरै।
आय मिलै अछै सगलौं लोग।

मोन्यां करइ बधामणा।

कलस वंदावै राजा जोग ।।भु०।।

यह ना० में ४५ है।

(३११)

करि सझाई चढ़ियौ छै राइ।

अंबर सयल रह्यउ ज छाइ।

पुरतांलां धसमसी।

कटक चालइ दस कोस कइ फेर।

घाट घाटा सहू लंघीया।

सातमै दिवस आयो अजमेर ।।भु०।।

यह ना० में ४६ है।

(३१२)

राज चौरासीयइ दीयइ छइ सीष।

सब कोई घर आपणै जाइ।

म्हांकी सोभा थांथी बधी।

बिनय करै बोलै बीसल राउ ।।भु०।।

यह ना० में ४७ है।

(३१३)

सुरंण पटोली छाया हाट।

हयवर गयवर मिल्या छै घाट।

पैसारा की परवांहु चइ।

बाजै बरघू अनै नीसांण।

लुंण उतारै अपछरा।

रतनागिर सूं चढ्यो चहुआण।

राजमंत्री आगलइ।

जोत दीसै जाणे परतष भांण।

सहि मुप चाहै छै रावका।
झूठ कहइ तैनै राव की आंण ।।भु०।।
(तुलना० .५ की स्वीकृत १२.५ से)

यह ना० में ४८ है।

(३१४)

ततपिण मिंदिर अर चत्रसाल।
तिहां पोढण पहुतो भूपाल।
[?] लां सेज विचाई यह।
राजमती लीयइ कंठ लगाय।
आलिंगन चुंवन करइ।
मनपत मानै वीसलराय।
राजकुमर चित मोहीयो।
मोटो राजा गरव न माय ।।भु०।।
यह ना० में ५० है।

१४

न० के अतिरिक्त छंद

(३१५)

घूरिहि सीयालियउ ल्हलरियउ नाह।
रणहि पइ सतांलियउ सनाह।
दिने छोटा निसि आगली।
तइ तउ मोनइ किमतालिय दीघ।
चित अवे सास उतइ कियउ।
सीप न काई तइ मुंनइ दीघ ।।भु०।।
यह न० में १६० है।

१५

अ० के अतिरिक्त छंद

(३१६)

बांभण भाट आया अजमेर।
आवीयौ भजराज कौ नालेर।
वीसल दे मन गहगह्यै।
था कुं भानुमती राणी कुमरि की मात।
कंचन थाल रतने भर्यो।
ऊपरि मंगल मूंकि नालेर।
करइ नरेसर विनती।
आवहु जी जान करि आज सवेर ।।भु०।।

अ० में यह १४ है।

(३१७)

परणि उरणि राजा दीयइ प्रवाह।
दीजै छै अरथ नै गरथ प्रवाह।
याचक देस प्रदेस का।
ऊरण कीधा हो चारण भाट।
प्रोलि प्रोलै प्रवाह द्यै।
दुरबल लोक के दालिद्र टालि।
सुदिन लेई साम्हउ चंद्रमा।
राजा हो चालीयउ बहु जस खाटि ।।भु०।।

अ० में यह ४१ है।

(३१८)

मयण की वेदन सहिय निस्संक।
काया हो लाइय कोई न कलंक।

चित्त मुहडइ धणु चल वली।
कुशल वउलाई वरस इग्यार।
लाज मरजाद सुं धण रही।
सुजस पायउ गोरी सकल संसार ।।भु०।।
अ० में यह १८० है।

(३१६)

नगर भीतरि जब पंडियउ जाइ।
प्रथम दरवाजै हो हरषित थाइ।
पेखि कूआ किहां वावड़ी।
किहां सुसरवर किहां सरस वनखण्ड।
किहां हि तंबोलिनी मालिनी।
किहि सु उग्राहिजइ राउ कउ दंड।
पंडित वाद हुवइ नव नवा।
पर कहया सबद को कीजइ कहि षंड ।।भु०।।
यह अ० में २१२ है।

(३२०)

पंडियउ मोहियउ देखि बजार।
हसति साटइ तिहां लीजइ तोषार।
दरवाजै हिव दूसरै।
मल्ल भिडइ भिडइ पाइका जोडि।
किहां सु सन्नाह समारियइ।
किहि हि समारियइ बाण कोदंड ।।भु०।।
अ० में यह २१३ है।

(३२१)

दरवाजइ तीजइ वस्तु विशेषि।
गहगह्यउ पेष करि चित्र सविसेषि।

पाट पटंवर साटियइ।
किह किण काटियइ कनक दे रेखि।
छयल रंजि राता रहै।
त्रीखे हो लोयण तरूणीय पेखि।
कहुं कहुं बालक बहु पढ़े।
चित्र कर बेचइ किहां बहुत आलेखि ।।भु०।।
अ० में यह २१४ है।

(३२२)

दरवाजै चउथे हिव जाणि।
भणइ हो वांभण वेद पुराण।
किहां गुण भाट चारण भणइ।
दान वेचइ किहां पुरुष सुजाण।
देस विदेसी दीसइ घणा।
वहरा वे पारियां को नहीं जान।
अनोपम नयर सुहामणउ।
पगि पगि चउतरइ जुड़इ रे दीवाण ।।भु०।।
अ० में यह २१५ है।

(३२३)

बात सुनी राजा अधिक उल्हास।
वीसल दे चढ्यउ वेगि वहासि।
साबति सेन साथइ करी।
ततषिण आवियउ राजदुवारि।
निलवट नूर सोहइ घणी।
मेल मेली तठइ राजगृह माहिं ।।भु०।।
अ० में यह २४० है।

(३२४)

घरह कुं चाले हिव वीसल राइ।
पूरव्यउ राइ बोलावण जाइ।
एक मजलि रह्या एकठा।
सीख कीधी तब पूरव्यइ राउ।
एक एकां थी रे आगला।
त्रीस तुरी दीन्हा चमर ढुलाइ।
चउरासीयां कुं रे जूजुआ।
सावटू बागा नइ सहि हथियार।
मिलि हिली राउ पाछउ चल्यउ।
तब तुरीअ डकाविया सइंभर वाल ।।भु०।।

अ० में यह २६२ है।

१६

(३२५–३४३)

स० के अतिरिक्त छंद

स० १.८, १.४०, १.४४, १.४५, १.५७६, १.६, १.८०, १.८१, १.८२, : कुल १०छंद

स० २.१, २.३, २.२७, २.७७, २.७८ : कुल ६छंद

स० ३.६, ३.७ : कुल २ छंद

स० ४.१६ : कुल १ छंद

छंदानुक्रमणिका

(संख्याएँ स्वीकृत छंदों की है।)

असीय बरस की बूढइ बेस। ८३
अस्त्रीय जनम कांइ दीधउ महेस। ८१
आकुली बोलि पाछइ पछिताइ। ५१
आज सषी तलहटी घुरइ निसाण। १२०
आवि दमोदर बैठो छइ पाट। ५४
आसाढइ धुरि बाहुड्या मेह। ७५
आसोजइ धण मांडिया आस। ७८
आंजणी काइं नि सिरजीय करतार। ८२
उणरा अहर फड्कइ लहलहइ बांह। ११४
ऊभडी भावज दीयइ छइ सीष ४७
ऊलग जाज तइं किसउ कियउ नाह। १२६
ऊलग जाण कहइ धणी कउण। ३६
ऊलग जाण की करइ छै बात। ४०
ऊलग पूगि घरि अवियउ भरतार। १२१
कंठ भरे भरे दीधा छै पान। १०६
कडुया बोल न बोलि हे नारि। ४६
कनक काया जिसी कूं कूं रोल। १२८
कहि नइ गोरी थारा प्रीयरा अहिनाण। ६५
कातिग मासइ जणह चलाइ। ८८
कोस पयाणइ पंडियउ जाइ। ६६
गउरिका नंदन त्रिभुवन सार। १
गढ अजमेरि बसइ रे भुआल। ६
गरब करि बोलियउ सइंभरि वाल। २८
गरब म करि हो सइंभरि बाल। २६
गहिली हे मुधि तोहि लागी छइ बाइ। ४१
गोरडी बइठी छइ पंडिया कइ आइ। ८५
चालियउ उलगाणउ कातिग मास। ६७
चालियउ उलगाणउ छंडीय काणि। ५०
चालियउ उलगाणउ धण जाण न देइ। ४२
चालियउ उलगायउ लेइ छइ सउण। ५७
चितह चमकियउ बीसल। ३५
चीरी चनोइय दीन्हीं छइ संठि। ६७
चीरी दीन्ही पंडियइ राउ कइ हाथि। १०४
चीरी मेल्ही धण आपणइ हाथि। ११६
चीरी रही गोरी गलइ लगाइ। ११७
चीरी लिखी धण आपणइ हाथ। ८६
चेत्र मासइ चतुरंगी हे नारि। ७२
छंडी ही स्वामी म्हे थारी हो आस। ४५

छंडद्या हो गोरी जेलमसेर । ६२
छोडि नइ गोरी तूं दे मुझ जांण । ४३
जइ तूं पूंछइ धरह नरेस । ३१
जनम मांगउं स्वामी मारू कइ देस । ३४
जाणियउ हो राजा थाकउ जाण । ९२
जोगिनउ एक अपूरव राइ । १११
जोगिनउ जाइ वइठउ जी प्रोली । ११५
जोगिनउ वोलय सुणउ नरेस । ११२
जोगी कहइ सुणि मोरी माइ । ११९
जोगी थां कौनु कहइ हो वात । ११८
झूना कउ उलपट झूना कउ ताव । १२७
ठसकला मुसकला मोनइ न सुहाइ । १२५
तुरीय पलाणीय ठामोठामि । २४
तोरणि आवियव वीसल राव । १७
त्रीजइ फेरियउ राय । २१
थारउ जनम हूउ गोरी जेसलमेरि । ३०
दीन्ही सोपारीय नइ हरषियउ राय । १०
दूजइ फेरइ फेरियउ राय । २०
दूसरइ कडवइ गणपति गाइ । २
देषि जेठाणी हिवं लागउ छइ जेठ । ७४
देषि सषी हिव लागउ छइ पोस । ६९
देव वाघेरउइ दीयउ रे मेल्हाण । १४
देस मालवइ देवउ रे उछाह । १६
नाल्ह म्हांका दूप सहिसी कउण । ९१
नाल्ह रसाइण रसभरि गाइ । ५
पंडियउ आइ पहूतउ प्रोलि । १०२
पंडियउ पहुतउ सातमइ मास । १०१
पंडियउ वोलाविनइ आयउ गोरी पास । ८३
पंडियउ राउलइ कियउ रे प्रवेस । १०३
पंडिया गोरडी तइं किण परि दीठ । १०५
पंडिया जइ तूं चालियउ प्रोच कइ देसि । ९३
पंडिया जाइ कहे धण का नाह । ८६
पंडिया तिम कहेज्यो जिस प्रीय नि रिसाइ । ९४
पंडिया तोहि वोलावइ रे राइ ७
पंडिया तोहि वोलावइ रे राव । ५६
पंडिया हुं घरि गुण केरी दासि । ५५
परणि उरणि धरि आवियउ राइ । २७
पाइ कंकण सिरि वांधियउ मउड़ । १५
पाटि वइठी छइ राजकुमारि । २३
पूजियउ गणपति जाली छइ जानं । १३
पूरव देस कउ कुच्छनउ लोग । ३३
फागुण परहरद्या कंपिया रूप । ७१
वंभण भाट वोलाविया राय । ८
वंभण साहि समदिया वीसलराइ । ११
वलि कहि गोरी थारा प्रीयरा अहिनाण ९६

बात सुणी कूटणी चालीस ऊठि । ८४
बारां वरसां धण मिलियों नाह । १२३
बालुं हो धणीय तुम्हारडउ जाण । ८७
बाहुडि मोरडी तूं घरि जाह । ८६
बोलइ छइ बावज छंडी य काणि । ४६
भाद्रवइ बरसइ छइ गुहिर गंभीर । ७७
भीतरि सांरचया दूअनय राई । १०६
भोजराज तणउ मिल्यउ छइ दिवाण । ६
मइ छंडी हो स्वामी थारी आस । ४४
मगसिरियइ दिन छोटा जी होइ । ६८
माइ मासइ सीय पडइ ठंठार । ७०
मुलकइ हसइ आलिगन देइ । १२४
मेल मिली तिहां हरयिषउ राउ । ९२
रहि रहि बहिनडी तूं मांम म जाहि । १०८
रहि रहि बीसल घर मम जारि । १०७
राजा उतरच्चउ धार मंझारि । १६
राजा कइ बारि घुर्‌यारि निसाण । ३६
रोवती मेल्हि गउ धण कउ रे नाह । ६५
लंघिया चांविला पाछिला षाल । ६६
लाड गहेलीय हे लाड निवारि । ५६
वइसाणइ धुर लूणिजइ धान । ७३
सइंभर धणीय किउं ऊलग जाइ । ३७
सातमइ मास पहूतलउ जाइ । १००
सात सहेलीय बइठी छइ आइ । ९०
सात सहेलीय वइठी छइ आइ । ६४
सात सहेलीय बइठी छइ आइ । १८
सात सहेलीय रही समझाइ । ५२
सात सहेलीय सुणउ म्हारीय बात । ५३
साधण ऊभी छइ टेकि कमाडि । ५८
साधण बोलइ सुणि राव का पूत । ४८
सासू कहइ बहू घर माहे आवि । ८०
सांढिया भरउ तुम्हे सउ च्यारि । ११०
सांभलउ जोगी कहइ नरनाथ । ११३
स्रावण बरसइ छइ छोटीय धार । ७६
स्वामी ऊलग जाण की षरीय जगीस । ६०
स्वामी ऊलग जाण की षरीय दुसार । ६१
हंसगमणि मृगलोयणी नारि । १३
हंसवाहणि देव करि धरइ बीण । ४
हाथि तंबालूय अंजरि नीर । २२
हिरणि मरणि समर्‌यउ जगन्नाथ । ३२
हिव घरिआवियउ संइभर वार । १२२
हुई पडिरावणी हरषियउ राउ । २५
हेम की कूंपली मइण की मूंद । ७८
हूं न पतीजउं गोरी थारड वइणि । ३८
हूं विरासी राजा मइं कीयउ दोस । ३६

शब्दानुक्रमणिका

(संख्याएँ स्वीकृत छंदों की है।)

इस अनुक्रमणिका में केवल ऐसे शब्दों को दिया जा रहा है जो प्रायः अपनी प्राचीनता के कारण दुर्बोध हो गए हैं और उनके प्राचीनतर रूपों को देते हुए उनके अर्थों को देने का भी एक संक्षिप्त प्रयास किया जा रहा है।

अंगारा : अङ्गारक = अंगारों पर सिकी हुई रोटी ६६
अंतेउर : अन्तःपुर =रनिवास २१
अगवाणि : अग्रयान [?]=आगे आकर मिलने वाले ६
अपछरा : अच्छरा : अप्सरस्=अप्सरा १२
अरथ : अर्थ = धन ५०
अरदास : अर्जदाश्त [फा०] = प्रार्थना १०१
अवर : अपर = दूसरा ६२
अवली - सवली : असवृव-सवृव-असव्य-सव्य=दाहिने-बाएँ १७, १२३
अहर : अधर =ओष्ठ ३४
अहिनांण : अभिज्ञान = परिचय ६५
आकर : अग्र = बढ़ा हुआ ४३
आषा : अक्षत = समूचे चावल १७
आगली : अग्र = बढ़ा हुआ १०८
आल [दे०] = कलङ्करोपण, दोषारोपण ६०, १२१
आसोज : आश्विन = क्वार मास ७८
आहेड : आखेट = शिकार ३१
उघाडा : उद्घाट = खुला हुआ ६३
उछाह : उच्छाह : उत्साह १०, १६
उलभडा : उपालम्भ = उलाहना ४६, १२४
उलगाणा : अवलग्न = सेवक, चाकर ३, ३८, ४२, ५०, ५७, ६७, १०६
उल्लास : उल्लास ११६
ऊभा : उब्भिय : ऊर्ध्वित = खड़ा ३६, ४०, ४७, ७३, १२४
ऊगल : ओलग्ग : अव + लाग् = सेवा करना, चाकरी करना ६, ३५
ऊलग : अलोग्गा : अव+लग् = सेवा, चाकरी ३५, ३७, ३६, ४६, ४८, ६०, ६५, ७५, १२१, १२५
कंचुय : कञ्चुक = चोली ७२, ६४, १२२

कचोल : कच्चोल = कटोरा ४७, ४८, १२८
कटोरा : कच्चोलक ११८
कडवइ : कडवक = छन्द २
कडि : कटि ११४; १२८
कमाड : कपाट = किवाड़ ५८
करह : करलि = हरिण की एक जाति ४७
करह : करभ = ऊँट २७, ७०
कवाड : कपर्द = कौड़ी ७२, ८३
कविलास : कैलाश = शयनगृह [?] ६७
कविलीय : कपिला ५५
कागज : कागज [फा०] = पत्र ११२
काल्ह : कल्ल:कल्य = कल २८, ११०
किगाड : कपाट = किवाड़ १०२
कुक्कस : तुष = भूसी ३३
कुच्छ : कुत्सा ३३
कुसूत : कुसूत्र ४८
कुंपली : कुंपय : कूपक = कुप्पी ७८
कूंपली : कोमल १२८
कूष : कुक्षि = उदर, पेट ६०
कूड : कुट = कूड़ा ४१
केली : कादली १२६, १२८
को : क:=कोई ६६
कोवंड : कोदंड = धनुष १२२
पाल [दे०] = नाला ६६, ७५
षिव : क्षिप् = फेंकना ७७
षिस [दे०] = सरकना ८७
षेह [दे०] = धूल १५
षीलि : षउर : खपुर = खोर १०२, ११५
गउष : गवाक्ष ७८, १०५
गंठि : ग्रन्थि ६
गयंद : गजेन्द्र ७
गरथ ग्रन्थि [?] = द्रव्य ११
गहिल गहिल्ल ग्रस्त [?] = आविष्ट, पागल भ्रान्त-चित्त ४१, ५
गिल = निगलना ८
गांठि : गोट्ठी : गोष्ठी ६
गोवल : गोकुल ११
घण : घन = घना वन ८
घाउ : घात = घाव, चोट २
चमक्किअ : चमत्कृत ३५, ७
चीता : चित्रक ११
चीरी : चिट्ठिय : स्थिति = पत्र ८६, ६७, १०४, ११७
छानउ : छण्ण : छन्न = गुप्त, छिपाया हुआ ६०
छायउ : आच्छादित

छार : क्षार

छाह : छाया ८६

छेह : छेअ : छेक = अंत १३

जई : यदि १०, ३१, ७५, ६३, १११

जगीस : जिगीषा = इच्छा ६०

जठइ : यत्र = यहाँ

जमदाढ : यमदंष्ट्रा = एक प्रकार का खड्ग ६५

जाडा [दे०] = चौड़ा ६५

जाण : ज्ञान ८७, ६२

जान : यान = सवारी १३

जोसी : ज्योतिषी ७, ५५

झंष : संतप्त होना १२१

झप : झम्प = कुदान ४४

झाल : ज्वाला १२१

झीण : क्षीण ३४

झूर ज्वल [?] - सूखना, क्षीण होना, चिता करना ३, ८१

टीप [दे०] = अंकित करना १२३

ठव : स्थापय् = रखना ६६

ठांइ : स्थान ७४

डाव [देव] = बायाँ हाथ ६६

तउ : तदा = तब

तंबालूय = जलपात्र विशेष २२

तठइ : तत्र = वहाँ ६७, ६८, ७६, १०२

तव : तप् = तप्त होना ७४

ताजण : तज्जण : तर्जन = चाबुक ७३

ताव : ताप ८६

तुरिय : तुरग = घोड़ा ५६

तूठा : तुट्ठ : तुष्ट = प्रसन्न ४, २७, ५१

तेजी : ताजी [फा०] = घोड़ा ६६

थाण : स्थान २८

थाग : स्थाघ = ६३

दरब : द्रव्य ५०

दाधा : दग्ध ७०, ४

दिव : दिव्य = सतीत्व या सत्य प्रमाणित करने के लिए गृहीत अग्नि या अन्य ताप पदार्थ ४४

दिहाडा : दिवस ७४

दीवल : दीप ८०

दीह : दिवस ३, २६, ५५, ६१

दुवार : द्वार ४४

दुसार : दुःशल्य = बेढंगे चुभे हुए काँटे से उत्पन्न विकलता ६१

द्राष : द्राक्षा = अंगूर ८१

द्रेठि : दृष्टि ६०

धण : धन्या = स्त्री ३४, ४२

धाण : [दे०] = धाड़, पुकार, चिल्लाहट ५४, ६५

नयर : नगर ११२

नालेर : नालिकेर २४

नाह : नाथ = स्वामी ३५२

निपाई : णिप्फाइय : निष्पादित = उत्पन्न की हुई ७४

निरष : निरीक्ष् = देखना १२६

निलाड : ललाट २३

निवात : नवनीत ११८

नेत : नेत्र = रस्सी ८७

पउलि : प्रतोली + मुख्य द्वार ७८

पंडिय : पण्डित ७, ५५

पषाल : प्रक्षालय् = धोना ८

पगार : प्राकार = परकोटा

पटोल : पट्ट-दुकूल [?] रेशमी वस्त्र २३

पतड़ा : पत्र = पञ्चाङ्ग ५६

पयउहर : पयोधर = कुच ११३

पयाण : प्रयाण = जाना ५४

परतिक्ष्य : प्रत्यक्ष १३, १६

परदल : पद-दल = पैदल १३

पलाण : पर्याणय् = अश्वादि को सुसज्जित करना ५६, ७०

पलिंग : पर्यङ्क = पलँग २१, २२, ६३, ६१, १२४

पहिरण : परिधान = पहनावा २२, ३४, ८२

पाषर : पक्खर = अश्व-कवच ६

पाट : पट्ट = फलक, पीढ़ा २३

पाट महादे : पट्ट महादेवी १०६

पाठ : पाडण : पाटण = मुहल्ला ६५

पाणही : उपानह = जूती ६७

पाजीय : पाली = पंक्ति १३

पावडी : प्रवृत्ति = मढ़ान, आवरण १०२

पीडार : पिण्डार = भैसो या गायों का रखने वाला, ग्वाला ५३

पीहर : पितृगृह = मायका ३७, १०८

पुल : पुल् = विशाल या उन्नत होना ८०

पूठ : पृष्ठ = पीठ ८४, १०६

प्रोलि : प्रतोली = मुख्यद्वार १०२, ११५

फूंद : फुंद : स्पद् = किंचित् हिलना १५

फेड : स्फेटय् = परित्याग करना १०६

वभण : ब्राह्मण ८, ८६

वल : ज्वल्-जलना ८०

वलद : वर्द = बैल १००

वाई : वाइआ [दे०] = माँ १०८

बांझ : वन्ध्या = बाँझ ४२
बाल : ज्वालय् = जलाना ८७
बे : द्वय = दो ४, ६८
भभुह : भ्रू = भौंह १२२
भाद्रवइ : भाद्रपद = भादों मास ७७
भीड [दे०] = भिड़ाना ८२
भूआल : भूपाल २८
मइगल : मदगल ७५
मउडउ : मंद [?] = शनैः ५५
मंजारि : मार्जारी ८०
मतवाला : मत्तवाल [दे०] = मदान्मत्त ७५
मसांण : श्माशान ६६
माइ : मातृ ५, १८
मांडहइ : मंडप १६
माछ : मत्स्य : मछली ३६
माणस : मानस = अन्तःकरण ५
माता : मत्त ७५
माम : ममत्व ११, ४५, १०८
माम : मर्मन् = मर्म १११
माल : पक्षि-विशेष ६६
मुंद : मुद्रा ७६
मुंध : मुग्ध-मूढ़ ७८
मुलक : मुलुक १२४
मूंद्रडा : मुद्रा ५५, ८५
मूंसा : मूषक = चूहा १
मेह : मेघ ७५
मोक : मुक्क : मुञ्च = छोड़ना ११४
मौर : मउल : मुकुट १५
रयणि : रजनी १२६
राषडी : रक्षा = एक शिरोभूषण ५८
राय : राज् = चमकना, शोभित होना ७१
राल : राड [दे०] = गिराना १०६
रावल : राजकुल - राजभवन ७, ५६
रूख : रूक्ख : वृक्ष
रोझ : ऋश्य - नीलगाय ८१
लंछण : लाञ्छन १२१
लष : लक्ष ५३
लव [दे०] = अंकुरित होना, पल्लवित होना २५२
लह : लभ् = प्राप्त करना ५
लहुडा : लघु = छोटा ६५
लुक : लुक्क [दे०] = छिपना १२
लुण : लवण = नमक १२, ६१
लोयण : लोचन = नेत्र ३
लोवडी : लोमपटी ३४, ८२
वषाण : वक्खाण : व्याख्यान = कहना ४

वज : वज्र ६८
वाइ : वायु ६६, ११५
वाछउ : वत्स = बछड़ा ११७
वाजित्र : वाद्य = बाजा २५
वाट : वत्ता : वार्ता = बात ११५
वार : द्वार २६, १०२
बार : बेला ११६
वालही : वल्लभा १६८
वालही : वल्लभा १६८
विद्वय = दो ३१
विंब : वंध [?] = वर ६
विश : विष ६१
विहि : विधि ४७
वीष : वीखा [खे०] = एक प्रकार की चाल ६६
वीजोर : वीजपूर = फल-विशेष ८१, १०३
वेस : वयस् ५७. ८३, १२५
वेसास : विश्वास ४५, ८६
सउण : शकुन ५७, ६८
संक्र : सक्रम् = जाना १०६
सगल : सकल = सब २१
सद : सद्यः ७५
समर : स्मृ = स्मरण करना ३२
सयल : सकल = सब १४
सरीसा : सदृश ८४, १२७
सवालष : सपादलक्ष २०, ३८
सहिदान : संज्ञान = चिह्न ८५
सही : सखी ७१, ११४
साषिय : साक्षी ६६
सार = अच्छा २३
सारिष : सदृश २६, ६६
साह : साध्य = प्रसन्न करना ११
साहुणी : साधनिक -सेनापति ६०
सिउं : समं = साथ ८२
सिणगार : शृगार १३
शीय : शीत = सर्दी ७०
सीयाल : श्रृगाल - स्यार ६६
सीला : सीअल : शीतल ७३
सुक्कड : सुक्क : शुक्ल १२७
सुणीजा : सुनिज = आत्मीय ४५, १०६
सुस्त : स्वस्थ ११८
हथलेव : लघुक = हलका ६६
हिय : हृदय ६३
हेडा [दे०] = समूह, गाय-बैल आदि का वह झुन्ड जिसे व्यापारी वेचने के लिए ले जाते हैं ४८, ८६

हिन्दी परिषद् प्रकाशन का सूचीपत्र

१. **तुलसीदास** : डॉ० माताप्रसाद गुप्त, पंचम परिवर्द्धित संस्करण, मूल्य २५रूपये। तुलसीदास से संबंध रखने वाली नवीनतम प्रामाणिक सामग्री से युक्त यह ग्रन्थ उच्च कक्षा के हिन्दी विद्यार्थियों के लिए अनिवार्य है।

२. **तुलसी** : डॉ० माताप्रसाद गुप्त, मूल्य २रूपये।

३. **आधुनिक हिन्दी साहित्य** (१९५० से १९०० ई० तक) : लेखक डॉ० श्रीकृष्ण लाल, तृतीय संस्करण, मूल्य २०रूपये। हिन्दी साहित्य के विकास का क्रमबद्ध, सूक्ष्म तथा आलोचनात्मक अध्ययन इस ग्रन्थ में हिन्दी पाठकों को प्रथम बार प्राप्त होगा।

५. **रामकथा** : लेखक रेवरेंड फादर कामिल बुल्के, तृतीय संशोधित एवं परिवर्धित संस्करण, मूल्य ३५ रूपये। यह ग्रन्थ रामकथा सम्बन्धी सामग्री का विश्वकोश है। हिन्दी या किसी भी यूरोपीय अथवा भारतीय साहित्य में इस प्रकार का दूसरा रामकथा विषयक अध्यय उपलब्ध नहीं है।

६. **कवित्त-रत्नाकर** : मूल रचयिता सेनापति, सं० पं० उमाशंकर शुक्ल छठॉ संस्करण, मूल्य ६५ रूपये।

७. **अर्द्धकथा** : मूल लेखक बनारसीदास जैन, सं० डॉ० माताप्रसाद गुप्त, मूल्य १ रूपया।

८. **बीसलदेव रास** : सं० डॉ० माताप्रसाद गुप्त तथा श्री अगरचंद नाहटा मूल्य १०० रूपये। यह ग्रन्थ १४वीं शताब्दी वि० के एक राजस्थानी

काव्य का वैज्ञानिक रीति के संपादित संस्करण है।

६. हिन्दी साहित्य (१६२६ से १६४७ई०) : लेखक डॉ० भोलानाथ, तृतीय परिवर्धित-संस्करण, मूल्य २०रूपये। यह शोध-प्रवन्ध हिन्दी साहित्य के अध्ययन में महत्वपूर्ण योग है।

१०. गुजराती और व्रजभाषा कृष्णकाव्य का तुलनात्मक अध्ययन: लेखक डॉ० जगदीश गुप्त, प्रथम सं०, मूल्य २० रूपये। अनेक हस्तलिखित तथा मुद्रित प्रतियों का परीक्षण कर लेखक ने कबीर की वाणी का प्रामाणिक एवं वैज्ञानिक अध्ययन प्रस्तुत करता है।

१३. आधुनिक हिन्दी काव्यशिल्प (१६००-१६५०ई०) : लेखक डॉ० मोहन अवस्थी, मूल्य २०रूपये। आधुनिक हिन्दी कविता के शिल्प-पक्ष का सर्वाङ्गीण विवेचन इस ग्रन्थ में किया गया है।

१४. प्राकृत अपभ्रंश साहित्य और उसका हिन्दी साहित्य पर प्रभाव : लेखक डॉ० रामसिंह तोमर, मूल्य २०रूपये। प्राकृत और अपभ्रंश साहित्यों की विविध परम्पराओं का शोधपरक विवरण देते हुए मध्ययुगीन हिन्दी साहित्य पर उनके प्रभाव का वैज्ञानिक विवेचन इस ग्रन्थ में प्रस्तुत किया गया है।

१५. हिन्दी काव्य में प्रतीकवाद का विकास : लेखक डॉ० विरेन्द्र सिंह, प्रथम संस्करण, मूल्य २०रूपये।

१६ हिन्दी कोश साहित्य : लेखक डॉ० अलचानन्द जखमोला, प्रथम संस्करण, मूल्य २५ रूपये। मध्यकालीन हिन्दी साहित्य में कोश रचना के उद्भव तथा विकास का तुलनात्मक अध्ययन लगभग सौ कोश ग्रन्थों के

आधार पर किया गया है, जिनमें 'तुहफ़तुल-हिन्द' जैसे दुर्लभ हस्तलिखित ग्रन्थ भी सम्मिलित है। बिल्कुल अछूते विषय पर महत्त्वपूर्ण शोध प्रबन्ध।

१७. संस्कृत-संग्रह : सम्पादक डॉ० धीरेन्द्र वर्मा, द्वितीय संस्करण, मूल्य ६२ पैसे।

१८. कबीर-संग्रह : सं० डॉ० पारसनाथ तिवारी, चतुर्थ संशोधित संस्करण, मूल्य २ रुपया ५० पैसा।

२०. जायसी-संग्रह : सं० डॉ० जगदीश गुप्त, द्वितीय संस्करण, मूल्य २ रुपया।

२१. सूर-संग्रह : सं० डॉ० मोहन अवस्थी, द्वितीय संस्करण, मूल्य २रूपया ५०पैसे।

२२. संस्कृत-पालि संग्रह : सं० डॉ० सावित्री श्रीवास्तव, प्रथम संस्करण, मूल्य १ रूपया ५० पैसे।

२३. निबंध-संग्रह : पंचम संस्करण, सं० डॉ० लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय, मूल्य १६ रुपये मात्र।

२४. एकांकी-संग्रह : पंचम संस्करण, सं० डॉ० जगदीशप्रसाद श्रीवास्तव, मूल्य १८ रुपये मात्र।

व्यावसायिक नियम

१ - पुस्तकें वी० पी० द्वारा अथवा स्टेट बैंक की मारफ़त आर० आर० द्वारा फेजी जा सकेंगी।

२ - हिन्दी परिषद् के विद्यार्थी सदस्यों को सभी पुस्तकों पर २०% कमीशन मिलेगा।

३ - फुटकल आर्डर पर ५० रू० तक १०%, ५० रू० से अधिव १०० रू० तक १५% और १०० रू० से अधिक की पुस्तकें मॅगाने प २०% कमीशन मिलेगा। जो पुस्तक - विक्रेता वर्प में २५०० रू० व लागत का माल खरीदेंगे उनको पहले २०% की दर से ही कमीशन मिलत रहेगा लेकिन वर्ष के अन्त में वे २५ प्रतिशत की दर से कमीशन पा के अधिकारी होंगे। वर्ष में २५०० रू० से अधिक की पुस्तकें खरीद पर प्रति हजार रूपये एक प्रतिशत कमीशन बढ़ता जायेगा जैसे ३५० रू० की पुस्तकों पर २६%, ४५०० रू० पर २७% इत्यादि। किन्तु ३५ से अधिक कमीशन नहीं दिया जायेगा।